नानक और कबीर का तुलनात्मक भाषा वैज्ञानिक अ

इलाहाबाद विश्वविद्यालय की डी० फिल्० उपाधि-हेतु प्रस्तुत
शोध-प्रबन्ध

निर्देशक
डॉ० माताबदल जायसवाल
अवकाश प्राप्त प्रोफेसर (हिन्दी विभाग)
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

प्रस्तुतकर्त्ता
मधुताम्बे

हिन्दी विभाग
इलाहाबाद
इलाहाबाद

1993

प्राक्कथन

प्राक्कथन

एम०ए० हिन्दी द्वितीय वर्ष में डॉ० रामकिशोर शर्मा की अध्यापन शैली व गुरूदेव श्री माताबदल जायसवाल व डॉ० हरदेव बाहरी की पुस्तक का अध्ययन करने के बाद अध्यापन शैली में इतनी अभिरूचि उत्पन्न हुई कि मैंने निश्चय कर लिया कि भाषा वैज्ञानिक विषय लेकर ही हिन्दी में शोधकार्य करूँगी । और अपने पूज्य पिता जी के सपनों को साकार करने का मौका मिला कि उनकी छोटी बेटी डी०फिल० करें उन्हीं की पूज्य इच्छा व अपनी अभिरूचि के कारण मैंने अपने गुरूवर प्रो० श्री माताबदल जायसवाल जी की प्रेरणा व लगन ने मुझे इस कार्य को करने में पूरी-पूरी मदद दी । बाद में श्री माता बदल जायसवाल जी के निर्देशन में ही मैंने विषय चुना" नानक और कबीर का भाषा वैज्ञानिक तुलनात्मक अध्ययन " ।

मैंने अपने शोध- प्रबन्ध में नानक और कबीर के जीवन परिचय पर भी दृष्टि डाली है, जो आज तक स्पष्ट रूप से सामने एक मत में नहीं आया है । और इनकी भाषा का प्रयोग किस प्रकार से हुआ है इसकी रूपरेखा खींचने का प्रयत्न किया है । चूंकि 15वीं व 16वीं शताब्दी में संत कवि (नानक) पंजाबी, राजस्थानी (खड़ी बोली) (कबीर) अवधी, ब्रज आदि का प्रयोग करते हैं । नानक की भाषा को जानने के लिये बहुत कुछ सहारा "गुरु ग्रंथ

साहब के महला - । से व नानक वाणी जयराम मिश्र को अध्ययन कर विश्लेषण किया गया है । "गुरु ग्रंथ साहब जी" पर पंजाबी लहंदा का प्रभाव होने के कारण उसकी भाषा को समझने में कठिनाई का अनुभव हुआ किन्तु गुरुदेव प्रो० माता बदल जायसवाल ने कुछ सबद समझाया जिससे विषय अब इतना कठिन नहीं रह गया था । साथ ही नानक वाणी -डॉ० जय राम मिश्र की पुस्तक की सहायता से विषय सुगम होता चला गया । फलस्वरूप कबीर की भाषा के सधुक्कड़ी पंचमेल, खिचड़ी, अपरिष्कृत काव्य भाषा की तरफ कुछ संकेत नहीं किया गया है केवल कबीर के जन्म मृत्यु के आधार पर विद्वानों ने इनको उस स्थान की भाषा के तरफ संकेत किया है । उक्त प्रकार के निर्णयों में या तो कोई पूर्वाग्रह था या न्यायपूर्ण, वैज्ञानिक और अपेक्षित विस्तृत अध्ययन का अभाव । अतएव ॥15वीं 16वीं शती ॥ संत कवि नानक और कबीर के अकृत्रिम समुद्र बिना किसी पूर्वाग्रह के वस्तुपरक तथा भाषा वैज्ञानिक विश्लेषण निष्कर्ष के उद्देश्य से माननीय गुरु ॥श्री माता बदल जायसवाल जी ने ॥15वीं व 16 वीं ॥ शती के नानक और कबीर का भाषा वैज्ञानिक तुलनात्मक अध्ययन " का शोध कार्य मुझे सौंपा ।

वस्तुतः उक्त विषय पर कार्य करने के लिए अधिक उत्साह उत्पन्न हुआ क्योंकि कबीर कृतियों की प्राप्त प्राप्त समस्त आधार पर तथा पाठालोचन के आधुनिक सिद्धान्तों के आधार पर डॉ० पारसनाथ

तिवारी द्वारा सम्पादित "कबीर ग्रन्थावली" नाम से एक अपेक्षित पाठ सुलभ था। यह पाठ शोधकार्य प्रारम्भ करने के लिए प्राप्त सभी पाठों की अपेक्षा (वैज्ञानिक पद्धति से सम्पादित होने के कारण) अधिक प्रामाणिक था दूसरे यह हमारे ही विश्वविद्यालय (प्रयाग) में (डी०फिल०) आदि उपाधि के लिए स्वीकृत (सम्पादित पाठ था अतएव प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के लिए इसी पाठ का अध्ययन का आधार बनाना स्वाभाविक था। पाठ को आधार बनाकर भाषा वैज्ञानिक विश्लेषण करने का सुअवर मेरे गुरुजन प्रस्तुत शोधकार्य प्रबन्ध के निर्देशक श्री माता बदल जायसवाल डॉ० पारसनाथ तिवारी (म०प्र० रीडर प्रयाग विश्वविद्यालय ने दिया।) ।

इस प्रकार सम्पादन की वैज्ञानिकता, पाठ की सुलभता गुरुजनों के सुझाव आदि को दृष्टि में रखते हुये कबीर ग्रन्थावली व संतबानी संग्रह को ही प्रस्तुत अध्ययन के लिए आधार बनाया।

प्रस्तुत अध्ययन प्रारम्भ करने के पहले वर्णनात्मक भाषा वैज्ञानिक के आधार पर सर्वप्रथम कार्डों पर ध्वन्यात्मक और पदात्मक सामग्री ली गई। वाक्यात्मक तथा शब्द कोषात्मक कार्य को इसमें स्थानाभाव के कारण सम्मिलित नहीं किया गया। इन समस्त सामग्री को क्रम से लगाने का प्रयत्न किया गया और इस प्रकार संकलित सामग्री को शोध प्रबन्ध 18 अध्यायों के अन्तर्गत विभाजित किया गया ।

अध्याय की संख्या अधिक होने का कारण नानक कबीर की दोनों की तुलना दिखाने के कारण बढ़ गया है । §1§ कबीर का जीवन परिचय §2§ नानक का जीवन परिचय §3§ कबीर ध्वनिग्रामिक अनुशीलन §4§ नानक - ध्वनिग्रामिक अनुशीलन §5§ कबीर का पद विचार §6§ नानक पद विचार §7§ कबीर संज्ञा §8§ नानक संज्ञा §9§ कबीर सर्वनाम §10§ नानक सर्वनाम §11§ कबीर विशेषण §12§ नानक विशेषण §13§ कबीर- क्रिया §14§ नानक क्रिया §15§ कबीर का अव्यय §16§ नानक का अव्यय §17§ नानक और कबीर के भाषा वैज्ञानिक दृष्टिकोण को प्रभावित करने वाले सांस्कृतिक स्रोत । §18§ नानक -कबीर की संज्ञा सर्वनाम विशेषण, क्रिया, अव्यय का तुलनात्मक अध्ययन ।

15वीं व 16 वीं शताब्दी में प्राप्त सन्त साहित्यों के ध्वन्यात्मक एवं पदात्मक रूप की विशेषताओं के दृष्टिकोण से स्पष्ट हो जाता है कि इस युग के संत साहित्य में खड़ी बोली का वही रूप प्रयुक्त हुआ है जो विशेषतः पश्चिमी हिन्दी और सामान्यतः हिन्दी प्रदेश तथा हिन्दीतर प्रदेश में प्रचलित थी । उस समय की जनभाषा यही रही होगी, तभी संत महात्माओं ने अपने विचारों को जन सामान्य तक पहुँचाने के लिए इसी भाषा को अपनाया होगा इस समय तक खड़ी बोली प्रारम्भिक अवस्था में थी यही कारण है कि इसमें अन्य भाषाओं ब्रज, अवधी , पंजाबी, सिंधी, राजस्थानी, गुजराती के रूप मिलते हैं ।

साथ ही इसमें ध्वनि तथा व्याकरिक कोटियों में एक रूपता नही मिलती वरन विविधता है। किन्तु इस समय की भाषा में आज की मानक हिन्दी का मौलिक रूप सुरक्षित था जो कि विकसित होकर आज देश में राज्य भाषा और राष्ट्रभाषा का गौरव प्राप्त कर सकी ।

प्रस्तुत प्रबन्ध में प्रयत्न किया गया है कि ध्वन्यात्मक तथा व्याकरणिक पदात्म संगठन में जितने भी प्रयोग मिले हैं उन्हें बिना किसी पूर्वाग्रह के ज्यों का त्यों प्रस्तुत कर दिया जाय और उसका विवेचन तथा विश्लेषण के ध्वनिमूलिक अनुशीलन, पदग्राम, संज्ञाप्राति-पदिक, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, अव्यय और नानक कबीर की भाषा की तुलना इस लिए एक ही व्याकरणिक अर्थ को प्रकट करने के लिए जो भिन्न-भिन्न पद मिलते हैं उन सभी पदों की सापेक्षिक प्रयोगवृत्तियों के आधार पर यह संकेत कर दिया गया है कि प्रधान पद अथवा पदग्राम तथा गौणपद अथवा सहपदग्राम कौन हैं । इस प्रकार नानक-कबीर की भाषा वैज्ञानिक तुलनात्मक अध्ययन का मूल ढांचा स्पष्ट हो जाता है।

मेरा यह शोध प्रबन्ध मेरे निर्देशक के उचित निर्देशन का ही परिणाम है । उनके निर्देशन, सहयोग उत्साह तथा प्रेरणा से यह जटिल कार्य सुगम होता चला गया, और यही कारण है कि मैं कभी कार्य से हतोत्साह न हो सकी । अपने गुरूदेव के विषय में कुछ कहना

छोटे मुँह बड़ी बात होगी । मैं केवल इतना ही कह सकती हूँ कि उनके प्रति मेरा हृदय अपार श्रद्धा से नतमस्तक है ।

इस शोध प्रबन्ध में अनेक विद्वानों व महानुभावों के प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष डा० राम किशोर शर्मा, डा० दूधनाथ सिंह डा० ए० एन० सिंह, - तथा हिन्दी विभाग के अन्य प्रवक्ताओं के प्रति आभार प्रकट करती हूँ जिनके ग्रन्थों तथा प्रत्यक्ष सम्पर्क से मुझे प्रेरणा तथा निर्देशन प्राप्त हुआ है । विभागाध्यक्ष डा० राजेन्द्र कुमार वर्मा ने इस विषय पर कार्य करने की स्वीकृति प्रदान कर प्रेरणा से जो योगदान दिया है उसके लिए उनके प्रति मैं कृतज्ञ हूँ ।

इसके अतिरिक्त इलाहाबाद विश्वविद्यालय पुस्तकालय, हिन्दी विभागीय पुस्तकालय, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग के संग्रहालय से जो मुझे सहायता मिली उसके लिए मैं कृतज्ञ हूँ । परम मित्र श्री प्रकाश जी का बहुत ही योगदान रहा है जिन्होंने समय-समय पर सक्रिय सहयोग दिया ।

टंकण सम्बन्धी कार्य को श्री राजबहादुर पटेल, खन्ना ब्रदर्स ने बड़ी जागरूकता तथा सहयोग से सम्पन्न किया जिसके लिए मैं आभार प्रकट करती हूँ । शोध प्रबन्ध के टंकण सम्बन्धी भूलों के लिए क्षमा प्रार्थी हूँ ।

अन्त में हिन्दी विभाग, प्रयाग विश्वविद्यालय के प्रति विशेष रूप से अनुगृहीत हूँ जिसके तत्वाधान में मेरा यह कार्य सम्पन्न हो सका ।

मधुताम्बे 30.12.93

1993 मधुताम्बे

संकेतिका

क०	कबीर
ना०दे०	नानकदेव
क०ग्रं०	कबीर ग्रन्थावली
ग्रं० सा०	ग्रन्थ साहब
सा०	साखी
प०	पद
र०	रमैनी
आ०भा०आ०भा०	आधुनिक भारतीय आर्य भाषा
सर्व०	सर्वनाम
वि०	विशेषण
क्रि०	क्रिया
क्रि० वि०	क्रिया विशेषण
सर्व०मू०	सर्वनाम मूलक
तत्स०	तत्सम
तद्०	तद्भव
विदे०	विदेशी
प्रत्य०	प्रत्यय
पृ०	पृष्ठ

वि०ए०व० विकृत एक वचन

ब०व० बहुवचन

उ०पु० उत्तम पुरुष

म०पु० मध्यम पुरुष

अ० पु० अन्य पुरुष

> विकास का चिह्न

+ योग का चिह्न ।

भू० पू० भूतपूर्व

अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका

पृष्ठ संख्या

(3)

पृष्ठ संख्या

पृष्ठ संख्या

(औ)

अध्याय - 1

नानक और कबीर का भाषा वैज्ञानिक तुलनात्मक

— अध्याय—प्रथम 'क'

कबीर का जीवन वृत्त, व्यक्तित्व व कृतित्व:—

ऐसे अनेक ग्रन्थ हैं जिनमें निर्गुण सन्त परम्परा में कबीर साहब के जीवन वृत्त एवं मत का उल्लेख हुआ है किन्तु ऐसी कोई रचना उपलब्ध नहीं है जिनमें उनके जन्मतिथि एवं निधन तिथि के विषय में किसी अधिकार के साथ चर्चा की गयी हो। कबीर साहब ने स्वयं इस विषय पर कुछ नहीं कहा। इनके समसामयिक समझे जाने वाले किसी इतिहासकार के रचना में इनका स्पष्ट उल्लेख नहीं हुआ है। जनश्रुति, अन्धविश्वास और फुट-फुट भ्रमात्मक प्रसंग है। जिन पर सहसा विश्वास कर लेना न्याय संगत नहीं दीखता। प्रो० माताबदल जयसवाल के कुलजमस्व में—"ब्याने उमरो – एक मुल्को – इसरार है, हम उनके दौराने जिन्दगी के हालात से बिल्कुल नावाकिफ हैं।"

जन्मकाल :—

प्रामणिक साक्ष्यों के अभाव में कबीर के जीवन-काल का निर्धारण अभी तक ठीक-ठीक नहीं हो पाया है। इनके जन्मकाल के सम्बन्ध में मुख्यरूप से दो दोहे प्रचलित हैं जिससे अनुमान लगाया जा सकता है कि इनका जन्मकाल क्या हो सकता है।

1:- "संवत बारह सौ पाँच में ज्ञानी कियों विचार काशी में प्रगट भयो, शब्द कहो टकसार ॥"

2:- "चौदह सौ पचपन साल गए, चन्द्रवार एक ठाट ठए ।
जेठ सुदी बरसायत कौ, पूरनमासी प्रगट भए ।।"

गणना करके देखने में 1455 या 1456 किसी भी जेष्ठ पूर्णिमा कौ सौमवार नहीं पड़ता । इस दोहे में उल्लिखित चन्द्रवार शब्द के सम्बन्ध में विद्वानों के विभिन्न मत हैं ।

डा0 माता प्रसाद गुप्त , डा0 रामचन्द्र वर्मा, डा0 पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल, डा0 श्यामसुन्दर आदि विद्वानों ने कुछ प्रमुख ग्रन्थों (कबीर पंथीय ग्रन्थ) को आधार मानकर कबीर का समय सं0 1455 या 1456 दिन सौमवार माना है । जबकि पारसनाथ तिवारी कैक गम्भीर अन्वेषण के बाद यह सिद्ध किया है कि सं0 1455 या 56 ज्येष्ठ पूर्णिमा को सामवार नहीं पड़ता इस तर्क से ज्ञात होता है कि चन्द्रवार दिन का नहीं स्थान का सूचक है । [1]

''निर्भय ज्ञान' नामक एक प्राचीन कबीर पंथी ने कबीर तथा धर्मदास के काल्पनिक संवाद के रूप में कबीर साहब के अनेक जन्मों की कथाएं दी गयी हैं । धर्मदास के जिज्ञासा का इस प्रकार उल्लेख हुआ है ।

तहवां ते प्रभु कहा सिधाए । लीला सुनत हर्ष चितभाए ।।

1:- डा0 पारसनाथ तिवारी कबीरवाणी, द्वितीय संस्करण पृ0-15

धर्मदास के इस जिज्ञासा का समाधान कबीर साहब ने इस प्रकार किया है :--

> हिम प्रगटे चन्दवारे जाई । पूरब प्रमल शब्द गुहराई ।।
>
> बरसायत दिन हम प्रगटाना । ताल माहिं पुरहन भल जाना ।।[1]

'निर्भय ज्ञान' की दो हस्तलिखित प्रतियाँ प्राप्त हैं प्रथम सं० 1872 वि० साधुकेतन दास द्वारा लिखित है तथा दूसरा सं० 1992 महंथ गरीबदास द्वारा रचित है । प्रथम कृति में दोहा, चौपाई बद्ध रूपान्तर मिलता है तथा दूसरे में प्रकाशित संस्करण से मिलता जुलता चौपाई पद्य रूपान्तर है ।

प्रथम पंक्ति इस प्रकार है --

> चौ० - पुनि प्रगटे चन्दवारे जाई । पुरबिक प्रेम सत गोहराई ।
>
> सो० - बरसाइत दिन प्रगटे । तकि पुरहन के पात ।।[2]

ज्ञानसागर नामक एक अन्य कबीर पंथीय ग्रन्थ में लगभग यही कहानी दूसरे रूप में दुहराई गई है ।

> आसन करि आयो चंदवारा । चन्दन साह तहाँ पगुधारा ।
>
> बाल रूप धरि आयो तबवाँ । आठे पहर रह्यो मैं जहवाँ ।।[3]

1:- सम्मेलन पत्रिका भाग 54, संख्या 1-2, डा० पारसनाथ तिवारी कबीर का जन्मस्थान चन्दवार नामक निबन्ध पृ०-10 ।

2:- सम्मेलन पत्रिका भाग 54, संख्या 1-2, डा० पारसनाथ तिवारी कबीर का जन्मस्थान चन्दवार नामक निबन्ध पृ०-19 ।

3:- वही, पृ०-20

कबीर पंथीय ग्रन्थ अनुराग सागर में चन्दवार स्थान की चर्चा इस प्रकार हुई है ।

परसौतम से हम चलि आई तब चन्दवारा प्रगटे जाई । [1]

अतः ज्ञात होता है कि उपर्युक्त छंद का चन्द्रवार दिन का सूचक नहीं बल्कि उसी स्थान का सूचक है जिसका उल्लेख 'निर्भयज्ञान' 'ज्ञानसागर' अनुराग सागर में मिलता है ।

निधनकाल :--

कबीर-निधन के सम्बन्ध में कबीरपंथी साहित्य में चार विभिन्न मतों का प्रतिपादन साक्ष्य प्रचलित है जो इस प्रकार है :--

1:- संवत पन्द्रह सौ पचहत्तरा, किया मगहर को गौन । [2]
माघ सुदी एकादशी, रल्यौ पौन में पौन ।।

2:- पन्द्रह सौ पांच में, मगहर कीन्हौ गौन ।
अगहन सुदि एकादशी, मिल्यौ पौन में पौन ।।

3:- पन्द्रह सौ उनचास में, मगहर कीन्हौं गौन ।
अगहन सुदि एकादशी, मिल्यौ पौन में पौन ।।

4:- संवत पन्द्रह सौ उनहत्तर रहाई ।
सतगुरु चले उठि हंसा ज्याई ।।

1:- वही पृ0-2।

2:- कबीर कसौटी बाबू लहना सिंह [भूमिका] पृ0- 3-4 [बम्बई सं0 1971] उत्तर भारत की संत परम्परा से उद्धृत ।

उपर्युक्त सभी छन्द मौलिक परम्परा में प्रचलित रहे हैं, उनके रचयिताओं का निश्चय पूर्वक निर्धारण करना बहुत कठिन है, किन्तु सं0 1575 वाला दोहा प्रसिद्ध फ्रांसीसी लेखक "गार्सी द तासी" की सं0 1896 में हिन्दी व हिन्दुस्तानी साहित्य का इतिहास लिखते समय किसी स्रोत से मिला था, जिससे यह सिद्ध होता है कि यह दोहा उपर्युक्त संवत से पूर्व भी प्रचलित रहा होगा । कबीर कसौटी के लेखक बाबू लेहना सिंह, कबीर पंथी के जनश्रुति के आधार पर यह बताया है कि श्री कबीर जी काशी में एक सौ बीस वर्ष रहकर मगहर को गए, काशी से माघसुदी एकादशी को दिन बुद्धवार सं0 1575 को मगहर के लिए प्रस्थान किया था । उस दिन छः मंजिल की दूरी तय कर वे मगहर पहुंच गये । वहां वर्तमान आमी नदी के किनारे स्थित किसी संत की एक छोटी सी कोठरी में प्रवेश कर तथा दरवाजा बन्द करके सो गए कुछ समय पश्चात एक अलौकिक ध्वनि के साथ वे सत्यलोक को सिधारे । उनकी अन्त्येष्ठि के सम्बन्ध में उनके दो शिष्यों नवाब बिजली खां पठान तथा वीर सिंह बघेल में परस्पर संघर्ष उठ खड़ा हुआ, परन्तु दरवाजा खोलने पर वहां केवल कमल पुष्प और चद्दर के अतिरिक्त कुछ अन्य वस्तु नहीं दिखाई पड़ी, फिर भी उन दोनों शेष सामानों को बांट कर अपनी-अपनी विधि के अनुसार अंत्येष्टि क्रिया पूरी की । किन्तु गणना करने पर सं0 1575 के माघ सुदी एकादशी [11, जनवरी 1519 ई0 को मंगलवार पड़ता है न कि बुद्धवार ।[1]

1:- डा0 पारसनाथ तिवारी - कबीर वाणी द्वितीय संकरण पृष्ठ - 36

उसी संवत के उक्त दोहे में कहीं-कहीं एगहन सुदी एकादशी को शुक्रवार पड़ता है ।[1] इन तर्कों के आधार पर यह सिद्ध होता है कि जो जनश्रुति के आधार पर इनके मगहर प्रयाण का दिन बताया गया है वह युक्तसंगत नहीं दिखाई पड़ता । फिर भी बहुत से विद्वान सं० 1575 को ही कबीर की निधन तिथि मानने के पक्ष में हैं । आचार्य क्षितिमोहन सेन, डा० पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल के आचार्य परशुराम चतुर्वेदी आदि उनकी निधन तिथि सं० 1505 मानने के पक्ष में हैं । डा० पारसनाथ तिवारी ने गंभीर गवेषणा के उपरान्त कबीर का निधन तिथि सं० 1575 ही माना है ।[2] सं० 1575 को कबीर साहब का मृत्यु-काल मानने के पक्ष में जनश्रुति के अतिरिक्त विद्वानों ने कुछ पुष्ट प्रमाण भी प्रस्तुत किए हैं जो इस प्रकार हैं ।

1:- कबीर साहब को सिकन्दर शाह लोदी [शासनकाल सं० 1546-1574 ने उनके धार्मिक सिद्धान्तों के कारण दण्डित किया था तथा उनके बनारस आने के समय अर्थात सं० 1551 में ही संभवतः उन्हें काशी छोड़कर मगहर जाना पड़ा था]।

2:- गुरु नानक देव [सं० 1526-1596] के साथ कबीर साहब की भेंट सं० 1553 [अर्थात गुरुनानक देव के 26वें वर्ष में हुई थी] ।

1:- डा० पारसनाथ तिवारी - कबीरवाणी द्वितीय संस्करण, पृ० -

2:- डा० पारसनाथ तिवारी - कबीरवाणी द्वितीय संस्करण, पृ० -

3:- कबीर साहब के प्रसिद्ध शिष्य धर्मदास ने सं0 1521 अर्थात कबीर के जीवनकाल में ही उनकी रचनाओं का संग्रह किया था ।

4:- कबीर साहब के जो प्रामाणिक चित्र उपलब्ध हैं उनसे उनके वृद्धावस्था का ज्ञान होता है और यह बात उनके जन्मकाल के सं0 1451-1456 से मेल खाती है ।

उपरोक्त किसी मत के आधार पर मृत्युकाल सं0 1575 सिद्ध नहीं होता सिकन्दर शाह लोदी वाले प्रसंग के विषय में भी किसी समकालीन इतिहासकार ने कोई उल्लेख नहीं किया है ।

समकालीन इतिहासकारों ने सिकन्दरशाह के समय में किसी धार्मिक विप्लव का होना स्वीकार किया है । कुछ विद्वानों के अनुसार एक ब्राह्मण सन्त को सिकन्दर शाह के अधिकारियों द्वारा प्राण दण्ड दिया जाना सिद्ध हुआ है किन्तु कबीर साहब को सिकन्दर शाह की आज्ञा द्वारा कष्ट पाना अथवा काशी से बाहर निकाला दिया जाना यह अनुमान और जनश्रुति के माध्यम से समझा जा सकता है । गुरुनानक से सन्त कबीर मिले थे, इसका कोई पुष्ट प्रमाण नहीं मिलता, केवल इतना ही पता चलता है कि संवत् 1553 या 1554 में एक बार स्नान करते समय किसी नदी के किनारे गुरु नानक देव से किसी एक सन्त से भेंट हुयी थी, जिनसे वे बहुत ही प्रभावित हुए थे । [1] सं0 1521 में धर्मदास जो कबीर की रचनाओं को संग्रहित किया, यह

केवल जन श्रुति ही जान पड़ता है। धरमदास कबीर के शिष्य थे, इसका कोई ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध नहीं है, तो यह कैसे माना जा सकता है कि धरमदास जी कबीर की रचनाओं का संग्रह किया होगा। चित्रों में लक्षित होने वाली वृद्धावस्था जन्मकाल के काफी पहले होने पर किसी भी पूर्वोक्त मत के अनुसार सम्भव है।

स्पष्ट है कि उपरोक्त किसी तर्क के आधार पर मृत्यु काल सं0 1575 सिद्ध नहीं होता। कुछ विद्वानों ने कबीर का निधनकाल सं0 पन्द्रह सौ पाँच स्वीकार किया है। "आर्कियोलाजिकल सर्वे आफ इंडिया {भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण} की एक रिपोर्ट से ज्ञात होता है कि बिजली खाँ ने बस्ती जिले के पूर्व आमी नदी के दाहिने किनारे पर कबीरसाहब का एक रौजा सन् 1450 {सं0 1507 वि0} में निर्मित कराया था, जिसका पुनरूद्धार नवाब फिदाई खाँ द्वारा 117 साल पश्चात सन् 1567 या सं0 1624 में कराया गया। इससे यह माना जा सकता है कि इनकी मृत्यु सं0 1505 में हो गयी थी, क्योंकि मृत्यु के पश्चात ही उनका रौजा या स्मारक बनवाना स्वाभाविक जान पड़ता है।

डा0 पारसनाथ तिवारी जी ने दादूपंथी राघवदास एवं हरिवल्लभ कृत "भगवतगीता" का निर्देश देते हुए सिद्ध किया है कि जो एक दोहे में "पन्द्रह सौ पचहत्तर" आया है उसका तात्पर्य कदाचित 'पन्द्रह सौ पाँच' ही है।[1]

1:- कबीरवाणी, डा0 पारसनाथ तिवारी, पृ0-38 ।

दादूपंथी राघवदास अपने भक्तमाल के रचनाकाल के लिए संवत सत्रह सौ सत्रहोत्तरा लिखा, जिसका अभिप्राय सं० 1717 ही ज्ञात होता है न कि सं० 1770 ।[1] इसी प्रकार कबीर साहब की मृत्यु संवत पहले पन्द्रह सौ पाँचोतरा के सदृश प्रसिद्ध रहा होगा और कालान्तर में बिगड़ते-बिगड़ते पन्द्रह सौ पचहोत्तरा अथवा पन्द्रह सौ पचहत्तरा हो गया होगा ।[2]

पन्द्रह सौ पाँचहोत्तरा का अर्थ होगा पन्द्रह सौ से पाँच बाद । इसी प्रकार सत्रहोत्तरा अर्थ है सत्तरह वर्ष बाद ।[3]

हरिवल्लभ कृत भगवतगीता में निर्माण काल का निर्देश इस प्रकार हुआ है ।

> सत्रह से एकोतरा, माघ मास तिथि व्यास ।
> गीता की भाषा करो, हरिवल्लभ सुखरास ।।[4]

यहाँ भी "सत्रह सौ एकोतरा" का अर्थ है सत्रह सौ से एक वर्ष बाद या सं० 1701 । राघव दास कृत 'भक्तमाल' एवं हरिवल्लभ दास कृत भगवत गीता भाषा' के निर्देशों से यह स्पष्ट होता है कि 'पन्द्रह सौ पचहोत्तरा' पन्द्रह सौ पाँच' ही हो सकता है, किन्तु

1:- वही, पृ0 - 38 ।

2:- वही, पृ0 - 38 ।

3:- कबीरवाणी, डा0 पारसनाथ तिवारी, पृ0 - 38 ।

4:- खोज रिपोर्ट 1909 । 117 सर्च संख्या, पृ0-809 पर डा0 किशोरी लाल गुप्त द्वारा उद्धृत ।

संवत 1505 में कबीर की मृत्यु मान लेने पर उनके आयु के बारे में एक कठिनाई उपस्थित होती है, सं0 1455 में उनका जन्म मानने पर इनकी आयु केवल 50 वर्ष की ही ठहरती है। कुछ विद्वानों का मत है कि कबीर के प्राप्त सभी चित्र प्रायः प्रौढ़ावस्था के ही मिलते हैं, अतः इनका जन्म कुछ और पहले मानना चाहिए। लेकिन जहाँ हमें उनकी निधन तिथि के सम्बन्ध में प्रायः चौदह सौ पचपन साल गए। सम्बन्धी छन्द ही अधिक प्रचलित है, अतः इसको निरापद कैसे माना जा सकता है। इस प्रकार सभी दृष्टियों पर विचार करने पर उनकी जन्मतिथि के रूप में सं0 1455 को लगभग निश्चयात्मक रूप से स्वीकार किया जा सकता है। उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर उनकी निधन तिथि के सम्बन्ध में अधिक निश्चयात्मक रूप से कुछ कहा नहीं जा सकता, जबकि सं0 1505 और सं0 1575 दोनों के सम्बन्ध में समान रूप से विश्वसनीय प्रमाण उपलब्ध होते हैं।

डा0 माता प्रसाद गुप्त धरमदास कृतेदादवी पंथ के आधार पर सं0 1569 को कबीर की निर्वाण तिथि माना है।[1]

आधारभूत पंक्ति को उन्होंने इस प्रकार उद्धृत किया है:—

सुमति चन्द्र सो उनहत्तरा हाई

सतगुरु की उठ हंसा ज्याई

1:- कबीर ग्रन्थावली, आगरा भूमिका, पृ0 - 2।

गुप्त जी का कथन है कि निर्वाण तिथियाँ टाँकने को सम्प्रदायों में परम्परा रही है । इसलिए कबीर पंथी धरमदास को दी हुई सं० 1569 की तिथि अधिक विश्वसनीय हो सकती है ।[1]

द्वादशपंथ धरमदास की रचना नहीं हो सकती क्योंकि उसमें उनके बाद के अनेक सम्प्रदायों का वर्णन है ।[2] दूसरे पंक्ति के पाठान्तर भी मिलते हैं जिनपर डा० गुप्त जी ने विचार नहीं किया । बोध सागर के सातवें खण्ड में संकलित "कबीरवानी" ग्रन्थ में यह पंक्ति निम्नलिखित रूप में मिलती है ।

संवत् पन्द्रह से उनहत्तरा आवै
सतगुरु चले उड़ीसा जावै

इसी प्रकार 'स्व सम्वेदबोध' में कहा गया है —

संवत पन्द्रह सौ उनहत्तर
देश उड़ै से सतगुरु परभार ।[3]

इस प्रकार डा० पारसनाथ तिवारी इस तिथि को कबीर का उड़ीसागमन तिथि सिद्ध किया है, न कि उनको निर्माण तिथि । 'उड़ीसा जावै' अधिक सार्थक पाठ ज्ञात होता है जबकि 'उड़ि हंसा ज्याई'

1:- कबीर ग्रन्थावली, आगरा, पृ० - 2 ।

2:- डा० पारसनाथ तिवारी, कबीरवाणी, पृ० - 39 ।

3:- बोध सागर खण्ड 9, पृ० 168 कबीरवाणी से उद्धृत ।

निरर्थक और विकृत जान पड़ता है । [1]

पन्द्रह सौ उनचास में मगहर को हौ गौन
अगहन सुदि एकादशी मिलौ पौन में पौन ।

कबीर के निधनकाल का उक्त मत रूपकला जी [सं0 1965] द्वारा की गयी नाभादास कृत भक्तमाल की टीका में उद्धृत हुआ है । इस तिथि के अनुसार वे उक्त सं0 तीन वर्ष और अधिक जोड़कर मृत्यु काल सं0 1552 निश्चित किया है । [2] उक्त मत के समर्थक हरिऔध [सं0 1966] मिश्रबन्धु [सं0 1967] पं0 चन्द्रबली पाण्डेय [सं0 1990] तथा डा0 रामकुमार वर्मा [सं0 2000] आदि विद्वानों ने इस निधन काल तिथि की संगति अधिकतर सिकन्दर लोदी के आगमन से बैठायी है । रूपकला जी तीन वर्ष बढ़ाकर सं0 1552 कर दिया, लेकिन क्यों कर दिया, इसका कोई समाधान प्रस्तुत न कर सके, इस लिए विद्वानों ने सिकन्दर लोदी के आगमन का यही समय माना है ।

जन्मस्थान :--

कबीर का जन्मस्थान कहाँ था, इस सम्बन्ध में विद्वानोंमें अधिक सन्देह बना हुआ है ।

पहिले दरसन मगहर पाइओ, पुनि काशी बसे आई । [3]

1:- डा0 पारसनाथ तिवारी, कबीरवाणी पृ0 - 40 ।
2:- नाभादास कृत भक्त माल [रूपकला जी कृत] भक्त सुधा टीका सहित लखनऊ सन् 1929, पृ0 - 497 ।
3:- गुरु ग्रन्थ साहिब, राग व रामकली, पद - 3 ।

इस पद के आधार पर विद्वानों ने कबीर का जन्मस्थान मगहर माना है, जो बस्ती जिले में पड़ता है। सर्वसम्मति है कि कबीर का लीला-संवरण स्थान भी यही मगहर था, किन्तु उसी ग्रन्थ में रागगउडी के एक पद में कहा गया है --

सगल जन्म सिवपुरी गंवाइया ।
अंतीबार मगहर उठि आइया ।। [1]

उपरोक्त पद से मालूम होता है कि कबीरदास जी 'अंतीबार' मगहर आए ।

डा० सुभद्र-झा ने निम्नलिखित तर्कों के आधार पर सिद्ध करने का प्रयास किया है कबीर दास जी का जन्म मिथिला में हुआ था । अपना आरम्भिक जीवन का कुछ अंश इसी स्थान पर व्यतीत किया था ।

1:- मिथिला में मछली न खाने वालों को 'वैष्णव' कहा जाता है चाहे वे शक्ति के उपासक क्यों न हों । इसके विपरीत 'शाक्त' का अर्थ वहाँ मत्स्य मांस भोगी से किया जाता है ।

(1) 'बीजक' के एक पद में कहा गया है कि --

ज्यों मैथिल को सच्चा पास ।
त्योंहि मरन होय कह्यो विदेसा ।।

1:- गुरु ग्रन्थ साहिब, राग गउड़ी, पद - 15 ।

(2) 'कबीर पंथी ग्रन्थ' 'सर्वज्ञ सागर' में कबीरदास जी के बारे में यह उक्ति मिलती है---

सावन भादों बरसै मेहा ।

एतै सबद हम कह्यौ 'विदेहा' ।।

'विदेह' का अर्थ सुभद्र जी ने 'मिथिलावासी' से किया है न कि विदेह शब्द जीवन मुक्त का बोधक होगा, क्योंकि कबीर अथवा कबीर पंथी जीवित अवस्था में मुक्ति नहीं मानते हैं । [1]

'बोली हमरी पूरबी ताहि न चीन्है कोइ'

'पूरबी' शब्द से झा साहब ने वस्तुतः मैथिली ही लगाया है । [2]

डा० पारसनाथ तिवारी ने सुभद्र झा के सभी तर्क को निराधार मानते हुए 'साकत' का अर्थ इस प्रकार किया है, कबीर की दृष्टि में 'साकत' वह है जो भक्त न हो, राम का नाम न लेता हो, जिनमें सज्जनता लेशमात्र न हो, बल्कि जो विषयासक्त, दम्भी, भ्रष्टाचारी और निन्दक हो, इसके विपरीत वैष्णव वह है जो राम का भक्त हो, सज्जन सदाचारी और कामिनी कंचन से मुक्त हो । [3] निम्नलिखित उदाहरण देकर तिवारी जी ने सिद्ध किया है कि दोनों के विभाजन में कबीर का सबसे अधिक बल उनके रामभक्त होने या न होने तक

1:- कबीरवाणी, डा० पारसनाथ तिवारी, पृ० - 10 ।

2:- कबीरवाणी, डा० पारसनाथ तिवारी, पृ० - 10 ।

3:- कबीरवाणी, डा० पारसनाथ तिवारी, पृ० - 10 ।

विषयवासना के भोग अथवा त्यागपर जान पड़ता है, न कि मछली खाने अथवा न खाने पर ।

बरै नो को कूकरि भलो, साकत को बुरो माह
वह बैठो हरि जस सुनैं, वह पाप बिसाहन जाह । [1]

भगत हजारो कापड़ा, तामैं भक्त न समाए ।
साकत कालो कामरो, भावैं तहाँ बिहाउँ ।। [2]

कबीर साकत कोह नहीं सबै बैरनो जानि ।
हजिहि मुखि राम न ऊचरैं, वही तनकी हानि ।। [3]

हम न मरै मरिहै संसारा, हमको मिला जिआवनहारा ।
साकत मरहिं संत जन जीवहिं, भरि-भरि राम रसाइन पीवहिं ।।

कबीर ने जो शाक्तों की निंदा की है, वह "झा" जी अनुसार मिथिला के शाक्तों की प्रतिक्रिया के परिणाम स्वरूप है । शक्तों की निंदा कबीर के अतिरिक्त मध्य काल के कुछ अन्य सन्तों ने की है जिसमें गुरुनानक एवं रामदास जी प्रमुख रूप से हैं । जिनकी वाणी में शाक्तों को निन्दा स्पष्ट झलकती है जिसका मिथिला से कोई कबीरसाहब

1:- कबीर ग्रन्थावली हिन्दी परिषद प्रयाग विश्वविद्यालय, पृ0
2:- कबीर ग्रन्थावली हिन्दी परिषद प्रयाग विश्वविद्यालय, पृ0
3:- कबीर ग्रन्थावली सारग्राही को अंग, पृ0 - 229 ।
4:- कबीर ग्रन्थावली भक्ति संजीवनि, पृ0 - 62 ।

को बार-बार विषयासक्त कहा है । विषयासक्त वस्तुतः कबीर के समय में बौद्ध सिद्धों की साधना से प्रभावित होकर काल साधना प्रचलित था, जिसमें नारी का साहचर्य आवश्यक माना गया था । कबीर के 'साकत' वस्तुतः यही कौल साधक थे । इसलिए इन्हें बार-म्बार विषयासक्त कहा है । [1] दूसरे तर्क के पुष्टि में डा० झा जी ने जो उद्धरण दिया है वह पाठ वस्तुतः भ्रमात्मक है, क्योंकि बीजक के समस्त मुद्रित तथा हस्तलिखित संस्करणों में 'वास' के स्थान पर व्यंग्य पाठ मिलता है जिसके आधार पर कबीर का मिथिला निवास सिद्ध नहीं किया जा सकता है । [2]

सर्वंग सागर कबीर की रचना नहीं हो सकती बल्कि कबीरपंथ की एक परवर्ती रचना है जिसके रचयिता का कोई ठीक पता नहीं है । डा० झा 'विदेह' शब्द का अर्थ मिथिलावासी लगाया है जबकि डा० तिवारी इस अर्थ को हास्यास्पद मानते हुए जीवन मुक्त से लगाया है । उदाहरणतया :-

अब मन उलटि सनातन हूवा ।
जब जाना अब जीवत मूवा ।।

1:- डा० पारसनाथ तिवारी, कबीर वाणी, पृ० - 11 ।
2:- डा० पारसनाथ तिवारी, कबीर वाणी, पृ० - 11-12

परवर्ती कबीर पंथी भी यही जीवन मुक्ति के सिद्धान्तों को माना है। सम्पूर्ण साहित्य में मरणोत्तर मुक्ति तथा स्वर्ग नगर आदि की कल्पना के प्रति अविश्वास प्रकट किया गया है तथा जीवित अवस्था में ही मोक्ष प्राप्त करने पर बल दिया गया है। कबीर का कहना है -

पिंड परे जिव जैहे जहाँ। जीवत ही लै राखौं तहाँ ।। [1]

इसी प्रकार 'पूर्वी' शब्द का अर्थ मैथिली ही माना जाय यह आवश्यक नहीं है। प्राचीनकाल से ही मध्यदेश के पूर्व बोली जाने वाली भाषाओं को 'पूर्वी' कहा जाता था और आज भी अर्धमागधी से विकसित अवधी तथा उसकी पूर्ववर्ती समस्त बोलियों को 'पूर्वी' कहा जा सकता है। [2]

'बनारस डिस्ट्रिक्ट गजेटियर' [3] के अनुसार कबीर का जन्म बनारस में या उसके निकट न होकर आजमगढ़ जिले के बेलहरा नामक गाँव में हुआ था। आज भी पटवारियों के कागदों में बेलहरा उर्फ बेलहर पोखर लिखा मिलता है। इसी आधार पर उनकी धारणा है कि 'बेलहरपोखर' लहर तालाब की जड़ है। 'बेलहर' का 'लहर' 'पोखर' का तालाब कर लेना जनता के दाएँ बाएँ हाथ का खेल है। [4]

1:- कबीर-ग्रन्थावली, पृ0 107, पृ0 - 62 ।
2:- कबीरवाणी, डा0 पारसनाथ तिवारी, पृ0 - 12 ।
3- बनारस डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, इलाहाबाद, 1909 ।
4:- प0 चन्द्रबली पाण्डेय विचार विमर्श [हि0सा0 सम्मेलन प्रयाग सं0 2002, पृ0 - 15] ।

निरपवाद रूप में कबीर पंथियों ने कबीर का जन्मस्थान लहर-तारा माना है, जो कबीर चौरा से उत्तर पश्चिम की ओर लगभग दो मील पर स्थित है । कबीर के जन्म स्थान के रूप में लहरतारा का उल्लेख सर्वप्रथम स्वामी परमानन्द दास कृत 'कबीरमंसूर' {सं0 1966 वि0} बाबू लोहनासिंह कृत 'कबीर कसौटी' {सं0 1971 वि0} तथा स्वामी युगलानन्द कृत 'कबीर चरित्र बोध' सं0 2007 वि0 में मिलता है ।

निर्भयज्ञान तथा ज्ञान सागर नामक कबीर पंथी ग्रन्थों में 'चन्दवार' को कबीर का जन्मस्थान बताया गया है । उपर्युक्त दोनों ग्रन्थों में कबीर तथा धरमदास के काल्पनिक संवाद के रूप में उनकी जीवनी से सम्बद्ध अनेक विवरण मिलते है । धरमदास की जिज्ञासा का समाधान करते हुए कबीर जी कहते हैं —

> हम प्रगटे चन्दवारेजाई + पूरब प्रमल सब्द गुहराई ।
> बरसायत दिन हम प्रगटाना । ताला माँहि पुरइन भल जाना ।
>
> नीरू जुलाहा नीमा नारी । जौलहिन तृषा लागितेहि बारी ।
> नीमा जल पीवत तट आई । सुन्दर शिशु देखत चित्त भाई ।।

'ज्ञान सागर' में भी किंचित शब्दान्तर के साथ यही कहानी इस प्रकार मिलती है —

> आसन कर आयो चंदवारा । चन्दन साहु तहाँ पगधारा ।
> बालक होइ आयो तहवाँ । आठें पहर रह्यो मैं जहँवा ।।

ताको नारि गई अस्नाना । रूप देखि तकर मन माना
ले गई बालक सौंनिजगेहा । बूहत भाँति तेहि कीन्ह सनेहा ।।
चन्दन साहु देखि रिसियाना । चलि गयो नारि तोर अब ज्ञाना

काशी नागरी प्रचारिणी सभा में निर्भय ज्ञान की दो हस्तलिखित प्रतियां उपलब्ध हुयी थी, 1872 वि0 साधु चेतनदास द्वारा लिखि हुयी और दूसरी सं0 1893 की यहंत गरीबदास द्वारा लिखी हुयी । इसमें से पहली में उसका दोहा चौपाईबद्ध रूपान्तर मिलता है और दूसरी में इसी से मिला-जुला प्रकाशित संकरण से चौपाई बन्ध रूपान्तर है ।

पुनिप्रगटे चँदवारे जाई, पुरबिक प्रेमसंत गौहराई ।।
बरसायत दिन प्रगटे, तकि पुरहन के पास ।
बालक रूप हुलसत रहे, जौलहा गौन किए घर जास ।।
x x x
नीरू जुलाहा तुमा नारी । जौलहिन को जल प्यास लगारी ।।[2]

एक अन्य कबीर पन्थी ग्रन्थ "अनुरागसागर" में कबीर के जीवन वृत्त सम्बन्धी विवरण प्राप्त होता है जिसमें कबीर का जन्म स्थान 'चन्दवार' सिद्ध होता है ।

1:- ज्ञान सागर, लक्ष्मी वेंकटेश्वर, पृ0 772 कबीर का जन्म स्थान चन्दवार नामक निबन्ध, डा0 पारसनाथ तिवारी, पृ0 - 29

2:- सम्मेलन पत्रिका, कबीर का जन्म स्थान 'चन्दवार', पृ0 - 19 डा0 पारसनाथ तिवारी ।

परसौतम ते हम चलि आई । तब चन्दवारा प्रगटे जाई ।
बालक रूप कीन्ह तेहि ठामा । कीन्हेउ ताल माँहि विश्रामा ।।

कमल पत्र पर आसन लाई । आठ पहर हम तहाँ रहाई ।
नारि एक अरजहि आई । सुन्दर बाल देखि मन भाई ।।

चन्दन साहु पुरुष कर नाऊँ । उदा नाम नारि पर भाऊ ।
लै बालक गृह अपने आई, चन्दन साहु असकहा सुनाई ।।

कहु नारी बालक कहँ पाई । कौने विधि तेहलवाँ लाई ।
कहा उदा जल बालक पावा । सुन्दर देखिमोर मन भावा ।।

x x x

कह चन्दन ते मूरख नारी । बेगि जाहु ते बालक डारी ।
जाति कुटुम हँसि हैं सब लोगा । हँसस लोग उपजै तन सोगा ।।

x x x

चल वैरी बालक कहँ लीन्हा । जल में डारि ताहि ते दीन्हा ।।

x x x

जीवन काज बहुत दुःख पाई । पुरुष दास होकैं जग आई ।
जीवन चीन्ह परै यम फंदा । होऊँ लोक सहेऊ दुखदंदा ।।

x x x

मोक नीमा जुलाहा होई । नारि गवन ले आवै सोई ।
जम औवन बनिता तेहि गयऊ । बान माहि पुरइन एकरहेऊ ।।

x x x

औलहा दीप कीन्ह तेहि बारी । बेगि देहु तुम बालक डारी ।

सा० - सुनत बचन अस नारनी, नीरु वासन राखेऊ ।
ले गई गेह मंझार कारिनिग्र तब पहुँचेऊ ।। [1]

इसी प्रसंग में कबीर पंथियों में प्रचलित निम्नलिखित दोहा प्रस्तुत है जिसके आधार पर 'चन्द्रवार' को दिन का सूचक नहीं बल्कि स्थान का सूचक माना जा सकता है ।

चौदह सौ पचपन साल गए, चन्द्रवार इक ठाट ठए ।
जे० सुदी बरसायत को पूरनमासी प्रगट भए ।।

इसमें उल्लिखित 'चन्द्रवार' शब्द के सम्बन्ध में विद्वानों में काफी मतभेद चलता आ रहा है । गणना करने पर सं० 1455 या 59 किसी ज्येष्टपूर्णिमा को नहीं पड़ता, अतः ज्ञात होता है कि 'चन्द्रवार' दिन का सूचक नहीं बल्कि स्थान का सूचक है, जिसका संकेत अनुराग सागर निर्भय ज्ञान और 'ज्ञान सागर' में मिलता है । [2] इतने अधिक साक्ष्यों के एक्य से कबीर के जन्मस्थान के रूप में इसकी सम्भावना बहुत बढ़ जाती है लेकिन यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि

1:- अनुराग सागर, सरस्वती विलास प्रेस, नरसिंह, द्वितीय संस्करण, पृ०- 167-80 तथा स्वसंवेद कार्यालय, सीयाबाग, बड़ौदा सं० 2005, पृ० - 68, 69, सम्मेलन पत्रिका, डा० पारसनाथ तिवारी, कबीर का जन्मस्थान 'चन्द्रवार' नामक निबन्ध ।

2:- कबीरवाणी, डा० पारसनाथ तिवारी, पृ० - 15 ।

यह स्थान कहाँ स्थित है जिसके जलाशय के निकट जुलाहा दम्पत्ति को कबीर मिले थे। गाँभीर्य अन्वेषण के उपरान्त डा० पारसनाथ तिवारी कुछ स्थानों को दर्शाया है लेकिन निश्चयात्मक रूप में कुछ नहीं कहा जा सकता। एक चन्दवार बलिया जिले में है जो संत शिवनारायण की जन्मभूमि होने के नाते प्रसिद्ध है किन्तु उसके पास किसी बड़े तालाब का अभाव तथा काशी से उसका लम्बा व्यवधान यह दो तथ्य ऐसे हैं जिसका तालमेल पूरा-पूरा नहीं बैठ पाता।[1] दूसरा चन्दवार आगरा के पास यमुना नदी के तट पर स्थित है और मध्ययुग में अनेक हिन्दू-मुस्लिम संघर्षों का केन्द्र रहा है।[2] काशी से दक्षिण पूर्व की ओर रामनगर घाट से लगभग पाँच मील पूर्व मिर्जापुर से मुगलसराय जाने वाली रेलवे लाइन के पास 'चन्दरखा' नामक एक गाँव है जिससे लगा हुआ एक बहुत बड़ा ताल है जो "गौरी ताल" नाम से प्रसिद्ध है। पहले कुछ सूत्रों से विदित हुआ था कि इसे 'चँदवार' कहते हैं किन्तु उसके निकटस्थ मुँबई खुर्द तथा सिंधीताल की ग्राम सभापतियों द्वारा पूछ-ताछ से ज्ञात हुआ कि इसे वस्तुतः 'चन्दरखो' या 'चन्द्रखा' ही कहते हैं। 'चँदवार' से 'चन्दरखा' का परिवर्तन भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से संभव नहीं

1:- कबीर का जन्म स्थान चँदवार, भाग 54, संख्या 1-2, डा० पारसनाथ तिवारी पृष्ठ - 3 ।

2:- कबीर का जन्म स्थान चँदवार, भाग 54, संख्या 1-2, डा० पारसनाथ तिवारी पृष्ठ - 3 ।

मालूम पड़ता । अतः अन्य अनेक संभावनाओं के होते हुए भी इसे चंदवार से अभिन्न मानने में कठिनाई उपस्थित होती है । कबीरपंथी ग्रन्थ 'ज्ञान सागर' अनुराग सागर' 'निर्भय ज्ञान' की एक शाखा तथा कबीर जन्म सम्बन्धी चौपदी मिलकर उस जलाशय को 'चन्द्रवार' के समीप बताते हैं, इन ग्रन्थों की प्राचीनता देखते हुए उनके साक्ष्य को ठुकरा देना उचित नहीं जान पड़ता । विशेषतया 'ज्ञानसागर' पर्याप्त प्राचीन {अनुमानतः सं0 1650 वि0} का जान पड़ता है । दूसरी ओर लहरतारा सम्बन्धी उल्लेख सं0 1942 वि0 से पूर्व नहीं प्राप्त होते । अतः यह कहा जा सकता है कि कबीर की जन्मभूमि 'चन्दवार' ही होगी । डा0 पारसनाथ तिवारी चंदवार को ही कबीरदास की जन्मभूमि होने का गौरव प्रदान करने के पक्ष में हैं । [1]

मृत्यु स्थान :--

मृत्यु स्थान के सम्बन्ध में भी विद्वानों में ऐक्यमत नहीं है । अपनी-अपनी खोज के अनुसार विद्वानों ने तीन स्थान निर्धारित किये हैं जहाँ कबीर साहब की मृत्यु होने का उल्लेख हुआ है :--

{1} मगहर ।

{2} जगन्नाथपुरी एवं रतनपुर {अवध} ।

{3} मगध देश ।

1:- सम्मेलन पत्रिका, डा0 पारसनाथ तिवारी, कबीर का जन्म स्थान, चंदवार नामक निबन्ध, पृ0 - 31 ।

कबीरदास ने स्वयं कहा है कि :--

सगल जन्म सिवपुरी गँवाइया
मरती बार मगहर उठि आइआ ।[1]

जिससे स्पष्ट मालूम होता है कि कबीर दास जी की मृत्यु मगहर में हुई थी । धरमदास के शब्दावली में संग्रहीत एक पद की पंक्ति है :--

मगहर में एक लीला कीन्हीं, हिन्दू तुरूक ब्रतधारी ।
कबर खोदह कै परचा दीन्हें, मिटि गयौ झगरा भारी ।।[2]

उपर्युक्त दोहे से स्पष्ट होता है कि कब्र से शव का न पाया जाना कबीर के लीला का परिणाम था, इसी कारण शव के जगह पर पान फूल मिला ।

कहा जाता है कि कबीर की दो समाधि एक जगन्नाथपुरी दूसरी रतनपुर अवध में स्थित है जिससे विद्वानों ने अनुमान लगाया है कि कबीर का मृत्यु स्थान यहीं रतनपुर एवं जगन्नाथ पुरी रहा होगा । इस कथन का सर्वप्रथम उल्लेख अबुल फजल ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "आईन-ए-अकबरी में किया है । विशेषकर रतनपुर वाली समाधि की चर्चा

1:- गुरु ग्रन्थ साहब जी, राग गउड़ी, पद - 15 ।

2:- धरमदासकी शब्दावली, वे0प्रे0 प्रेस प्रयाग, शब्द 9 पृ0 - 4

कुलासातुल्वारोरण[1] तथा शेरअली "अफसोस" की पुस्तक "आरा-मिशैयोहफिल[2] में भी उल्लिखित है तथा इन्हीं बातों के आधार पर कहा जा सकता है कि कबीर मुसलमानी ढंग से दफनाये अवश्य गये, परन्तु मगहर में नहीं•••[उनका] शव रतनपुर में दफनाया गया ।[3] जिस प्रकार रतनपुर समाधि के भीतर कबीर साहब का शव का गाड़ा जाना सम्भव समझा जा सकता है, उसी प्रकार जगन्नाथपुरी समाधि के लिए भी अनुमान किया जा सकता है क्योंकि इस समाधि के प्रसंग में भी 'आइन-ए-अकबरी' में 'कबीर मुवहिद आजा आसूद' कह कर दफनाये जाने की पुष्टि हुई है ।[4] और टैर्विनिंव[5] ने भी चर्चा की है । परन्तु यह बात सच्ची नहीं जान पड़ती और न आज तक किसी प्रकार इसे प्रमाणित किया जा सका है । अतएव अधिक सम्भव है कि कबीर साहब मगहर में मरकर वहीं मुसलमानी प्रथानुसार दफनाये गये हैं और उसी का चिह्न हमें आज भी वहाँ उपलब्ध है । कोरी कल्पना के आधार पर रतनपुर वा पुरी की स्मारक समाधियों में उनका पता लगाना व्यर्थ है ।[6]

1:- कुलासातुल्वारोख, दिल्ली, पृ0 - 43, उ0 भारत की संत परम्परा से उद्धृत ।

2:- विचारविमर्श, पृ0 - 93, चन्द्रबली पाण्डेय ।

3:- विचारविमर्श, पृ0 - 93, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग,

4:- आइन-ए-अकबरी [नवल किशोर प्रेस लखनऊ, 1869] पृ0- 82, उत्तर भारत की संत परम्परा में उद्धृत ।

5:- टैर्विनियर ट्रैवल [भाग 2] पृ0 229, उ0 भारत की संत परम्परा में उद्धृत ।

6:- आचार्य परशुराम चतुर्वेदी, उ0 भारत की संतपरम्परा,

कुछ विद्वानों ने 'मगहर' के स्थान पर 'मगह' शब्द का आरोप कर कुछ लोगों ने कबीर साहब को 'मगध' में मरने की कल्पना की है, किन्तु कबीर की रचनाओं से स्पष्टतः 'मगहर' शब्द से ही दीख पड़ता है। 'मगह' नहीं, हाँ यह जरूर है कि उन्होंने 'मगहर' को 'ऊसर' का 'असर' कहा है। इसके अतिरिक्त बस्ती जिले में 'मगहर' गाँव आज भी मौजूद है जहाँ इनका चिह्न बना हुआ है लेकिन मगध में उसका कोई चिह्न नहीं मिलता।

उपर्युक्त उल्लेखों के बाद यही कहा जा सकता है कि कबीर का मृत्युस्थान मगहर ही है जो आधा बस्ती जिले में गोरखपुर से 16 मील दूर पर है क्योंकि परम्परा के अनुसार कबीर के उक्त कब्र के स्थान पर कबीर साहब के मरने के पहले चादर ओढ़ लेने की चर्चा की जाती है, चादर के उठाये जाने के समय दोनों शिष्यगण (हिन्दू एवं मुसलमान) वहाँ मौजूद थे। अतएव गुरुदेह के उक्त रूप में लुप्त हो जाने की बात श्रद्धालु भक्तों द्वारा की गई निरी कल्पना न समझ, उसे ऐतिहासिक घटना समझ महत्त्व देना, केवल इसी प्रसंग के आधार पर कबीर साहब के शव को मगहर से हटाकर उसके लिए वहाँ 'नकली कब्र' बना देना तथा शव को वास्तव में रतनपुर में ही मुसलमानों द्वारा दफनाये जाने का अनुमान ठीक नहीं जान पड़ता। इसी लिए कोरी कल्पना के आधार पर रतनपुरवा पुरी के स्मारक समाधियों में उनका पता लगाना व्यर्थ है जहाँ आज भी कबीर के स्मारक स्वरूप चिह्न वर्तमान हैं। [1]

गुरु 'स्वामी रामानन्द' :--

स्वामी रामानन्द कबीर के गुरु थे किस किस प्रकार कबीर ने स्वामी रामानन्द का गुरुत्व प्राप्त किया इसकी घटना इस प्रकार है जो सर्वप्रथम भक्त व्यास {पू०सं० 1669 वि०} ने उल्लेख किया है। कहते हैं, कबीर मुसलमान परिवार में पोषित होने के बावजूद एक वैष्णव भक्त के समान आचरण करते थे। इस पर ब्राहम्ण वर्ग आपत्ति करते थे कि निगुरे वैष्णव को मुक्ति नहीं मिला करती। इन बातों से तंग आकर कबीर ने किसी महात्मा से दीक्षा लेने की बात सोची। उस समय स्वामी रामानन्द बहुत बड़े प्रभाव शाली महात्मा थे किन्तु वैष्णव आचार्य द्वारा मुसलमानों को दीक्षा प्राप्त करने में कठिनाई थी। अत: कबीर ने एक नयी युक्ति सोंच निकाली। रामानन्द प्रात: काल ही गंगा स्नान करने जाया करते थे कबीर उनके रास्ते में लेट गये। अंधेरे में जब स्वामी जी के खड़ाऊ से कबीर जी टक गये तो स्वामी जी के मुख से 'हायराम' निकला जिसे कबीर ने गुरुमन्त्र समझ लिया तथा अपने को स्वामी जी का शिष्य प्रचारित किया। भक्त व्यास के अतिरिक्त अनन्तादास कृत भक्तमाल {सं० 1690 के आसपास} में लगभग इसी घटनाओं का उल्लेख हुआ जो स्वामी रामानन्द जी के कबीर का गुरु मानते हैं।

भक्त वैसनदास कृत 'प्रसंग पारिजात' में कबीर और रामानन्द का गुरु शिष्य सम्बन्ध का उल्लेख लेखक ने इस प्रकार किया है। "

प्रमाणिक हो जाते हैं। यह भी सिद्ध हो जाता है कि पीपा जी, सेन, रैदास आदि भी अनन्तानन्द, योगानन्द, नरहर्यानन्द के साथ इसी समय विद्यमान थे। " [1] कुछ उपलब्ध प्रमाणों के होते हुये भी यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि स्वामी रामानन्द कबीर के गुरू थे, क्योंकि 'अगस्त संहिता के अनुसार स्वामी रामानन्द का जन्म सं० 1359 वि० में और मृत्युकाल सं० 1467 वि० में हुआ था। इस प्रकार स्वामी जी की आयु 111 वर्ष निश्चित होती है।

दूसरी ओर कबीर का जन्म सं० 1455-56, स्वामी जी के मृत्यु के समय कबीर साहब केवल बारह वर्ष के रहे होंगे। इतनी अल्पायु में दीक्षा लेने की सम्भावना दृढ़ प्रतीत नहीं होती। इस कठिनाई को दूर करने के लिए कुछ विद्वानों ने कबीर का जन्म कुछ और पीछे ले जाना चाहा है, परन्तु इसके लिए कोई आधार नहीं मिल पाया। कबीर की प्रामाणिक रचनाओं में भी स्वामी रामानन्द का उल्लेख कहीं हुआ है, अतः निश्चित रूप से स्वामी जी को कबीर का गुरू मानने में कठिनाई प्रतीत होती है।

शेखतकी मौलाना गुलाम 'सरवर' ने अपनी पुस्तक 'खजीनतुल असफिया' [2] में लिखा है कि 'शेख कबीर जोलहा शेखतकी के उत्तराधिकारी तथा शिष्य थे। वे पहले व्यक्ति थे जिन्हें परमेश्वर और

1:- शंकरदयाल श्रीवास्तव, स्वामी रामानन्द और प्रसंग पारिजात [हिन्दुस्तानी अक्टू० 1932], पृ० 403, 20 उ0 भारत की संतपरम्परा में उद्धृत।

सत्ता के विषय में हिन्दी में लिखा है। धार्मिक सहनशीलता के कारण हिन्दू और मुसलमान दोनों ने उन्हें अपना नेता माना।.... उनकी मृत्यु सन् 1594 में हुई तथा उनके पीर शेखतकी की मृत्यु सन् 1575 में हुई थी। यह उल्लेख स्पष्ट ही हिन्दी के भक्त कवि कबीर के सम्बन्ध में है किन्तु इसमें कबीर का निधनकाल बहुत बाद में बताया गया है अर्थात 1651 वि0 में। इस लिए सकर साहब के कथन पर सन्देह होने लगता है।

शेखतकी नाम के दो सूफी फकीर प्रसिद्ध हैं जिनमें से एक कड़ा, मानिकपुर के निवासी तथा दूसरे इलाहाबाद के निकटस्थ झूँसी के रहने वाले थे।

शेखतकी मानिकपुरी :—

बीजक के एक स्थल पर मानिकपुर शेखतकी का नाम आया है।

मानिकपुर कबीर बसेरी। मदहति सुनी शेखतकि केरी।[1]

उपर्युक्त उद्धरण के अनुसार कबीर मानिकपुर गये थे और वहाँ शेखतकी की प्रशंसा सुनी थी।—

'बीजक' के एक अन्य उद्धरण से पुन: उसका उल्लेख इस प्रकार है—

नाना नाच नचाय के, नाचे नट के भेख
घट-घट अविनासी अहै, सुनों तकी तुम शेख।।[2]

1:- बीजक विचार दास संकरण, पृ0 - 62 ।

इस उद्धरण से स्पष्ट मालूम होता है कि कबीर दास और शेखतकी में आध्यात्मिक वार्ता हुयी थी। यद्यपि इन उद्धरणों में कोई ऐसा संकेत नहीं है जिनके आधार पर कबीर को शेखतकी का शिष्य स्वीकार किया जा सके किन्तु इतना तो सिद्ध हो हो जाता है कि शेखतकी तथा कबीर समकालीन थे। 'बीजक' के मूल रूपान्तर का संकलन सं0 1650 वि0 अर्थात कबीर साहब के मृत्यु के सौ वर्ष बाद का सिद्ध होता है।[1] अतः बीजक को पूर्णतया प्रमाणिक मानकर उसके आधार पर कोई निष्कर्ष निकालना निरापद नहीं माना जा सकता। ऊपर उद्धृत पंक्तियाँ कबीर वाणी की किसी अन्य शाखा में नहीं मिलती, अतः इसके प्रामाणिकता शेखतकी का मृत्यु सं0 1603 वि0 में हुआ था।[2] अतः इन्हें कबीर का समकालीन नहीं माना जा सकता। प्रसिद्ध सूफी सन्त हिशामुद्दीन मानिकपुरी को अवश्य कबीर का समकालीन माना जा सकता है। प्रसिद्ध सूफीसंत हिशामुद्दीनमानिकपुरी का देहान्त सं0 1506 में हुआ था, आइन-ए-अकबरी में किसी शेखतकी का कब्र मानिकपुर में बताया गया है, किन्तु उसमें उनके समय[3] आदि का उल्लेख न होने से यह कहना कठिन है कि कबीर के समकालीन थे। इसलिए यदि कोई शेखतकी मानिकपुर में कबीर के समकालीन रहे भी हों तो भी उन्हें उनका गुरु मानलेना ठीक नहीं जान पड़ता।

1:- क0-ग्र0, प्रयाग, डा0 पारसनाथ तिवारी, पृ0-99 ।

2:- रे0 वेस्टकाट(कबीर एण्ड कबीर पंथ) पृ0-25, उत्तर भारत की संत परम्परा में उद्धृत ।

शेखतकी झूंसी वाले :--

झूंसीवाले शेखतकी का निधनकाल इलाहाबाद गजेटियर में सन् 1384 (1441 वि0) दिया है, किन्तु वेस्टकाट साहब ने किसी अन्य प्रमाण के आधार पर उनका देहावसान सं0 1486 में [1] निश्चित किया है तथा यह भी बतलाया है कि कबीर 30 वर्ष की अवस्था में उनसे मिले थे। झूंसी में एक कबीर नाला है जिससे अनुमान किया जाता है कि कबीर अवश्य ही झूंसी गये वहाँ शेखतकी से मुलाकात हुई थी किन्तु यदि दोनों सन्तों को समकालीन मान लिया जाय तो भी उनका गुरु शिष्य सम्बन्ध सिद्ध नहीं होता।

कबीरपंथी ग्रन्थों में शेखतकी को सिकन्दर लोदी का राजगुरु बतलाया गया है तथा कबीर साहब के साथ उनके वाद-विवाद के अनेक प्रसंग मिलते हैं। किन्तु सिकन्दर लोदी को भी कबीर का समकालीन मानने में अनेक कठिनाइयाँ उपस्थित होती हैं अतः इन आख्यानों की प्रामाणिकता संदिग्ध है। वस्तुतः इन आख्यानों का शेखतकी किसी सूफी फकीर का प्रतीक जान पड़ता है, कबीर के गुरु नहीं।

पीताम्बर पीर :--

गुरुग्रन्थ साहब में संकलित कबीर के एक पद में गोमती तीर निवासी पीताम्बर पीर की प्रशंसा की गई है।

1:- रे0 वेस्टकाट (कबीर एण्ड कबीर पंथ) कानपुर 1907, पृ0-40.: (उत्तर भारत की संत परम्परा में उद्धृत)।

आज हमारो गौमतो तोर । जहा बसहिं पोताम्बर पोर ।

बाहु बाहु किआ खुब गावता है । हरि का नाम मेरे मन भावता

भक्त पोर को प्रशंसा उसके सुन्दर गान व हरिनाम स्मरण के लिए करते हैं तथा कहते हैं कि उसको सेवा में, नारद, श्री शारदा और लक्ष्मो तक लगो रहतो हैं और मैं स्वयं उसे कंठ में मालाधारण कर तथा जिह्वा से राम के सहस्त्र नाम लेकर प्रणाम करता हूं। पोताम्बर जो, नाम, बोबो कवलदासो का प्रयोग 'हज' एवं सलाम करने की बात तथा बाहुबाहु कि आ 'खूब गावता' के रूपों में उक्त पोर के प्रति निकले हुए प्रशंसात्मक उद्गार इस पद में इस प्रकार आए हैं कि उनका हरि का नाम अथवा 'कंठमाला' व सहस्रनाम से कोई मेल नहीं खाता और न उसमें प्रदर्शित अलौकिक ऐश्वर्य को कोटि तक उस गवैये 'पोर' की कोरी तारोफ हो पहुंच पातो है। कम से कम उक्त पोर के लिए कबीर साहब का गुरु होना इस पद से सिद्ध नहीं होता, केवल इतना हो जान पड़ता है कि इसमें आया हुआ पोर का वर्णन अधिक से अधिक हिन्दू तुरूक दोनों को समझाने के उद्देश्य से किया गया है।

मतिसुन्दर :—

कबीर के प्रमाणिक रचनाओं में केवल एक हो समकालोन व्यक्ति मतिसुन्दर का उल्लेख मिलता है यद्यपि इन्हें व्यक्तिवाचक संज्ञा मानने में कुछ विद्वान संदेह भी करते हैं। सिख साहित्य के कुछ प्राचीन हस्त-लिखित ग्रन्थों में मतिसुन्दर के नाम से कुछ रचनाएं हैं जिनमें से तीन (रागगौड़ी, रागगौड़ी, रागमारू) पद उद्धृत हैं।

प्रथम पद:--

जानत है राम जानत है

अपने भक्त कूं जानत है, प्रेम भक्ति भव मानत है । {टेक}

प्रेम भक्ति उपजत कठिनाई । कह भये । स्तुति किए बड़ाई ।।

जाहि संसारी लोग सराहै । तामा है हरि नैन चाहै ।

मति सुन्दर ऐसो-मतिमाने, नाहो ने केवल राम अयाने ।।[1]

{ राग गौड़ी - । }

द्वितोय पद :--

चंचल माया रहौ भावे जान गौविन्दा, जनि बिसरौरे ।

माया विष को केलड़ो रे कुसुम विषै विकार ।

रह चितवनि जाके चित रहै । जाकू भाई दुख, दुख बारम्बार ।।

एक कनक अरु कमिनो, सूरे अधिक विचार ।

यूं कबहूं नरहरि भजै ताके दरसन पर उपगार ।

अष्ठ सिद्धि नव निधि सदा हरि भक्त न के अधीन ।

कहे मतिसुन्दर सोई आतमा जाके चिता रौचक भागीन ।।[2]

{ राग गौड़ी - 2 }

1:- हिन्दी अनुशीलन 10-1, 1957 ई महात्मा मतिसुन्दर शीर्षक निबन्ध, पृ0-28, डा0 पारसनाथ तिवारी ।

2:- हिन्दी अनुशीलन 10-1, 1957 ई महात्मा मतिसुन्दर शीर्षक निबन्ध, पृ0-28, डा0 पारसनाथ तिवारी ।

तृतोय पद :-

रामं नामं परम लाभ जाने जे कोई ।

धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, सो कहा जु न होई ।।

जोग जग्य तप तोरथ पूजा । राम नाम सम कोऊ और न दूजा

मतिसुन्दर कहै राम नाम बारम्बार लीजै ।

एतो उपगार जान वृहत कहा कोजै ।। [1]

§ रागमाऊ §

उपर्युक्त मतिसुन्दर का उल्लेख कबोर को प्रामाणिक रचनाओं में भो हुआ है :--

मैरो मति बउरो मैं रामं बिसारयों, कैहि विधि रहनिं रहो रे ।

सेजे रमत नैन नहिं पैखउ, यह दुःख कासों कहो रे ।।

अन्तिम पंक्ति :-

सोचि विचारि देखो मन मांही औसर आइ बन्यो रे ।

कहै कबोर सुन्दर राजाराम रमो रे ।।

उपर्युक्त दोहों से सिद्ध होता है कि मतिसुन्दर नाम के कोई माहात्मा अवश्य हुए है, जिन्होंने कुछ पदों की रचना की थी । इस रचना को देखने से पता चलता है कि रचनाकार कबोर आदि संत कवियों

1:- हिन्दी अनुशोलन 10-1, 1957 ई0 महात्मा मतिसुन्दर शोर्षक निबन्ध, पृ0 - 28, डा0 पारसनाथ तिवारी ।

जैसे विचार के अनुसार ही अपनी भावाभिव्यक्ति की है । कबीर के उक्त पद में जो 'मतिसुन्दर' नाम आया है वही इन पदों का रचयिता होगा, क्योंकि यदि मति सुन्दर का अर्थ हम 'मति' का 'बुद्धि' करके अर्थग्रहण करें, तथा 'सुन्दर' विशेषण के बाद में आने से व्याकरण की असंगति खटकने लगती है तथा किसी प्रसंग आदि की दृष्टियों से भी इस अर्थ का उपयुक्तता सिद्ध नहीं होती । [1] कबीर ग्रन्थावली के पाठ में 'दयाल' शब्द के संबोधन मिलने से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि कदाचित कबीर, मतिसुन्दर को श्रद्धा की दृष्टि से देखते थे, क्योंकि संत परम्परा में 'दयाल' शब्द का प्रयोग केवल गुरु (परमात्मा) के लिए ही प्रयोग किया जाता है, जैसे दादू दयाल, अथवा गुरुदयाल करिहै दाया आदि । [2] इस आधार पर केवल इतना ही कहा जा सकता है कि मतिसुन्दर नाम के कोई महात्मा कबीर के समकालीन थे जिनका उल्लेख कबीर ने अपने पदों में किया है । प्रश्न यह उठता है कि क्या कबीर की ये रचनाएं प्रामाणिक मानी जा सकती है, क्योंकि कबीर नाम के कई एक रचनाएं अप्रमाणिक सिद्ध हुई हैं, हो सकता है कि यह भी रचना अप्रमाणिक हो जिसमें मतिसुन्दर का नाम आया है । मतिसुन्दर को कबीर का गुरु मानने के लिए कोई ऐसा दृढ़ प्रमाण उपलब्ध नहीं है, किन्तु मतिसुन्दर का गुरु होना असम्भव भी नहीं है ।

1:-- हिन्दी अनुशीलन 10-1, 1957 ई0 महात्मा मतिसुन्दर शीर्षक निबन्ध, पृ0-26, डा0 पारसनाथ तिवारी ।

2:-- हिन्दी अनुशीलन, डा0 पारसनाथ तिवारी, महात्मा मति-

जाति :--

कबीरदास जी अपनी रचनाओं में एकाधिक बार स्वयं को जुलाहा जाति का बताया है ।

उदाहरणतया :--

हरि कै नाउ बिन-बिन गति पाई ।

कहै जुलाहा कबीरा ।। [1]

× × ×

मेरे राम को अभै पद नगरी ।

कहै कबीर जुलाहा ।। [2]

तू बाम्हन मैं कासी क जोलहा ।

चीन्हि न मोर गियानां ।। [3]

× × ×

तू बाम्हन मैं कासी क जोलहा ।

जैसे जल जलहि ढुरि मिल्यौ ।। [4]

× × ×

त्यौ सुरि मिला जुलाहा [5]

1:-- क0 ग्र0 प्रयाग, विश्वविद्यालय, पद 85, पृ0 50 ।
2:-- वही " पद 170 पृ0 - 99 ।
3:-- कबीर-ग्रंथावली प्रयाग विश्वविद्यालय, पद 118, पृ0 - 69 ।
4:-- वही पद 196, पृ0 - 114 ।
5:-- वही पद 200, पृ0 - 116 ।

इसके अतिरिक्त इनके समकालीन समझे जाने वाले संत रैदास एवं संत धन्ना ने इन्हें जुलाहा ही कहा है। इसके सिवाय जुलाहा होने की पुष्टि गुरु अमरदास अनन्तदास, रज्जब जी, तुकाराम आदि की रचनाओं तथा खजीतुन असफिया, दबिस्ताने मजहिब, अनुराग-सागर कबीर कसौटी एवं डा० भंडारकर रे० वेस्टकाट आदि के मतों से भली-भांति हो जाती है। किन्तु प्रश्न यह उठता है कि कबीरदास किस प्रकार के जुलाहे थे--हिन्दी मुसलमान अथवा इन दोनों से पृथक किसी अन्य कोटि के जुलाहे ? क्योंकि केवल जुलाहा मान लेने से उन्हें अथवा उनके परिवार को इस्लाम धर्मावलम्बी कैसे माना जा सकता है? यह भी ज्ञातव्य है कि कबीरदास जी ने बारम्बार अपने को जुलाहा कहा है किन्तु मुसलमान एक बार भी नहीं कहा बल्कि अपने को सदैव इन कटघरों से पृथक बताया है।

जोगी गोरख गोरख करै।
हिन्दू राम नाम उच्चरै ।।
मुसलमान कहै एक खुदाइ।
कबीर का स्वामी घटि-घटि रहा समाइ ।। [1]

मुसलमान जुलाहा :--

कुछ विद्वान उन्हें जन्मना कर्मणा दोनों दृष्टियों से मुसलमान सिद्ध करना चाहते हैं। संत रैदास संत पीपा जी कबीर साहब के

1:-- क०-ग्रं० प्रयाग विश्वविद्यालय, डा० पारसनाथ तिवारी, पद 118, पृ० - 76 ।

थोड़े समय पश्चात हुए । इन समकालीन संतकवियों ने कबीर साहब को जन्मना तथा कर्मणा से मुसलमान सिद्ध किया है ।

पं० चन्द्रबली पाण्डेय रैदास तथा पीपा के इस संकेत को ग्रहण करते हुए अन्य अनेक साक्ष्य प्रस्तुत किए हैं जो इस प्रकार हैं:—
कबीर की एक पंक्ति है :—

कहैं कबीर हमरा गोविन्द । चौथेपद महिजन की जिंदं ।[1]

इसमें आए हुए 'जिंद' शब्द को पाण्डेय जी ने 'जिन्दीक' का बाधक माना है । जिन्दीक इस्लाम के आततायी है जिसका वध विहित है । पाण्डेय जी के अनुसार कबीर भी इसी प्रकार के जिन्दीक थे । इसलिए काजी उन्हें अनेक प्रकार का दण्ड दिया करता था ।

पाण्डेय जी ने दूसरा उदाहरण धर्मदास की रचनाओं से दिया है कि कबीर धरमदास को मथुरा में जिंद के रूप में दर्शन दिया था । धरमदास ने स्पष्ट रूप से बताया है कि जिंद सुमिरै अल्लाह खुदाहू ।[2]

पाण्डेय जी यह भी प्रमाण दिया कि अल्ला खुदा का स्मरण करने वाला व्यक्ति मुसलमान ही हो सकता है । तीसरा उदाहरण —

1:— क0-ग्र0 प्रयाग विश्वविद्यालय, डा0 पारसनाथ तिवारी, पद 118, पृ0 - 76 ।

2:— विचारविमर्श पं0 चन्द्र बली पाण्डेय, कबीरवाणी में खुदा पृ0 - 27 ।

भक्तमाला के प्रसिद्ध टीकाकार प्रियादास जी ने बतलाया है कि जब तत्वा जीवा नामक दो दक्षिणी पंडितों ने कबीर का शिष्यत्व स्वीकार कर अपनी जाति से बहिष्कृत होने पर अपनी कन्या के विवाह के सम्बन्ध में इनकी सम्मत्ति माँगी तब उन्होंने परामर्श दिया कि "दोऊ तुम भाई करौ आप में सगाई"[1] अतः भाई-बहन के विवाह का प्रतिपादन कबीर के इस्लामी संस्कार का द्यौतक है। चौथा उदाहरण-कबीर के इस पंक्ति में इस प्रकार है --

> एक अचम्भौ देखिया बिटिया जायौ बाप ।
> बाबुल मेरा ब्याह करि उत्तम से आई ।।
> जब लग बर पावै नहीं तब लगि तूं ही ब्याहि ।[2]

पाण्डेय जी ऐसी उक्तियों पर मुस्लिम सूफियों की विचारधारा का प्रभाव मानते हैं। बदरूद्दीन कहते हैं मेरी माता ने अपने पिता को पैदा किया। मेरा पिता उनकी गोद का एक छोटा बच्चा है जो उन्हें दूध पिलाती है।[3] सूफियों ने यह प्रतीक शैली इसलिए अपनाई कि कट्टर काजियों से उनकी प्राणरक्षा हो सके। पाण्डेय जी के अनुसार कबीर ने भी अपनी प्राणरक्षा के लिए सूफियों की उपर्युक्त शैली में उन्हीं जैसी बातें कहीं है।

1:-- श्री रूपकला 'भक्तमाल' [भक्ति सुधा स्वाद तिलक सहित] लखनऊ सं० 1983, पृ० - 486 ।

2:-- कबीर-ग्रन्थावली, डा० पारसनाथ तिवारी, पद 110, पृ०-64

3:-- पं० चन्द्रबली पाण्डेय विचारविमर्श में संकलित [सिद्ध कबीर की संक्षिप्त चर्चा] कबीर वाणी, डा० पारसनाथ तिवारी,

पाँचवा उदाहरण :--

कबीर ने अपने को राम का कुत्ता कहा है और सूदखोरो की अति निंदा को है ।

देहि पईसा ब्याज कौ, लेखाकरता जाइ ।। [1]

मुसलमानों में कल्बे मुस्तफा अर्थात मुस्तफा का कुत्ता जैसे नाम प्रचलित है और सूदखोरो भी कुरान में वर्जित है । कबीर इन्हीं संस्कारों से प्रभावित जान पड़ते हैं । [2] उपर्युक्त उदाहरणों केअतिरिक्त फारसी शब्दावली प्रधान एकपद का हवाला देते हुए पाण्डेय जी ने निष्कर्ष निकाला है क्या भाषा, क्या भाव, क्या विचार, क्या परम्परा सभी दृष्टियों से कबीर जिंद कहते हैं । [3]

हिन्दू :--

कबीर की रचनाओं में मुस्लिम संस्कारों का वर्णन अनेक स्थानों पर अवश्य मिलता है, किन्तु साथ ही यह भी स्मरण रखना है कि उनकी रचनाओं में हिन्दू प्रथाओं का चित्रण अनेक स्थलों पर किया गया है ।

1:-- क0-ग्र0, प्रयाग, डा0 पारसनाथ तिवारी 21-18 , पृ0- 213
2:-- कबीर-वाणी संग्रह, डा0 पारसनाथ तिवारी, पृ0 - 26 में उद्धृत
3:-- विचार-विमर्श, प0 चन्द्रबली पाण्डेय 'जिंद कबीर का संक्षिप्त चर्चा', कबीर वाणी में उद्धृत ।

हिन्दू प्रथा के अनुसार शव जलाने का चित्रण इस प्रकार किया है :--

हाड़ जरै जैसे लकड़ी सूरो, केस जरै जैसे गिन के तूरी । [1]

हिन्दुओं में पुत्रोत्पत्ति के समय थाल बजाने का प्रचलन है । कबीरदास ने पुत्रोत्पत्ति का संकेत इस प्रकार किया है :-

बेटा जाये क्या हुआ, कहा बजावै थाल [2]

'दुलहिनो गावहु मंगलचार' वाले पद में विवाह की बेदी, वेद मन्त्रों के उच्चारण तथा सप्तपदी आदि का उल्लेख कबीरदास द्वारा इस प्रकार हुआ है :--

सरीर सरोवर बेदी करिहौं ब्रह्मा बेद उचारा ।
रामदेव सँगि भाँवरि लैहहौं धनि धनि भाग हमारा ।। [3]

इतना ही नहीं इसका छंद विधान भी विवाह के अवसर पर हिन्दू स्त्रियों द्वारा गाये जाने वाले लोक-गीत के समान है ।

रचनाएँ :--

कबीरदास के नाम पर जो रचनाएँ मिलती हैं उनका कोई प्रमाणिक स्वरूप नहीं है । कबीर पंथियों का विश्वास है कि सतगुरु की महिमा अनन्त है । कबीर के विषय में यह तो प्रसिद्ध ही

1:-- क0-ग्रं0, प्रयाग डा0 पारसनाथ तिवारी, पद -62, पृ0 - 39
2:-- क0-ग्रं0 प्रयाग डा0 पारसनाथ तिवारी, पद-5, पृ0 - 5
3:-- कबीर-ग्रन्थावली, डा0 पारसनाथ तिवारी, पद-5, पृ0 - 5

है कि 'मसि कागद छुयो नहीं कलम गही न हाथ' जन साधारण को कबोर ने उपदेश दिया है यह उपदेश मौखिक हो हुआ करते थे तो उसमें कोई संदेह नहीं कि इनके शिष्यों ने इस मौखिक रचनाओं को लिखा होगा । कबोर को रचनाओं का कोई प्रामाणिक स्वरूप न पाकर विद्वानों ने विभिन्न मत तथा रचनाओं की संख्या प्रस्तुत की है । अभी तक इन रचनाओं की कोई हस्तलिखित प्रति भी नहीं मिल पाई जिसे हम असंदिग्ध रूप से उनके समय की या उनसे सौ पचास वर्ष इधर उधर कह सकें, इसके अतिरिक्त कबोर की समझी जाने वाली सभी कृतियों की विषय, भाषा, शैलीगत एकरूपता नहीं पायो जाती । जिन पुस्तकों का वर्ण्य विषय उनके विशिष्ट मत के अपेक्षा कबीर पंथीय विचारधारा के अधिक निकट है जिनसे परवर्ती व्यक्तियों का उल्लेख है तथा देवताओं तथा प्राचोन महापुरुषों के संवाद की चर्चा आती है इन्हें कबीर कृत मानने में संकोच होता है यही नहीं बल्कि ये कृतियां मन गढ़न्त तथा अप्रमाणिक प्रतीत होती है । डा० रामकुमार ने पचासी {85} ग्रन्थों की एक तालिका तैयार की है और यह भी बताया है कि यदि स्वतन्त्र ग्रन्थों की गिनती की जाय तो वे अधिक से अधिक { 56 } छप्पन होंगे ।[1] आदि ग्रन्थ को अधिक प्रामाणिक मानते हुए वर्मा जी ने कहा है कि 'मेरे सामने अधिक से अधिक विश्वसनीय पाठ आदि गुरुग्रन्थ साहब ही ज्ञात होता है ।[2] डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी ने भी रचनाओं की

1:— डा० रामकुमार वर्मा, संतकबीर, प्रस्तावना
2:— वही " " " "

संख्या छः दर्जन सिद्ध किया है और निःसन्देह यह भी कहा है कि इनकी सब रचनाएं नहीं होंगी ।[1]

रे वेस्टकाट (सं० 1966) ने कबीर की रचनाओं की संख्या 82 बयासी सिद्ध किया है । इसमें वेस्टकाट महोदय ने 'अलिफनामा' बीजक के तीन-तीन संस्करणों का नाम देकर कबीर साहब के जीवनकाल तथा कबीरपंथीय विचारधारा को सम्मिलित कर लिया है । [2]

एच०एच० विल्सन सन् 1903 ने कबीर की रचनाओं की संख्या आठ मानी है ।[3]

क्षितिमोहन सेन शान्तिनिकेतन से प्रकाशित कबीर के पदों का उल्लेख बेलवेडियर प्रेस से चार पदों का उल्लेख वेंकटेश्वर से छपी साखियों का उल्लेख करके आदिग्रन्थ कबीर ग्रन्थावली, बीजक को ही अधिक प्रमाणिक सिद्ध किया है ।

मिश्रबन्धुओं ने कबीर की रचनाओं की संख्या पचहत्तर सिद्ध कर दिया है तथा आदिग्रन्थ और बीजक को अधिक प्रामाणिक सिद्ध किया है ।

1:— डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी, कबीर, पृ० - 59 ।
2:— वेस्टकाट कबीर एण्ड दी कबीरपंथ, पृ० - 112 - 114 ।
3:— एच०एच० विल्सन रैलीजन आफ हिन्दूज भाग 1, पृ० - 76 - कबीर का व्यक्तित्व, पृ० - 29 ।

इन ग्रन्थों के अतिरिक्त कुछ ऐसे और भी ग्रन्थ कबीर के नाम से प्राप्त होते हैं जो पौराणिक कथाओं अथवा प्रवचन शैली के रूप में लिखे गए हैं। वास्तविक बात यह है कि सन्तों के अनुयायियों ने अपने गुरु तथा ईश्वर में कोई भेद नहीं किया है। पौराणिक पद्धति के अनुसार उन्होंने उनके सम्बन्ध में अनेक चमत्कार कथाओं का निर्माण किया। सन्तों का वार्तालाप देवताओं से कराया है। इन संतों ने गरुड़, दत्तात्रेय वशिष्ट हनुमान, मुहम्मद साहब, गोरखनाथ आदि महापुरुषों का वार्तालाप कबीर से हुआ यह सिद्ध करते हैं, जबकि कबीर इन महापुरुषों के समकालीन नहीं थे इसलिए कबीर का इन लोगों से साक्षात्कार होना सम्भव नहीं जान पड़ता। इस प्रकार उपर्युक्त महापुरुषों के समक्ष कबीर का वार्तालाप प्रस्तुत करने वाले तथा कबीर द्वारा उन्हें उपदेश दिलाने वाले ग्रन्थ कबीर रचित नहीं हो सकते। ऐसे ग्रन्थों की रचना कबीर का महत्व स्थापित करने के लिए उनके शिष्यों द्वारा ही संभव है। अतः गोष्ठी, मुहम्मद बोध, गरुड़बोध, हनुमतबोध, कबीर शंकराचार्य गोष्ठी आदि ग्रन्थ कबीर रचित सिद्ध करने में हिचक प्रतीत होती है।

अनुरागसागर, ज्ञानसागर, ज्ञानस्थिति बोध नामक ग्रन्थ में कबीर के अवतार का काल्पनिक वर्णन किया गया है। उनमें हिन्दू पुराणों के समान ही सृष्टि उत्पत्ति का विस्तृत विवेचन किया गया है। विभिन्न युगों में कबीर का प्रकट होना दिखाया गया है। कबीर के जन्म धारणा की कल्पित कथाओं का वर्णन करने वाले यह ग्रन्थ भी कबीर कृत कहने में संकोच होता है।

सुमिरनगोठिका, चौका रमैनी, एकोतरा सुमिरन, इकतार की रमैनी, आरती, अठपहरा, अमरमूल नामक ग्रन्थों में कबीर पंथ में प्रचलित उपासना पद्धति की चर्चा की गई है। कबीर स्वयं पंथ निर्माण के पक्षपाती नहीं थे तो उन्होंने पंथ के नियमों, विधियों, विधियों की सूचना देने वाले ग्रन्थों की रचना कैसे की होगी? कदापि नहीं की होगी।

ज्ञानसंबोध, कबीर भेद, नाम महात्म्य, वृक्ष निरूपण, हंस मुक्तावली मूलवानी, मूलज्ञान में नाम माहात्म्य में कबीर नाम का यश माने से मुक्तिलाभ का वर्णन है। इसे भी कबीर कृत मानने में संदेह होता है।

अगाधमंगल, कायापंजी, स्वांस गुंजार, पंचमुद्रा, सत्तोबोध, कबीर सुरतियोग, सुरतिशब्द संवाद में कबीरपंथी साधनों का वर्णन किया गया है इसमें गुह्य विद्या की अनेक बातें प्रस्तुत की गई हैं, कबीर योगाभ्यास के पक्षपाती न थे, इस लिए वे इस प्रकार के उपदेश नहीं दिए होंगे। ज्ञान गुदड़ी, भान स्तोत्र, तीसाजन्त्र, मनुष्य विचार, उग्रज्ञान, दशमाला नामक ग्रन्थ में यत्र-तत्र कबीर की एकाध साखियाँ मिल गई जिससे उनके अनुयायियों ने इस रचना को कबीर कृत मान लिया है, लेकिन किसी ग्रन्थ में किसी कवि का नाम या उसके नाम के एकाध पद आ जाय तो यह मान लेना न्याय संगत न होगा। अर्जनामा, कबीर अष्टक, पुकार, सतनाम या सत्त कबीर, बन्दी छोर नामक ग्रन्थों में कबीर पंथी संतों ने कबीर की स्तुति की है और अन्त में हिन्दू आदि के विष उतारने

के कबीरपंथी मंत्र दिए गए हैं । गुरुगीता और उग्रगीता में भगवद् गीता की बातों को कबीर पंथी विचारानुसार दिया गया । अनेक स्थलों पर मूल का अनुवाद ही प्रस्तुत कर दिया गया है । यह ग्रन्थ भी किन्हीं कबीर पंथी साधु की ही रचना प्रतीत होती है । संस्कृत को कूप जल मानने वाले तथा मसि कागद न छूने वाले कबीर के नाम से इन रचनाओं का सम्बन्ध जोड़ना हास्यास्पद ही है । इस प्रकार प्रतीत होता है कि खोज रिपोर्टों में दिए गए अधिकतर ग्रन्थ या तो किसी बड़े ग्रन्थ के भाग, उपभाग हैं या कबीर के शिष्यों ने बाद में रचकर कबीर के नाम मढ़कर प्रचलित किया ।

कबीर के नाम से जो सामग्री अपेक्षाकृत अधिक प्रामाणिक समझी जा सकती है वह कई परम्पराओं में प्राप्त होती है । लेकिन मुख्य रूप से तीन ही परम्परा अधिक प्रामाणिक मानी गई है ।

1. राजस्थानी परम्परा, डा० श्यामसुन्दरदास द्वारा सम्पादित कबीर-ग्रन्थावली [1] का सम्बन्ध इसी परम्परा से है । इस परम्परा में प्राप्त रचनाओं का सम्बन्ध प्रमुखतः राजस्थान है । इसमें दादूपंथी तथा निरंजनी शाखाओं की रचना प्राप्त होती है ।

2. गुरुग्रन्थ साहब की परम्परा--इस परम्परा में सन्तों की संग्रहीत बानियाँ आती हैं । डा० रामकुमार वर्मा ने सन्त कबीर [2] नामक ग्रन्थ में इन्हें प्रकाशित किया है ।

---

1 :-- डा० श्यामसुन्दर दास, कबीर-ग्रन्थावली ।

2:-- डा० रामकुमार वर्मा, सन्त कबीर ।

3· बोजक को परम्परा--यह परम्परा कबीर पंथियों में मान्य है। इसके प्राचोनतम प्रति का कुछ ज्ञान ही नहीं है। आज अनेक प्रकार के बीजक ग्रन्थ प्राप्त होते हैं। बीजक का सम्बन्ध हिन्दी के पूर्वी प्रदेश से है।

यह तीन परम्परायें प्रमुख हैं जिसके आधार पर कबीर सम्बन्धी अध्ययन इन प्रामाणिक ग्रन्थों से किया गया है। कबीर ग्रन्थावली-- सं0 1985 वि0 में कबीर-ग्रन्थावली का सम्पादन डा0 श्यामसुन्दर दास द्वारा हुआ। श्याम सुन्दर दास जी इसके सम्पादन में दो प्रतियों को आधार माना है, जिनमें से पहली प्रति का सम्पादन सं0 1561 तथा द्वितीय प्रति का सम्पादन सं0 1881 में बताया जाता है। इस संकेत के अनुसार दोनों प्रतियों के रचनाकाल में320 वर्ष का अन्तर पड़ रहा है। इतने वर्षों में सं0 1561 वाली प्रति की अपेक्षा 131 दोहे और 5 पद सं0 1881 वाली से बढ़े हुए दिखाई पड़ते हैं, जिन्हें सम्पादक ने इस संग्रह की पद टिप्पणी में दिया है।[1] संवत 1561 वाली प्रति कबीर की मृत्यु के 14 वर्ष पहले लिखी गई है, इस सम्बन्ध में श्यामसुन्दर दास जी का कथन है कि अन्तिम 14 वर्षों में कबीरदास जी ने जो कुछ कहा को भी यद्यपि इसमें सम्मिलित नहीं है, तथापि इसमें सन्देह नहीं कि सं0 1561 तक की कबीर दास को समस्त रचनाएं इसमें संगृहित हैं।[2] इस प्रति को अन्तिम डेढ़ पंक्तियों पर अनेक विद्वानों ने कतिपय समस्यायें उठाई हैं।

1:-- डा0 श्यामसुन्दर दास, कबीर-ग्रन्थावली, भूमिका, पृ0 - 2
2:-- डा0 श्यामसुन्दर दास, कबीर-ग्रन्थावली, भूमिका, पृ0- 2

कबोर ग्रन्थावली के प्रस्तावना के अन्त में दो गई संवत् 1561 को लिखी गई प्रति के पहले तथा अन्तिम पृष्ठ के चित्रों को देखने से प्रतीत होता है कि उसके पुष्पिका के अन्त में जो डेढ़ पंक्ति आई है वह किसी दूसरे हाथ से लिखी हुई ज्ञात होती है क्योंकि ऊपर वाली पंक्तियों से उसकी स्याही गाढ़ी है तथा लेखनी भी उससे कुछ मोटी हो गयी है, लिखने के ढंग में तथा शब्दों की वर्तनी में भी अन्तर है । दोनों पृष्ठों में आए हुए "य" तथा "व" अक्षरों के नीचे बिन्दी है परन्तु यह बात उन डेढ़ पंक्तियों में नहीं दीख पड़ती है । पुष्पिका का "दोशी" शब्द ऊपर आए "दोष" शब्द से भिन्न है । सम्पूर्ण शब्द भी ऊपर की 'पंक्ति' 'सम्पूरण' शब्द के समान नहीं है, फिर भी इसमें सं0 1561 बहुत ही स्पष्ट लिखा हुआ है ।[1] इसी बात को लेकर श्री परशुराम चतुर्वेदी भी इस प्रामाणिकता पर संदेह करते हुए कहते हैं कि यदि किसी ने सं0 1561 का लिपिकाल जोड़कर इस प्रति को प्राचीन सिद्ध करने का जाल भी रचा हो तो उसका यह यत्न सभी बातों पर विचार करते हुए संभवत: आधुनिक नहीं जान पड़ता है ।[2] डा0 पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल ने अपने ग्रन्थ 'हिन्दी काव्य' में निर्गुण सम्प्रदाय में दो प्रकार की लिखावट का कारण इसी समय के दो व्यक्तियों का लिखा हुआ मानते हैं ।[3]

1:— कबीर का काव्य रूप, डा0 नजीरमुहम्मद, पृ0 - 56 ।

2:— कबीर (राधा कृष्ण प्रकाशन) में संग्रहीत कबीर साहब रचनाएं शीर्षक निबन्ध, पृ0 - 64, परशुराम चतुर्वेदी ।

3:— डा0 पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल, हिन्दी काव्य में निर्गुण सम्प्रदाय, परिशिष्ट, भाग - 2 ।

प्रो० व्यूल दलाख का यह भी अनुमान है कि संभवत: दोनों के लिपिकर्ता समकालीन थे । अधिकतर विद्वानों ने इस ग्रन्थावली को प्रामाणिक मानकर अपने अध्ययन का विषय बनाया है । डा० पारसनाथ तिवारी ने भी प्रयाग से प्रकाशित अपने पाठ-शोध में इसकी मूलप्रति की वाणियों को अधिक संख्या में प्रामाणिक बताया है ।

गुरुग्रन्थ साहब - इस ग्रन्थ का संग्रह अर्जुन देव जी ने सं० 1661 वि० सन् 1604 ई० में किया था । इसमें प्रधानतया गुरुनानक, गुरु अंगद, गुरु अमर दास, गुरु अर्जुन देव और तेग बहादुर का रचनाएं संग्रहीत है । इन सिक्ख गुरुओं के अतिरिक्त सन्त रैदास, सन्त कबीर, नामदेव, इत्यादि आदि सन्तों की रचनाएं प्राप्य है । विषय की दृष्टि से आदि ग्रन्थ को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है ।

1- पंथ सम्बन्धी रचनाएं ।

2- पद और श्लोक सम्बन्धी ।

3- अनेक मिश्रित रचनाएं ।

प्रथम भाग में गुरुजनों के सम्बन्ध में प्रशंसात्मक पद इत्यादि है । दूसरे भाग की रचनाओं को रागों के अन्तर्गत विभाजित किया गया है । इसमें कबीर पद की संख्या 228 है ।

तीसरे अंक को भोग कहते हैं इसमें कबीर की 243 साखियां हैं । कहा जाता है कि संग्रह के अनन्तर गुरु ग्रन्थ साहब में कोई अन्तर या परिवर्तन नहीं हुआ । यह संभव है कि संग्रह के अनन्तर कोई परिवर्तन

न हुए हों, किन्तु प्रश्न यह उठता है कि इसमें संग्रहीत रचनाओं को प्रमाणिक कैसे मान लिया जाय । परशुराम चतुर्वेदी का कथन है कि जब गुरू अर्जुन देव के मन में यह बात आई की सिक्खों के पथ प्रदर्शन के लिए हमें कुछ नियम निर्धारित करने चाहिए तब उन्होंने धर्मगुरूओं के उपदेश संग्रहीत करने चाहे । वे स्वयं गुरू अमरदास के बड़े पुत्र मोहन के पास "गोहदवाल" गए और सुरक्षित पदों को मांग लाए साथ ही अन्य सन्तों की बानियों को भी संग्रहीत करने का प्रश्न था अत: प्रसिद्ध भक्तों के अनुयायियों को बुलवाया और उनके द्वारा श्रेष्ठ भजनों को चुनवाया । गुरूग्रन्थ साहब में उन भक्त भजनों को स्थान दिया गया जो सिद्धान्त की दृष्टि से गुरूओं की रचनाओं से मेल खाते थे । बाद में अर्जुन देव जी ने स्वयं बैठकर भाई गुरूदास से लिखवाया और 'क' भाई बुढा के संरक्षण में दे दिया । बाद में उसका एक अन्य संस्करण भाई बन्नों ने प्रस्तुत किया । तीसरी बार इसे सिक्खों के दसवें गुरू गोविन्द सिंह भाई मनीसिंह द्वारा लिखवाया । कहा जाता है कि मूल प्रति के भी दो भा किए गए और उस पर गुरू अर्जुन देव का हस्ताक्षर ले लिया गया, इसमें से एक भाग जिला गुजरात [पाकिस्तान] में था, दूसरा दमदमा साहब में तीसरी अहमद शाह अब्दाली के आक्रमण के समय से अप्राप्य है इनकी मूलप्रति करतार पर जिला जालंधर में है । इतना होते हुए भी इस ग्रन्थ के प्रमाणीकता पर संदेह होता है ।[1]

1:-- परशुराम चतुर्वेदी, उत्तरी भारत की संत परम्परा, पृ0-312 ।

इसमें संग्रहीत रचनाएं लिखित और मौखिक दो रूपों में से किसी एक या दोनों से प्राप्त हुई होंगी । मौखिक रूप में प्राप्त रचनाओं की प्रामाणिकता पर असंदिग्ध रूप से विश्वास नहीं किया जा सकता । कबीर के मृत्यु के पश्चात इसका संग्रह हुआ अतः गुरु-ग्रन्थ साहब के संग्रह काल तक कबीर बानियों के मूल रूप कुछ परिवर्तित होना असंभव नहीं है । संभवतः यह भी है कि जिस प्रति से संग्रह किया गया हो उसमें अन्य सन्तों की रचनाएं भी सम्मिलित हो गई हो । गुरु-ग्रन्थ में ऐसी रचनाएं जो कबीर के नाम से पाई जाती हैं वे ही गुरु-गोरखनाथ के नाम से भी मिलती हैं ।

इहु मन सकती उहु मन सीउ । इहु मन पंचतत को जीउ
इहु मनु लै जउ उनमनि रहै । तउ तीनि लोक की बातै कहै ।[1]

* * *

इहु मन सकती इहु मन सीव । इहु मन पाँच तत का जीव ।
इहु मन लै जे उन मन रहै । तौ तीनि लौकि की बाता कहै

किन्तु गुरु-ग्रन्थसाहब में एकरूपता से कबीर के शुद्ध हृदय की झलक अवश्य मिलती है ।

1:— गुरु ग्रन्थ साहब – राग गउड़ी – बावन अखिरी 33/75

2:— गोरखनाथ बानी, पृ0 – 18/50 डा0 पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल ।

इसमें कबीर की वे ही रचनाएं हैं जिनमें श्रृंगार मूलक भाव की अपेक्षा सेव्य सेवक की भावना की प्रधानता, दैन्य कातरता और श्रद्धा है। जिस प्रकार से निश्चित तिथि उस संग्रह की है वैसी अन्य संग्रह की नहीं। आदि ग्रन्थ में संग्रहीत रचनाओं को अनेक विद्वानों ने प्रामाणिक मानकर कबीर सम्बन्धी अध्ययन किया है।

बीजक :--

कबीर पंथियों का पूज्य ग्रन्थ बीजक ही है। बीजक के एक साखी [1] से डा० नजीर मुहम्मद जी अपने शोध ग्रन्थ में बीजक का अर्थ इस प्रकार बताते हैं बीजक शब्द साधारणतः उस सूची के लिए प्रयुक्त होता है जिसे माल बेचने वाला माल के साथ खरीदने वाले के पास भेजता है तथा जिसमें माल का विवरण मूल्य दर आदि लिखा होता है। इस प्रकार विक्रेता द्वारा भेजी गई सूची प्रमाणिक समझी जाती है। [2] बीजक शब्द का प्रयोग एक अन्य अर्थ में भी हुआ है। बनारस के समीप बरौह नामक जाति निवास करते थे तब राजपूतों ने उन पर आक्रमण किया तो उन्होंने अपने धन को यत्र-तत्र गाड़ दिया और उन स्थानों की सांकेतिक सूची अपने पास रखी। इस सांकेतिक सूची को वे बीजक कहते थे, वो इस संकेत तक सूची को किसी और को नहीं बताते थे, केवल

1:-- बीजक बतावैं वित्त को जो वित्त गुप्ता होय। [वित्त]
शब्द बतावै जीव को बूझै विरला कोय ।। बीजक पृ० - 13 ।

2:-- कबीर के काव्य रूप, डा० नजीर मुहम्मद, पृ० - 38 ।

अपने उत्तराधिकारी को ही बताते थे ।[1] कबीर भी इस प्रयोग से परिचित थे । जैसाकि उपरोक्त साखी में कहा है कि "बीजक उस धन को बताता है जो गुप्त होता 'शब्द' जीव को बताता है लेकिन इसे कोई बिरले ही समझ पाते हैं" रे वेस्टकाट ने बीजक का संग्रहकाल सं० 1636 स्वीकार किया है । डा० पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल सं० 1660 के पूर्व बीजक का अस्तित्व स्वीकार नहीं करते । डा० पारसनाथ तिवारी बीजक के मूल रूपान्तर का संकलन अनुमानतः सं० 1650 वि० के पश्चात विक्रम की सत्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में अर्थात कबीर साहब के देहान्त के लगभग सौ वर्ष बाद मानते हैं ।[2] इन सब मतों से स्पष्ट होता है कि बीजक का संग्रह कबीर की मृत्यु के बहुत बाद हुआ । जिससे-सम्भव हो सकता है कि अन्य कवियों की रचना भी सम्मिलित कर ली गई हो । उसका पुष्ट प्रमाण यह है कि वर्तमान समय में जितनी टीकायें प्राप्त हैं उनके मूल ग्रन्थों के टीकाओं में मूल अन्तर प्रतीत होता है ।

आदिमंगल सागर, बीजक के पद रीवां नरेश विश्वनाथ सिंह के ग्रन्थों की टीका और अहमद शाह की टीका में प्राप्त है । किन्तु कबीर के अन्य रचनाओं में ये सामग्री प्राप्त नहीं है । सायर बीजक का पद नामक और नई विचारधारा का प्रतिनिधित्व करता है । रमैनी, शब्द, चौतीसा, बेलि, विरहुली, हिंडोला और साखी बीजक की प्रत्येक टीका के प्रति में है । परन्तु क्रमसंख्या और भाषा में कुछ अंतर

1:-- कबीर के काव्य रूप, डा० नजीर मुहम्मद, पृ०-58 ।

2:-- डा० पारसनाथ तिवारी, कबीर ग्रन्थावली, भूमिका.

हो गया है । इससे प्रतीत होता है कि कबीर के मौखिक पद कबीर के निधन के उपरान्त लिपिबद्ध किए गए होंगे अन्यथा अन्तर न होता । बीजक की रमैनियां अधिक प्रामाणिक नहीं प्रतीत होती क्योंकि कबीर ग्रंथावली और गुरुग्रन्थ साहब में सृष्टि सम्बन्धी मान्यता अद्वैत वेदान्त के अधिक निकट है किन्तु बीजक रमैनी में सर्वत्र सृष्टि क्रम का पौराणिक रूप है जो कबीर पंथी धारा के विचार के अधिक निकट है ।

बीजक कबीर पंथियों का प्रामाणिक ग्रन्थ है । यह सम्भव है कि बीजक में कुछ शब्द बाद के हों फिर भी बीजक कबीरदास के मतों का पुराना और प्रामाणिक संग्रह है । कबीर के अध्ययन करने वाले सभी विद्वान बीजक को प्रामाणिक मानते है । बीजक का संकलन कबीर द्वारा पूर्वी प्रदेश में कही गई वाणियों के आधार पर हुआ इसलिए इसमें पूर्वी भाषा का आधिक्य है । रामचन्द्र शुक्ल, हजारी प्रसाद द्विवेदी आदि विद्वानों ने बीजक को अधिक प्रामाणिक माना है ।

यद्यपि किसी भी संग्रह के सम्बन्ध में विद्वान एकमत नहीं हैं फिर भी इन्हीं तीनों संग्रहों को प्राय: विद्वानों ने अपने विषय का अध्ययन बनाया है । कबीर के इस संग्रहों में प्राप्त होने वाले काव्यरूप निम्नलिखित हैं :—

कबीर-ग्रन्थावली :—

साखी, पद, रमैनी, बावनी, बेलि, वार, बसन्त, आदि ग्रन्थ- सलोक सबद, बावनअखिरी, थिती, वार बसन्त ।

कबीर बीजक :—

साखी, सबद, रमैनी, चौतीसा, विप्रमतीसी, कहरा, बसन्त, चाँचर, बेलि, बिरहुली, हिंडोला ।

—x—

---: अध्याय-द्वितीय प्रथम 'ख'

गुरुनानक देव की जीवनवृत, व्यक्तित्व व कृतित्व

गुरुनानक देव की जीवनी और उनके अनन्तर प्रचलित सिखधर्म तथा 'खालसासम्प्रदाय' के इतिहास की सामग्री बहुत कुछ अंशो में उपलब्ध है ।[1] गुरु नानक देव की वाणियों का संग्रह कर उन्हें सुरक्षित रखने की परिपाटी भी उनकी मृत्यु के कुछ ही पीछे आरम्भ हो गयी थी और इस नियम का पालन अन्य गुरुओं की कृतियों के सम्बन्ध में भी होता आया ।[2] फिर भी गुरु नानक देव तथा उनके अनंतर आने वाले अन्य सिख गुरुओं के जीवन-चरित्रों पर अभी तक पौराणिकता की छाप बहुत अंशों तक लगी हुई दीख पड़ती है और इसका कारण केवल यही है कि इधर के लेखकों ने भी उन्हें ऐतिहासिक सामग्रियों के आधार पर आश्रित कर उनकी प्रत्येक बात की छानबीन नहीं की बल्कि अधिकतर पुराने अनुयायियों के कथनों को ही मानते चल आ रहे हैं ।[3] कहीं-कहीं गुरु नानकदेव को देवत्व तथा ईश्वरत्व भावना से युक्त 'निरंकारी' बना डाला है । उनके साथ ऐसी अलौकिक घटनाएं सम्बद्ध कर दी हैं जिन्हें श्रद्धाजनित काल्पनिक चमत्कार ही कहा जा सकता है ।

1:-- परशुराम चतुर्वेदी : उत्तरी भारत की संत परम्परा, पृ0 - 287 ।

2:-- वही, पृ0 - 288 ।

3:-- वही, पृ0 - 289 ।

सिखों के पुराने धार्मिक साहित्य संग्रहों के अनुसार गुरु नानकदेव का जन्म विक्रमीय सं0 1526 के वैशाख मास शुक्ल पक्ष की तृतीया, तदनुसार 15 अप्रैल सन् 1469 को रायभोई की तलवंडी नामक गांव में हुआ था, जो बाद में गुरु नानक देव का जन्म स्थान होने के कारण 'नानकाना' नाम से प्रसिद्ध हो गया। यह गांव वर्तमान लाहौर नगर के दक्षिण-पश्चिम लगभग तीस मील की दूरी पर एक ऐसी जगह अब स्थित है, जो गुजरानवाला एवं मांटगुमरी जिलों की सीमा के पास ही पड़ती है। गुरु नानक देव के पिता कालचन्द उसी गांव के पटवारी थे। खेती-बारी का व्यवसाय भी करते थे और उनकी माता का नाम तृप्ता था। परम्परानुसार तृप्ता की प्रथम संतान मायके 'माझे' में उत्पन्न हुई। नाना के यहां उत्पन्न होने के कारण पुत्री का नाम 'नानकी' रखा गया। नानक का नाम भी उक्त नानकी बहन के नाम के अनुसरण में ही रखा गया।

गुरुनानक देव बचपन से ही शांत स्वभाव के थे। इन्होंने अपनी अलौकिक प्रतिभा और विलक्षण बुद्धि से सबको चकित कर दिया। इसका ध्यान पुस्तकों और शिक्षकों की बातों से अधिक एकांतवास और चिंतन की ओर लगता था और ये बहुधा पास वाले जंगल में जाकर विचार किया करते थे। इन्हें पंजाबी, हिन्दी, संस्कृत एवं फारसी की काफी शिक्षा मिली थी। किन्तु प्राकृतिक वातावरण और स्वयं सोचने विचारने के पूर्ण अभ्यास के कारण इनका समय आत्मचिंतन के

आवेश में व्यतीत होने लगा और यही कारण है कि इनका मन कारोबार में नहीं लगता था। माता-पिता की झिड़की पाकर बहन नानकी के ससुराल चले गये और उसके पति जयराम की सहायता पाकर दौलत खाँ लौदी की किसी कर्मचारी की देखरेख में मौदीखाने की नौकरी कर ली। बहन के विवाह के अनन्तर इनका भी विवाह बटाला जिला गुरुदासपुर निवासी मूला नामक व्यक्ति की पुत्री सुलक्खनी के साथ हो गया था। इन्हें दो पुत्र श्रीचन्द, लक्ष्मीचन्द उत्पन्न हुए किन्तु पति-पत्नी के पारस्परिक भाव कभी आदर्श नहीं रहे, और गुरूनानक घर छोड़कर भ्रमण करने लगे।

कहते हैं कि मौदी खाने की नौकरी करते समय एकबार जब गुरूनानक देव आटा तौल रहे थे, तब तराजू का क्रम गिनते समय तेरह तक आते-आते इन्हें अचानक भावावेश हो आया और वे बड़ी देर तक 'तेरा' 'तेरा' करते हुए उचित से अधिक आटा तौलकर दे डाला, परिणामस्वरूप इन्हें अपनी नौकरी से हाथ धोना पड़ा और विरक्त होकर देश भ्रमण के लिए निकल पड़े। इसके पहले नहाने जाकर तीन दिन के लिए ये कहीं जंगल में गुम हो गये थे। कहा जाता है वहाँ इन्हें किसी ज्योति व ज्योतिर्मान पुरुष के दर्शन हुए थे। उस दर्शन से प्रभावित होकर घर आते ही अपनी वस्तुएँ दूसरों को बाँटने लगे और अपनी वेषभूषा में भी परिवर्तन कर लिया। इनका अब संसारी व घरेलू बातों में तनिक भी जी नहीं लगता था और ना हिन्दू ना

मुसलमान के भाव से भरे उपदेश दिया करते थे। इनका पक्का साथी 'मर्दाना' 'रबाब जाकर इनका साथ दिया करता था।

भ्रमण के समय ये दोनों पहले-पहल सैयदपुर {वर्तमान अमोनाबाद} पहुँचे। जहाँ लालो नामक बढ़ई जिनकी गणना शूद्रों में की जाती थी, के घर ठहरे और भोजन किया जिससे समाज में बुरा भला कहा गया। किन्तु गुरु नानक देव इससे विचलित नहीं हुए और वर्ण-व्यवस्था को अनावश्यकता ठहराकर बढ़ई के परिश्रम से कमाये गये अन्न को अत्यंत पवित्र बतलाया। इसके अनन्तर अन्य गाँव तथा अन्त में कुरुक्षेत्र में ग्रहण के अवसर पर उपदेश देते हुए हरिद्वार गये जहाँ मेला लगा हुआ था। इस यात्रा के अवसर पर गुरु नानकदेव अपने सिर पर मुसलमान कलंदरों वा संयासियों की टोपी वा पगड़ी धारण करते थे, ललाट पर हिन्दुओं की भाँति केशर का तिलक लगाते थे और गले में हड्डियों के मनकों की एक माल डाल लेते थे। इनके शरीर पर इसी प्रकार एक लाल वा नारंगी के रंग की जेकेट रहा करती थी जिस पर ये एक सफेद चादर डाले रहते थे। इनकी वेशभूषा से लोगों के सहसा पता न चलता था कि वे इन्हें किस धर्म वा सम्प्रदाय में दीक्षित समझें, इन्हें हिन्दू माने अथवा मुसलमान। हरिद्वार से ये दोनों साथी देहली और पीलीभीत होते हुए काशी पहुँचे और फिर वहाँ से गया होते हुए कामरूप तथा जगन्नाथपुरी जाकर लौट आये। पूर्व की यात्रा समाप्त कर ये लोग अजोधन वा पाकपट्टन की ओर बाबा फरीद 'शकर गंज' के वंशज शेख ब्रह्म {इब्राहीम} वा शेख फरीद द्वितीय से मिलने गये।

उन दोनों में बड़ी देर तक सत्संग होता रहा । कुछ समय पश्चात ये लोग पश्चिम की ओर घूमते हुए दुबारा पाकपट्टन गये और शेख फरीद द्वितीय के साथ इनका पुनर्वार सत्संग हुआ । कहते हैं कि इसी यात्रा के अवसर पर उत्तर की ओर लौटते समय गुरु नानकदेव के साथ बाबर बादशाह से भी भेंट हुई थी । फिर इन लोगों ने सियालकोट होते हुए काबुल तक की यात्र की । वहाँ से लाहौर की ओर लौटकर दुनीचंद को श्राद्ध के अवसर दिया । उत्तर-पूर्व की ओर जाकर किसी लखमती खत्री को इतना प्रभावित किया कि उसने रावी के किनारे करतारपुर नाम का एक नगर बसाना आरम्भ कर दिया और एक सिख मंदिर बनवाकर गुरु को अर्पित कर दिया ।

गुरु नानक देव ने रात्रि के पिछले पहर में भजन गाने की प्रथा चलाई । उनके पीछे खड़ा होकर भजनों को प्रेमपूर्वक श्रवण करने वाला एक सात वर्षीं बालक वहाँ नियमपूर्वक आने लगा । गुरु के प्रश्न करने पर उसे अपने वहाँ उपस्थित होने का कारण इस प्रकार बताया । "एक दिन मेरी माँ ने मुझे आग जलाने के लिए कहा था। जब मैंने लकड़ियाँ जलाने के लिए लगायीं, तब देखा कि छोटी-छोटी टहनियाँ पहले जल जाती हैं और बड़ी-बड़ी लकड़ियों की बारी पीछे आया करती है । यह देखकर मुझे भय हो गया कि कम अवस्था वाले पहले मर जायेंगे और बड़ों की बारी पीछे आयेगी और यही विचार कर मैंने आपके भजनों का श्रवण करना उचित समझा । गुरु नानक देव इसे सुनकर बहुत प्रसन्न हुए और वैसे गंभीर कथन के कारण उस बालक का नाम 'बुड्ढा' रख

समय में उसने पाँच गुरुओं को अपने हाथ से उनके आसन पर तिलक द्वारा अभिषिक्त किया [1]। करतारपुर में गुरुनानकदेव के निवास स्थान पर प्रतिदिन 'जपुजी' एवं 'असा दीवार' का पाठ तथा भजनों का गान हुआ करता था। आरती के बाद जलपान किया जाता। तीसरे पहर फिर गान होता, संध्या समय सोदर का पाठ हो जाने पर सभी सिख एक साथ भोजन किया करते थे। एक बार पुनः गान होता और अन्त में 'सोहिला' का पाठ समाप्त हो जाने पर लोग सोने जाते थे। गुरु नानकदेव यात्रावाली पोशाक का परित्याग कर कमर में एक दुपट्टा, कंधे पर एक चादर तथा सिर पर एक पगड़ी मात्र धारण करने लगे थे।

गुरुनानकदेव एक बार दक्षिण की ओर भी यात्रा करने निकले। मार्ग में जैनियों और मुस्लिम फकीरों के साथ सत्संग करते उपदेश देते सिंहल द्वीप पहुँचे गये। वहाँ पर इन्होंने 'प्राणसंगली' नामक ग्रन्थ की रचना की और सैदों तथा घुट्टों ने उसे पीछे से लिपिबद्ध किया था। वहाँ से गुरु नानकदेव अचल बटाला फिर कश्मीर की ओर गये। पश्चिम में मक्के तक पहुँचे थे।

अपना अन्तिम समय जानकर गुरु नानक देव ने अपने प्रिय शिष्य लहिना को विधिपूर्वक गद्दी पर बैठाया और उसका नाम

1:— परशुराम चतुर्वेदी, उत्तरी भारत की संत परम्परा
पृ0 – 294 ।

गुरू 'अंगद' रख दिया । गुरू नानक देव अपने अन्तिम समय में एक वृक्ष के नीचे जा बैठे और भजन गाने वाली सिखों की मंडली के मध्य आत्मचिंतन में मग्न हो गये । जब 'जपुजी' की अन्तिम पंक्तियों का पाठ हो रहा था, उसी समय उन्होंने अपने शरीर पर चादर ओढ़ ली और 'वाह गुरू' कहते-कहते शांत हो गये । इनकी मृत्यु आश्विन-शुक्ल 10 को करतारपुर के निवास स्थान पर सं0 1595 अर्थात सन् 1538 ई0 में हुई थी ।

गुरू नानकदेव ने समय-समय पर अनेक पदों की रचना की थी, जो अन्य गुरूओं की रचनाओं के साथ {ग्रन्थ साहिब} में संगृहित है । इनकी सबसे मुख्य और प्रसिद्ध रचना 'जपुजी' है । इसमें कुल 38 छंद है और अन्त में एक सलोक है । इनकी दूसरी प्रसिद्ध रचना 'असा दी वार' है । इसके अन्तर्गत 24 पौड़ियां हैं । इनके अतिरिक्त उनकी रचनाओं में से कुछ 'रहिरास' नामक पद-संग्रह में आई हैं, कुछ को 'सोहिला' नामक संग्रह में स्थान मिला है जिनका 'सोवन वेला' में पाठ हुआ करता है । इनकी शेष रचनाएं फुटकर पदों आदि के रूप में 'ग्रन्थ साहिब' के अन्तर्गत भिन्न-भिन्न रागों में महला 1 के नीचे संगृहीत हैं ।

<u>ग्रन्थ साहब की भाषा :--</u>

ग्रन्थ साहब के महला 1 में सिक्ख गुरू नानक के उपदेश संगृहीत

हैं। पंजाब के होते हुए भी इन सिक्ख गुरुओं ने अपना उपदेश दिया है। अतः ग्रन्थ साहिब की भाषा मूलतः खड़ी बोली है किन्तु पंजाबी प्रभाव पर्याप्त मात्रा में है। यत्र-तत्र राजस्थानी प्रभाव भी है। ग्रन्थ साहिब में विदेशी {अरबी-फारसी} प्रचलित शब्दों का प्रयोग पर्याप्त हुआ है।

———x———
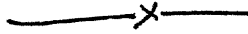
—: द्वितीय अध्याय :'क'

कबीर-ध्वनिग्रामिक अनुशीलन :—

वर्णग्रामिक विश्लेषण मात्रा, तुक, ध्वनि, पद, वाक्य गठन के आधार पर कबीर काव्य में 41 ध्वनिग्रामों की स्थापना की जा सकती है। इनमें 39 खण्डीय तथा दो खण्डेतर ध्वनिग्राम हैं। खण्डीय ध्वनिग्रामों के अन्तर्गत 10 स्वर तथा 29 व्यंजन ध्वनिग्राम हैं। ये ध्वनियाँ स्वमान्तर युग्म में आकर अर्थभेदक होती है अर्थात समान ध्वन्यात्मक परिवेश में घटित होकर भी व्यतिरेकात्मक रहती हैं। इसलिए इन्हें ध्वनिग्राम की संज्ञा दी जा सकती है।

मूल स्वर :—

अ आ इ (इ$_0$) ई उ (उ$_0$) ऊ ए (ए) ओ (

संयुक्त स्वर :—

ऐ (अए – अइ) (ऐ) औ अओ – उ

( ) इस चिह्न के अन्तर्गत सह ध्वनिग्राम अंकित किया गया है।

उपर्युक्त सह ध्वनिग्रामों की ध्वन्यात्मक प्रकृति उच्चार स्थान प्रयत्न आदि के सम्बन्ध में कुछ निश्चित नहीं कहा जा सकता क्योंकि अध्ययन सामग्री केवल लिखित रूप में प्राप्त है। ध्वनिग्रामिक वितरण से इतना अवश्य अनुमान लगाया जा सकता है कि उपर्युक्त स्वर

आधुनिक मानक हिन्दी के समान है। अतएव आधुनिक मानक हिन्दी के सन्दर्भ में इन स्वरों को मानचित्र में निम्नलिखित रूप में दिखाया जा सकता है :--
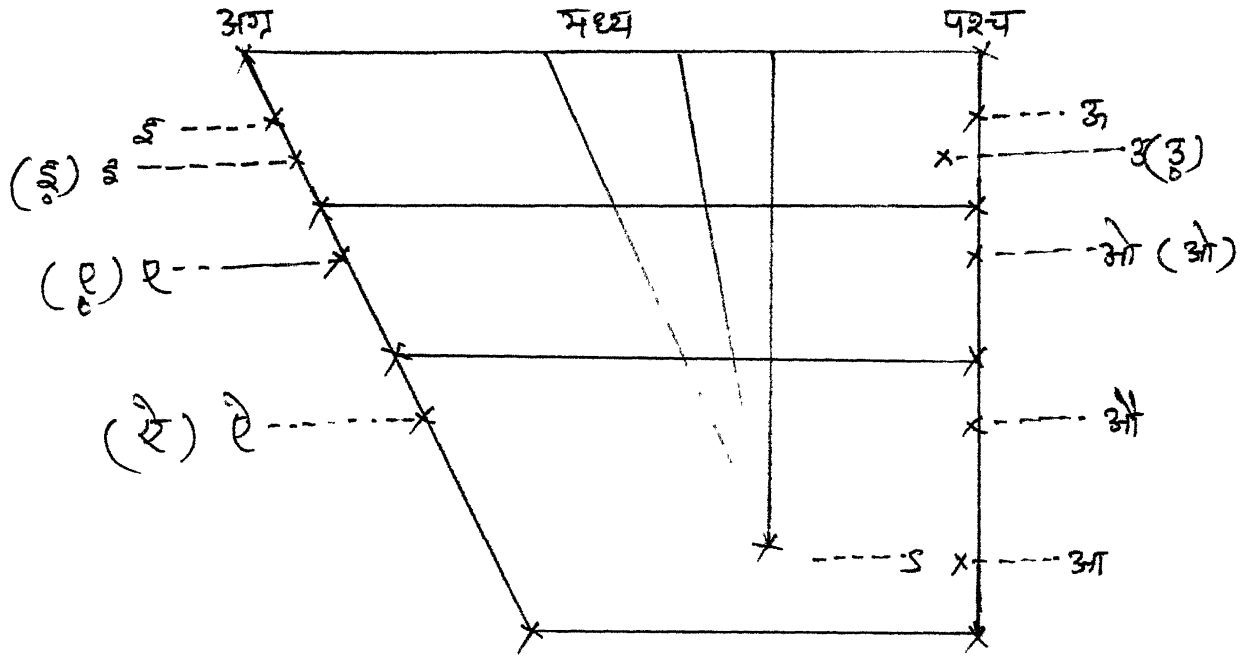
समान ध्वन्यात्मक परिवेश में घटित होने तथा स्वमान्तर युग्म में अर्थभेदकता के गुण से समन्वित होने के कारण उपर्युक्त स्वरों की ध्वनिग्रामिक स्थिति आधुनिक मानक हिन्दी में है। इसीलिए कबीर ग्रन्थावली की भाषा में स्वमान्तर युग्मों का दृष्टान्त देकर इनकी ध्वनिग्रामिक स्थापना की विशेष आवश्यकता नहीं प्रतीत होती, आधुनिक मानक हिन्दी में स्वरों का स्वरूप सहज ही सिद्ध हो जाता है, लेकिन कबीर के काव्य में आए हुए सहध्वनिग्राम की चर्चा कर ही देना ही उचित है :--

इ 0	सोइ 0	सा0	28/7/1
	कोइ 0	सा0	4/42/1
उ 0	सुखदेउ 0	सा0	4/40/2
	पाँचउ 0	सा0	5/1/2
ए	बेबहारा	र0	14/14
	एक	चौ0र0	1/2
ओ	सोइ 0	सा0	28/7/1
	जोलहा	र –	18

कबीर ग्रन्थावली में अनुस्वार और विवृत्ति, गौण ध्वनिग्राम के रूप में पाए जाते हैं। इनकी स्थापना स्वनान्तर युग्मों के आधार पर सिद्ध होती है।

व्यंजन – ध्वनिग्राम

"बावन आखिर लोक में, सब कछु इनहीं माहिं" [1]

इस रमैनी में कबीर ग्रन्थावली की एक चौंतीस में संस्कृत के 52 अक्खरों [अक्षरों] की परम्परा की ओर संकेत किया गया है। प्रस्तुत रमैनी में ओं [ओंकार] के अतिरिक्त किसी स्वर से रमैनी

नहीं प्रारम्भ की गई है, न किन्तु एक व्यंजन से प्रारम्भ करके 34 रमैनी होती है । प्रथम चरण में आने वाली व्यंजन ध्वनियों का क्रम तथा विवरण निम्नलिखित है :--

क् च् ट् त् प्

ख् छ् ठ् थ् फ्

ग् ज् ड् द् ब् (स)

घ् झ् ढ् ध् भ् (ज) (ब) (ब)

(न) (न) ण् न् म् र् स्

ल् ह्

व्

उपर्युक्त व्यंजन तालिका में आए हुए ध्वनिग्रामों का वैज्ञानिक विश्लेषण करने से विदित होता है कि उस तालिका में अधिकांशतः वही व्यंजन ध्वनिग्राम है जो कबीर काल के पूर्व संस्कृत, पाली, प्राकृत अपभ्रंश में वर्तमान थे और जो आज आधुनिक हिन्दी तथा उसकी बोलियों में पाये जाते हैं । (स) (ज) (ब) (न) (न) आदि चिन्हित ध्वनियों की स्थिति विचारणी है । प्रस्तुत रमैनी में 'घ' और 'झ' के पश्चात् क्रम से 'न' लिपिग्राम से पंक्तियाँ प्रारम्भ की गई हैं, जिससे अनुमान लगाया जा सकता है कि -- वर्णक्रम में 'घ' के पश्चात 'ङ' और 'झ' के पश्चात आने वाले 'ञ' ध्वनि की ध्वनिग्रामिक स्थिति नहीं रह गई थी फिर भी ये ध्वनियाँ सम्भवतः

संस्वन के रूप में उच्चरित होती थीं क्योंकि यदि उच्चरित न होती तो 'घ' और 'ञ' के बाद 'न' से पंक्ति प्रारम्भ करने की आवश्यकता न पड़ती । इससे यह सिद्ध हो जाता है कि'ङ' 'ञ' ध्वनिग्राम नहीं थे 'न' (संस्वन के रूप में प्रयुक्त होते) थे ।

इसके साथ ही साथ ये ध्वनियाँ सवर्गीय थीं, अर्थात कवर्ग के पूर्व ध्वनिग्राम 'न' ङ संस्वन के रूप में चवर्ग के पूर्व 'न' ध्वनिग्राम ( ) संस्वन के रूप में सुनाई पड़ता था । यह भी सिद्ध हो जाता है कि यह संस्वन केवल माध्यमिक स्थिति में प्रयुक्त होते थे । कबीर ग्रन्थावली के उदाहरण से इसका और ही पुष्टीकरण होता है । यथा:—

कंकर	कङ्कर
कंगन	कङ्गन
कंजर	कञ्जर
कंचन	कचन
गंगा	गङ्गा
चंचु	चचु

ढ़ के पश्चात् ण् लिपिग्राम से पंक्ति आरम्भ की गयी है जिससे यह संकेत मिल जाता है कि कबीर ग्रन्थावली में 'ण' को एक ध्वनिग्राम के रूप में माना गया है जो आदिम, मध्य व अंतिम तीनों स्थिति में प्रयुक्त होता था । कहीं-कहीं 'ण' और 'न' मुक्त परिवर्तन की

स्थिति में है ।

नागरी वर्णमाला चवर्ग के पश्चात अर्धस्वर {अंतस्थ} {अन्तस्थ} य आता है । इसलिए प्रस्तुत रमैनी में 'मं' के पश्चात रमैनी 'य' से प्रारम्भ होना चाहिए था किन्तु रमैनी 'य' के साथ 'ज' लिपिग्राम प्रयुक्त हुआ है । इससे यह पता चलता है कि कबीर काल में 'य' के स्थान पर प्रयुक्त 'ज' प्रयुक्त होने लगा था ।

उपर्युक्त वर्णक्रम परम्परा के अनुसार 'व' के पश्चात 'श' लिपि-ग्राम आना चाहिए, किन्तु रमैनी में 'श' से कोई पंक्ति प्रारम्भ नहीं की गई है, अर्थात 'श' ध्वनिग्राम के रूप में नहीं मिलता । विरल संस्वन के रूप में श्री में {श् + र्} यह वर्तनी में अवश्य वर्तमान है ।

'श' के पश्चात क्रमशः 'ष' लिपिग्राम आना चाहिए । वैदिक तथा संस्कृत भाषा में इस लिपिग्राम से मूर्धन्य 'ष' का बोध कराया जाता था, किन्तु पाली प्राकृत, अपभ्रंश में उसकी ध्वनिग्रामिक स्थिति लुप्त हो चुकी थी फिर भी कबीर ने अपनी रमैनी में 'व' के पश्चात इस 'ष' लिपिग्राम से रमैनी की एक पंक्ति प्रारम्भ की है । इसलिए हम इसे 'स' लिपिग्राम मानकर 'स' के स्वर संस्वन को बोधक स्वीकार करेंगे ।

कबीर ग्रन्थावली में अधिकांशतः मूर्धन्य ध्वनियों के पूर्व सवर्ग {ष} सह लिपिग्राम का प्रयोग हुआ है, यथा—अविष्ट, तष्ट, बष्ट

आदि । इस ध्वन्यात्मक परिवेश {ष} से 'ख' ध्वनिग्राम को नहीं बल्कि 'स' ध्वनिग्रामके एक संस्वन का ही बोध कराया गया है । रमैनो में 'व' के पश्चात 'ब' से कबीर का विचार रहा होगा ऐसा अनुमान लगता है ।

रमैनो 'ह' के पश्चात {ब} लिपि चिह्न पुनः दिया गया है प्रचलित परम्परा के अनुसार 'ह' वर्णक्रम के पश्चात 'क्ष' आता है । मध्यकाल में संयुक्त क्ष , पख, खं में परिवर्तित हो गया था, इसलिए कबीर में इसके स्थान पर 'ख' ध्वनिग्राम किया है जिसे आधुनिक नागरी की लिपिग्राम माला के अनुसार 'ख' [1] से व्यक्त करना चाहिए । 'ब' लिपिग्राम से नहीं ।

कबीर ग्रन्थावली में त्र, ज्ञ {ज्ञ} संयुक्त व्यंजनों को 'त्र' और ञ्य से युक्त लिपिग्राम से व्यक्त किया गया है, किन्तु प्रस्तुत रमैनी में दिया नहीं गया है । इससे यह संकेत मिलता है कि कबीर-ग्रन्थावली में कबीर-काल तक भाषा के ध्वनिग्रामिक गठन में जो परिवर्तन आ गया था उसे किसी ने किसी प्रकार से स्वीकार किया है ।

कबीरकाल तक ड का संस्वन ड़ और ढ़ का नया संस्वन 'ढ़' विकसित हो गया है ।

1:— श्रीमाता बदल जायसवाल, कबीर की भाषा, पृ0 - 12 ।
नोट- कबीर-ग्रन्थावली के सम्पादक डा0 तिवारी जी ने इसे 'ब' लिपि-चिह्न से व्यक्त किया है जो वैज्ञानिक नहीं प्रतीत होता है ।

न, म, ल के महाप्राण न्ह, म्ह, ल्ह विकसित हो गए थे

यथा -	कान	प0	165/4,	सा0 1/12/1
	कान्ह	प0	136,	131/10
	कालि	सा0	16/72/2	
	काल्हि	सा0	15/22/2,	2/12/2
	कुम्हार	सा0	12/1/2,	15/64/1

इस प्रकार कबोर ग्रन्थावली में पाए जाने वाले 29 व्यंजनों को मानक हिन्दो के सन्दर्भ में निम्नलिखित तालिका में व्यक्त किया जा सकता है ।

	द्वयोष्ठ्य	दन्त्य	वर्त्स्य	मूर्धन्य	तालव्य	कंठ्य	काकल्य
स्पर्श	प् ब फ् भ्	त् द थ् ध्		ट ड ठ ढ		क ग ख घ	
स्पर्श संघर्षी					च ज छ झ		
नासिक्य	म् (म्ह)		न् न्ह	ण्	(ञ)	(ङ)	
पार्श्विक			ल् (ल्ह)				
लुंठित			र				
उत्क्षिप्त				ड़ (ढ़)			
संघर्षी			स				ह
अर्द्धस्वर	व्				य्		

खंडेतरध्वनिग्राम :—

॥॥ अनुस्वार और अनुनासिकता :—

बास	सा0	9/23/2
बाँस	प0	144, सा0 22/8/2
अति	प0	15/11
अँति	प0	18/2
पड़ा	सा0	18/2, सा0 15/4/2
पंडा	प0	163/4 ॥पुजारी॥
खड़ा	प0	8/13
खंडा	प0	143/5
पख	सा0	17/2/2
पंख	प0	1/3

आंतरिक विवृत्ति :—

तिन्का ॥ सा0 2/50/2 = ॥घास॥

तिन + का॥ प0 80/5 = उनका सर्वनाम

जन्माहि ॥ सा0 15/6/1 = ॥जनम को॥

जन + माहिं ॥ ॥ जन्में ॥

अनुसार के निम्नलिखित छः संस्वन मिलते हैं।

(ङ) ङ॰ मिश्रित अनुनासिकता या कवर्गीय अनुनासिकता

यथा - कङ्ग्गन

पङ्॰कज   प0 30/3,

पङ्॰खं   प0 1/3

मिश्रित अनुनासिकता या चवर्गी अनुनासिकता

यथा— कं चन

चं चल

पं चे   सा0 15/61/1

पं जर   सा0 2/33/1

(ण्) ण् मिश्रित अनुनासिकता - यह मूर्धन्य अनुनासिकता है—

यथा - डण्डा   प0 62/6

डण्ड   प0 143/4

डण्डूल   सा0 25/14/1

पण्डित   प0 85/8

पण्डा   प0 163/4

(म्) म् मिश्रित अनुनासिकता - यह पवर्गीय अनुनासिकता है—

यथा - कुम्भ   प0 348

कुम्भक   प0 15/7

(न) न् मिश्रित अनुनासिकता - यह दन्त्य अनुनासिकता है -

यथा - धा   बन्धी   प0 2/31/1

(-ँ-) इसे शुद्ध अनुनासिकता कहा जा सकता है :—

यथा - नाम प0 20/6

राम प0 5/10

बान प0 121/4, 132/4

<u>संक्रामक अनुनासिकता</u> :—

मेंन्, म् के प्रभाव से उनके पूर्व ध्वनि अनुनासिक हो गया है।

<u>स्वर वितरण</u> :—

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐं, औ, और स्वर शब्द को प्राथमिक माध्यमिक और अन्तिम स्थितियों में प्राप्त है। 'ऋ' के अतिरिक्त अन्य स्वरों का वितरण निम्नलिखित है।

स्वर	प्राथमिक स्थिति		माध्यमिक स्थिति		अन्तिम स्थिति	
अ	अमर	प0 152/12	सुकटा	प0 9/4	जीव	प0 132/2
अं	अंक	सा0 4/20/2	अभ्यंतर	प0 130/9	भईंआ	प0 135/6
आ	आखर	सा0 28/6/1	गिआन	प0 133/9	भईंआ	प0 156/6
	आगम	प0 101/5	अगार	प0 2/53/1	अंगा	प0 79/5
आँ	आँधी	प0 52/5	छाऊँ	प0 2/6	बेरियाँ (बेलाएँ) प0 126/4	
इ	इह	प0 113/6	अँखियन	सा0 2/36/9	[illegible]	सा0 15/14
ई	ईन्दु	प0 14/9/6	किवाँरिय	25/1	जिहि	सा0 14/28

स्वर	प्राथमिक स्थिति	माध्यमिक स्थिति	अन्तिम स्थिति
ई	ईमान प0 172/4	अमीता प0 64/4	अढ़ाई प0 11/4
ईं	ईंधन सा0 31/28/1	ठींकूलो सा0 12/6/1	माँहीं प0 40/7
उ	उदर र 5/1	तरउवा प0 121/3	स्टोरउ सा04/2·2
उँ	उंदरो {जन्तुविशेष} प0 114/6	कुंवरो सा0 15/73/1	गाँउँप 41/1
ऊ	ऊसर सा0 22/7/2	तूमरिया सा0 20/5/1	जनेऊ र0 6/4
ऊँ	ऊंच प0 196/5	सूंघत प0 2/4	उनहूं प0 48/4
ए	एर र0 08/4	क्लेब प0 181/2	पढ़ाए प0 26/3
एँ	—	दहेंड़िया प0 131/7	लिएँ सा0 21/20
ऐ	ऐसा सा0 5/4/1	आवैगो प0 12/1	उंच्चै प0 122/1
ऐं	ऐंड़ो प0 73/2	भैंस प0 116/5	केसैं प0 120/1
ओ	ओट सा0 14/19/1	गोवरधन प0 165/8	संजमो प0 824
ओं	ओंरार 2/1/1	ठोंकि सा0 15/20/2	बड़ों सा0 15/68/
औ	औगढ़ सा016/27/2	भीजलचौं 37/2	माधौ प0 43/1
औं	औंधा सा0 9/38/1	कानै प0 158/5	सरसौं सा0 24/9/

स्वर-संयोग :—

कबीर ग्रन्थावली में दो से लेकर चार स्वरों तक का संयोग एक साथ मिलता है । इन स्वर-संयोगों में कहीं एक और कहीं दो निरनुनासिक स्वरों के भी प्रयोग हुए हैं । प्रस्तुत अध्ययन में इस प्रकार के उदाहरण भी निरनुनासिक स्वर-संयोगों के साथ दिए जा रहे हैं सम्पूर्ण कबीर

ग्रन्थावली में 75 प्रकार के स्वर संयोग मिलते हैं जिनमें चार स्वरों का एक उदाहरण मिलता है और वह शब्द की अन्तिम स्थिति में।

तीन स्वरों के अन्तिम स्थिति में मिलने वाले स्वर संयोग 16 हैं। दो स्वरों के संयोग प्राथमिक स्थिति में 3, माध्यमिक स्थिति में 20, तथा अन्तिम स्थिति में 35 स्वर संयोग हैं। इनका विवरण निम्नलिखित है।

चार स्वरों का स्वर संयोग अन्तिम स्थिति में :—

इ अ इ ए	पति अइए	प0 29/4

तीन स्वरों का संयोग अन्तिम स्थिति में :—

अइए	जइए	प0	123/4
अइऊ	पइई	प0	77/1
अईआ	भईआ	प0	135/6
आइए	बजाइए	सा0	1/5/2
आइवे	पाइवे	प0	173/1
इआइ	पतिआइ	सा0	7/10/1
इआउ	निआउ	प0	183/1
इआए	पीआए	प0	168/4

इएए	सेइए	प०	101/1
इएउ	किएउं	प०	11/3
आइए	रोइए	सा०	19/3/1
आइवे	रोइवे	प०	55/5
अइवा	समाइवा	सा०	7/3/1
अउआ	काउवा	प०	28/4
आइये	खाइये	प०	38/3

दो स्वरों का संयोग

प्राथमिक स्थिति में :—

अऊ	अऊत (पुत्रहीन)	सा०	4/38/2
आइ	आइया	सा०	10/13/1
आऊ	आऊंगा	प०	19/3/1

माध्यमिक स्थिति में :—

अइ	जइयों	प०	88/8
अउ	चउदै	प०	130/4
अउं	बउंगा	प०	178/4

आइ	पाइया	सा0	19/12/2
आइं	गुसाइंनि	प0	24/2
आइं	डाइंनि	प0	2/5
आई	जाईलि	प0	156/4
आउ	जुआऊर	प0	59/3
आउं	जाउंगा	प0	193/1
आए	कराएहु	प0	188/8
इअ	जिअत	प0	124/1
इआ	पखिआरो	प0	162/6
इआं	गिआंन	प0	133/9
इ उ	पिउरिया	प0	136/1
इउं	चिउंटी	सा0	10/8/1
इऊं	जिऊंगा	प0	193/1
इए	किएहु	प0	89/4
उअ	सुअरा	प0	11/4/6
उआ	सुआर (ग्वाल)	प0	188/7
एइ	लेइहै	सा0	21/12/2

अन्तिम स्थिति में :—

अइ	कह	प0	140/1
अइं	लहरइं	प0	36/5
अई	गई	सा0	16/34/2
अईं	इईं	प0	177/12
अउ	भूअउ	प0	190/5
अउं	उरउ	प0	135/3
अऊ	तऊ	प0	155/14
अऊं	तऊं [नवीं]	प0	69/2
अर	गर	सा0	30/12/1
अरं	पठरं	प0	53/5
आइ	उहराइ	सा0	10/8/1
आइं	काइं [क्यों]	सा0	30/6/2
आईं	ठाईं	सा0	4/4/1
आउ	आउ	प0	88/6
आउं	कराउं	सा0	8/12/2
आऊ	बटाऊ	सा0	14/3/2

आऊं	छुवाऊं	प०	160/8
जाऊं	पाऊं	सा०	2/24/2
इव	जिउ	प०	31/2
इआ	मिलिआ	सा०	25/19/1
ईआ	बीआ	प०	185/4
ईउ	जीउ	प०	187/3
उई	मुइ	प०	146/6
उए	मुए	सा०	31/12/2
अई	वई	सा०	31/2/2
ऊए	मूए	प०	85/7
एह	देह	प०	148/6
एई	तेई	सा०	31/12/2
औ आ	रौआ	प०	60/6
औउ	दौउ	र०	6/7
आए	खाए	सा०	18/37/1
आऊ	राऊं	सा०	21/14/1

व्यंजन ध्वनिग्राम वितरण :—

व्यंजनों शब्द के प्राथमिक, माध्यमिक, अन्तिम स्थितियों के वितरण नीचे दिए जा रहे हैं, लेकिन अन्तिम स्थिति में इन व्यंजनों की उपस्थिति बहुत निश्चित नहीं है क्योंकि कबीर-ग्रन्थावली की भाषा छन्दोबद्ध भाषा है जिसमें छंद पूर्ति के लिए ह्रस्व ध्वनियों को दीर्घ और दीर्घ ध्वनियों को ह्रस्व बनाए रखकर तुकबन्दी बैठाया गया है। कबीर-ग्रन्थावली में शब्दों के व्यंजनांत मान लेने पर छंद पूर्ति या भाषा पूर्ति सम्भव नहीं है। अतएव छंद को आधार मानकर यही मानना पड़ेगा कि कबीर ग्रन्थावली में शब्द के अन्त में व्यंजन की उपस्थिति नहीं मानी जा सकती है। शब्दों के स्वरान्त ही मानना पड़ेगा। इन व्यंजनों का विवरण निम्नलिखित किया जा रहा है :—

व्यंजन	आदिमस्थिति	माध्यमिक स्थिति	अन्तिमस्थिति
क	कबीर 1/11/2	कुकड़ी 183/7	एक प0 103/6
ख	खसम सा0 7/5/1	दुखार प0 9/5	मुख प0 165/8
ग	गहुचौ 19/2	मंगल प0 53/6	भंग र0 1/5
घ	घर प0 173/4	रघुनाथ प0 161/1	अघ प0 145/7
च	चरित र0 11/3	कौचा सा0 1/13/2	नीच प0 196/5
छ	छर प0 131/8	बछन प0 40/9	बछ र0 20/7

ड़	झल प० 134/8	जुझाउर प० 59/3	अबूझ सा० 14/6
ट	टकसार सा० 9/41/2	अटक प० 34/6	बाट चौ० 16/2
ठ	ठग प० 139/1	अटसठि प० 171/4	अठ प० 31/2
ड	य डर र० 18/1	नोडर सा० 30/24/1	खड प० 34/11
ढ़	ढ़ाँक सा० 4/1/1	ढंढोरता सा० 9/32/2	—
ड़	—	मुड़ाक्त सा० 25/29/1	मूड़ सा० 25/29/1
ढ़	—	चढ़ाई सा० 24/16/1	गढ़चौ० 19/2
ण	णांणा-चौ० 201	रणि चौ० 201	गुणं प० 133/4
त	तन सा० 13/50/2	पतित प० 205	आगत प० 73/3
थ	थौंथरा ला० 32/3/2	थौंथरा 32/3/2	नाथ प० 14/31
द	दिढ़ प० 10/10	पदारथ प० 45/6	भेद चौ० 29/2
ध	धौर प० 43/8	बधिक सा० 5/6/2	साध प० 44/5
न	निगार र० 11/7	निगार र० 11/6	निरगुन सा० 28/82
प	परम चौ० 10/2	पापी सा० 27/31	पाप 2011/2
फ	फल सा० 32/10/2	नफ सा० 6/10/1	—
ब	बालक प० 37/5	बबूर 131/3	स ब सा० 32/12/2

==

भ	भौजन 24/6/2	भक्त सा0 31/28/2	गरम र0 4/3
म	मन सा0 32/5/1	मुसलमान प0 128/10	भरम प0 50/4
य	युग सा0 21/26/1	दहेंडिया प0 131/6	माय प0 123/7
र	रामं सा0 33/6/1	सरग प0 19/4/2	समुन्दर सा0 227/1
ल	लहंग प0 87/7	लालच सा0 1/171	फल सा0 32/10/2
व	वार प0 133/10	भुवन चौ0 21/1	देव प0 94/5
ष	षट प0 80/3	औषद प0 8/3	विष सा0 5/121
स	सतगुरु सा0 1/31/1	ससुर प0 135/3	मानुष 16/21/1
ह	हहि प0 38/4	मौहिं प0 39/10	नेह सा0 22/141

व्यंजन संयोग

कबीर ग्रन्थावली में दो से लेकर तीन व्यंजनों का संयोग एक साथ मिलता है । ये संयोग प्राथमिक और माध्यमिक स्थितियों में ही मिलते हैं । अन्तिम स्थिति में व्यंजन संयोग मिलने का प्रश्न ही नहीं उठता क्योंकि, जब शब्दान्त संयुक्त व्यंजन में होता है तो उसके अन्त में अ स्वर वर्तमान रहता है, ऐसा माना गया है ।

दो व्यंजनों का संयोग :—

प्राथमिक स्थिति उस स्थिति में व्यंजन का क्रम व्यंजन + य, र, व और ह है।

व्यंजन + य

य के साथ प्राथमिक स्थिति में केवल क, ग, छ, ज, त, द, ध, न, प, ब, म और स के संयोग प्राप्त होते हैं :—

क् + य	क्वारो	सा०	29/11/2			
ग् + य	ग्यान	सा०	1/16/1			
छ् + य	छ्यानवे	सा०	66/4			
ज् + य	ज्यूं	प०	51/2			
त् + य	त्यागो	प०	94/4			
द् + य	द्यौस	सा०	15/38/2			
ध् + य	ध्यान	प०	56/23			
न् + य	न्याह	सा०	11/3/2			
प् + य	प्यारे	प०	15/10,	प्यास	प०	2/3
ब् + य	ब्याज	सा०	19/2	ब्यापक	प०	17/2
म् + य	म्याने	प०	87/6			
स् + य	स्यार	प०	120/5,	स्याम	प०	87/6

व्यंजन र के साथ — क, ग, त, द, ध, प, ब, भ, म, श, स और ह का संयोग हुआ है।

क् + र	क्रोध	र	17/4
ग् + र	गृह	प०	155/6
त् + र	त्रेता	प०	143/5
द् + र	द्रुगम	प०	130/3
ध् + र	ध्रिम	र०	17/8
प् + र	प्रभु	प०	26/7
ब् + र	ब्रत	सा०	26/6/1
भ् + र	भ्रम	प०	190/4
म् + र	म्रिग	प०	94/8
श् + र	श्री	प०	10/8
स् + र	स्त्री	प०	130/6
ह् + र	ह्रिदैं	प०	82/8

व्यंजन व के साथ क, ग, ज, द, स और ह का संयोग हुआ है।

क + व	क्वारी	प०	160/3
ग + व	ग्वालन	र०	3/4

ज् + व	ज्वाला	सा0	9/30/2
द् + व	द्वापर	प0	143/6
स् + व	स्वाति	सा0	9/18/1
ह् + व	ह्वैला	प0	166/6

<u>माध्यमिक स्थिति :—</u>

माध्यमिक स्थिति में लगभग सभी व्यंजनों का संयोग हुआ है। कबीर ग्रन्थावलो की चौंतीसी रमैनी में विभिन्न वर्णों के द्योतित करने के लिए जिस 'ककहरा' को योजना मिलती है उसमें व, र, व, श, ह और व्यंजन वर्गों के प्रथम तीन नासिक्य (ङ, ण) व्यंजनों को छोड़कर शेष समस्त व्यंजनों के द्वित्व मिल जाते हैं। य, श के लिए क्रमशः ज, स के द्वित्व प्रयुक्त हुए हैं। इसी प्रकार ङ और के लिए भी न का द्वित्व प्रयुक्त हुआ है। सा का ण हणा के रूप में उल्लेख हुआ है। इन द्वित्वों में क, ग, ज, ट, त, न, प, ल को छोड़कर शेष व्यंजनों के द्वित्वों का अन्यत्र उदाहरण नहीं मिलता।

कक्का	चा0	6/1
[illegible]	चौ0	7/1
[illegible]	चौ0	9/1

चच्चा	चौ0	11/1
छच्छा	चौ0	12/2
जज्जा	चौ0	32/1
झज्झा	चौ0	14/1
टट्टा	चौ0	16/1
ठठ्ठा	चौ0	17/1
डड्डा	चौ0	19/1
तत्ता	चौ0	21/1
थत्था	चौ0	22/1
दद्दा	चौ0	23/1
धद्धा	चौ0	26/1
नन्ना	चौ0	15/1
सस्सा	चौ0	36/1

जिन व्यंजनों के द्वित्व अलग भी प्राप्त हैं उनके उदाहरण नीचे दिए हैं :—

कलके	सा0	29/17/2
अग्नि	सा0	2/20/2

लज्जा	प०	985
हट्ट	सा०	1/15/2
मरम्म	सा०	2/35/2

द्वित्व के अतिरिक्त माध्यमिक स्थिति में व्यंजन संयोगों में अधिकतर व्यंजन क्रम व्यंजन + य मिलता है तथा शेष में व्यंजन + अन्य व्यंजन क्रम है ।

व्यंजन + य ये के साथ ख्, ग्, च, ज्, ट, ड, ढ्, ण, त, द, ध्, न्, प्, भ, र, ल्, स् और ह संयुक्त हुए हैं ।

ख् + य	देख्यौं	प०	109/7
ग् + य	ठग्यौ	चौ०	17/2
च् + य	रच्यौ	प०	10/3
ज् + य	तज्यौ	प०	12/1
त् + य	मृत्यु	र०	12/2
द् + य	विद्या	प०	155/14
प् + य	कौंप्यौ	प०	26/9
स् + य	डस्यौ	प०	36/5
ह् + य	कह्यौ	प०	83/2

व्यंजन + र के साथ क्, ग्, ज्, त्, द्, व्, स् संयुक्त।

क् + र	क्र	प०	80/3
ग् + र	नग्र	प०	144/4
ज् + र	वज्र	र०	18/1
त् + र	छत्र	प०	101/5
द् + र	मुद्रा	प०	172/3
व् + र	सौव्रन	सा०	33/7/2
श् + र	आश्रय		1/18/4

व्यंजन + व

त् + व	तत्व	सा०	16/14
व् + व	अव्वलि	प०	135/3
श् + व	वेश्वा	सा०	11/4/2

व्यंजन + ह तथा ह् + म --

म् + ह	कुम्हार	सा०	15/64/1
र् + ह	सिरहाने	सा०	15/1/1
न् + ह	कान्ह	सा०	15/10/1

अन्य व्यंजन + तवर्ग के साथ केवल क्, व् और स्।

क् + त	भक्ति	सा०	15/48/1
ब् + द	सब्द	सा०	18/10/2
स् + त	निस्तार	प०	45/4
स् + थ	अस्थान	सा०	9/21/1
स् + न	बिस्नु	प०	152/6

सवर्गीय {अल्पप्राण + महाप्राण} व्यंजन संयोग —

क् + ख	अक्खर	प०	31/5
च् + छ	मच्छ	र०	3/6
ज् + झ	तुज्झ	सा०	11/16/2
त् + थ	अत्थि	र०	17/11
द् + ध	मद्धिम	प०	18/2/5

र् + अन्य व्यंजन —

र् + प	सर्प	प०	120/4
र् + ब	गर्बसी	प०	97/3
र् + म	धर्म	सा०	15/33/1 मर्म प० 197/2

अन्य व्यंजन संयोग —

ष + ट	दृष्टि	प०	162/8 पिष्टि सा० 1/4/2

तीन व्यंजनों का संयोग --

कबीर ग्रन्थावली में तीन व्यंजनों के संयोग का उदाहरण बहुत कम है, उनका उल्लेख नीचे किया जा रहा है । ये संयोग केवल माध्यमिक स्थिति में प्राप्त है और उनका संयोग क्रम नासिक्य चिह्न [अनुस्वार] + सवर्गीय व्यंजन + य और र है ।

संच्यौ	प०	83/9
संग्रामहिं	प०	119/4
इन्द्री	प०	41/4
कंद्रप	प०	155/7
संग्रथ	प०	6/6/2
गंध्रब	प०	133/4

अक्षर - संरचना :--

कबीर ग्रन्थावली के लिखित रूप के आधार पर तत्कालीन भाषा की ध्वनि प्रकृति अथवा उसका उच्चरित स्वरूप बताना कठिन है, अतएव अक्षर संरचना के लिए जिन तत्वों का समावेश लिखित रूप में हो गया है उन्हीं को तत्कालीन भाषा के बोलचाल का रूप स्वीकार किया गया है । आधुनिकभाषा हिन्दी के सन्दर्भ में स्वर ध्वनि ग्रामों को शीर्ष मानकर निम्नलिखित रूप से अक्षर का स्वरूप निर्धारित किया जा सकता है ।

प्रस्तुत अध्ययन में स्वर के लिए अ तथा व्यंजन के लिए 'क' संकेत स्वीकार करके अक्षर संरचना किया जा रहा है।

कोई भी स्वर अक्षर-संरचना कर सकता है।

§ 1 § अ ई पद 105/1

अ सा० 30/3/2

औ र० 16/4

§ 2 § अ क कोई स्वर + व्यंजन

इक सा० 9/12/1

एक सा० 4/5/1

अक प० 31/2

§ 3 § क अ कोई व्यंजन + स्वर

जा सा० 21/7/2

जे सा० 1/7/2

जू सा० 15/31/2

वा प० 168/5

§4§ क व क व्यंजन + स्वर + व्यंजन

टेक पद 178/10

टोप पद 25/5

§5§ क क व संयुक्त व्यंजन + स्वर

क्या/रो सा० 29/11/2

ग्या/नी सा० 30/25/1

प्री/तम सा० 11/13/2

स्वा/रथ सा० 8/18/2

§6§ क क व क संयुक्त व्यंजन + स्वर + व्यंजन

स्याम पद 87/6

व्याज सा० 21/19/2

ध्यान पद 56/3

ग्यान सा० 1/16/1

कृत सा० 26/6/1

इस प्रकार कबीर ग्रन्थावली में एक शब्द में कम से कम एक अक्षर और अधिक चार अक्षरों का प्रयोग हुआ है।

<u>ध्वनि-परिवर्तन</u> :—

छन्दबद्ध भाषा में लय-प्रवाह के कारण, मात्रा पूर्ति अथवा तुक पूर्ति के लिए अनेक परिवर्तन हो जाते हैं। कबीर काव्य, कबीर ग्रन्थावली छंदबद्ध भाषा है, इसलिए इसमें परिवर्तन होना स्वाभाविक है। कबीर ग्रन्थावली में छन्दपूर्ति सम्बन्धी निम्नलिखित ध्वनि परिवर्तन दृष्टिगत होते हैं।

<u>ह्रस्व स्वर का दीर्घीकरण</u> :—

वेद	वेदा	र0	4/1
स्वाद	स्वादा	र0	4/1
फूल	फूला	र0	4/2
अकास	अकासा	र0	4/3
बास	बासा	र0	4/3
करतूत	करतूता	र0	6/1
बिंदु	बिन्दू	र0	4/1
अनाथ र	अनाथा	र0	1/6

<u>दीर्घ स्वर का ह्रस्वीकरण</u> :—

दोइ	दोइ	—	मन दौद पाप पुन्नि अधिकार2.
तेरी	तेरि	र0	11
कै	कै —	—	सुख के विरचि यह जगत उपाया

'ऋ' 'ॠ' कबीर ग्रन्थावली में निम्नलिखित ध्वनियों में रूपान्तरित हो गया था ।

ऋ - रि - रि - र - ह - ऋषि - रिखि - प० 165/5

हृदय - रिदा - प० 130/8

(सं०)	अमृत	-	अंम्रित	- र०	1/12
(सं०)	तृण	-	त्रिन	- प०	130/8
(सं०)	तृष्णा	-	त्रिसना	प०	6/5
(सं०)	ऋतु	-	रितु	प०	149/1
(सं०)	कृपा	-	क्रिपा	प०	4/5
- रै	गृह	-	ग्रेह	प०	10
- हर	हृदय	-	हिरदा	सा०	15/11/1
- हर	पृथवो	-पिरथी		प०	57
	दृढ़	-	दिढ़ि	प०	10
	वृक्ष	-	विरखि	प०	11
- ह					
- क	ऋतु	-	कति	प०	14/12
ऋ, ई	अमृत	-	अमी	प०	19/32

	नप्तृ	-	नाती	प0	99/2
इ	हृदय	-	हिय	र0	19/3
अ : आ:	नृत्यति	-	नाचै	प0	114/3
र	कृत	-	किय-आ	प0	1/10
इर	कृतिम	-	किरतिय	प0	2/6/3
	कृषाण	-	किरसान	प0	41/3
ई	मृत्यु	-	मींच	सा0	2/40/1
उ	मृत	-	मुआ	सा0	2/40, प0 46/6
	पृच्छ	-	पूँछ	प0	21/28/2
ए	गृ	-	गेह	प0	13/1

स्वर परिवर्तन :—

आदि स्वर :—

अ : अ	अक्षि	-	अक्खि	प0	21/4
	अक्षि	-	अखियां	प0	2/31/1
आ	आश्चर्य	-	अचरज	प0	133/3
ए	एक	-	इक	प0	37/4

मध्यम स्वर :--

अ > आ	मनुष्य	-	मानुख	र0	5
उ > आ	पुरुषोतम	-	परसोत्तम	प0	10/8
ई > इ	जीव	-	जिउ	र0	1/3
औ औ	यौवन	-	जौवन	र0	1/4

अन्त्य स्वर :--

आ >	वेदना	*	वेदनि	र0	12
व -	वाद	>	पाइ	प0	1/7
व > इ	भाव	>	भाइ	प0	8
इ > ई	अंगुलि	>	अंगुरी	सा0	25/7/1
अ > उ	ग्राम	-	गाँव ×गाउँ	[illegible]	[illegible]/1
अय: अइ - ऐ - परिचय×			परचै	र0	13
म > उ - नाम			नाउँ	प0	20

अर्द्ध स्वर :--

य × ज	युग	-	जुग	र0	1/1
	यौवन	-	जौवना	र0	1/4

	मर्यादा -	मरजादा	प०	16
	आचार्य -	आचारज	प०	90
य x े	पुण्य x	पुन्नि	प०	2/11
	प्रियतम -	प्रीतम	प०	6/2
	व्यापो -	बिआपो	प०	3/9
	अभ्यन्तर-	अभिअंतर	प०	49
य x ै, ०	व्यवहार-	बेवहार	र०	14
य x इ	रसायन -	रसाइन	प०	6
	व्यंजन -	बिंजना	प०	3/4
व्	विवर्जित -	विवरजित	र०	14
	विकास -	बिगास	र०चौ०	16
	वेदना -	बेदनि	र०	1/2
	विषय -	बिखै +	ई०प०	39
व x उ	जीव -	जिउ	र०	13
	द्वारा -	दुआर	प०	6/9
	महेश्वर -	महेसुर	प०	69
व x प	गंधर्व -	गंध्रप	र०	1/3

व्यंजन परिवर्तन :--

आदि व्यंजन :--

द x ड्	दिगम्बर	-	डिगम्बर	प0	16/1
प् x फ्	पुनः	-	फुनि	र0	1/8
र् x ल्	रज्जु	-	लेज्जु	प0	9/5
र् x र्	रश्मि	-	रसरि + इया	प0	170
व् x ब्	वृक्ष	-	बिरखि	र0	11
ज x ज	युग	-	जुग	र0	11
श x स	शाखा	-	साखा	र0	11
क्ष x खि	क्षण	-	खिन	र0	1/8
ज्ञ x ग्य	ज्ञान	-	ग्यान	र0	9/2

मध्य व्यंजन :--

क् x ग	उपकार + री	-	उपगारी	प0	13
	तर्क	-	बिगास	र0बौ0	6
	भक्ति	-	भगति	प0	40
ष् - ख्	ज्योतिष	-	जोतिख	प0	66

ण् x न्	तृष्णा	-	त्रिस्ना	प0	52
	गुण	-	गुन	र0	12
	चरण	-	चरन	र0	13
न् - व्	न्हावन	-	नावण	प0	84
	हनुमंत	-	हणवंत	प0	198
म् - व्	कमल	-	कँवल	र0चौ0	16
	गमन	-	गवन	प0	40

मध्य व्यंजन :--

र् x ता	सरिता	-	सलिता	प0	18
ल् x र्	जाल	-	जार	र0	18
	उज्ज्वलता	-	उजारा	र0चौ0	13
श् x स	दर्शन	-	दरसन	र0	14
श्र स्र	आश्रम	-	आस्रम	र0	14
श् x स	शौर्य	-	संस्रै	प0	16
ष् x स्	शीर्ष	-	सीस	प0	4/3
ष x स्	तर्कष	-	तर्गस	प0	4/5
क्ष x ख	अक्षि	-	अँखियाँ	प0	4/5

ज्ञ x 0	अज्ञात	-	अजाना	प0	10/6
ह् x भ	संहार	-	संभारे	र0	9/5
ष् x ख	संतोष	-	संतोखु	र0	9/5

<u>अन्त्य व्यंजन</u> :--

क् x ग	धिक	-	धिग	र0	17
ण् x न	पुणाम	-	परवान	प0	17/3
ण x न	गुण	-	गुन	र0	13
	चरण	-	चरन	र0	13
न x ण	स्नान	-	नाँवणु	प0	8/4
क्ष x ख	अलक्ष	-	अलख	र0	14
ल् x र	श्रमजाल	-	श्रमजार	र0	19
ल् x र	डाला	-	डारा	प0	152/2
र् x ल	डारा	-	डाला	प0	175/8
ट् x र	कपाट	-	किंवार	प0	45

<u>संयुक्त व्यंजन</u> :--

आदि-क्ष:छि	क्षण	-	छिन	र0	18
	क्षमा	-	छिमा	र0	7

मध्य – क्ष x क्ख	अक्षर	–	अक्खर	र0चौ0	1
ख	क्षीण	–	खीन	र0 चौ0	7
मध्य – स्त x थ	निरअस्ति–	निरथि		र0	17
	कायस्त	–	काइथ	प0	43
मध्य – द् द्	मत्सर	–	मंद्दर	प0	40/2
त्स x द्द	वत्सल	–	बद्दल	प0	40/3
आदि ज्ञ, ग्यं	ज्ञान	–	ग्यान	प0	40/4

समीकरण :–

	गुप्त	–	गुप्त	प0	2/4
अग्र स्वर समीकरण	अक्रूर	–	अकूर	प0	198/4
अग्र व्यंजन समीरण	पुण्य	–	पुन्नि	र0	11
अग्र व्यंजन समीरण	तत्त्व	–	तत्त	प0	1
पश्च व्यंजन समीरण	नलिनी	–	ललनी	प0	6/8

विपर्यय :–

व्यंजन 'र्' का एकांगी विपर्यय :–

	वक्राई	–	बुक्राई	र0	18
स्वर – अ x उ	अनुमान	–	उनमान	र0	19

स्वर – अ x इ	हरिद्र	–	हलदि	प0	10/9
अक्षर – द x ग	मुग्दर	–	मुदगर	प0	4

<u>स्वर भक्ति :—</u>

विपर्जित	–	विवरजित	र0	14
दर्शन	–	दरसन	र0	14
बृथा6	–	अतिरथा	र0	19
तर्कश	–	तरगस	प0	4/1
भक्ति	–	भगति	प0	40

<u>लोप :—</u>

मध्य व्यंजन लोप म0 भा0 आ0 की विशेषता है । कबीर ग्रन्थावली में इसका प्रचुर उदाहरण मिलता है :—

<u>मध्य व्यंजन :—</u>

य्	ज्योति	–	जोति	र0 चौ0	13
	मनुष्य	–	मानुख	र0	15
च्	लोचन	–	लोइन	प0	173
द्	नजदीक	–	नजीक	प0	17/3
र्	शीर्ष	–	सीस	प0	4

आदि स्वर लोप :—

आ + अहंकार - हंकार

हंकारा - र0 17

अक्षर - अवधूत, अवधू - प0 5/4

अनुनासिकता :—

रसायन	-	रसाइंन	-	प0	6
क्षीण	-	खीन	-	र0चौ0	7
कमल	-	कंवल	-	र0चौ0	7
अनुमान	-	उन्मौना	-	प0	

कबीर ग्रन्थावली में कहीं-कहीं अकारण अनुनासिकता का उदाहरण प्राप्त होता है।

अकारण - अनुनासिकता

मत्सर	-	मंछर	-	प0	40
साँच + आ - साँचा- सत्य	-	सच्चा			
अक्षि	-	आँख	-	प0	

आगम - आदि स्वर - वृथा - अविरथा - प० 3/1

मध्य स्वर - कपाट - किंवार - प० 45

मध्य स्वर - व्याधि - बिआधि - प० 2

अपिनिहित :--

आग्र आने वाली ध्वनि के कारण उसी के समान ध्वनि का आगमन अपिनिहित कहलाता है ।

यथा - यौनि - जोइनि - प० 17

विदेशी ध्वनियों का परिवर्तन :--

15वीं शताब्दी अर्थात कबीर के आविर्भाव काल में हिन्दी प्रदेश में अफगान वंशों का राज्य स्थित हो गया था । अरबी इस्लामों की धर्म-भाषा के रूप में सम्मानित थी - अरबी का सीधा प्रभाव भारतीय भाषाओं पर कम पड़ा । उच्च संस्कृति भाषा के रूप में फारसी भाषा-साहित्य का मुसलमानों में विशेष सम्मान था । अतएव अनेक अरबी शब्द फारसी भाषा के माध्यम से भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त होने लगे थे किन्तु जन सामान्य ने इन विदेशी ध्वनियों को अपनी मिलती-जुलती ध्वनियों में ढाल लिया था । कबीर-ग्रन्थावली में आए हुए विदेशी भाषाओं की ध्वनियों में निम्नलिखित परिवर्तन दृष्टिगत होते हैं :--

व्यंजन परिवर्तन:--

कहीं - फारसी - ग का लोप हो गया है और लुप्त व्यंजन के स्थान में 'अ' के पूर्व 'य्' श्रुति का आगमन हुआ है ।

(फारसी) ग् > 0 -	पैगम्बर -	पयंबर -	प0	16/5

कहीं फारसी तद् 'द्' का लोप हो गया है :--

(फारसी) द् > 0	नज़दीक	नजीक -	प0	42
(फारसी) द् > 0	दुरुस्त	दुरुस -	प0	42
(फारसी) ज् > 0	मस्जिद	मसीति-	प0	43

विदेशी स्वर परिवर्तन :--

फारसी, अरबी, तुर्की आदि मध्यकालीन भाषाओं की अधिकांश स्वर ध्वनियाँ कबीर ग्रन्थावली में ज्यों की त्यों प्रयुक्त हुई है ।

यथा - इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ (अइ) ओ, और (अउ) ध्वनि - ग्राम क्रमशः इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, रूप में पाए जाते है ।

उ उ - कुदरत - कुदरत - प0 15/7

0

(अध्याय 2-'ख')

नानक-ध्वनिग्रामिक अनुशीलन :--

वर्णग्रामिक विश्लेषण तथा बलाघात-सुराघात, मात्रा, तुक, ध्वनि, पद-वाक्य गठन के आधार पर नानक (ग्रन्थ साहब) में 41 ध्वनिग्रामों की स्थापना की जा सकती है । इनमें खंडीय तथा 1 खंडेतर ध्वनिग्राम है । खंडीय ध्वनिग्रामों के अंतर्गत 10 स्वर तथा 29 व्यंजन ध्वनिग्राम हैं क्योंकि ये ध्वनियाँ स्वनान्तर युग्म में आकर अर्थभेदक होती हैं अर्थात् समान ध्वन्यात्मक परिवेश में घटित होकर भी व्यतिरेकात्मक रहती हैं, इसलिए इन्हें ध्वनिग्रामों की संज्ञा दी जा सकती है ।

मूल स्वर :-- अ आ इ ई उ ऊ

ए (ए) ओ (ओ)

संयुक्त स्वर :-- ऐ (अ ए - अ इ)

औ (अ ओ - अ उ)

() के अन्तर्गत सह-ध्वनिग्राम अंकित किये गये हैं । उपर्युक्त ध्वनि-ग्रामों के सह-ध्वनियों की ध्वन्यात्मक प्रकृति, उच्चारण, स्थान, प्रयत्न, क्षेत्रीय प्रभाव के सम्बन्ध के निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता है कि उपर्युक्त स्वर अधिकांशतः रूप से आधुनिक मानक हिन्दी के समान है । अतएव आधुनिक हिन्दी के संदर्भ में इन स्वरों का मानचित्र में निम्नलिखित रूप से है :--
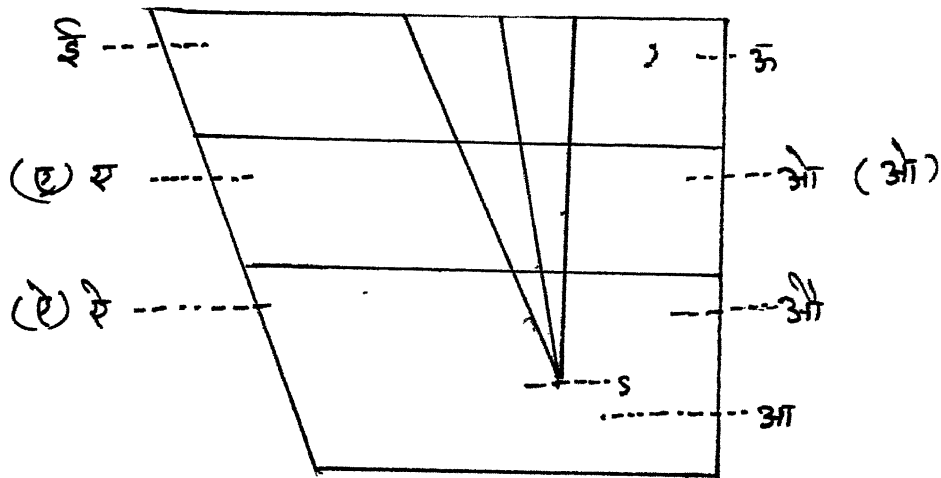
समान ध्वन्यात्मक परिवेश में घटित होने तथा व्यत्यास्तर युग्म में अर्थभेदकता के गुण से समन्वित होने के कारण उपर्युक्त स्वरों की ध्वनिग्रामिक स्थिति आधुनिक मानक हिन्दी में सहज सिद्ध हो जाती है। अन्य आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं में भी इनकी यही स्थिति है। अतएव ना० सा० में व्यत्यास्तर युग्मों के दृष्टान्त देकर इनकी ध्वनिग्रामिक स्थापना की विशेष आवश्यकता प्रतीत नहीं होती है। ना० दे में (ग्रंथ साहब) महत्व-। के अनुसार गौण ध्वनिग्राम के रूप में पाये जाते हैं। इनकी स्थापना व्यत्यास्तर युग्मों के आधार पर सिद्ध होती है।

व्यंजन ध्वनिग्राम :--

ना० दे में (ग्रन्थ साहब) व्यत्यास्तर युग्मों के आधार पर 29 व्यंजन ध्वनिग्रामों की स्थापना की जा सकती है। इन व्यंजन ध्वनियों का विवरण निम्नलिखित है :--

स्पर्श :—

क ख ग घ

ट ठ ड ढ

त थ द ध

प फ ब भ

स्पर्श संघर्षी —

च छ ज झ

अनुनासिक :—

(ङ) (ञ) ण न (न्ह) म (म्ह)

पार्श्विक — ल (ल्ह)

लुंठित — र

उत्क्षिप्त — (ड़) (ढ़)

संघर्षी — (श) (ष) स ह

अर्द्ध स्वर — य व

व्यंजन ध्वनिग्रामों का विश्लेषण करने से यह ज्ञात होता है कि उपर्युक्त तालिका में अधिकांश वही व्यंजन ध्वनिग्राम हैं जो ना0 दे0 के (ग्रं0 सा0 में) पूर्व संस्कृत, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश में वर्तमान थे। इसमें ब के पश्चात् की ङ ध्वनिग्रामिक स्थिति स्पष्ट नहीं प्रतीत होती। अधिकांशतः इन वर्णग्रामों के स्थान पर अनुस्वार प्रयुक्त हुआ है। परन्तु फिर भी ये ध्वनियाँ संस्वन के रूप में अपना स्थान बनाये हुए हैं क वर्ग के पूर्व न (ङ) संस्वन के रूप में और च वर्ग के पूर्व न ( ) संस्वन के रूप में सुनाई पड़ता है। यद्यपि (ग्रंथ साहब) ' ' वर्णग्राम विरल रूप में स्वतंत्र वर्णग्राम के रूप में प्राप्त होता है। जैसे सुंञ (ग्रं0 सा0)58/1/8 ञ्नण्दा ग्रं0 सा0 74/5/2 किन्तु यह दोनों संस्वन ध्वनि केवल माध्यमिक स्थिति में प्रयुक्त होते हैं। आदिम और अंतिम स्थिति में ये ध्वनियाँ नहीं मिलती हैं। इसलिए ङ तथा ध्वनियाँ ध्वनिग्राम न मानकर के संस्वन के रूप में ही स्वीकार की गयी है।

यथा — रंग - र ङ ग ग्रं0 सा0 42/5/7।

इसी प्रकार स्वमात्तर युग्म में व्यतिरेकात्मक रूप से ण की स्थिति के सब ध्वनिग्राम के रूप में है। किन्तु कहीं-कहीं 'न' और 'ण' मुक्त परिवर्तन की स्थिति में है।

नानक देव साहब के ग्रंथ में अंतस्थ 'य' ध्वनि आदि, मध्य, अंतिम तीनों स्थिति में मिलती है किन्तु (ग्रंथ साहब) के मध्य। में

'य' ध्वनि नहीं है। इसके स्थान पर 'इ आ' 'उ' स्वर का प्रयोग किया गया है और वह भी मध्यम तथा अंतिम स्थिति में ही। अतः 'य' की स्थिति बहुत निश्चित नहीं है। सम्भवतः गुरुमुखी लिपि में 'य' वर्णग्राम विकसित न हुआ रहा हो, क्योंकि आज भी पंजाबी में 'य' ध्वनि उच्चरित तो होती है किन्तु लिपि में नहीं है।

तालव्य श तथा मूर्धन्य ष ध्वनिग्राम की स्थिति पाली-प्राकृत-अपभ्रंश में ही लुप्त हो चुकी थी। अतएव इसे 'स' लिपि ग्राम का सहलिपि ग्राम मानकर 'स' के एक संस्वन का बोधक स्वीकार करना चाहिए। क्योंकि 'स' ध्वनि तालव्य ध्वनियों के पूर्व 'श' तथा मूर्धन्य ध्वनियों के पूर्व 'ष' ध्वनि स्वतः सुनाई पड़ती है।

इसमें ड का एक नया संस्वन ड़ और ढ का एक नया संस्वन ढ़ विकसित हो गया था। न, म, ल के महाप्राण रूप क्रमशः न्ह, ल्ह, न्र ध्वनिग्रामों के रूप में विकसित हो गये थे। न्ह आदि, मध्य अंतिम तीनों स्थिति में प्रयुक्त होता था किन्तु म्ह, ल्ह की ध्वनि ग्रामिक स्थिति बहुत स्पष्ट नहीं है। इस प्रकार इसमें पाये जाने वाले शेष 29 व्यंजनों को आधुनिक मानक हिन्दी के संदर्भ में निम्नलिखित तालिका में व्यक्त किया जा सकता है।

कहीं-कहीं ब लिपि ग्राम ख लिपिग्राम के सहलिपिग्राम के रूप में प्रयुक्त हुआ है ।

	द्वयोष्ठ्य	दन्त्य	वर्त्स्य	मूर्धन्य	तालव्य	कंठ्य	काकल्य
स्पर्श	प् ब	त् द्		ट ड		क् ग्	
	फ् भ्	थ् ध्		ठ ढ		ख् घ	
स्पर्श संघर्षी				च	च् ज्		
					छ् झ्		
नासिक्य	म् (म्ह)		न्, न्ह	ण्		(ङ)	
पार्श्विक			ल (ल्ह)				
लुंठित			र्				
उत्क्षिप्त				(ड़) (ढ़)			
संघर्षी			स	(ष)	(श)		ह्
अर्द्धस्वर	व्				य्		

खंडेतर ध्वनि ग्राम :--

ये ध्वनिग्राम मूलखंडीय ध्वनिग्रामों के ऊपर एक अतिरिक्त परत की तरह प्रयुक्त होते हैं ।

ना० सा० में (ग्र०सा०) अनुस्वार जहाँ एक ही ध्वन्यात्मक परिवेश में आने पर व्यतिरेकात्मक होकर अर्थभेदक होते हैं वहीं उन्हें एक ध्वनिग्राम की संज्ञा दी जाएगी अन्यथा नहीं। क्योंकि यह कभी ध्वनिग्रामिक होता है कभी नहीं।

अनुस्वार के निम्नलिखित छः संस्वन मिलते हैं :—

(ङ) ङ मिश्रित अनुनासिकता जिसे कवर्गीय अनुनासिकता कहा जा सकता है —

र ङ्ग - ग्र० सा० 42/5/7।

( ) मिश्रित अनुनासिकता - यह चवर्गीय अनुनासिकता है—

(ण) ण् मिश्रित अनुनासिकता - यह मूर्धन्य अनुनासिकता है—

(न्) न् मिश्रित अनुनासिकता - यह दन्त्य अनुनासिकता है—

(म्) म् मिश्रित अनुनासिकता - यह पवर्गीय अनुनासिकता है—

(ं) यह शुद्ध अनुनासिकता है, जो उपर्युक्त ध्वन्यात्मक परिवेश के अतिरिक्त घटित होती है —

क्रमिक अनुनासिकता:--

परवर्ती न् म् के प्रभाव से उनके पूर्व की ध्वनि अनुनासिक हो जाती है--

आ - ग्रं० सा० 23/1/24

स्वरध्वनिग्राम - वितरण :--

उपर्युक्त खण्डीय स्वर ध्वनिग्राम में शब्द की आदि, मध्य और अन्त तीनों स्थितियों में मिलते हैं। संध्वनियों सहित इनकी उपस्थिति के उदाहरण निम्नलिखित हैं :--

स्वर ध्वनिग्राम	संध्वनि	आदि सन्दर्भ	मध्य सन्दर्भ	अन्त सन्दर्भ
अ	अं	अंहकार-ग्रं०सा० 42/5/71	पकृदा-ग्रं०सा०, 40/4/67	जीव : ग्रं०सा०
		अंधा - ग्रं०सा०	पंखी - ग्रं०सा० 14/[illegible]/2	
आ	आ	आपस-ग्रं० सा० 474/2/1[22]	ब्वाणा-ग्रं०सा० 47/2/5[22]	बाबां-ग्रं०सा० 16/1/4
	आँ			हीडियां-ग्रं०सा०

	आदि	मध्य	अन्त
इं		गोइंद-ग्रं0सा0 44/5/77	
ई		तीरथ-ग्रं0सा0 17/1/8	सखाई-ग्र0सा0 94/4/1
उ		भुज-ग्रं0सा0 43/5/75	पृथु -ग्रं0सा0 43/5/73
ऊ		कूड़-ग्रं0 सा0 15/1/5	दारू-ग्रं0सा0 466/2/2
ए	ए -एक-ग्रंसा0 15/1/3	अनेक-ग्रं0सा0 47/5/85	करे-ग्रं0सा0 83/5/73
ऐ	ऐ- ऐसे ग्रं0सा0 414/1/6	हैवर-ग्रं0सा0 42/5/71	एकै ग्रं0सा0- 18/1/12
औ	औ-औइ-ग्रं0सा0 41/4/69	कौई-ग्रं0सा0 15/1/3	जौ0 ग्र0सा0 15/1/4

उपर्युक्त उदरणों के विवेचन से निष्कर्षतः कह सकते हैं :—

(1) अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, औ, —में से प्रत्येक स्वर के कम से कम 2 सह ध्वनिग्राम अवश्य मिलते हैं। एक तो निरनुनासिक और दूसरा, सानुनासिक रूप। दोनों एक दूसरे के परिपूरक रूप में आये हैं, क्योंकि दोनों कहीं भी एक ही ध्वन्यात्मक परिवेश में नहीं आत। केवल कुछ ही स्थल हैं जहाँ दोनों एक ही ध्वन्यात्मक परिवेश में आकर व्यत्यान्तर युग्म का निर्माण करते हैं और अर्थभेदक का लक्षण सुरक्षित रखते हैं। ऐसे स्थलों में अनुस्वार एक खंडेतर ध्वनिग्राम के रूप में माना जायेगा।

यथा — अँति - अति, सँत - सत आदि।

(2) ए, ओ में से प्रत्येक का एक तीसरा सहध्वनिग्राम ए, ओ भी मिलता है जिसकी स्थापना लिपिग्रामिक गठन से तो सम्भव नही किन्तु दोहा में छन्द की मात्रा गणना तथा तुक के सहारे इनकी सहध्वनिग्रामिक स्थापना की जा सकती है। ये स्वर न तो आरम्भिक थे और न इनके सानुनासिक रूप ही मिलते हैं।

ए, ओ को व्यक्त करने के लिए कोई लिपिग्राम या सह लिपिग्राम नहीं मिलता है। प्रकृति से ये दोनों स्वर दीर्घ स्वर हैं। छंद शास्त्र के अनुसार इनको दो मात्राएं निर्धारित हैं, किन्तु सोलहवीं शताब्दी खड़ीबोली में कहीं-कहीं शब्द के मध्य में इन्हें ह्रस्व मानने से ही छन्द पूर्ति होती है। अतएव यह अनुमान लगाया जा सकता है कि शब्द के आदि और मध्य में ह्रस्व ए और ओ उच्चरित होते थे।

(3) <u>मूल स्वर के रूप में ऋ का उच्चारण :-</u>

नानक देव (गुरु ग्रन्थ साहब) में पूर्व ही प्राकृत और अपभ्रंश काल में ही लुप्त हो गया था। ऋ वर्ण ग्राम भी नहीं मिलता, केवल इसके सहवर्णग्राम ही मिलता है, जैसे-भृंगी, मृतक। इस प्रकार कुछ विरल शब्दों में मात्रा के रूप में ही इस स्वर की कल्पना की जा सकती है। अन्यथा इस स्वर का उच्चारण रि या इर् में परिवर्तित हो गया था।

(4) ऐ (वै) औ —

आधुनिक हिन्दी में ये दोनों स्वर संयुक्त स्वर (अए, अओ) के रूप में उच्चरित होते हैं। इसमें दोनों स्वरों के बोधक लिपिग्राम ऐ (वै) औ और संहलिपि ग्राम ै, ौ मिलते हैं। अनुमानतः इसमें उच्चारण संयुक्त स्वर के रूप में प्रयुक्त होते थे। किन्तु निश्चय पूर्वक नहीं कहा जा सकता।

व्यंजन-वितरण :—

नानक देव के (गुरुग्रन्थ साहब) में निम्नलिखित समस्त व्यंजन ध्वनिग्राम शब्द या अक्षर का आदि और माध्यमिक स्थिति में निश्चयात्मक रूप से वर्तमान हैं। अन्तिम स्थिति में इन व्यंजनों की उपस्थिति बहुत निश्चित नहीं है क्योंकि उस समय की भाषा छंद बद्ध भाषा है जिसमें छंद पूर्ति संभव नहीं है। अतएव छन्दों को आधार मानकर हमें यही कहना पड़ेगा कि शब्द के अन्त में व्यंजन की उपस्थिति नहीं मानी जा सकती है। 'ग्रन्थसाहब' महल। में अधिकतर शब्द इकारान्त अथवा उकारान्त हैं। व्यंजनान्त (अकारान्त) शब्दों की मात्रा बहुत कम है। जन सामान्य में उस समय भाषा स्वरान्त थी अथवा व्यंजनान्त नहीं कहा जा सकता, फिर भी भाषा के अनुशीलन से यह कहा जा सकता है कि उस समय भाषा स्वरान्त से व्यंजनान्त की ओर उन्मुख थी। अतएव यहाँ हम अकारान्त शब्दों में उपान्त में आने वाले व्यंजनों का विवरण प्रस्तुत कर देना उपयुक्त समझते हैं।

व्यंजन	संस्वन	आदि स्थिति	माध्यमिक स्थिति	अन्तिम स्थि
क्	क्	कस्तूरी ग्रं०सा० 14/1/1	लोक ग्रं०सा०474/2/4[22]	ठाक ग्रं०s 42/4/7
ख	ख	खसम ग्रं०सा० 474/2/1[22]	पंखी ग्रं०सा०14/1/2	भूख ग्रं०सा० 43/5
ग	ग	गोइंद ग्रं०सा० 44/5/75	कुंगु ग्रं०सा० 14/1/1	रंग ग्रं०सा० 42/5/71
घ	घ			
च	च	चंडाल ग्रं०सा० 40/4/66		इछ ग्रं०सा०168/17/
छ	छ			
ज	ज	जग ग्रं०सा० 42/5/71		काज ग्रं०सा० 43/5/74
झ	झ			बूझ ग्रं०सा० 55/1/4
ट	ट			
ठ	ठ	ठाक		

ठ	ठ		चंठाल ग्रं०सा० 4/4/66	पंठ ग्रं०सा० 15/1/3
ड़	ड़		पड़दा ग्रं०सा० 40/4/67	गुड़ ग्रं०सा० 165/4/43
			कूड़ौ ग्रं०सा० 474/2/3[22]	कूड़ ग्रांर० 165/4/43
ढ	ढ			
ढ़	ढ़			
त	त	तरकस ग्रं०सा० 16/1/7	दाति ग्रं०सा० 474/2/1[23]	दात ग्रं०सा० 43/5/74
थ	थ	थाह ग्रं०सा० 474/2/2		रथ ग्रं०सा० 42/5/71
द	द	दाति ग्रं०सा० 474/2/1[23]	पड़दा ग्रं०सा० 40/4/67	
ध	ध	धमाती ग्रं०सा० 42/5/72	साधु ग्रं०सा० 164/4/40	[illegible] ग्रं०सा० 42/5/71

प	प	पुत्र ग्रं०सा० 42/5/71	धनपाती ग्रं०सा० 42/5/71	कलम ग्रं०सा० 18/1/11
फ	फ			
ब	ब	बाबा ग्रं०सा० 16/1/5	बेवाणि ग्रं०सा० 43/5/73	साहिब ग्रं०सा० 17/1/9
भ	भ	भुइ ग्रं०सा० 43/5/75	प्रभु ग्रं०सा० 43/5/73	प्रभ ग्रं०सा० 40/4/65
ण	ण		श्रणा ग्रं०सा० 15/1/3	प्राण ग्रं०सा० 94/4/1
न	न	नाउ ग्रं०सा० 14/1/1	नानक ग्रं०सा० 42/5/71	मन ग्रं०सा० 15/1/4
	ङ		रंग ग्रं०सा० 42/5/71	
			वं T ग्रं०सा० 23/1/24	
न्ह	न्ह		इकन्हा ग्रं०सा० 463/2/3	
म	म	मणा ग्रं०सा० 15/1/3	सुआमी ग्रं०सा० 95/4/6	करम ग्रं०सा० 15/1/4

म्ह	म्ह			
य	य			
र	र	रंग	हरि	सीगार
		ग्रं०सा० 42/5/71	ग्रं०सा० 39/4/65	ग्रं०सा० 42/5/71
ल	ल	लस्कर	कलप	परमल
		ग्रं०सा० 14/1/1	ग्रं०सा० 10/1/11	ग्रं०सा० 14/1/4
ल्ह	ल्ह		कान्है	
			ग्रं०सा० 463/1/2	
व	व	वडारू	गौविंद	सैव
		ग्रं०सा० 474/2/4[22]	ग्रं०सा० 95/4/6	ग्रं०सा० 43/5/75
स	स	सुहना	कस्तूरि	रस
		ग्रं०सा० 42/5/71	ग्रं०सा० 14/1/1	ग्रं०सा० 15/1/4
ह	ह	हरि	अहंकार	मोह
		ग्रं०सा० 39/4/65	ग्रं०सा० 42/5/71	ग्रं०सा० 47/5/83

स्वर ग्राम क्रम :—

(स्वर संयोग या स्वर क्रम या स्वर गुच्छ) :—

जब दो या दो से अधिक स्वर एक हो अनुक्रम में इस प्रकार घटित हों कि उनके मध्य एक अल्प विवृत्ति के अतिरिक्त अन्य ध्वनि न हो तो ऐसे संयोग को स्वर संयोग को संज्ञा दो जाती है। इसमें 4 स्वर एक साथ प्रयुक्त हुए हैं। इन स्वर संयोगों का विवरण निम्नलिखित है :—

4 स्वरों का स्वर संयोग :—

अन्तिम स्थिति

इ	आ	ई	आ	-चंगिआईना	ग्रं0सा0	56/1/6
इ	आ	र	आ	विआइआ	ग्रं0सा0	72/1/1
इ	आ	इ	औ	हरिआइऔ	ग्रं0सा0	206/5/127
इ	आ	ई	ऐ	विआईऐ	ग्रं0सा0	265/[illegible]/2
उ	आ	ई	आ	सुआइआ	ग्रं0सा0	72/1/1
औ	आ	इ	आ	जौ आइ आ	ग्रं0सा0	73/5/2

3 स्वरों के स्वर संयोग :—

	आदि स्थिति	मध्य स्थिति
अ इ आ		नअअनु ग्रं0सा0 74/3/2

	आदि स्थिति	मध्य स्थिति	अन्तिम स्थिति
इ आ		पइअलि ग्रं०सा० 71/1/1	गइआ ग्रं०सा० 28/1/8
			गइआ ग्रं०सा० 29/1/10
इ ऐ			पइऐ ग्रं०सा० 59/1/10
इ आ			रमईआ ग्रं०सा० 262/5/5
उ आ	आइआ ग्रं०सा० 61/1/13		गउआ ग्रं०सा० 62/1/14
			माइआ ग्रं०सा० 15/1/3
			काइआ ग्रं०सा० 71/5/26
ई आ	आईआ ग्रं०सा० 54/1/2		कलाईआ ग्रं०सा० 15/1/3
			भाईआ ग्रं०सा० 70/5/26

==

आ उ आ		पधाउआ ग्रं0सा0 57/1/6
आ ई ऐ		समझाईऐ ग्रं0सा0 15/1/3
इ आ इ	छिआइदा ग्रं0सा0 73/5/2	छिआइ ग्रं0सा0 57/1/8
इ आ उ		अपिआउ ग्रं0सा0 14/1/2
ई अ उ		जालिअ ग्रं0सा0 54/1/2
ई आ इ		पतीआइ ग्रं0सा0 60/1/11
उ आ उ		सुआउ ग्रं0सा0 58/1/8
ए ई अ		पेईअड़े ग्रं0सा0 63/1/16
ए ई ऐ		पेईऐ ग्रं0सा0 56/1/5

==

दो स्वरों का स्वर संयोग :--

अ + आ			
अ + इ			
अ + ई			आबई ग्रं0सा0 14/1/2
अ + उ	अउसऊ ग्रं0सा0 74/5/5	सउण ग्रं0सा0 14/1/2	हउ ग्रं0सा0 14/1/2
		पउदा ग्रं0सा0 95/4/5	जान्उ ग्रं0सा0 71/5/27
अ + ऊ			आवऊ ग्रं0सा0 15/1/2
अ + ए			गए ग्रं0सा0 57/2/7
आ + इ			थाइ ग्रं0सा0 14/1/2
आ + ई			लाई ग्रं0सा0 14/1/1
आ + उ	आउ ग्रं0 सा0 14/1/1		जड़ाउ ग्रं0सा0 /1/1

==

आ + ऊ			बटाऊ ग्रं०सा० 61/1/13
आ + ए			पाए ग्रं०सा० 16/1/5
		इछि अहा ग्रं०सा० 72/1/1	
इ + आ		पिवाऊ ग्रं०सा० 54/1/2	देखिवा ग्रं०सा० 14/1/1 धरिवा ग्रं०सा० 71/5/26
इ + उ	[illegible] ग्रं०सा० 54/12		सिउ ग्रं०सा० 15/1/3
इ + ऐ			बाँमिरे ग्रं०सा० 15/1/4
इ + ओ			चलिबो ग्रं०सा० 15/1/3
ई + अ		पीवहु ग्रं०सा० 14/1/2	जीव ग्रं०सा० 14/1/2

इ + आ	हरोवाकला ग्रं०सा० 59/1/10	कटीवा ग्रं०सा० 14/1/2
ई + इ		जीइ ग्रं०सा० 72/1/1
ई + उ		जीउ ग्रं०सा० 14/1/1
ई + ए		सुनीए ग्रं०सा० 54/1/2 कीए ग्रं०सा० 265/4/3
ई + ऐ		भीजिऐ ग्रं०सा० 15/1/4
उ + आ	सुआन्हि ग्रं०सा 15/1/4	
उ + इ	सुइना ग्रं०सा० 15/1/4	दुइ ग्रं०सा० 14/1/2
उ + ई		

==

उ + ए　　　　　　　　　　　　　　　　　　मुए
　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　ग्रं०सा० 55/1/4

ऊ + आ　　　　　　　　　　　　　　　　　　मनुआ
　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　ग्रं०सा० 58/1/9

ए + इ　　　　　　　　　　　　　　　　　　चूरेइ
　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　ग्रं०सा० 56/1/5

ए + ई

औ + अ　　　　　　　　　　　　　　　　　　मौअ
　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　ग्रं०सा० 74/5/2

औ + इ　　　　　　　　　　　　　　　　　　होइ
　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　ग्रं०सा० 14/1/1

औ + ई　　　　　　　　　　　　　　　　　　होई
　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　ग्रं०सा० 74/5/2

औ + ऊ

औ + ए　　　　　　　　　　　　　　　　　　होए
　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　ग्रं०सा० 70/5/16

औ + ऐ

संयुक्त व्यंजन या व्यंजन संयोग या व्यंजन गुच्छ :--

जब दो या दो से अधिक व्यंजन ध्वनिग्राम एक ही अनुक्रम में इस प्रकार संयुक्त हों कि उनके मध्य में कोई स्वर न हो तो उसे संयुक्त व्यंजन या व्यंजन गुच्छ की संज्ञा दी जाती है। इसमें कम से कम दो और अधिक से अधिक तीन व्यंजनों का संयोग मिलता है। तीन व्यंजनों के केवल 3 उदाहरण मिलते हैं :--

लुंठित + ओष्ठ्य + अर्द्धस्वर

लुंठित + दन्त्य + अर्द्धस्वर

अर्द्धस्वर + संघर्षी + अर्द्धस्वर

व्यंजन संयोग मानक हिन्दी की भाँति आदि मध्य स्थिति में ही मिलते हैं। व्यंजन गुच्छों को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है :--

1:-- एक रूप या सम वर्गीय व्यंजन संयोग

2:-- भिन्न रूप या भिन्न वर्गीय व्यंजन संयोग

जब एक ही व्यंजन ध्वनिग्राम दो बार या एक ही अनुक्रम में आ जाता है तब ऐसे गुच्छ को व्यंजन द्वित्व की भी संज्ञा दी जाती है। द्वित्व व्यंजनों के सम्बन्ध में यह कहा जा सकता है कि इनमें

एक ही व्यंजन का दो बार उच्चारण नहीं होता बल्कि एक ही व्यंजन की मध्य की स्थिति या अवरोध की स्थिति प्रलम्बित या दीर्घ हो जाती है। प्रथम अर्थात स्पर्श और अन्तिम (उन्मोचन) में कोई अन्तर नहीं आता है। महाप्राणों का इस प्रकार द्वित्व सम्भव नहीं है। उनमें से प्रथम का उच्चारण अल्पप्राण सम होगा- अतएव ख ख, घ घ, छ छ - उच्चारण में क्ख, ग्घ, च्छ सुनाई पड़ेगा।[1] नानक देव (गुरु ग्रन्थ साहब) में निम्नलिखित व्यंजन द्वित्व मिलते हैं:—

<u>स्पर्शी व्यंजन द्वित्व</u>

क् + क

ग् + ग

प् + प

त् + त

द् + द

ब् + ब

ड् + ड

स्पर्श संघर्षी द्वित्व

च् + च

ज् + ज

अनुनासिक व्यंजन द्वित्व

न् + न्

पार्श्विक व्यंजन द्वित्व

अर्द्धस्वर द्वित्व

भिन्न व्यंजन संयोग :—

जब भिन्न-भिन्न व्यंजन ध्वनिग्राम एक ही अनुक्रम में संयुक्त होते हैं।

आदि स्थिति में व्यंजन संयोग :—

इनमें आरम्भिक स्थिति में व्यंजन संयोगों के विवेचन से ज्ञात होता है कि संयोग के द्वितीय सदस्य के रूप में अधिकांशतः य, व, र आते हैं।

व्यंजन + य्

क् + य्

ख् + य्

<u>व्यंजन + य्</u>

घ् + य्

[ङ]

च् + य्

छ् + य्

ज् + य्

झ् + य्

ट् + य्

ठ् + य्

ड् + य्

ढ् + य्

ण् + य्

त् + य्

थ् + य्

द् + य्

ध् + य्

न् + य्

प् + य्

ब् + य्

भ् + य्

म् + य्

र् + य्

ल् + य्

व् + य्

स् + य्

ह् + य्

<u>व्यंजन + व्</u>

त् + व्

द् + व्

र् + व्

श् + व्

स् + व्

<u>व्यंजन + र्</u>

ब् + र्

घ् + र्

त् + र्

द् + र्

प् + र्

म् + र्

व् + र्

श् + र्

अल्पप्राण + महाप्राण

क् + ख्

ग् + घ्

ट + ठ

त + थ

लुंठित + व्यंजन

र् + क्

र् + ग्

र् + ब्

र् + च्

र् + ज्

र् + त्

र् + थ्

र् + द्

र् + ध्

र् + न्

र् + फ्

र् + ब्

र् + भ्

र् + म्

र् + य्

र् + ल्

र् + व्

र् + श्

र् + ष्

र् + स्

संघर्षी + कंठ्य

स् + क्

संघर्षी + दन्त्य

श् + त्

स् + त्

स् + थ्

संघर्षी + नासिक्य

ष् + ण्

श् + न्

अन्य व्यंजन संयोग

क् + त्

क् + स्

क् + ष्

ग् + ध्

ग् + न्

त् + न्

त् + स्

द् + ध्

द् + भ्

ब् + द्

प् + त्

ब् + द्

ब् + ध्

म् + ब्

म् + ह्

ल् + प्

ल् + ह्

ह् + म्

अक्षर :—

अक्षर एक या अनेक ध्वनियों की वह पूर्ण लघुत्तम इकाई है जिसका उच्चारण श्वास के एक झटके या आघात में हो सके। एक अक्षर में मुखरता गह्वर ( ) से युक्त या रहित एक शीर्ष होना अनिवार्य है। कुछ अपवादों को छोड़कर व्यावहारिक दृष्टि से किसी शब्द में जितने स्वर होते हैं उतने शीर्ष होते हैं। अतएव उतने ही अक्षर होते हैं। प्रत्यक्ष उच्चरित रूप नहीं अपितु लिखित रूप हमारे समक्ष आता है। अतएव अक्षर संरचना का पूर्ण वैज्ञानिक विवेचन कुछ कठिन प्रतीत होता है। फिर भी आधुनिक मानक हिन्दी के सन्दर्भ में स्वर ध्वनिग्रामों को शीर्ष मानकर निम्नलिखित रूप में अक्षर का स्वरूप निर्धारित हो सकता है।

स – स्वर   व – व्यंजन

केवल एक स्वर ध्वनिग्राम एक अक्षर का निर्माण कर सकता है। यथा :---

– स –   – आ/पस   ग्रं0 सा0 474/2/122

– ए/कू   ग्रं0 सा0 15/1/3

– औ/ह   ग्रं0 सा0 41/4/69

उपर्युक्त शब्दावली में '–' से चिह्नित केवल एक स्वर से ही एक अक्षर का निर्माण हुआ है।

अपवाद स्वरूप ह्रस्व तर अथवा जपित स्वर इ, उ आक्षरिक नहीं होते हैं।

यथा :—

होइ
0

कोइ
0

नेइ
0

(2)   स व –   स्वर-व्यंजन

(3)   व स –

बी/सउ – ग्रं0 सा0 17/1/8

(4) व स व

अ/नेह - ग्रं० सा० 47/5/85

(5) व व स

प्र/भु - ग्रं० सा० 43/5/73

<u>संधि प्रक्रिया</u> :—

दो भिन्न पदग्रामों के एक ही अनुक्रम में आने पर प्रथम पदग्राम के अन्तिम तथा द्वितीय पदग्राम के संयोग को अथवा समस्त यौगिक पदग्राम को जिस परिवर्तित ध्वनिग्रामात्मक रूप से अभिव्यक्त किया जाता है उसे आधुनिक भाषा विज्ञानी और प्राचीन भारतीय वैयाकरण "सन्धि" की संज्ञा देते हैं। नानक देव के गुरुग्रन्थ साहब में पदग्रामिक संरचना में 3 स्थितियों में वह संयोग संभव है :—

(क) मुक्त पदग्राम - व्युत्पादक प्रत्यय

(ख) मुक्त पदग्राम - विभक्ति मूलक प्रत्यय

(ग) मुक्त पदग्राम - मुक्त पदग्राम

व्युत्पादक पूर्व प्रत्यय (उपसर्ग) + मुक्त पदग्राम

अन + हद अनहद - ग्रं० सा० 42/7/70 ('अ' स्वरागम)

- छंदपूर्ति से प्रतिबंधित

वि + सम विसम - ग्रं० सा० 51/5/97 (व स व)

मुक्त पद्ग्राम + व्युत्पादक पर प्रत्यय

ध्वन्यात्मक रूप से प्रतिबंधि

पिआर + ए पिआरे- ग्रं०सा० 51-5-97 - अन्तिम स्वर लोप

चाकर + ई चाकरी- ग्रं०सा० 474/2/1[22]- अन्तिम स्वर लोप

बहुत + एरा बहुतेरा-ग्रं०सा० 24/4/2/1[22]-अन्तिम स्वर लोप

छगा + एरिया छगेरोआ-ग्रं०सा०-47/4/2/1[22] " " "

अहंकार + ईआ अहंकारी आ - ग्रं०सा० 42/5/7। " " "

प्रतिपदिकों के साथ, इया, आरो, वा, इल, आर, आरो आदि व्युत्पादक पर प्रत्यय जुड़ने पर प्रातिपदिकों के प्रथम अक्षर में निम्न-लिखित परिवर्तन आ जाता है:-

आ अ

ई, ए इ

गाँव + आर गंवार - ग्रं०सा० 42/5/7।

अकर्मक मूल धातु से सकर्मक धातु बनाने में विभक्तिमूलक पर प्रत्यय लगने के पूर्व धातु में ही निम्नलिखित परिवर्तन हो जाता है। ऐसी स्थिति में शून्य प्रत्यय की कल्पना की जा सकती है।

इ ए अ आ ऊ ओ

मर् + 0 मार - ग्रं0 सा0 48/5/85

रख् + 0 राख - ग्रं0सा0 168/4/51

मिल + 0 मेल - ग्रं0सा0 164/4/40

बिध् + बेध - ग्रं0सा0 40/4/67

हु + 0 हौ - ग्रं0सा0 41/4/69

मूल धातु में प्रथम प्रेरणार्थक बोधक पर प्रत्यय आ अथवा द्वितीय प्रेरणार्थक बोधक पर प्रत्यय वा के जुड़ने से निम्नलिखित ध्वन्यात्मक परिवर्तन हो जाता है। व स व क्रम वसि एकाक्षरी क्रिया प्रातिपदिक में प्रेरणार्थक प्रत्यय के पूर्व ए इ, ओ उ, ऊ उ, आ अ हो जाता है।

पूछ् + आ - पुछा - ग्रं0सा0 39/4/65

<u>मुक्त पदग्राम + विभक्तिमूलक प्रत्यय</u>

<u>संज्ञा विभक्ति प्रत्यय</u> <u>बहुवचन प्रत्यय</u>

बहुवचन बोधक ए, ए प्रत्यय के योग में आकारान्त प्रातिपदिक अकारान्त या व्यंजनान्त हो जाते हैं :—

पड़दा - ग्रं0 साहब 43/4/67

पाछुा - ग्रं0 साहब 43/5/74

बावा - नानक देव "24"

ईकारान्त संज्ञा प्रातिपादिक में बहुवचन बोधक आ प्रत्यय लगने से अंतिम दीर्घ ई ह्रस्व और आ के स्थान में या श्रुति का आगमन होता है :--

पंखी - ग्रं०सा० 14/1/2

सखाई - ग्रं०सा० 84/4/10

मुक्त पदग्राम + लिंग विभक्ति :--

आकारान्त प्रातिपदिक स्त्रीलिंग बोधक 'ई' प्रत्यय के पूर्व व्यंजनान्त हो जाते हैं।

ईकारान्त प्रातिपदिक स्त्रीलिंग बोधक - नी प्रत्यय लगने के पूर्व व्यंजनान्त हो जाता है।

क्रियापदग्राम + विभक्ति मूलक प्रत्यय

क्रिया प्रातिपदिक में भूतनिश्चयार्थ - इआ प्रत्यय के संयोग से अंतिम प्रत्यय को य् श्रुति का आगम —

ले इआ लोआ - ग्रं०सा० 42/4/70 [प्रातिपदिक का का अन्तिम ए इ]

दे इआ दोआ - ग्रं०सा० 43/5/74

एकारान्त धातु में भूतकालिक विभक्ति - आ प्रत्यय के पूर्व ए इ हो जाता है और प्रत्यय आ के पूर्व य् श्रुति का आगम

ई, आकारन्त धातु में विभक्ति आ, औ, ए लगने के पूर्व य् या व् का आगम होता है —

लिखा आ लिखिआ - ग्रं०सा० 45/5/80

या आ पावा - ग्रं०सा० 40/4/67

मुक्त पदग्राम + मुक्त पदग्राम

पुनरुक्त पदग्राम

कौटि + कौटि कौटि कौटी - ग्रं०सा० 14/1/2

आठ + सठि अठसठि - ग्रं०सा० 17/1/8

सात + नौ सत्तानवे - ग्रं०सा० 723/1/5

एक ही शब्द के अन्तर्गत दो ध्वनियों के पास आने पर संधि प्रक्रिया :---

---x---

---: अध्याय-3 ---

पद - विचार

कबीर-प्रत्यय प्रक्रिया :—

प्रत्यय प्रक्रिया किसी भाषा के पदात्मक गठन का महत्वपूर्ण अंग है। 'प्रत्यय' वह पद ग्राम है जो ध्वन्यात्मक और व्याकरणिक दृष्टि से उस पदग्राम के ऊपर निर्भर रहता है जिसमें वह जुड़ता है अर्थात प्रत्यय वह आबद्ध पदग्राम है जो सामान्यत: स्वतन्त्र रूप से सार्थक नहीं होता है। प्रत्यय की स्वतन्त्र अर्थवान सत्ता नहीं है। वह मुक्त पदग्राम से जुड़ कर उसके अर्थ को परिवर्तित करता है — इस प्रकार दूसरे पदग्राम से आबद्ध होने पर ही वह सार्थक होता है। यही कारण है कि स्वतन्त्र अर्थ की दृष्टि से प्रत्यय अमूर्त कहा जाता है।

कार्य व्यापार की दृष्टि से प्रत्यय प्रभुत्वत: दो प्रकार के होते हैं :—

1:— व्युत्पादक प्रत्यय

2:— विभक्ति प्रत्यय

1:— व्युत्पादक प्रत्यय :—

वह प्रत्यय है जो किसी धातु अथवा प्रातिपदिक के पूर्व या पश्चात् सम्बद्ध होकर दूसरी धातु तथा प्रातिपदिक का निर्माण करते

2:— विभक्ति प्रत्यय :—

वह प्रत्यय है जो किसी प्रातिपदिक के अन्त में जुड़कर व्याकरणिक रूप को प्रकट करते हैं। विभक्ति प्रत्यय के बाद फिर कोई प्रत्यय नहीं जुड़ता अतएव इन प्रत्ययों को चरम प्रत्यय कहा जा सकता है। व्युत्पादक प्रत्ययों के आगे विभक्ति प्रत्यय तो आ सकते हैं, किन्तु विभक्ति प्रत्यय के बाद व्युत्पादक प्रत्यय नहीं आ सकते हैं।

व्युत्पादक प्रत्यय {पूर्व प्रत्यय या उपसर्ग}

कबीर ग्रन्थावली में तत्सम, तद्भव, देसी तथा विदेशी 4 प्रकार के उपसर्ग प्रयुक्त हुए हैं जिनका विवेचन निम्न है :—

{अ} निषेधसूचक, तत्सम उपसर्ग

अ + गम = अगम सा0 9/5/1

अ + गोचर = अगोचर सा0 9/5/1

अ + लख = अलख र0 37/2

अ + लेख = अलेख सा0 9/10/1-2

अ + जाणि = अजाणि सा0 4/6/1

अन—निषेधसूचक, तत्सम उपसर्ग

अन् + ब्यावर= अनब्यावर सा0 13/3/1

अन् + कीया = अनकीया सा0 8/4/1

निर् — निषेधसूचक, तत्सम, उपसर्ग

निर + बैरी - निरबैरी सा0 4/25/1

निर + बल - निरबल सा0 25/17/2

निस — निषेधसूचक, तत्सम, उपसर्ग

निस + प्रेही - निस्प्रेही

निह — निषेधसूचक - तत्सम उपसर्ग

निह + कामना - निहकामना सा0 4/24/1

बि — निषेधसूचक - तद्भव उपसर्ग

बि + सुधा - बिसुधा सा0 27/5/12

बि + गंध - बिगंध र0 27/3/2

सहित अर्थ द्योतक, तत्सम प्रत्यय

स + काम - सकाम 15/49/1

स + नाथ - सनाथ र0 3/1

सु — श्रेष्ठता - अर्थद्योतक तत्सम उपसर्ग

सु + [illegible] - [illegible] बी0र0 1

सु + [illegible] - [illegible] सा0 4/[illegible]/1

अ — हीनता अर्थ द्योतक, तत्सम, उपसर्ग

अ + वादहिं - अवादहिं प0 40

अ + रोगी - अरोगी प0 161

औ अ — हीनता अर्थ द्योतक तद्भव उपसर्ग

औ + घट - औघट चौ0र0 9

कु — हीनता, अर्थद्योतक, तत्सम उपसर्ग

कु + संग - कुसंगी चौ0 29/18/1

कु + बुधि - कुबुधि प0 24/4

दु — हीनता द्योतक, तत्सम उपसर्ग

दु + चिते - दुचिते प0 42

दुर — हीनता द्योतक तत्सम, उपसर्ग

दुर + मति - दुरमति 4/22/2

दुर + आचारी - दुराचारी 15/73/2

[illegible] पूर्णता बोधक तद्भव उपसर्ग

[illegible] + पूर - [illegible]पूरो र0 13/5

अर	+	पूर	-	अरपूरि	प० 30/3
अर	+	पूर	-	अरपूरा	प० 102/6

ऊ

ऊ	+	अर	-	ऊअर	प० 9/50

<u>प्र (तत्सम) विशेषता बोधक, तत्सम उपसर्ग</u>

प्र	+	वीन	-	प्रवीन । - वा प्रवीना -	प० 78/[illegible]
प्र	+	हारी	-	प्रहारी	र० 7/6

<u>ना -- निषेध सूचक, विदेशी उपसर्ग</u>

ना	+	काम	-	नाकाम	प० 183

<u>सन्, सं -- सहित बोधक, तत्सम उपसर्ग</u>

सं	+	ताप	-	संताप	49/4
सं	+	तोष	-	संतोष	प० 17/4

<u>बे -- निषेध सूचक, विदेशी उपसर्ग</u>

बे	+	सवारि	-	बेसवारि	प० 67
बे	+	हद	-	बेहद	र० 6/1

दर -- निषेध सूचक, विदेशी उपसर्ग

प्रति -- विलोम बोधक, उपसर्ग

प्रति + बिंब - प्रतिबिंब प० 132/9

पर -- प्र बोधक उपसर्ग

पर + जला - परजला सा० 2/42/1

पर -- अपर अन्यताबोधक उपसर्ग

पर + नारी - परनारी प० 30/2/1

व्युत्पादक पर प्रत्यय :--

ये प्रत्यय किसी संज्ञा, विशेषण तथा क्रिया प्रातिपदिक में जुड़कर अन्य संज्ञा, विशेषण और क्रिया प्रातिपदिक का निर्माण करते हैं। कबीर ग्रन्थावली में ऐतिहासिक दृष्टिकोण से 4 प्रकार के प्रत्यय मिलते हैं -- तत्सम, तद्भव, देसी तथा विदेशी।

संज्ञा परप्रत्यय :--

आ [तद्०प्र०] सर्वनाम + आ -- आप + आ = आपा 15/75/1

ई [तद्भव] विशेषण + ई भला + ई = भलाई - र० 7/5

संज्ञा + ई साँ + ई = साँई - सा० 4/2/1

क्रिया + ई - करना + ई = करनी सा० 8/3/1

विशेषण + ई - परेशान + ई = परेशानी प० 87

संज्ञा + ई - दलाल + ई = दलाली प० 87

आई (तद्भव) विशेषण + आई कुर + आई = कुराई र० 29/2

संज्ञा + ई दुनिया + आई = दुनियाई

इया (तद्भव संज्ञा + ई - बढ़ा + इया = बढ़ाइया - 22/8/2

ता (तद्भव) विशेषण + ता - सीतल = सीतलता - 4/2/2

पन (तद्भव) विशेषण + पन - बढ़ा + पना = बढ़ापना 22/1/1

पनौ (तद्भव) सर्वनाम + पनौ आ + पनौ = आपनौ 21/24/2

पौ (तद्भव) सर्वनाम + पौ = आपनपौ 23/7/1

एरा (तद्भव) क्रिया + एरा = अन्धेरा प० 89/7

अन (तद्भव) क्रिया + अन्दाम्र = अनि = दाम्रनि 21/32/2

वन (तद्भव) क्रिया + वन देख + वन = दिखावन 1/13/2

औरो (तद्भव) संज्ञा + औरीठग + औरो = ठगौरी प० 49

आर -- संज्ञा प्रातिपदिक में जुड़कर अन्य संज्ञा प्रातिपदिक का निर्माण होता है। जिससे कार्य करने वाला, स्थान का रहने वाले आदि का बोध होता है।

संज्ञा + आर - लोह + आर = लुहार 1/30/1

आरो {तद्भव} भीख + आरो = भिखारो प0 157/2

संज्ञा + ना चाँद + ना = चाँदिना प0 9/8/1

+ नो चाँद + नो = चाँदिनो

विशेषण बोधक प्रत्यय :--

ई {तद्भव} संज्ञा + ई - प्रहार + ई = प्रहारी र0 76

विशेषण + ई हजार + ई = हजारी 4/34/1

संज्ञा + ई प्रकास + ई = प्रकासी 1/16/1

वंत {तद्भव} संज्ञा + वंत -तिषा + वंत = तिषावंत 12/3/2

वंती {तद्भव} संज्ञा + वंती- गुन + वंती = गुनवंती

इत {तत्सम} संज्ञा + इत लुंच + इत = लुंचित प0 101

वांछा + इत = वांछित पु0 47

इया {तद्भव} संज्ञा + इया दुख + इया = दुखिया प0 13

इल {देशी} संज्ञा + इल हठ + इल = हठिल प0 16

आउर {तद्भव} जूझ + आउर = जुझाउर प0 49

एरा विशेषण + एरा बहुत + एरा = बहुतेरा र0 14

एरी विशेषण + एरी घन + एरी = घनेरी 15/6/2

वा {तद्भव} संज्ञा + वा = नटवा र0 11

वा {तद्भव} संज्ञा + वा = हरिवा प0 32

सवा {तद्भव} + सवा = सौनासवाँ 15/25/2

सम {तद्भव} + सम = रससम 12/2/1

समान {तत्सम} + समान = उदिकसमान 17/1/2

सरोखे {तद्भव} सर्व० + सरोखे = आपसरोखे 4/1/2

सारिख {तद्भव} संज्ञा + सारिख = रामसारिख र० 6

रूप {तत्सम} संज्ञा + रूप = नीररूप 27/1/1

रूपो {तद्भव} + रूपो = पावकरूपो 29/13/1

वारा {तद्भव} = मतिवारा [illegible] 56

हारा {तद्भव} + क्रिया + हारा = मारनहारा 2/24/2

गर {विदेशी} सिकली + गर = सिकलीगर 18/1

लघुतावाचक संज्ञा

इया {तद्भव} विशेषण + इया बावरी + इया > बावरिया 84/

संज्ञा + इया [illegible] + इया > [illegible] 4/3/31

संज्ञा + इया बहु + र् + इया बहुरिया प० 11

[illegible] + र् + इया [illegible]रिया प० 15

ई {तद्भव} + ई = छपरा + ई > छपरी - 4/37/2

ऊ (तद्भव) + ऊ = नैन + ऊ > नैनू - प० 41

वि० + ऊ = नकटा + ऊ > नकटू - प० 41

संज्ञा + ऊ रसना + ऊ > रसनू - प० 41

रा (तद्भव) संज्ञा + रा जिय + रा > जियरा - 2/32/2

री (तद्भव) संज्ञा + री नोद + री > नोदरी - 4/15/2

ड़ा (तद्भव) संज्ञा + ड़ा चुहा + ड़ा > चुहाड़ा प० 65

ड़े (तद्भव) संज्ञा + ड़े मुह + ड़े = मुहड़े 21/1/1

ड़ी (तद्भव) + ड़ी खिर + कड़ी = खिरकड़ी 4/32/2

धनुह + ड़ी = धनुहड़ी 13/3/2

क (तद्भव) + क कीट + क = कीटक प० 1

संज्ञा बोधक प्रत्यय क्रिया में लगाकर किसी अन्य संज्ञा प्राति-पदिक का निर्माण :—

औना (तद्भव) क्रिया + औना खेल + औना = खिलौना

प० 189/2

ऐना (तद्भव) क्रिया + ऐना [illegible] + ऐना = [illegible]

सा० 16/26/2

इया (तद्भव) क्रिया + इया जड़ + इया = जड़िया 15/35/1

1:-- अन्य विशेषण तथा क्रिया प्रातिपदिकों के निर्माण करने वाले प्रत्ययों का विवेचन तथा स्थान दिया गया है ।

2:-- विभक्ति मूलक प्रत्ययों का विवेचन संज्ञा, सर्वनाम विशेषण, क्रिया आदि के साथ व्याकरणिक कोटियों के रूप में यथा-स्थान किया गया है ।

00000000
0000
00

—: अध्याय 3ख

पद विचार

नामिक-प्रत्यय प्रक्रिया :—

प्रत्यय सामान्यतः वह पदग्राम है जो अर्थवान पदग्रामों से संयुक्त होकर ही सार्थक होता है । अर्थात् प्रत्यय की स्वतंत्र अर्थवान सत्ता नहीं होती है, अतः यह आबद्ध पदग्राम है । किन्तु यह भाषा के पदात्मक गठन का वह महत्वपूर्ण अंग है जिसके सम्बद्ध होने से अर्थवान पदग्रामों के अर्थ में परिवर्तन हो जाता है । प्रत्यय प्रमुखतः दो प्रकार के होते हैं :—

1:— व्युत्पादक प्रत्यय:—

वह प्रत्यय है जो किसी धातु अथवा प्रातिपदिक के पूर्व या पश्चात् सम्बद्ध होकर दूसरी धातु तथा प्रातिपदिक का निर्माण करता है ।

2:— विभक्ति प्रत्यय :—

वह प्रत्यय है जो किसी प्रातिपदिक के अन्त में जुड़कर व्याकरणिक सम्बन्ध को प्रकट करता है । विभक्ति प्रत्यय के पूर्व व्युत्पादक प्रत्यय तो आ सकता है किन्तु विभक्ति प्रत्यय के बाद व्युत्पादक प्रत्यय नहीं आ सकता । अतः इसे चरम प्रत्यय भी कहा जा सकता

<u>व्युत्पादक प्रत्यय :—</u>

नानकदेव (ग्रन्थ साहब में) प्रयुक्त तत्सम, तद्भव, देशी तथा विदेशी उपसर्गों का विवेचन निम्नलिखित है :—

अ — निषेध सूचक, तत्सम

अ	+	जाण	-	अजाण	ग्रं०सा० 15/1/4
अ	+	पार	-	अपार	ग्रं०सा० 42/5/71
अ	+	गिआन	-	अगिआन	ग्रं०सा० 40/4/67

निर् — निषेध सूचक, तत्सम

निर्	+	मला	-	निरमला	ग्रं०सा० 17/1/9
निर्	+	भउ	-	निरभउ	ग्रं०सा० 18/1/11
निर्	+	मला	-	निरमला	ग्रं०सा० 44/5/77
निर्	+	मल	-	निरमल	ग्रं०सा० 40/4/66

अन् — निषेध सूचक, तत्सम

अन्	+	हद	-	अनहद	ग्रं०सा० 42/4/70
					ग्रं०सा० 263/5/1

निह — निषेध सूचक, तत्सम

निह	+	कलु	-	निहकलु	ग्रं०सा० 44/5/75

नि -- निषेध सूचक, तुच्छता बोधक, तत्सम

नि + माणो - निमाणो ग्रं०सा० 41/4/68

स -- सहित अर्थ द्योतक, तत्सम

स + धारु - सधारु ग्रं०सा० 166/4/46

स + कलु - सकलु ग्रं०सा० 53/5/100

सन् -- सहित अर्थ द्योतक, तत्सम

दुर् -- हीनता द्योतक, तत्सम

बौ -- [illegible] अर्थ द्योतक, तद्भव

सु-- श्रेष्ठता अर्थ द्योतक तत्सम

सु + रिद - सुरिद ग्रं०सा० 42/5/71

नी -- निषेध सूचक, तद्भव

सू -- पूर्णता बोधक तद्भव

अन -- निषेध सूचक, तद्भव

जं — जं + जाल - जंजाल ग्र०सा० 52/5/98

सा - सा + जन - साजन ग्र०सा० 52/5/98

वि- निषेध सूचक, तत्सम

वि - निषेध सूचक तद्भव

बि + खमु - बिखमु ग्र०सा० 51/5/97

भर — पूर्णता बोधक, तद्भव

भर + पुरि - भरपुरि ग्र०सा० 25/1/31

अवि - निषेध सूचक

पार— पार + जातु - पारजातु ग्र०सा० 52/5/99

दु — हीनता द्योतक, तत्सम

दु + सट - दुसट ग्र०सा० 23/1/26

सह — सहित अर्थ द्योतक

कु — हीनता अर्थ द्योतक, तत्सम

सै — सहित अर्थ द्योतक

अव — हीनता सूचक

अउ + गुणवन्ती - अउगुणवंती ग्रं०सा० 17/1/9

अव + गण - अवगण ग्रं०सा० 43/5/75

अव + गुण - अवगुण ग्रं०सा० 167/4/49

ना — निषेध सूचक, विदेशी उपसर्ग

ना + पाक - नापाक ग्रं०सा० 42/5/71

ह — निषेधसूचक

ह + दुरि - हदुरि ग्रं०सा० 20/1/16

ह + दुरि - हदुरि ग्रं०सा० 48/5/86

बे — निषेध सूचक {विदेशी उपसर्ग}

बे + परवाह - बेपरवाह ग्रं०सा० 18/1/11

बे + परवाह - बेपरवाह ग्रं०सा० 41/4/69

बे + मुहताज - बेमुहताज ग्रं०सा० 51/5/98

ना — निषेध सूचक {विदेशी}

हर — पूर्णता बोधक, विदेशी उपसर्ग

पर + अन्यताबोधक

पर + उपकारोआ - परउपकारोआ ग्रं०सा० 96/4/7

पर + कक - परकक ग्रं०सा० 24/1/29

<u>व्युत्पादक पर प्रत्यय</u>

वे प्रत्यय किसो संज्ञा, विशेषण तथा क्रिया प्रातिपदिक में संयुक्त होकर अन्य संज्ञा विशेषण और क्रियाप्रातिपदिकों का निर्माण करते हैं। नानक के [गुरु ग्रन्थ साहब में] निम्नलिखित तत्सम, तद्भव, देशी तथा विदेशी प्रत्यय प्राप्त होते हैं :—

<u>संज्ञाबोधक :—</u>

आ — तद्भव

इया — तद्भव

वि + या - सीखी + इया = सीखीआ
ग्रं०सा० 18/1/12

संज्ञा + इया - परउपकार + इआ = परउपकारोआ
ग्रं०सा० 96/4/7

अनि — तद्भव

आरो — तद्भव

आई — तद्भव

विशेषण + आई - चतुर + आई = चतुराई ग्रं०सा० 25/1/30

ला - ग्रं०सा० 166/4/46

ए संज्ञा + ए - पिआर + ए = पिआरै ग्रं०सा० 51/5/97

ई {तद्भव}

संज्ञा + ई - मोहण + ई = मोहणी ग्रं०सा० 14/1/1

संज्ञा + ई - चाकर + ई = चाकरी ग्रं०सा० 474/2/1[22]

संज्ञा + ई - साहब + ई = साहबी ग्रं०सा० 42/5/72

वि० + ई - सउदागर + ई = सउदागरी ग्रं०सा० 166/4/47

पा — तद्भव

संज्ञा + पा + सिआण + पा = सिआणपा ग्रं०सा० 51/5/94

आगल

संज्ञा + आगल - [illegible] + आगल + ई = [illegible]

ग्रं०सा० [illegible]

[illegible] —

इक — तत्सम

क्रिया + इक - जाच + इक = जाचिक ग्रं०सा० 42/4/70

<u>विशेषण बोधक पर प्रत्यय</u>

वंत (तद्भव)

वि० + वंतु - सील + वंतु = सीलवंतु ग्रं०सा० 47/5/83

वंती (तद्भव)

संज्ञा + वंती - गुण + वंती = गुणवंती ग्रं०सा० 17/1/9

संज्ञा + वंती - गुण + वंती = गुणवंती ग्रं०सा० 49/5/88

वंता (तद्भव)

सा० + वंता - गुण + वंता = गुणवंता ग्रं०सा० 167/4/49

ल

संज्ञा + ल - दइआ + ल + इ = दइआलि ग्रं०सा० 95/8/5

संज्ञा + ल - किरपा + ल —किरपाल ग्रं०सा० 52/5/97

संज्ञा + ल - दइआ + ल - उ - दइआलु ग्रं०सा० 52/5/98

एरा —

विशेषण + एरा - बहुत + एरा - बहुतेरा ग्रं०सा० 24/1/28

ई —

संज्ञा + ई - बड़भाग + ई - बड़भागी ग्रं०सा० 40/4/66

संज्ञा + ई - निमाण + ई - निमाणी ग्रं०सा० 41/4/68

एरोवा —

विशेषण + एरोवा - छग + एरोवा - छगेरोवा ग्रं०सा० 474/2/1[22]

कारो —

संज्ञा + कारी - आज्ञा + कारी - आज्ञाकारी

संज्ञा + कारी - गुण + कारी - इवा - गुणकारीवा

ग्रं०सा० 40/4/67

अवकारीवा ग्रं०सा० 42/5/71

आर —

संज्ञा + आर - गांव + आर - गंवार ग्रं०सा० 42/5/71

गर - (विदेशी)

संज्ञा + गर - सउदा + गर - सउदागर ग्रं०सा० 166/4/47

लघुवाचक

ऊ वा —

म + ऊ वा — मघुवा - ग्रं०सा० 170/4/59

1- अन्यविशेषण तथा क्रिया प्रातिपदिकों के निर्माण करने वाले प्रत्ययों का विवेचन तथा स्थान दिया गया है ।

2- विभक्ति मूलक प्रत्ययों का विवेचन संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया आदि के साथ व्याकरणिक कोटियों के रूप में यथा स्थान किया गया है ।

———×———

:::===अध्याय4-'क'===:::

'कबीर'

===}} संज्ञा प्रातिपदिक }}===

कबीर ग्रंथावली में अन्य प्रातिपदिकों की अपेक्षा संज्ञा प्राति-पदिकों की संख्या बहुत अधिक है। संज्ञा प्रातिपदिक व्यंजनांत और स्वरान्त दोनों प्रकार के मिलते हैं तथा मूल और व्युत्पन्न रूपों में प्राप्त हैं। यद्यपि कबीर ग्रन्थावली छन्दबद्ध रचना होने के कारण यह कहना कठिन है कि शब्द व्यंजनान्त ही है, किन्तु जैसा कि माना गया है कि, आधुनिक आर्य भाषाओं के प्रवृत्ति के अनुसार अन्त्य व्यंजन }अ स्वर युक्त} को व्यंजनान्त माना गया है, परन्तु जहाँ संयुक्त रूप में व्यंजन आए हैं वहाँ अ की उपस्थिति स्वीकार करते हुए उन्हें स्वरान्त माना गया है।

रूपग्रामिक संरचना की दृष्टि से कबीर-ग्रन्थावली में दो प्रकार के संज्ञा प्रातिपदिक मिलते हैं।

1:- मूल संज्ञा :-

जिसमें कोई संज्ञावाचक व्युत्पन्न प्रत्यय नहीं जुड़ता।

2:- व्युत्पन्न संज्ञा प्रातिपदिक :-

जिनमें एक से अधिक संज्ञा वाचक प्रत्यय जोड़कर व्युत्पन्न संज्ञाप्रातिपदिक का निर्माण किया जाता है।

अकारान्त प्रातिपदिक :—

प्राय: कबीर ग्रन्थावली में प्रत्येक स्वरमें अन्त होने वाले संज्ञा प्रातिपदिक मिलते हैं।

आनन्द	प०	14/3
अस्त	प०	90/2, 132/8
अदिष्ट	सा०	10/16/2
अनंत	प०	112/3
अंध	प०	217/5; र० 19/7
अंक	सा०	4/20/2, 9/26/1
इन्दु	प०	149/6
इष्ट	सा०	32/7/2
ऊँट [?]	प०	157/6
ऊँठ [?]	पा०	62/6
ठिंग [?]	प०	86/7
छिन्न [?]	सा०	22/6/2
निहुँव [?]	र०	16/2
पंथ	[illegible]	1/3

पंच	पं0	39/4
पत्र	प0	18/3
फंद	प0	94/6
संत	प0	17/1, 152/2
समुंद	प0	34/7
सुद्ध	प0	94/3
विंद	प0	123/6
लहंग	प0	27/7
दुखिया	प0	19/7
निष्कामता		4/24/1
बड़ाइया		22/8/2
रमइया	प0	82/1

इकारान्त मूलप्रातिपदिक :—

अकिनि	प0	134/2	
कबि	प0	199/5	[2 बार]
चिंतामनि	प0	32/7	[8 बार]
जोनि	प0	27/7	[2 बार]
रघुपति	प0	86/2	

रघुराई	प०	77/6	
सँति	प०	73/9	
ख्याति	सा०	9/18/1	[3 बार]
हरिनि	प०	137/3	
सुम्नि	र०	6/7	
विरचि	र०	11	
मौलि	सा०	14/20/1	
पंखि	प०	55/4	
जाति	सा०	1/3/1	
जौगिनि	प०	163	
भ्रातिनि	प०	163/7	
भुई	र०	9/1	
बाम्हनि	प०	160	

आकारान्त

मूलप्रातिपदिक :—

अँधेरा	प०	15/6	
गँगा	प०	15	[5 बार]

कथा	प०	151/4
चंदा	प०	142/4 [4 बार]
टका	प०	73/2, 73/3
डेरा	प०	89/6/95/8
तमाचा	सा०	11/3/2
धोखा	सा०	14/35/1
	प०	4/28/3
कला	र०	16
महिमा	सा०	1/3/1
नौका	प०	3/5
पंखा	प०	119/7
मखाना	प०	131/6
लंका	प०	96/5/[4 बार]
लीला	र०	7/2
चौला	प०	4/7
जीमहा	र०	4/6
लोहा	प०	3/5 [4 बार]

व्युत्पन्न प्रातिपदिक :—

हाकिमा	प०	152/9
साँइयाँ	सा०	4/35/1 {3 बार}

ईकारान्त :—

अँगुरी	सा०	25/7/1
कंदूरी	प०	129/4
गोपी	प०	158/8
कई	सा०	2/4/1
कोकुली	सा०	12/6/1
तंगी	प०	1/9
बोली	सा०	2/3/1
निवासी	प०	177/10
पंखी	सा०	17/3/2
मोपड़ी	प०	83/6
रजनी	र०	13/4
रोटी	सा०	21/3/2
लकड़ी	प०	62/5
नींबी	प०	98/3

स्वाती	सा०	21/17/1	{7 बार}
भूँगो	प०	1/1	
छत्रमती		4/10/1	
जतो		1/29/2	
पानो	सा०	9/9/1	
कसाई	र०	5/5	
छपटो	सा०	4/57/2	
चाँदनी	सा०	1/1/2	
भँवरी	प०	75	
जननी	र०	17	
माटी	सा०	2/10/2	
प्रिथिमी	र०	9/5	

<u>व्युत्पन्न</u> :—

अधिकाई	र०	7/5
पुहरो	र०	7/6
भलाई	र०	7/2
बखानी	र०	7/2
बुकानी	प०	963

उकारान्त

मूलप्रातिपदिक :—

चित्तु	प0	21/1/ 24/2
उदरु	प0	196/5
[illegible]	प0	45/5, 48/3
डंडु	प0	65/8
नेहु	सा0	4/28/1, 31/23/1
पंगु	प0	81/2
मोनुं	प0	9/3
रंकु	प0	78/2
रामुं	प0	20/10 [3 बार]
लस्करु	प0	128/8
नींबु	प0	77/4
हंकारु	प0	77/4
गुरु	प0	2/1 [30 बार]
[illegible]	सा0	2/39/2
चित्तु	प0	21/1/ 24/2
[illegible]	[illegible]	[illegible]

असमानु	प०	16/3 ‡ 1 बार ‡
अस्नानु		82/4, 130/12 ‡2 बार‡
आजु	सा०	2/12/2 ‡4 बार‡
राउ	चौ०र० 8/2	
भाउ	चौर० 2/2/2	
गाउँ	प०	105
इसु	प०	42/2
एहु	चौ०र० 8/2	
क्रोधु	प०	177/3
गगनु	प०	156/2 ‡4 बार‡
मरबु	सा०	15/22/1, 15/23/1, 15/24/1
चितु	प०	21/10, 29/2
जगु	प०	79/3 ‡7 बार‡
जिसु	प०	187/3
पहु	प०	32/2 ‡4 बार‡
दासु	प०	43/7, 56/8

<u>ऊकारान्त :—</u>

पुडू	सा०	32/9/2

टेसू सा0 15/45/2

आँसू सा0 2/49/1

तराजू सा0 15/76/2

लौहू र0 1/2

साधू र0 2/2 {5 बार}

व्युत्पन्न :—

नैनूं प0 41

नकदू प0 41

रसनूं प0 41/4

एकारान्त -

मूलप्रातिपदिक :—

पाडे प0 196/2, 196/8

ऐकारान्त -

सबै प0 196/2, परले प0 165/9

अनैप प0 132/6 मैन प0 82/6

व्युत्पन्न -

मुखई का0 21/8/1

ओकारान्त -

मूलप्रातिपदिक -

गौ	र०	20/7
जुलाहौ	प०	111/2, 2004
वाहनौं	प०	86/3
संजमौ	प०	82/4

औकारान्त -

अदेसौ	सा०	2/19/1
ऊधौ	प०	198/5
कांदौ	सा०	2/13/1
कांदिनौ	सा०	1/3/2
केसौ	सा०	3/4/1
दौं	सा०	2/7/1
धौं	सा०	16/2/1
परचौ	चौ०	26/1
बापौ	प०	154/6
माधौ	प०	36/1

सँदेसौं सा० 2/19/1

सरसौं सा० 24/9/2

<u>व्युत्पन्न</u> -

आपनौं 23/7/2

<u>व्यंजनान्त प्रातिपदिक</u> :—

क - अलिक प० 87/6, व 85/2, सा० 436/1,

उदिक प० 68/4

द्राक सा०

नाक प० 165/5

मुकुक प० 117/9

अधिक प० 76/6

अचानक सा० 15/7/2

[illegible] प० 87/6

ख-

आमिख सा० 20/11/2

अलख प० 144/4

अलेख सा० 9/10/2

गोरख प० 48/7, 128/9, सा० 29/6/1

परख	सा०	18/5/2
रूख	प०	157/5
सेख	प०	42/2

ग—

जौसिग	प०	65/5
कलियुग	सा०	21/26/1
काग	प०	69/4, 137/4
खग	प०	144/8, 148/2
सुहाग	प०	109/6
रग	सा०	2/17/1
अभाग	सा०	15/34/1
[illegible]	प०	4/5

घ —

[illegible]	प०	145/7

च —

करमच	प०	11/6
कौंच	प०	126/2
बाचे	सा०	1/20/2
पञ्च	प०	124/5

कोच पO 144/4

छ —

पूंछ साO 21/28/2

बछ रO 20/7

बिरिछ पO 152/3

मूंछ साO 25/24/2

कुछ साO 919/2

ज —

अचरज पO 133/3

अनाज पO 97/6

करज पO 195/12

रज पO 85/3

साँज पO 50/6

बाज पO 149/3

झ —

बोझ साO 26/9/2

रोझ साO 25/9/2

साँझ पO 120/3

अबुझ	सा०	14/6/1
बड़भुज	प०	64/3
बाँझ	सा०	26/9/2

ट —

कपट	प०	10/6
बाँट	सा०	3/10/2
अरहट	प०	16/33/1
चित्रकूट	प०	65/10
बाँट	प०	60/6
चौघट	सा०	9/19/1

ठ —

काठ	प०	79/5
जेठ	प०	135/5
वेष्ठ	प०	11/7
मठ	सा०	10/7/2

ड —

तुंड	सा०	33/8/1
माँड	सा०	7/3/2

द —

गद्द	प०	59/8 {14 बार}

ढ़ —

औछढ़	सा०	29/6/1
बढ़	सा०	14/36/2
मेढ़	प०	174/4
तरूढ़	प०	153/4

ण —

जाणि	सा०	11/10/1
गुण	प०	113/4
त्रिगुण	प०	53/8
कारण	प०	147/5

त —

अचेत	सा०	25/22/1
अतीत	प०	123/8
अनंत	प०	38/2
बरात	प०	73/3
भागवत	प०	94/3
अनुरत	प०	103/4

थ —

ऊरथ	प०	117/9
काइथ	प०	41/2
अकारथ	प०	73/10
अनाथ	प०	73/10
जगन्नाथ	सा०	4/23/1
रघुनाथ	प०	24/5
जसरथ	प०	258/5

द —

अद्भुद	सा०	7/8/1
अहलाद	सा०	30/23/1
अनहद	प०	4/7
कागद	प०	3/5
गाँद	सा०	16/16/2
[illegible]	प०	135/[illegible]
प्रसिद्ध	प०	184/4

[illegible] —

[illegible]	र०	8/4

बांध प0 180/4

अराध प0 23/6

बरध प0 126/3

न —

हरिजन प0 16/6

लहसुन सा0 30/1/1

चुन सा0 20/10/2

ककन प0 160/3

अखियन सा0 2/26/9

असमान प0 87/7

प —

रूप प0 80/7

अनूप र0 2/3

अलोप र0 13/2

अनप सा0 6/7/1

धूप सा0 2/15/2

मधुप सा0 27/2/2

फ — [अभाव है]

अदेह	प0	13/1
साह	प0	4/1
दुलह	प0	109/6
अल्लाह	प0	87/9

न्ह —

कान्ह	प0	20/4
इन्ह	प0	131/6

म्ह —

तुम्ह	प0	10/13 [11 बार]

लिंग-विधान :—

कबीर-ग्रन्थावली में पुलिंग और स्त्रीलिंग केवल दो लिंग मिलते हैं। नपुंसक लिंग कबीर के पूर्व से ही प्राचीन हिन्दी में लुप्त हो चुका था। कबीर ग्रन्थावली में लिंग निर्णय केवल रूपात्मक स्तर पर संभव नहीं हो है, अतएव इस प्रकार के प्रयोगों में लिंग का निर्णय सम्बन्ध कारक के चिह्नों, विशेषणों क्रियारूपों आदि द्वारा ही सम्भव है। कबीर ग्रन्थावली में निम्नलिखित स्वरों तथा स्वरान्त पुलिंग प्रातिपदिक —

अ —

ब्रह्म	प0	97/5
सिद्ध	सा0	20/5/3

आ —

लौहा	प०	3/5
चोला	प०	4/7
कंथा	प०	151/4
जौलहा	र०	4/6

इ—

कवि	प०	199/5
हरि	प०	27/5
विरखि	र०	11

ई —

स्वामो	सा०	21/17/1
हरो	प०	177/11
छत्रमती	प०	4/10/1
जती	प०	1/29/2
पानो	सा०	9/9/1

उ —

जेठेऊ	प०	45/5
रंडू	प०	78/2
गेंदु	प०	20/10
कुरु	प०	2/1
पिउ	सा०	2/29/2

उ —

प्रभु	सा0	32/9/2
लौहू	र0	1/2

ए —

पाहै	प0	196/2

ऐ —

ऐसी	प0	16
परलै	प0	165/9
मुहै	सा0	21/1/1

ओं —

कुलाहों	प0	11/2
बाहनों	प0	89/3
संजमों	प0	82/4

औ—

ऊभौ	प0	196/5
केसौ	सा0	3/4/1
बाघौ	प0	154/6
माधौ	प0	36/1

व्यंजनान्त पुलिंग प्रातिपदिक :—

क—

आक	सा०	29/22/2

ख —

अलख	प०	144/4
गोरख	प०	48/7
सेख	प०	42/4

ग —

कलियुग	सा०	21/26/1

च —

कीच	प०	144/4

छ—

कूछ	सा०	9/9/2

ज —

अनाज	प०	97/6

झ —

अबूझ	सा०	1/4/6/1
[illegible]	प०	64/3

ट —

कपाट	प०	10/6

ठ— काठ प0 79/5

ड— रूँड सा0 33/8/2

द्— गद्द प0 59/8

ड़— औघड़ प0 29/60

तरूड़ प0 153/4

ण— गुण प0 113/4

त— हनुमत प0 103/4

अतीत प0 123/8

थ— जसरथ प0 258/5

रघुनाथ प0 24/5

द— कागद प0 3/5

ध— बरध प0 126/3

अराध प0 23/6

न— हरिजन प0 16/6

प— धूप सा0 2/15/2

ब— गालिब प0 170/5

भ— गरभ प0 19/4

य— अभय प0 191/5

यह—	हृदय	प०	149/9
र—	कबीर	प०	30/5
	अंकूर	प०	119/5
	अंगार	सा०	2/53/1
न—	अंकमाल	प०	4/39/2
व—	केसव	प०	163/3
	सिव	प०	435
स—	अकास	प०	102/5
	जगदीस	प०	97/4
ह०—	अल्लाह	प०	87/9
	गादह	प०	114/4
	दूलह	प०	109/6
न्ह —	कान्ह	प०	131/6

<u>स्वरान्त स्त्रीलिंग प्रातिपदिक</u> :—

अ -	गंग		29/18/1
आ -	गंगा	प०	1/5
	चंदा	प०	142/4

	नौका	प०	3/5
	अरचा	प०	66/5
	केवला	प०	34/1
	कथा	प०	33/2
	आसा	सा०	12/8/1
इ—	गाइ	र०	5/3
	आगि	सा०	2/13/1
	जोगिनि	प०	163
	औरति	प०	177/13
	नागिनि	प०	2/4
	बाघिनि	प०	165/1
	भातिनि	प०	163/7
	हरिहिनि	सा०	2/39/2
ई —	गोपी	प०	158/5
	कई	सा०	2/4/1
	रजनी	र०	13/4

	भ्रींगो	प०	1/1
	छपरो	सा०	4/37/2
	चांदनी	सा०	1/2/2
	पिछो	र०	9/5
	मादो	सा०	2/10/2
उ —	मोनु	प०	9/3
	वसु	सा०	21/19/2
	मृत्यु	र०	12/2
	आसु	प०	83/3
ऊ —	गऊ	सा०	19/5/2
	बहू	प०	110/7
	रसूं	प०	41/4
ए —	[अभाव है]		
ऐ —	जसे	र०	3/3
ओ —	गौ	र०	20/7
औ—	दौ	सा०	2/7/1
	धौ	सा०	16/2/1

स्त्रीलिंग प्रत्यय :—

कबीर ग्रन्थावली में निम्नलिखित स्त्रीलिंग प्रत्यय मिलते हैं।

	प्रत्यय	मूलप्रातिपदिक प्रत्यय				व्युत्पन्न स्त्रीलिंग प्रातिपदिक	
1.	ई	छपरा	+	ई	=	छपरी	सा0 4/37/2
		भँवरा	+	ई	=	भँवरी	प0 75
2.	इ	भ्यावन	+	ई	=	भ्यावनि	प0 12
		बाम्हन	+	ई	=	बाम्हनि	प0 160
3.	नी	चाँद	+	नी	=	चाँदनी	सा0 1/2/1
4.	इनि	भगत	+	इनि	=	भगतिनि	प0 161
5.	इनी	तुरक	+	इनी	=	तुरकिनि	प0 160
6.	आनी	तुरक	+	आनी	=	तुरकानी	प0 163
7.	इया	लहुरा	+	इया	=	लहुरिया	

वचन - विधान

वचन विधान की दृष्टि से कबीर ग्रन्थावली की संज्ञायें दो प्रकार की हैं :- एक रूप से वस्तु के एकत्व का बोध होता है और दूसरे से एक से अधिकत्व का इन्हीं दोनों रूपों को क्रमशः एकवचन और बहुवचन कहा जाता है।

संज्ञा विभक्ति - बहुवचन बोधक विभक्ति

संज्ञा के मूलरूप एकवचन के रूप में बहुवचन बोधक विभक्ति प्रत्यय लगाकर मूल बहुवचन तथा विकृत बहुवचन के रूप निर्मित होते हैं । कबीर ग्रन्थावली में बहुवचन बोधक निम्नलिखित प्रत्यय लगाकर बहुवचन बनाया जा सकता है ।

<u>मूलरूप बहुवचन प्रत्यय :—</u>

इस वर्ग में सभी व्यंजनान्त और कुछ स्वरान्त संज्ञाएं सम्मिलित हैं । इनके बहुवचनत्व का बोध वाक्य-स्तर पर क्रिया, विशेषण और सम्बन्ध कारकीय पर सर्गों के आधार पर होता है ।

यथा —

<u>व्यंजनांत :—</u>

जतन + 0 जतन = जतन [अनेक] जतन र0 1/10/3

महादेव + 0 = महादेव [कोटि] महादेव प0 155/3

दिन + 0 = दिन [गए] दिन 25/19/1

<u>स्वरान्त :—</u>

दीवा + 0 = दीवा [चौसठि] दीवा सा0 1/3/1

साधु + 0 = साधु [अंग मोरही] सा0 2/2/2

दूसरा वर्ग आकारान्त संज्ञाओं का है जिनमें ए, ऐ प्रत्ययों को

ए — काबा + ए = काबे [सतरि काबे घट ही भीतर]

पद 184/6

तारा + ए = तारे सा0 14/36/1 [3 बार]

ऐ — बन्जिारा+ ऐ = बन्जिारै प0 126/3 [5बार]

भाड़ा + ऐ = भाड़ै [गद्दे सब भाड़ै] प0 76/4

मूल रूप ब0, व0 के रूपों में स्त्रीलिंग संज्ञाओं के भी दो वर्ग बनाये जा सकते हैं :—

1:- व्यंजनांत संज्ञा प्रातिपदिक में 'ऐ' जोड़कर

2:- ईकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा प्रातिपदिक में इया' प्रत्यय जोड़कर मूल रूप बहुवचन रूप निष्पन्न हुए हैं।

एँ — बात + एँ [ए दोइ बातैं छोडि] सा0 15/80/1

इयां [आ] कली + इया' = कलिया' [कलिया' करे पुकार]

सा0 16/34/2

आँखी + इया' = आँखड़िया', रतनान्यिा' सा0 16/8/2

<u>विकृत रूप बहुवचन :—</u>

कबीर ग्रन्थावली में मू0रू0 एक वचन रूपों में निम्नलिखित प्रत्यय जोड़कर पुल्लिंग स्त्रीलिंग विकृत रूप बहुवचन रूप निर्मित किए जा सकते हैं। ये प्रत्यय प्रायः सभी प्रकार के शब्दों के साथ संयुक्त हुए हैं।

यथा —

शून्य {0} प्रत्यय से संयुक्त रूप भी कर्ताकारक का अर्थ प्रकट करते हैं। इन रूपों में ने रहित और ने सहित दोनों रूप प्राप्त हैं।

	कोंहरा	+	0	= कोंहरा	प0 76/4
	कबीर	+	0	= कबीर	सा0 29/18/2
	गुरु	+	0	= गुरु	सा0 9/19/2
अनि —	दास	+	अनि	= दासनि	सा0 19/14/1
	फूल	+	अनि	= फूलनि	प0 141/1
	मोती	+	अनि	= मोतनि	सा0 28/5/1
इन —	आँखी	+	इन	= आखिन	प0 137/2
	लोई	+	इन	= लोईन	प0 173/8
इयाँ —	{आँ} इन्द्री	+	इयाँ	= इंद्रियाँ	सा0 14/6/2
	किनो	+	इयाँ	= किनियाँ	प0 161/2
आँ —	चरन	+	आँ	= चरनाँ	सा0 17/8/2
	करम	+	आँ	= करमाँ	सा0 152
आँ —	कुरान	+	आँ	= कुरानाँ	सा0 7/8/2
	चरन	+	आँ	= चरनाँ	सा0 25/1/2

केवल अनुस्वार {ं}

करैं + ं   करैं कलियां करैं पुकार 16/34/1

संज्ञा रूपों में कुछ विशिष्ट शब्द जोड़कर भी बहुवचन का बोध कराया जाता है, यथा :—

अलि   रोमावलि   प0   155/8 {रोएं}
आदिक   सुनकादिक   प0   104/5 {सनक और अन्य}
लोह   स्वारथी लोह सा0 15/62/1 {स्वार्थी लोग}

संज्ञा पदों के उपर्युक्त विवेचन अथवा उनके रचनात्मक विभक्ति प्रत्ययों को एक ही तालिका में इस प्रकार प्रकट कर समझा जा सकता है —

संज्ञा प्रातिपदिक

पु0   स्त्री0

आकारान्त   अन्य   व्यंजनान्त   इकारान्त

एक व0   बहु व0   ए0व0   ब0व0   ए0व0   ब0व0   ए0व0   बहु वचन

मूल रूप   ए0वै0 ——— —0   मू0व0 —— ऐं ——— इयां

वि0 रूप   ए0वै0 ——— अन, अनि   वि0व0 — अन — अन, इन
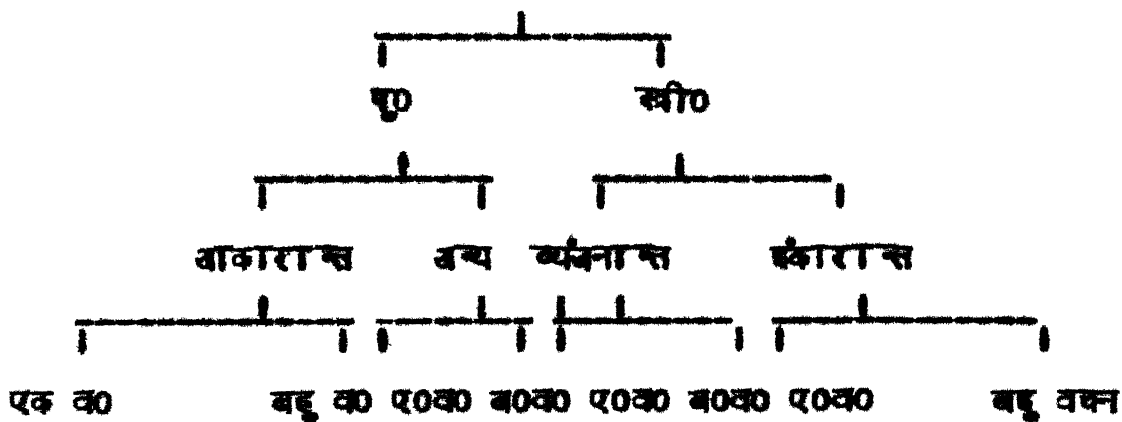
इयां — इन   — अनि — इयां

कर्म - सम्प्रदान —

कबीर-ग्रन्थावली में कर्म-सम्प्रदाय का द्योतन करने के लिए निम्नलिखित संयोगी विभक्तियाँ इ०उ०ए {अ} हिं०, हीं, विभक्ति प्रत्यय संयुक्त हुए हैं।

इ —	तोरथ्र	+	इ	=	तोरथ्रि	प०	3/3	अराधी तीरथि करै
उ —	सब	+	उ	=	सबु	प०	36	कबहूँ सबु नहि पायौ
	पद	+	उ	=	पदु	प०	32/6	परम पदु पाया
ऐ +	सब	+	ऐ	=	सबै	र०	10/2	विधिना सबैं कीन्हि एकवाज
ऐं {ब०वचन}	पियादा	+	ऐं	=	पियादैं	सा०	14/5/1	पंच पियादे पारिकरि
हिं—	कमान	+	हिं	=	कमानहिं	सा०	22/4/2	कला कमानहिं डारि
हीं —	बाहीं	+	हीं	=	बाहीं	प०	146/5	गहिबाँही

कबीर ग्रन्थावली में कुछ ऐसे भी शब्द रूप है जो बिना प्रत्यय अथवा शून्य प्रत्यय के संयुक्त से कर्म-सम्प्रदान का द्योतन करते हैं। यथा :—

जगदीश	+	0	=	जगदीस	सा०	31/3/2	सुमिरि सुमिरिजगदीस
मुरारि	+	0	=	मुरारि	सा०	3/2/1	जपै मुरारि

करण - आदान :—

करण - आदान के द्योतन के लिए ए, र्यां, आँ, ऐं, ऐ, आदि {अ} हुई विभक्ति प्रत्यय संयुक्त हुए हैं।

इ—	तरस	+	इ	= तरसि	प0	135/3	जेठ के तरसिहरों
	परसाद	+	इ	= परसादि	-	8/8	गुरु परसादि कबीरकहि
इयाँ—	बढ़ाई	+	इयाँ	= बढ़ाइयाँ	सा0	22/8/2	बढ़ा बाँस बढ़ाइया
आँ —	बाँस	+	आँ	= बाँसाँ	सा0	3/19/2	पवनाँ बेगि उलाकला
एँ —	नोर	+	एँ	= नोरेँ	प0	119/6	बिनु नीरे सरवर
ऐ —	मत	+	ऐ	= मतै	सा0	29/23/1	मन के मतै
हिँ —	मन	+	हिँ	= मनहिँ	सा0	31/18/2	मनहिँ उतारि
हुँ —	मन	+	हुँ	= मनहुँ	प0	98/7	राम नाम जिन मनहुँ बिसारयो

<u>शून्य अथवा बिना प्रत्यय वाले रूप</u>

बस्तुति	+ 0		प0	32/3	बस्तुति बिबरजित
बपु	+ 0	= बपु	प0	134/3	बपु बिहिनाँ

<u>संबंध कारक</u> :—

सम्बन्ध कारक द्योतक के लिए उ, ऐ, [अ] इ, [अ] हँ [अ] हँ प्रत्यय संयुक्त हैं।

उ —	सरीर	+	उ	= सरीरउ	सा0	4/21/2	पाप सरीरउ जाहिँ

ऐ —	देवा	+	ऐ	= देव	र0	3/3/	देवैं कौशिन अक्तार आया
	सौना	+	ऐ	= सौनै	प0	131/5	सौनैं बूंद बिकाह
					प0	16/6	सौनैसंग सुहागा

शून्य अथवा बिना प्रत्यय वाले रूप —

पंजर	+	0	= पंजर	सा0	2/33/1	पंजरपीरन जाइ

अधिकरण-कारण :—

अधिकरण कारक के द्योतन के लिए आँ, आ, इ, ए, ऐ, ऐ विभक्ति प्रत्यय संयुक्त हुए हैं।

आँ - आ-अकास		+	आँ	= अकासाँ	प0	114/8	समद अकासा धावा
	गाँव	+	आँ	= गाँवां	प0	41/3	देहीगाँवां जिअथ मह
इ –	घर	+	इ	= घरि	प0	117/8	तोनिघरि जाइये
	घट	+	इ	= घटि		2/16/3	जिहिं घटि बिरहन सं
ऐ	औल्हा	+	ऐ	= औल्है	सा0	7/12/1	तिनके औल्है राम है
	धोखा	+	ऐ	= धोखै	सा0	20/5/2	धोखै पढ़ें
ऐं	बैराग	+	ऐं	= बैरागैं	सा0	32/13/2	

हिरदा + ऐं = हिरदैं सा0 2/44/1

ओ- चरण + ओं = चरणों सा0 25/11/2 हरि चरणोंकित रखिर

निम्नलिखित शब्दों को बिना प्रत्यय अथवा शून्य प्रत्यय वाले रूप कह सकते हैं।

आ-आं अकास + आं = अकासां प0 114/8 समद अकासा धावा

गांव + आं = गांवां प0 41/3. देहीगांवां जिउधर महत

इ - धर + इ = धरि प0 117/8 तोसिधरि जाइये

घट + इ = घटि 2/16/3 जिहिं घटि बिरहन संच

ए - हिय + ए = हिए र0 16/6 लागे हिए

ऐ - ओल्हा + ऐ = ओल्हे सा0 7/12/1 तिनके ओल्हे रामं है।

धोखा + ऐ = धोखे सा0 20/5/2 धोखे पड़े

ऐं बेराग + ऐं = बेरागैं सा0 32/13/2

हिरदा + ऐं = हिरदैं सा0 2/44/1

ओ - चरण + ओं = चरणों सा0 25/11/2 हरि चरणोंकित रखिर

निम्नलिखित शब्दों को बिना प्रत्यय अथवा शून्य प्रत्यय वाले रूप कह सकते हैं :—

नाईं + 0 = नाहिं सा0 4/41/1 रत भेर हरि नाईं

डारो + 0 डारो सा0 8/3/2 जिहिडारी पग धरो

वियोगात्मक कारक विभक्ति - कारक परसर्ग

<u>कारक परसर्ग</u> —

प्रातिपदिकों के साथ प्रयुक्त विकारी कारकीय प्रत्ययों के अतिरिक्त कबीर ग्रन्थावली में स्वतन्त्र परसर्गों का प्रयोग भी बहुल मिलता है। इन परसर्गों की सहायता से संज्ञा और संज्ञा, संज्ञा और विशेषण तथा संज्ञा और क्रिया के बीच कारकीय अर्थ प्रकट किए गए हैं। संज्ञाओं की अपेक्षा सर्वनामों के साथ इन परसर्गों का प्रयोग अधिक हुआ है। विभिन्न कारकों के अर्थ के द्योतन के लिए प्रयुक्त परसर्ग इस प्रकार हैं।

<u>कर्ता कारक परसर्ग</u> :—

आधुनिक हिन्दी में स्पष्टतया कर्ता का प्रयोग सकर्मक क्रिया के भूत निश्चयार्थक रूप के साथ संज्ञा के विकृत रूप में 'ने' परसर्ग का प्रयोग करके होता है। कबीर ग्रन्थावली में कारक परसर्ग 'ने' का प्रयोग नहीं मिलता। जब सकर्मक क्रिया भूतनिश्चयार्थक में कर्मणि प्रयोग के साथ आती है तब केवल संज्ञा का विकृत रूप ही प्रयुक्त होता है।

यथा - श्री दोश कबीरैं कीन - आदि प्रयोग जनरब कीने

जाया - प० 158

<u>कर्म सम्प्रदाय</u> :—

कौ - प० 136 ज्यौं कामी कौ कामिनि प्यारी

		प0 19/6		काहे कौं मारै
		बी0 20/2	[कर्म0]	ताहो कौं
		प0 13/6	[सम्प्र0]	प्यासे कौं नीर
कौं	-	सा0 32/2/1	[क0]	जाकौं जैता निरम्या
		सा0 32/41	[सम्प्र0]	खाद कौं
		र0 1/5	[सम्प्र0]	मग भौजन कौं परिब कहावा
कउं	-	प0 26	[कर्म0]	मौकउं कहा पढ़ावाही
कउ	-	प0 128/6	[सम्प्र0]	तिसु काजी कउ जरा न भरना
कै	-	प0 26/4		जाकै लागी
		र0 20/1		कतहूं कै जासो — इस परसर्ग का सम्बन्ध कारकै भी आता है।
अन	-	प0 33/5		देव + अन = देवन
		सा0 2/36/1		आँखी + अन = आँखियन

====:::: कारक - रचना ::::====

संयोगात्मक रूप :-

कर्ताकारक - कबीर ग्रन्थावली में कर्ताकारक के अर्थ को प्रकट करने के लिए ऐ, एँ, आँ [विकृत रूप बोधक विभक्ति प्रत्यय मूल संज्ञा प्रातिपदिक में प्रयुक्त हुए हैं। यथा :—

ऐ —	कबीर + ऐ	= कबीरै	सा0 29/22, [कबीरै कीया]
	बिछा + ऐ	= बिछै	सा0 4/1/1 [बिछै बैठे]

बहुवचन में भी एक प्रयोग मिलता है, किन्तु इसमें ने रहित कर्ता रूप प्राप्त है।

हीरै = स0 15/5/1 [जड़िया हीरै लालि]

बहुवचन – विड़िया + ऐं = विड़ि़वें सा0 15/54/1 [विड़िवैंरवाया

आं – मोर + आं = मोरां प0 102/3 [मीरां ....कीन्हीं

विधिनां + आं = बिधिनां सा0 15/58/1 [विधिनां रचै]

करण-अपादान :—

+ तैं – लागैं तैं भागै नहीं सा0 14/22/2

+ तै – कबीर सम तै हम बुरे सा0 15/32/2

+ ते – साधन ते सिधि पाइए प0 10/9

+ सनां – मौहि सनां प0 103/2

+ सवां – जौ हारी तौ हरि सवां [नां] सा0 14/3/2

+ सनि – कासनि कहिए जाइ र0 6/7

+ सूं – [अ0] हमसूं बाखिनि न्यारी प0 165/10

+ थैं – [करण] मोसैं मुवई न बोला प0 139/2

+ सै – [करण] तुमसे प0 15/5

+ सेवी – मारी सैंवी मैंह सा0 306/1

+ सों = जुगुति सों चौ0 13/1

+ सों = सोस उतारै हाथ सों सा0 14/18/2

सम्बन्ध कारक :—

का - प0 16/1 मन का ससा भागा

पद 43

र0 9

सा0 83

{ 135 बार }

का - कागद का घर प0 175/3

प0 8 बार

र0 8 बार

सा0 80 बार

क - तू ब्राह्मन मैं काशी 'क' जोलहा प0 188

के {का का वि0 रूप} राम नाँम कै पटंतरे देवे कौ कछू नाहि प0 69

'का' का स्त्रीलिंग

की - हरि मोतिन की माल है सा0 28/5/1 {147 बार}

कौ {31 बार} तन कौ चांम सा0 4/13/3

कौं (8 बार) भाँति-भाँति कौ नाज सा0 32/2/1, सा0 21/24/1,
सा0 24/18/1, सा0 26/2/3,
प0 162/5, 167/6, 185/5,110

पाहन ऊपरि सा0 22/9/1

+ ऊपरै (2) मोन लै जल ऊपरै प0 34/5

+ पर (9) तापर साज्यौ रूप सा0 31/15/1

+ परि (3) किसरै मुख परिनूर सा0 14/14/2

+ पै (5 बार) गुरु पै राज बुझाया प0 175/6

+ पैं (3 बार) तापैं सब्बैं आपे प0 34/14, प0 86/4, प0 175/6

+ पहिं (4 बार) उन हरि पहिं क्या लोना प0 86/8, पं0 118/4 168/3, 199/2

+ माँझ (1 बार) पंच चोर गढ़ माँझ प0 72/5

+ मंझारि (1 बार) तीन उलोक मंझारि सा0 30/2/1

+ माँझि (1 बार) आसपासि घन तुलसी का बिरवा माँझि बनारस गाँउँ प0 131/11

+ मंझ (1 बार) चौरह मंझ पवन झकौरे प0 112/6

+ मंझारै (1 बार) दैबीलो गमन मंझारें प0 115/5

\+ मझार (1 बार) काया नग्र मझार प0 144/4

\+ मझारो (1 बार) फिरि गयौ गगन मझारो प0 151/1

\+ मई (3 बार) दोनौं मई लीनाँ र0 18/5, र0 17/8
चौ0 18/1

\+ महिं (43 बार) दिन महिं खीज प0 17/8/8
प0 9/1, 9/2, 23/2, 23/9, 53/1, 54/4
(प0 40 + र0 2 + चौ0 1) 54/6, 62/6, 65/4, 65/8,
73/6, 80/5, 88/4, 89/6, 107/3, 122/4,
122/5, 122/7, 128/7, 130/8, 130/10,
130/15, 133/6, 133/7, 133/8, 137/1,
154/3, 156/7, 167/5, 161/6, 167/5,
177/9, 177/1, 178/
र0 9/7, 11/5
चौ0 2/1/2

\+ माँझ (1) पिरैं कलि माँझ प0 64/3

\+ माँझि (1 बार) उरझे माँझि बसेरा चौ0 24/1

\+ माँहि (51 बार) लिखेउ हृदय माँहि सा0 2/44/1

(प० 16 + सा० 29 + र० 2 + चौ०र० 1 =)

प० = 1/7, 6/3, 6/4, 34/3, 57/6, 71/4, 86/8, 87/1, 89/4 96/5, 123/9, 130/17, 161/4, 173/6, 177/7, 185/2,

रे० - 6/1, 13'8

चौ०र० 1/1

सा० 1/1/2, 1/3/1, 1/26/1, 2/11/1, 2/15/1, 2/44/ 4/6/2, 4/11/2, 4/32/2, 6/5/2, 7/1/1, 7/2/2, 7/3/1, 7/11/1, 7/12/2, 8/11/2, 9/1/2, 9/14/ 9/18/2, 9/32, 2/10/13/2, 14/13/1, 14/13/2, 29/2/2, 21/4/1, 21/33/2, 23/6/2, 28/3/2, 29/14/2 ।

+ मौही (10 बार) मन मौही अबलाद सा० 30/33/1

(प० 10 + सा० 6 + र० 1 = 17)

प० 34/1, 33/6, 40/7, 89/2, 113/6, 125/4, 135/7, 146/3, 146/6, 195/13,

रे० 2/4, 16/4

+ माहे {8 बार} अर ही माहें बेरि सा० 29/16/1

{सा० 7 + र० 1 = 8}

सा० 1/5/1, 9/10/2, 9/14/2, 9/14/2, 9/19/1

16/9/1, 29/16/1

र० 1/2

+ मैं {78 बार} प० 41 + सा० 36 + र० 17 = 78 आवृत्ति

आवृत्ति प० 41 सा० 124•2 पैठे मैं सतगुरु मिला

सा०36 सा० 136/2 जिभ्या मैं छाला पड़ा

र० 0।र० 17 छैया हो मैं मरि गया

78 आवृत्ति

+ मैं - { 33 बार } मन मैं मन मिलि जाई सा० 2/29/1

प० 6

र० 1

सा०26

33 आवृत्ति

प० - 117/2, 141/3, 175/3, 175/7, 190/4, 194/4,

र० - 2/1

सा० 2/29/1, 2/36/2, 3/1/2, 3/9/2, 3/10/2,

3/11/1, 6/9/1, 8/6/2, 8/7/2, 9/19/1,

16/27/1, 21/34/2, 23/2/2, 25/4/2,

29/2/2, 30/4/2, 30/7/2, 30/25/2,

32/4/2, 32/9/1, 32/13/1 ।

+ म्याने - {2 बार} खालिक खलक म्याने प0 87/6

+ मद्दे {4 बार} इस तन मन मद्दे मदन चोर प0 43/3,

प0 125/3, 43/2, 130/16/ 186/3

+ मधि - {1 बार} {सा0 1}

अनल अकासा घर किया मधि निरंतर बास

सा0 20/8/1

+ सिर - {1 बार} सबही ऊभा पंथ सिर सा0 15/43/2

+ सिर - {2 बार} पंथी ऊभा पंथ सिररि सा0 16/30/1

संबोधन कारक :—

संबोधन कारक के अर्थ के द्योतन के लिए संज्ञा के पूर्व निम्नलिखित विस्मयादि बोधक शब्दों को प्रयुक्त करके सम्बोधन को सूचना दी गयी है । इसमें संज्ञा का विकृत रूप ही प्रयुक्त होता है ।

री {3बार} कागद कैरी नाव री सा0 29/18/1

रे {164 बार} सुगु रे नाँई

हे {5 बार} हे सखी

कारक परसर्गवत अन्य प्रत्यय :—

कर्मसम्प्रदान —

ताई (बार) कबीर बिचारा करै बोन्तो मौ सागर के ताई

सा० 6/12/1

लौं (5 बार) देहरि लौं बरों नाहि संगरे प० 6/8/7, 68/8,

100/4, स० 8/16/1, 10/7/1

लीग यह जियरा निरमोलिका कौड़ी लगि बाकी ।

प० 39/4

लागे कौई के लोभ लागे रतन जन्म खोयी

प० 60

क क ब संयुक्त व्यंजन + स्वर

पी । तम प० 61

प्या । री प० 17/7

प्या । रै प० 70/3

क, क, ब, क, संयुक्त व्यंजन + स्वर + व्यंजन

द्रुत । 22/6

त्रिज्ञ । 1/12

क्रोध । 2/1

------::अध्याय 4-ख::------

नानक-संज्ञा प्रातिपदिक :—

पदग्रामिक संरचना की दृष्टि से नानक देव [ग्रन्थसाहब में] दो प्रकार के संज्ञा प्रातिपदिक मिलते हैं।

1:- मूल संज्ञा प्रातिपदिक—

वे पद जिनमें कोई संज्ञा वाचक व्युत्पन्न प्रत्यय नहीं जुड़ता। अर्थात अपने मूल रूप में ही वे संज्ञा [पद तालिका] के अन्तर्गत आते हैं।

2:- व्युत्पन्न संज्ञा प्रातिपदिक :—

वे पद हैं जिनमें एक या एक से अधिक संज्ञा वाचक व्युत्पन्न प्रत्यय जोड़कर संज्ञा प्रातिपदिक का निर्माण किया जाता है। गुरु नानक देव [ग्रन्थ साहब में] आ, -ई, -इया, -आनि, -आरो, -आई, -ना, -ए, -पा, -ता, -वा, -हाना, -आ, -इक आदि व्युत्पादक प्रत्यय जोड़कर व्युत्पन्न संज्ञा प्रातिपदिकों का निर्माण किया गया है, जिनका विस्तृत विवेचन प्रस्तुत प्रबन्ध में गत पृष्ठों [   ] में किया गया है।

अन्त्य ध्वनिग्राम के अनुसार प्रातिपदिकों का वर्गीकरण :—

किसी शब्द के पदग्रामिक गठन में प्रत्यय प्रक्रिया का

विभक्ति प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया पदों के अंत में लगकर व्याकरणिक सम्बन्धों को प्रकट करते हैं। जिन पदों में विभक्ति प्रत्यय जुड़ते हैं उनके अन्त्य ध्वनिग्राम की प्रकृति भी महत्वपूर्ण होती है। अतः गुरु ग्रन्थ साहब में प्राप्त अन्त्य ध्वनिग्राम के अनुसार संज्ञा प्रातिपदिकों का वर्गीकरण प्रस्तुत करना उचित होगा।

पदान्त में प्रयुक्त स्वर तथा व्यंजन ध्वनिग्रामों की दृष्टि से नानक देव (ग्रन्थ साहब में) प्रायः प्रत्येक स्वर तथा व्यंजन में अन्त होने वाले संज्ञा प्रातिपदिक मिलते हैं।

<u>स्वरान्त प्रातिपदिक :—</u>

जोब	-	ग्रं०सा०	15/1/2
जोब	-	ग्रं०सा०	40/4/65
पुत्र	-	ग्रं०सा०	42/5/71

आ —

मणा	-	ग्रं०सा०	15/1/3
बाबा	-	ग्रं०सा०	16/1/5
हवाणा	-	ग्रं०सा०	474/2/5[22]
पहुदा	-	ग्रं०सा०	40/4/67

सुहना	-	ग्रं०सा०	42/5/71
पाहुणा	-	ग्रं०सा०	43/5/74

इ —

कस्तूरि	-	ग्रं०सा०	14/1/1
दाति	-	ग्रं०सा०	474/2/1[23]
थाइ	-	ग्रं०सा०	474/2/2
हरि	-	ग्रं०सा०	39/4/65

ई —

पंखी	-	ग्रन्थ साहब	14/1/2
सुआमी	-	ग्रन्थ साहब	95/4/6
सआई	-	ग्रन्थ साहब	94/4/1
प्राणी	-	ग्रन्थ साहब	43/5/73

उ —

सिधु	-	ग्रन्थ साहब	14/1/1
नाउ	-	ग्रन्थ साहब	14/1/1
जगु	-	ग्रन्थ साहब	463/2/3
पुगु	-	ग्रन्थ साहब	39/4/65

अहंकारु	ग्रन्थ साहब	42/5/71
प्रभु	ग्रन्थ साहब	43/5/73

ऊ —

	कंगु	ग्रन्थ साहब	14/1/1
(व्युत्पन्न)	वठारु	ग्रन्थ साहब	474/2/4[22]
	दारु	ग्रन्थ साहब	466/2/2
	साधु	ग्रन्थसाहब	164/4/40

ए —
(स्थान)

वापाराए	ग्रन्थ साहब	165/4/45

ऐ —

ओ —

नामो	ग्रन्थ साहब	17/1/8
कूठो	ग्रन्थ साहब	474/2/3[22]

औ —

व्यंजनान्त प्रातिपदक :—

क —

नानक	गुरु ग्रन्थ साहब	15/1/2
लोक	• •	474/2/4[22]
चालिक	• •	95/4/5
नानक	• •	42/5/71
साधक	• •	42/5/72

ख —

मुख	ग्रन्थ साहब	15/1/4
दुख	• •	466/2/2
मनमुख	• •	41/4/69
भुख	• •	43/5/75

ग —

पग	• •	164/4/40
रंग	• •	42/5/71
जग	• •	42/5/71

घ —

च —

छ —

इछ	ग्रन्थ साहब	168/4/52

ज —

काज	" "	43/5/74

झ —

बूझ	" "	55/1/4

ट —

कौट	" "	17/1/9
हट	" "	95/4/5

ठ —

ड —

पंड	ग्रन्थ साहब	15/1/5

ढ —

ण —

पराण	ग्रं0 सा0	14/1/2
प्राण	ग्रं0 सा0	94/4/1
किरसाण	ग्रं0 सा0	43/5/74

त —

अंत	ग्रं0सा0	17/1/9
जंत	ग्रं0सा0	475/2/2
संत	ग्रं0सा0	95/4/4
दात	ग्रं0सा0	43/5/74

थ —

तोरथ	ग्रं0सा0	17/1/8
बोहिथ	ग्रं0सा0	40/6/67
रथ	ग्रं0सा0	42/5/71

द —

कागद	ग्रं0सा0	15/1/2
गोविंद	ग्रं0सा0	95/4/6
गोबिंद	ग्रं0सा0	44/5/77

ध —

कंध	ग्रं०सा०	28/1/13
साध	ग्रं०सा०	164/4/41
सिध	ग्रं०सा०	42/5/72
ऊंध	ग्रं०सा०	42/5/71

न —

मन	ग्रं०सा०	15/1/4
मधुसूदन	ग्रं०सा०	94/4/2
भगिवान	ग्रं०सा०	40/4/67
थान	ग्रं०सा०	42/5/72

प —

कलप	ग्रं०सा०	18/1/11
पाप	ग्रं०सा०	165/4/43

ब —

साहिब	ग्रं०सा०	17/1/9
साहिब	ग्रं०सा०	474/2/5[22]

भ —

पूभ	ग्रं०सा०	40/4/65

म—

करम	ग्रं०सा	15/1/4
खसम	ग्रं०सा०	474/2/1[22]
हरिनाम	ग्रं०सा०	39/4/65

र —

मंदर	ग्रं०सा०	14/1/1
लस्कर	ग्रं०सा०	14/1/1
गुर	ग्रं०सा०	463/2/2
हैवर	ग्रं०सा०	42/5/71
सोगार	ग्रं०सा०	42/5/71

ल —

परमल	ग्रं०सा०	14/1/4
कौल	ग्रं०सा०	40/4/66

व —

सिव	ग्रं०सा०	21/1/18
हरिनाव	ग्रं०सा०	40/4/67
भेव	ग्रं०सा०	43/5/75

स —

तरकस	ग्रं0सा0	16/1/7
रस	ग्रं0सा0	42/5/71

ह —

गुह	ग्रं0सा0	474/2/2[22]
दरगाह	ग्रं0सा0	42/4/70
मोह	ग्रं0सा0	47/5/83

ढ़ —

कूढ़	ग्रं0सा0	15/1/5
गूढ़	ग्रं0सा0	15/1/5
कूढ़	ग्रं0सा0	165/4/43

ढ़ —

ण्ढ़ +

म्ढ़ +

न्ढ़ +

<u>लिंग</u> :—

लिंग की दृष्टि से संज्ञा प्रातिपदिक पुलिंग या स्त्रीलिंग के रूप में आते हैं। नपुंसक लिंग से पूर्व ही प्राचीन हिन्दी में लुप्त हो चुका था। लिंग निर्णय केवल रूपात्मक स्तर पर संभव नहीं है। अतः यहाँ के लिंग निर्णय में वाक्यांश या वाक्य की सहायता ली गई है।

नानक देव (ग्रन्थ साहब) में निम्नलिखित स्वरों तथा व्यंजनों में अन्त होने वाले पुलिंग तथा स्त्रीलिंग प्रातिपदिक मिलते हैं :—

<u>स्वरान्त पुलिंग प्रातिपदिक</u> :—

अन्त्य स्वर	प्रातिपदिक	सन्दर्भ	
अ	जीव	ग्रं०सा०	15/1/2
	जीव	ग्रं०सा०	40/4/65
	पुत्र	ग्रं०सा०	42/5/71
आ	बाबा	ग्रं०सा०	16/1/5
	इआणा	ग्रं०सा०	474/2/5[22]
	पड़दा	ग्रं०सा०	40/4/67
	सुहना	ग्रं०सा०	42/5/71
इ	कस्तूरि	ग्रं०सा०	14/1/1/1
	खाइ	ग्रं०सा०	474/2/2
	हरि	ग्रं०सा०	39/4/65
	हरि	ग्रं०सा०	42/5/71
ई	पंखी	ग्रं०सा०	14/1/2
	सुआमी	ग्रं०सा०	95/4/6

	प्राणी	ग्रं०सा०	43/5/73
उ	नाउ	ग्रं०सा०	14/1/1
	जगु	ग्रं०सा०	463/2/3
	प्रभु	ग्रं०सा०	39/4/65
	अहंकारु	ग्रं०सा०	42/5/71
ऊ	कुंगू	ग्रं०सा०	14/1/1
	दारू	ग्रं०सा०	466/2/2
	साधू	ग्रं०सा०	164/4/40
ए	वापारोए	ग्रं०सा०	165/4/45
ओ	नामो	ग्रं०सा०	17/1/8
	कुट्ठो	ग्रं०सा०	474/2/3[22]

व्यंजनान्त पुलिंग प्रातिपदिक :—

अन्त्य व्यंजन	प्रातिपदिक	सन्दर्भ	
क	नानक	ग्रं०सा०	15/1/2
	मीक	ग्रं०सा०	474/2/4[22]
	वाश्रिक	ग्रं०सा०	95/4/3
	साधक	ग्रं०सा०	42/5/72

ख	मुख	ग्रं0सा0	15/1/4
	दुख	ग्रं0ला0	466/2/2
	मनसुख	ग्रं0सा0	41/4/69
	भुख	ग्रं0सा0	43/5/75
ग	पग	ग्रं0सा0	164/4/40
	रंग	ग्रं0सा0	42/5/71
	जग	ग्रं0सा0	42/5/71
घ	x		
ङ	x		
च	x		
छ	इछ	ग्रं0सा0	168/4/52
ज	काज	ग्रं0सा0	43/5/74
झ	बूझ	सा0ग्रं0	55/1/4
ञ	x		
ट	कोट	ग्रं0सा0	17/1/9
	हट	ग्रं0सा0	95/4/5
ठ	x		

ठ	पंठ	ग्रं०सा०	15/1/3
ढ़	x		
ण	पराण	ग्रं०सा०	14/1/2
	प्राण	ग्रं०सा०	94/4/1
	किरसाण	ग्रं०सा०	43/5/74
त	कंत	ग्रं०सा०	17/1/9
	जंत	गं०सा०	475/2/2
	संत	ग्रं०सा०	95/4/4
	दात	ग्रं०सा०	43/5/74
थ	तोरथ	गं०सा०	17/1/8
	बोहिथ	ग्रं०सा०	40/4/67
	रथ	ग्रं०सा०	42/5/71
द	कागद	ग्रं०सा०	15/1/2
	गोविंद	ग्रं०सा०	95/4/1
	गोबंद	ग्रं०सा०	44/5/77
ध	कंध	ग्रं०सा०	18/1/13
	साध	ग्रं०सा०	164/4/41
	सिध	ग्रं०सा०	42/5/72

न	मन	ग्रंसा0	15/1/4
	मधुसूदन	ग्रं0सा0	94/4/2
	थान	ग्रं0सा0	42/5/72
प	कलम	ग्रं0सा0	18/1/11
	पाप	ग्रं0सा0	165/4/43
फ	x		
ब	साहिब	ग्रं0सा0	17/1/9
	साहिब	ग्रं0सा0	474/2/3[22]
भ	पुत्र	ग्रं0सा0	40/4/65
म	करम	ग्रं0सा0	15/1/4
	खसम	ग्रं0सा0	474/2/1[22]
	हरिनाम	ग्रं0सा0	39/4/65
य	x		
र	मंदर	ग्रं0सा0	14/1/1
	गुर	ग्रं0सा0	463/2/2
	गुर	ग्रं0सा0	39/4/65
	वैकर	ग्रं0सा0	42/5/71
ल	परमल	ग्रं0सा0	14/1/4

व	सिव	ग्रं०सा०	21/1/18
	हरिनाव	ग्रं०सा०	40/4/67
	सेव	ग्रं०सा०	43/5/75
स	रस	ग्रं०सा०	15/1/4
	तरकस	ग्रं०सा०	16/1/7
	रस	ग्रं०सा०	42/5/71
ह	मुह	ग्रं०सा०	474/2/2[22]
	दरगह	ग्रं०सा०	42/4/70
	मोह	ग्रं०सा०	47/5/83
ड़	गुड़	ग्रं०सा०	15/1/5
	कुड़	ग्रं०सा०	165/4/43
ढ़	x		

<u>स्वरान्त स्त्रीलिंग प्रातिपदिक</u> :—

अ		ग्रं०सा०	164/4/39
आ	आरजा	ग्रं०सा०	14/1/2
	किरपा	ग्रं०सा०	466/2/2
	सेवा	ग्रं०सा०	474/2/1[22]

	कथा	ग्रं०सा०	95/4/5
	चिंता	ग्रं०सा०	43/5/73
	माइआ	ग्रं०सा०	42/5/71
इ	सिधि	ग्रं०सा०	14/1/1
	कामणि	ग्रं०सा०	14/1/4
	जाति	ग्रं०सा०	466/2/5
	रासि	ग्रं०सा०	40/4/65
	रैणि	ग्रं०सा०	41/4/70
ई	धवतो	ग्रं०सा०	14/1/1
	कोठड़ी	ग्रं०सा०	463/2/3
	बेड़ो	ग्रं०सा०	40/4/67
	पैरो	ग्रं०सा०	43/5/73
उ	वासु	ग्रं०सा०	15/1/4
	वान्यु	ग्रं०सा०	42/5/71
ऊ	गऊ	ग्रं०सा०	164/4/41
ऐ	बलिहारै	ग्रं०सा०	16/1/5
	इणमैं	ग्रं०सा०	18/1/11
औ	x		

व्यंजनान्त स्त्रीलिंग प्रातिपदिक :—

क	नाक	ग्रं०सा०	42/5/21
ख	भूख	ग्रं०सा०	95/4/4
ग	x		
घ	x		
ङ	x		
च	लौंच	ग्रं०सा०	164/4/42
छ	x		
ज	सेज	ग्रं०सा०	21/1/20
झ	x		
ञ	x		
ट	बाट	ग्रं०सा०	15/1/3
ठ	x		
ड	x		
ढ	x		
ण	वानण	ग्रं०सा०	463/2/
त	मात	ग्रं०सा०	94/4/2
थ	x		

द	नोंद	ग्र0सा0	94/4/2
ध	x		
न	x		
प	x		
फ	x		
ब	x		
भ	x		
म	x		
य	x		
र	x		
ल	x		
व	लिव	ग्र0सा0	40/4/66
स	वास	ग्र0सा	40/4/65
ह	साह	ग्र0सा0	15/1/3
	देह	ग्र0सा0	164/4/59
ड़	x		

स्त्रीलिंग प्रत्यय :—

प्रत्यय	मूलप्रातिपदिक + प्रत्यय	व्युत्पन्न स्त्रीलिंग	
ई	आसक + ई	आसकी	ग्रं०सा० 474/2/1
	गुरुपरसाद +	ई गुरुपरसादी	ग्रं०सा० 42/5/71
	मोहण + ई	मोहणी	ग्रं०सा० 14/1/1
इ			
इया			
नी	सुहाग +	नी सुहागणी	ग्रं०सा० 41/4/69
इनी			
आइन (ण)			
आनी (ण)			

संज्ञा वचन विधान :—

मूल रूप एक वचन के सह संज्ञा प्रातिपदिक में दिया गया है । नानक देव (गुरु ग्रन्थ साहब) में एकवचन में निम्नलिखित प्रत्यय लगाकर विकृत एक वचन रूप बनाये गये हैं :—

विकृत रूप — एक वचन

ए - ऐ

साच + ए साचे ग्रं०सा० 15/1/5

अँगुला	+ ऐ	अँगुले	ग्रं०सा०	19/1/18
इआणा	+ ए	इआणे	ग्रं०सा०	474/2/5[22]
सचा	+ ऐ	सचे	ग्रं०सा०	463/2/3
भुआ	+ ए	भुऐ	ग्रं०सा०	164/4/42
साच	+ ए	साचै	ग्रं०सा०	46/5/81

शून्य प्रत्यय :—

कस्तूरी	+ 0	कस्तूरि	ग्रं०सा०	14/1/1
गुरू	+ 0	गुरू	ग्रं०सा०	14/1/1
भिक्षुक	+ 0	भिक्षुक	ग्रं०सा०	164/4/42

संज्ञा के मूलरूप एक वचन के रूप में बहुवचन बोधक विभक्ति प्रत्यय लगाकर मूल बहुवचन तथा विकृत बहुवचन के रूप निर्मित होते हैं। गुरू नानक देव ने {ग्रन्थ साहब के} निम्नलिखित बहुवचन बोधक प्रत्यय प्राप्त होते हैं।

मूलरूप बहुवचन :—

पुल्लिंग व्यंजनान्त तथा कुछ स्वरान्त एक वचन रूपों में शून्य प्रत्यय लगाकर बहुवचन का बोध कराया गया है।

शून्य प्रत्यय

पुत	+ 0	पुत	ग्रं०सा०	18/1/11

चंदा	+ 0	चंदा	ग्रं०सा०	463/2/2
सूरज	+ 0	सूरज	ग्रं०सा०	463/1/2
वडिआई	+ 0	वडिआई	ग्रं०सा०	164/4/39
संत	+ 0	संत	ग्रं०सा०	95/4/5
पसु	+ 0	पसु	ग्रं०सा०	43/5/73

पुलिंग आकारान्त रूपों में — ए प्रत्यय लगाकर बहुवचन बनाते हैं :-

ए

कुछ अन्य प्रत्यय भी प्राप्त होते हैं :—

हु	जन	+ हु	जनहु	ग्रं०सा०	466/2/2
			कथारिहो	ग्रं०सा०	22/1/23
हआ	पंखी	+ हआ	पंखीआ	ग्रं०सा०	43/5/73

अकारान्त विशेषण क्रिया में बहुवचन का बोध कराने के लिए अधिकांशत: ए – ऐ प्रत्यय का प्रयोग हुआ है ।

क्रिया :--

ए -	मिले	-	ग्रं0सा0	40/4/66
	बोजे	-	ग्रं0सा0	40/4/65

विशेषण :--

ए -	भला + ए	भले	ग्रं0सा0	15/1/4
		छोटे	ग्रं0सा0	23/1/23

मूल रूप स्त्रोलिंग - बहुवचन :--

स्त्रोलिंग व्यंजनान्त संज्ञा प्रातिपदिक में - ए जोड़कर बहुवचन रूप निर्मित हुआ है ।

- एँ

भैंस	+ ए	भैंसे	ग्रं0सा0	17/1/10
मोन	+ ए	मोने	ग्रं0सा0	95/4/3

स्त्रोलिंग ईकारान्त रूपों में [आँ] इयां, इआ प्रत्यय जुड़ता है --

[आँ] -- इयां, इआ

बौनि	+ इया	बौनिआ	ग्रं0सा0	15/1/4
कहाणी	+ इआ	कहाणीआ	ग्रं0सा0	17/1/10

- इआ

कुड़ो	+ इआ	कुड़ोआ	ग्रं0सा0	474/2/2
बड़भागो	+ इआ	बड़भागोआ	ग्रं0सा0	40/4/66
गुणकारो	+ इआ	गुणकारोआ	ग्रं0सा0	40/4/67
खुसो	+ इआ	खुसोआ	ग्रं0सा0	42/5/71
		बड़िआईआ	ग्रं0सा0	16/1/6
		बड़िआईआ	ग्रं0सा0	45/5/78

स्त्रीलिंग मूलरूप बहुवचन के अन्य प्रत्यय भी प्राप्त होते हैं।

- ई

फुरमाइस	+ ई	फुरमाइसी	ग्रं0सा0	42/5/71

बहुवचन - तिर्यक रूप :--

नानक देव में (गुरु ग्रन्थ साहब में) मूलरूप एकवचन रूपों में निम्नलिखित प्रत्यय जोड़कर पुलिंग स्त्रीलिंग बहुवचन के विकृत रूप निर्मित किये गये हैं।

- आँ :

आँ	सेवक	+ आँ	सेवकाँ	ग्रं0सा0	43/5/75

इन :

ं अनुस्वार

-ए

हीरा + ए हीरे ग्रं०सा० 14/1/1/1

पड़ा + ए पड़े ग्रं०सा० 15/1/3

रंग + ए (बहु) रंगे ग्रं०सा० 52/5/71

- ई

दाति + ई दाती ग्रं०सा० 16/1/5

<u>शून्य प्रत्यय</u> :—

मोती + 0 मोती ग्रं०सा० 14/1/1

लाल + 0 लाल ग्रं०सा० 14/1/1

- या (इआ)

वड + इआ वडिआ, वडिआ सिफ्त क्रिआ रोस -

ग्रं०सा० 15/1/3

सोफी + इआ सोफीआ ग्रं०सा० 15/1/5

कीहो + इआ कीहोआ ग्रं०सा० 474/2/1[22]

निमाणी + इआ निमाणिआ ग्रं०सा० 41/4/68

बादसाही + इआ बादसाहीआ ग्रं०सा० 42/5/72

वा

जोव	+ आ	जोवा	ग्रं०सा०	15/1/3
घट	+ आ	घटा	ग्रं०सा०	49/5/88

गुरु नानक देव {ग्रंन्थ साहब} में हिन्दी में विकृत बहुवचन बनाने का पदग्राम "आँ" है और - इन, - अन, - नि, - ं {अनुस्वार}, सह पदग्राम के रूपमें प्रयुक्त हुए हैं। ग्रन्थ साहब में महला।° में मूल बहुवचन तथा विकृत बहुवचन बनाने का पदग्राम- —ह आ है। अन्य सहपदग्राम - ए, - ई, - 0 शून्य, - आ, भी प्राप्त होते हैं किन्तु उनकी आवृत्तियाँ बहुत कम हैं।

अन्य शब्द जोड़कर भी बहुवचन का बोध कराया जाता है।

संत	+ जना	संतजना	ग्रं०सा०	18/1/12
संत	+ जनहु	संतजनहु	ग्रं०सा०	49/5/90
संत	+ जना	संतना	ग्रं०सा०	164/4/40

<u>कारक रचना :—</u>

संज्ञा {सर्वनाम, विशेषण} पद वाक्य में अन्य पदग्रामों से सम्बन्ध प्रकट करने के लिए जो रूप ग्रहण करता है उस रूप को कारक कहा जाता है। संस्कृत काल में एक संज्ञा पद के 24 भिन्न-भिन्न रूप {कारक 8 वचन बनते थे। प्राकृतकाल में इन रूपों की संख्या 13 और अपभ्रंश में 5 या 6

हो रह गयो । आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं के विकास के साथ ही साथ 10वीं शती ई0 के पश्चात अपभ्रंश के ये रूप भी इतने घुलमिल गये कि एक संज्ञा पद के केवल दो ही रूप मिलने लगे —

1- मूल रूप या निर्विभक्तिक रूप अथवा शून्य प्रत्यय युक्त रूप जो कर्ता कारक में प्रयुक्त होता रहा ।

2- विकृत रूप [विकारी रूप अथवा तिर्यक रूप] जिसमें अन्य कारकों की विभक्तियाँ लगाई जाती थीं । इन दो रूपों से 8 भिन्न-भिन्न कारकों के अर्थ प्रकट करने के लिए उत्तर अपभ्रंश काल से विकृत रूप के साथ अन्य पद या पदांश जोड़े जाने लगे । आधुनिक कारक इन्हीं जोड़े जाने वाले पदों या पदांशों के अवशेष हैं जो इतने घिसपिस गए हैं कि अब अपना स्वतंत्र अर्थ भी खो बैठे हैं ।

कारक रचना की दृष्टि से नानक के [गुरु ग्रन्थ साहब] में दो पद्धतियाँ मिलती हैं —

1- अपभ्रंश कालीन स्थिति —

जिसमें 8 कारकों की अर्थ सूचक विभक्तियाँ स्वतंत्र पदग्राम से संयुक्त होकर प्रयुक्त होती हैं । जिन्हें हम संयोगी कारक विभक्ति की संज्ञा दे सकते हैं ।

2- वियोगात्मक कारक विभक्ति पद्धति —

बल्कि वियोगात्मक रूप से जुड़ता है । प्रथम पद्धति में विभक्ति पदग्राम मूल पदग्राम विभक्ति का एक अक्षरात्मक अंग बन जाती है जबकि द्वितीय पद्धति में विभक्ति + मूल पदग्राम मिलकर एक मिश्रित पदग्राम का निर्माण नहीं करते बल्कि एक ही अनुक्रम में घटित होने पर भी दोनों की अक्षरात्मक स्थिति अलग-अलग रहती है ।

गुरु नानक देव के ग्रन्थ साहब में मूल रूप एकवचन स्वरान्त तथा व्यंजनान्त दोनों रूपों में मिलते हैं । इसका विवेचन विस्तार से गत पृष्ठों ( ) में किया जा चुका है । मूलबहुवचन प्रत्यय का स्पष्टीकरण भी गत पृष्ठों ( ) में हुआ है ।

वि0 एक वचन रूप की रचना अधिकांशतः मूल रूप में शून्य (0) प्रत्यये जोड़कर भी की जाती है अर्थात निर्विभक्तिक रूप में ही ये पद वि0ए0व0 का निर्माण करते हैं । इसके अतिरिक्त मूल आकारान्त रूपों में - ए, - ऐ प्रत्यय जोड़कर विकृत एक वचन की रचना की जाती है । इसका विवेचन भी गत पृष्ठों में विस्तार से किया जा चुका है । किन्तु कुछ उदाहरण यहाँ भी प्रस्तुत है :—

कुंगू	+ 0	कुंगू	ग्रं0सा0 14/1/1
गुरू	+ 0	गुरू	ग्रं0सा0 14/1/1
मुख	+ 0	मुख	ग्रं0सा0 15/1/4

– ए

घोड़ा	+ ए	घोड़े	ग्रं०सा०	15/1/4
इआणा	+ ए	इआणे	ग्रं०सा०	474/2/3[22]
भुख	+ ए	भुखे	ग्रं०सा०	164/4/42
साच	+ ए	साचे	ग्रं०सा०	46/5/81

– ऐ

अंधुला	+ ऐ	अंधुलै	ग्रं०सा०	19/1/13
लवा	+ ऐ	लवै	ग्रं०सा०	463/2/3

विकृत बहुवचन के विभक्ति प्रत्ययों का विवेचन गत पृष्ठों [20 पृष्ठ में है] में किया गया है ।

<u>कारक — विभक्ति</u>

संयोगी विभक्ति-कर्ताकारक :—

संयोगी विभक्ति – कर्ताकारक — [संज्ञा,सर्वनाम, विशेषण]

– 0 – प्रत्यय

गुरि + 0 गुरिनाम दीआ सचु सुआउ ग्रं०सा० 43/5/75

– ऐ – जब सकर्मक क्रिया, भूतकालिक कृदन्तीय रूप के साथ कर्मणि प्रयोग में रहती है तब मूल संज्ञा प्रातिपदिक में विकृत रूप बोधक संयोगी – ए – जोड़ दी जाती है, जहाँ पर आज आधुनिक हिन्दी में '—' है

प्रत्यय :—

– ऐ

अंधा	+	ऐ	अंधै	ग्रं०सा० 15/1/3
			अंधै नामु विसारिआ	
विधाता	+	ऐ	विधातै	ग्रं०सा० 42/5/72
			लिखिआ लेखु तिनि पुरखि विधातै	

कर्म, सम्प्रदान कारक :—

संयोगी विभक्ति नानक देव [गुरु ग्रन्थ साहब] में कर्म सम्प्रदान का द्योतन करने के लिए निम्नलिखित संयोगी विभक्तियाँ मिलती हैं :—

शून्य प्रत्यय :—

गुण	+	0	गुण	ग्रं०सा० 40/4/67
			मिलि सजण हरि गुण गाइ	
रस	+	0	रस	ग्रं०सा० 42/5/71
			रस भोगहिं	

+ इ [अइ] प्रत्यय :—

तन	+	इ	तनि	ग्रं०सा० 16/1/5
			[वस्तु परिमलु तनि वासु]	

किध + हु किधहु - ल्उमै किधहु जाजे

ग्रंसा0 466/2/2

तुध + हु तुधहु - पुन तुधहु खाली की नहीं

ग्र0सा0 40/4/65

-औं :

- ई :

बोन + इ बोनि - फिका बोनि विगुचन

ग्र0सा0 15/1/4

संजम + इ संजमि - किन्तु संजमि रह जाइ

ग्र0सा0 766/2/2

- ए

फाधा + ए फाधे फाधे लैई निकली

ग्र0सा0 43/3/73

- ऐं :

- उ

माण + उ माणु - तैरो दरबारु की माणु

परमल + उ परमलु - सतु परमलु तनि वासु
ग्रं०सा० 16/1/5

खैह + उ खैहु - खैहु खैह रलाईऐ
ग्रं०सा० 17/1/8

- ऐ

बौली + ऐ बौलिऐ - जितु बौलिऐ पति पाईऐ
ग्रं०सा० 15/1/4

कंगा + ऐ कंगै - कंगै कंगा करि मनि
ग्रं०सा० 474/2/1

हीरा + ऐ हीरै हीरै हीरु मिलि बेधिआ
ग्रं०सा० 474/2/1

आणा + ऐ आणै सतिगुरु के आणै जी को
ग्रं०सा० 40/4/67

उपदेसि + ऐ उपदेसिऐ - सतिगुरु के उपदेसिऐ विणसै
सरब जंजाल ग्रं०सा० 48/5/86

- ईआ

पिआरा + ईआ पिआरीआ, मिलहु पिआरिआ
ग्रं०सा० 96/2/7

- टै

गला + टै गलावै - कुछ मिलै गलाटै
ग्रं०सा० [illegible]

सम्बन्ध कारक

- 0 शून्य प्रत्यय

मोहणी	+	0	मोहणी -	मोहणी मुखि मणि सोहै ग्रं०सा० 14/1/1
माइआ	+	0	माइआ -	बाबा माइआ रचना धोहु ग्रं०सा० 15/1/3
निमाणिआ	+	0	निमाणिआ -	निमाणिआ गुरु माणु है ग्रं०सा० 41/3/68
गोबिंद	+	0	गोबिंद -	तूं गुण गोबिंद नित गाउ ग्रं०सा० 45/3/77

- ऐ

सबद	+	ऐ	सबदै -	बिनु सबदै भरमाईऐ ग्रं०सा० 19/1/15
नाम	+	ऐ	नामै -	बिनु नामै क्रिउ जीवाउ ग्रं०सा० 40/3/66
नाव	+	ऐ	नावै -	ग्रं०सा० 42/3/71

- क

मुरदा	+	क	मुरदाक कमि आखा मुरदाक

अधिकरण कारक

संयोगी विभक्ति

– 0

मुख	+	0	मुख	–	परनिन्दा पर मलु मुख सुखी
					ग्रं०सा० 15/1/4
जीइ	+	0	जीइ	–	जौ जीइ होइ सु उगवै
					ग्रं०सा० 474/2/2[22]
लिव	+	0	लिव		इकसु की लिव लागु
					ग्रं०सा० 45/5/79

– इ

चित	+	इ	चिति	–	तेरा चिति न आवैनाउ
					ग्रं०सा० 14/1/1
हुकम	+	इ	हुकमि	–	इकन्हा6हुकमि समाइ लए
					ग्रं०सा० 463/2/3
मन	+	इ	मनि	–	मैं मनि तनि बिरहु अति
तन	+	इ	तनि		ग्रं०सा० 93/4/65
चित	+	इ	चिति	–	करता चिति न आवई

– ई

महल + ई महली – जा महली पाए थाउ

ग्रं०सा० 16/1/5

चरण + ई चरणी – गुर की चरणी लागु

ग्रं०सा० 45/5/78

– ए

लोभ + ए लोभै लगा लोभानु

ग्रं०सा० 21/1/19

हुकम + ए हुकमै – सकन्हा हुकमै करे विणासु

ग्रं०सा० 463/2/5

कूकड़ + ए कूकड़ै. – लगा कितु कूकड़ै

ग्रं०सा० 42/5/73

– ऐ

गुण + ऐ गुणै – चंदु सूरजु दुइ गुणै न देखा

ग्रं०सा० [illegible]

सेवा + ऐ सेवै – सतिगुरु सेवै लगिआ

ग्रं०सा० [illegible]

विरद + ऐ विरदै – जा विरदै लथा सोई

– हि

जल + हि जलहि – जलुजलहि समाइ

ग्रं0सा0 41/4/68

– उ

रंग + उ रंगु – मनि बिलासु बहु रंगु

ग्रं0सा0 42/5/75

– आई

गुरसरण + आई गुरुसरणाई – हउ गुरसरणाई ढहि पवा

ग्रं0सा0 39/4/65

तिसु सरणाई सदा सुखु ग्रं0सा0 45/5/79

– आइ

सरण + आइ सरणाइ – आइ पइआ सरणाइ

ग्रं0सा0 43/5/73

संयोगी विभक्तियों के विवेचन से यह ज्ञात होता है कि गुरु नानक देव [ग्रन्थ साहब] में इनका प्रयोग हुआ है । व्यापकता की दृष्टि से इन विभक्तियों में + ए + ऐ विभक्ति सर्वव्यापक सी है । जो सम्भवतः + हि, हिं अहि, अहिं ऐ, एँ से विकसित हुआ है जिसने अंततः एकवचन विकृत रूप प्रत्यय—ए को जन्म दिया ।

<u>वियोगात्मक कारक विभक्ति</u>

<u>कारक परसर्ग</u>

संयोगी विभक्तियों में - ऐ, - एँ ए प्रत्यय की एकरूपता के कारण सभी कारकों के अर्थ अलग-अलग स्पष्ट रूप से समझने में उलझन पैदा होने लगी सम्भवतः इसी कारण अपभ्रंश काल से ही कारक परसर्ग जोड़े जाने लगें होंगे। गुरु नानक देव [ग्रन्थ साहब] में बहुतायत से ऐसे संज्ञा परसर्गों का प्रयोग हुआ है जिससे यह सिद्ध हो जाता है कि नानक देव के [गुरु ग्रन्थ साहब] में वियोगात्मक पद्धति की ही प्रधानता है।

<u>कर्ता कारक परसर्ग :-</u>

आधुनिक हिन्दीमें सप्रत्यय कर्ता का प्रयोग सकर्मक क्रिया के भूत निश्चयार्थक रूप के साथ संज्ञा के विकृत रूप में 'ने' परसर्ग का प्रयोग करके होता है। गुरु नानक देव के ग्रन्थ साहब में कारक परसर्ग 'ने' का प्रयोग नहीं मिलता है। जब सकर्मक क्रिया भूत निश्चयार्थक रूप में कर्मणि प्रयोग के साथ आती है तब केवल संज्ञा का विकृत रूप ही प्रयुक्त होता है। इसका विस्तृत विवेचन संयोगी कर्ता कारक में किया जा चुका है।

<u>कर्म - सम्प्रदान</u>

हु -

को —

सख को आधारु -	ग्रं०सा०	51/5/94
करता सभु को तेरै जोरि -	ग्रं०सा०	17/1/10
सभु को वसिगति करि -	ग्रं०सा०	42/5/72

+ कउ —

नानक साचे कउ सचु जाणु	ग्रं०सा०	15/1/5
जिन कउ सतिगुर था पिआ	ग्रं०सा०	17/18
जा कउ आपि करे परगासु	ग्रं०सा०-८	463/2/3
मो कउ हरि प्रभु मेलि मिलाइ	ग्रं०सा०	41/4/68
साध संगति कउ वारिआ	ग्रं०सा०	43/5/74

[पंजाबी प्रत्यय]

+ नो —

नानक जिसनो नगा तिसु मिले	ग्रं०सा०	474/2/1[22]
हरि गुरमुखा नो सावासि	ग्रं०सा०	40/4/65
मन मैं करते नो सालाहि	ग्रं०सा०	43/5/75
जिसनो तूं पती आखदा	ग्रं०सा०	42/5/71
जिसनो वाह बुझाई	ग्रं०सा०	53/1/1

+ के —

हउ सतिगुर के बलि जाउ — ग्रं०सा० 40/4/67

सतिगुर के बलिहारणी — ग्रं०सा० 44/5/75

पिर के कामि न आवई — ग्रं०सा० 56/1/5

'कौं' पदग्राम के रूप में तथा कूं, कौ, कों, कउ, के, के—सह पदग्राम के रूप में प्रयुक्त हुए हैं।

करण — आदान

+ सौं x

+ सौ x

+ सों x

+ सै

संजोगी मिलि एक सै — ग्रं०सा० 18/1/11

+ सूं

+ स्यूं

+ सिउ — गुरनाम दिड़ाइ रंग सिउ — ग्रं०सा० 40/4/67

इकी सिउ मनु मानिआ — ग्रं०सा० 44/5/75

वडिआ सिउ किआ रीस — ग्रं०सा० 15/1/5

+ सैती — अगो सैतो जालीवा ग्रं०सा० 14/2/2

सतिगुर विनु लाइ ग्रं०सा० 43/5/73

साहिब सैती हुकुम न करे ग्रं०सा० 474/2/3

+ ते — साचे ते पवना भइवा ग्रं०सा० 19/1/15

आपस ते जो पाइये ग्रं०सा० 474/2/1[23]

जिस ते सोभी मनि पई ग्रं०सा० 43/5/74

+ तैं

+ त मोती त मंदर ऊसरहि ग्रं०सा० 14/1/1

+ दे गुण सारदे रते ग्रं०सा० 46/5/81

+ माह निकसु न पाए पाह ग्रं०सा० 50/5/91

+ लगु सो लगु तुम वन्जि ग्रं०सा० 42/5/71

गुरु नानक देव के [ग्रन्थ साहब] में करण-अपादान कारक में 'सैती' परसर्ग के रूप में प्रयुक्त हुआ है। सम्भवतः इसी सैती प्रत्यय से आगे 'से' माह, पैं, लगु आदि सब परसर्ग के रूप में प्रयुक्त हुए हैं।

<u>सम्बन्ध - कारक</u>

+ का — तिनका किया ग्रं०सा० 15/1/4

करे का विधि वादु ग्रं०सा० 463/2/3

सतिगुरु दाता हरि नाम का ग्रं०सा० 39/4/65

+ के — {बहुवचन}

	एते रस सरीर के	ग्रं०सा० 15/1/4
	हरि के संत मिलहु मन देवा	ग्रं०सा० 95/4/5
	पारब्रह्म के सगि जन तम	ग्रं०सा० 48/5/87
{वि०वि०}	साचे के गुण सारि	ग्रं०सा० 46/5/81

स्त्रीलिंग :—

+ की —	कामणि रसु परमल की वासु	ग्रं०सा० 15/1/4
+ की आह—	{ब०प०} कहाणीआ संम्रथ कंत की आह	ग्रं०सा० 17/1/10
+ की	सचे की है कोठड़ी	ग्रं०सा० 463/2/3
	जन नानक की अरदासि	ग्रं०सा० 40/4/65
	विआपिआ मन की मति	ग्रं०सा० 42/5/71
+ कीआ	{ब०व०} दुनीआ कीआ वडिआईआ	ग्रं०सा० 45/5/78
+ केरीआ	{ब०व०} सभ पुंजीजन केरीआ	ग्रं०सा० 168/4/52
+ के –	नानक तिन्हके संगि साथि	ग्रं०सा० 15/1/3
	सतिगुर के चरणी जो लगे	ग्रं०सा० 40/4/67
	साध संगति के परिसणे	ग्रं०सा० 44/5/78

+ केरा — धंनु धंनु गुरु नानक जन केरा ग्रं०सा० 167/4/49

+ केरो - कवर केरो कोई ग्रं०सा० 18/1/13

सभ वसगति है हरि केरी ग्रं०सा० 168/4/51

+ कुरि - जे लोड़हि वरु कामणी नह मिली पै पिर कुरि

ग्रं०सा० 17/1/9

(पंजाबी प्रत्यय)

+ दा - तिस दा अाउ न थिउ ग्रं०सा० 474/2/4[22]

जो हो दा हुकमु किरसाणदा ग्रं०सा० 43/5/74

+ कोती - कुसो कोती दिन चारि ग्रं०सा० 15/1/5

का, की, के, पदग्राम के रूप में प्रयुक्त हुए हैं, तथा केरे, केरा, केरो, कुरि, की को आदि सहपदग्राम हैं।

अधिकरण :—

+ पसि - दूजो होवै पासि ग्रं०सा० 474/2/3[22]

+ पै - राहि पै जाणा ग्रं०सा० 24/1/27

+ महि - मनमहि जाहि विकार ग्रं०सा० 16/1/7

सभजग महि चान्नु होइ ग्रं०सा० 42/5/71

कंकन नारो महि जोत लुभ्नु है ग्रं०सा० 167/4/50

+ माहि - रोगु वडा मन माहि ग्रं०सा० 21/1/20

दारु भी इस माहि ग्रं०सा० 466/2/2

सौ लगा मन माहि ग्रं०सा० 43/5/73

+ मै - हरि हरि नामु मै हरि मनि भइआ ग्रं०सा० 94/4/1

जौबनि मै मति ग्रं०सा० 75/1/2

+ माही - थरि कंूत घट माही जीउ ग्रं०सा० 598/1/9

+ पहि अवर काहू पहि बहुड़िन जावहि ग्रं०सा० 395/5/99

अधिकरण प्रत्यय में अत्यधिक विविधता है। इसके बहुत सारे प्रत्यय प्राप्त हुए हैं, साथ ही 'ग्रन्थ साहब' महला 1, के प्रत्ययों में कोई समानता नहीं है। एक'मे' प्रत्यय ही लगभग सभी में प्राप्त है अतः यहा में > में > में का पदग्राम तथा महि, माहि, मां, मा, मंझि मंझार, पै, मैं, मैं, परि, ऊपर, पास आदि सहपदग्राम की भांति प्रयुक्त हुए हैं।

संबोधन कारक :-

संबोधन कारक के अर्थ द्योतन के लिए अधिक तर संज्ञा का विकृत रूप ही प्रयुक्त हुआ है। कुछ विस्मयादि बोधक शब्द संज्ञा के पूर्व आये

रै — मन रै सचु मिलै थेउ जाइ ग्रं०सा० 18/1/11

हरि कंजु करावै दे रासि रै ग्रं०सा० 165/4/45

भाई रै लुधु साध संगि पाइआ ग्रं०सा० 42/5/72

मुझी — मुझी पिर बिनु किआ सोगारु ग्रं०सा० 18/1/13

हौ — हौ मनु रंगहु वडभागी हौ ग्रं०सा० 40/4/67

45/4/67

जोवड़े — सैई किआरीए जो वाड़े ग्रं०सा० 44/5/7

कारक – परसर्गवत् प्रयुक्त अन्य शब्द या प्रत्यय :—

कर्म – सम्प्रदाय :—

कारै — सभी कारै सचु मिलै ग्रं०सा० 19/1/14

नालि — तिसु कोई न चलिओ नालि ग्रं०सा० 474/2/5[22]

जिसु साहिब नालि न हारीऐ ग्रं०सा० 94/4/1

मेरा प्राण सखाई सदा नालि चलै ग्रं०सा० 43/5/74

नाले — नाले मारहु वाहु ग्रं०सा० 474/2/1[22]

नाइ — मीनै प्रीति भई जलि नाइ ग्रं०सा० 164/4/41

विटहु — हउ तिसु विटहु वारंनी ऐ ग्रं०सा० 40/4/66

ग्रं०सा० 92/5/98

पहि - दुख तिसै पहि आरबीअहि ग्रं०सा० 16/1/5

पासि - सुख जिसै ही पासि ग्रं०सा० 16/1/5

नामु अमोलकु रतनु है पूरे सतगुर पासि

ग्रं०सा० 40/4/66

<u>करण</u> :—

साथि - चौते साथि मुनुख है ग्रं०सा० 43/5/73

—×—

---::: अध्याय 5-'क'::: ---

कबीर - सर्वनाम :-

सर्वनाम संज्ञा के प्रमुख प्रतिनिधि पद हैं। कबीर ग्रन्थावली में संज्ञा के समान सर्वनाम पद में वचन और कारक के आधार पर रूपान्तर प्राप्त हुए हैं किन्तु लिंग भेद, रूपात्मक स्तर पर प्राप्त नहीं होता। लिंग का निर्णय वाक्य स्तर पर क्रिया के आधार पर होता है। कारक रचना की दृष्टि से संज्ञा की भाँति सर्वनाम में भी दो वचन और दो कारक प्राप्त होते हैं। वियोगात्मक स्थिति के कारकों के अतिरिक्त कबीर ग्रन्थावली में सर्वनाम में भी संज्ञा की भाँति संयोगात्मक स्थिति की कारक-योजना प्राप्त होती है, किन्तु संज्ञा की अपेक्षा सर्वनाम में ऐसे रूपों का बहुत कम प्रयोग हुआ है। किन्तु संज्ञा की अपेक्षा सर्वनाम में वियोगात्मक स्थिति अधिक अपनायी गई है। केवल पुरुषवाचक के कर्म सम्प्रदाय तथा सम्बन्धकारकीय रूपों में ही संयोगात्मक स्थिति प्राप्त होती है, अन्य सर्वनामों में तो केवल कर्मसम्प्रदान द्योतक रूप में यत्र-तत्र ही संयोगात्मक विभक्ति मिलती है। वियोगात्मक रूप ही की प्रधानता है।

पुरुषवाचक सर्वनाम :-

उत्तम पुरुष

प0 54, प्रयुक्त नहीं मिलता है केवल
सा0 22 निजात्मक अथवा आदरार्थक
र0 3 अर्थ में इसका प्रयोग माना
चौ0 । जा सकता है ।

80 आवृत्ति

	एकवचन	बहुवचन
प0	53/1, 4/1, 5/3, 5/4, 6/5, 6/6, 11/1, 14/6, 15/3, 15/8, 17/5, 30/2, 35/3, 37/1 इत्यादि	प0 15/10, 18/4, इ0 सा0 5/8/1, 10/14/1, 14/3/1, 15/32/2 इत्यादि ।
सा0	4/12/2, 12/21, 1/24/1 2/25/2, 2/35/1, 2/36/2 इत्यादि	
र0	16/2, 19/2, 19/5,	
चौ0	5/1	
खा0	5	र0 72
	2/8/2, 2/14/2, 2/20/1	
	14/9/3, 21/28/2	इन्ह - [2 आवृत्ति]
इह	[5 आवृत्ति]	प0 20/4

प - ×

सा0 - 16/1/1, 15/45/1

13/2/2, 6/9/1, 2/22/1

इसु - {1 बार}

प0 43/4

इसहिं - {1 बार}

प0- 23/4

निश्चायक दूरवर्ती

मूलरूप :-

एकवचन

वह {6 आवृत्ति}

प0 145/8

सा0 2/42/2, 9/26/2, 15/99/2,

21/10/2, 21/20/2

वो {1 आवृत्ति}

र0 16/4

बहुवचन

वे, {2 आवृत्ति}

प × × ×

सा0 2/20/2, 2/44/2

ते {30 आवृत्ति}

प0 32/4, 50/5, 58/7,

73/8, 86/10, 88/8,

सा० 5/2, 4/5/2, 11/10/2
22/9/2

र० 2/2, 3/4

चौ० 3/2, 22/2, 38/2, 39/2

सा० 1/7/1, 2/4/2, 8/11/2,
1/12/2, 7/11/1, 4/7/
3/9/2, 4/6/2

एकवचन

ओही (1 आवृत्ति)

चौ० 39/2

बहु (1 आवृत्ति)

चौ० 35/2

वह (1 आवृत्ति)

प० 165/5

ऊ (दो आवृत्ति)

सा० 15/10/2, 30/3/2

सु (आठ आवृत्ति)

प० 119/8, 156/8, 191/5,

सा० 6/3/2, 8/1/2, 23/3/2

चौ० 19/2, 41/2

बहुवचन

तेई (1 आवृत्ति)

प० x x x

सा० 31/12/2

तेऊ (3 आवृत्ति)

प० 97/2

सा० 20/4/1, 31/12/2

सौं (10। आवृत्ति)

प0 (45 आवृत्ति)

प0 1/1, 2/4 इत्यादि

सा0 (38 आवृत्ति)

सा0 16/19/21 इत्यादि

र0 11 आवृत्ति

र0 3/10, 6/3 इत्यादि

चौ0 7 बार

चौ0 13/1, 29/2, 31/1, 31/2

36/1, 37/1, 38/1

सोई (18 आवृत्ति)

प0 67/7, 125/5, 87/10, 2/34/2, 156/7, 176/9,

7/3/2, 177/14, 7/4/1, 15/32/2, 33/7/2, 29/6/2,

23/6/1, 2/14/2, 2/7/2, 148/5, 94/1, 96/2 ।

बाँ (11 आवृत्ति)

प0 19/1, 27/4, 44/2, 1/2, 1/5,

आ0 11/6/1, 11/12/1, 11/12/2, 14/37/1, 16/35/2

छर्द [4 आवृत्ति]

प० 9/3, 9/4, 9/5, 192/2

विकृत रूप :—

मुख [4 आवृत्ति]

सा० 3/6/1, 4/14/2, 6/2/1, 6/5/2

मुक्ख [3 आवृत्ति]

सा० 2/25/2, 11/16/1, 14/36/1

मौ [14 आवृत्ति]

प० 10, 13/3, 15/7, 26/4, 26/7, 26/8, 54/3,

139/2, 40/7, 42/1, 67/1,

सा० 2/40/2, 8/5/1, 21/14/1, 21/14/2, 31/16/1

संयोगात्मक रूप :—

कर्म - रूप मोहि [36 बार]

प० 28 बार

सा० 8 बार

प० 2/3/6/6, 10/2, 18/1, 26/8, 35/6, 26/1, 18/4

सम्बन्ध कारकीय रूप :-

संयोगी रूप

एक वचन		बहुवचन	
मेरा	21 बार	हमारा	17 बार आवृत्ति
प0	12	प0	277/13/258/4, 152/11
	10/1, 79/1, 65/7, 37/1,		140/8, 16/7, 5/6,
	56/1, 38/8, 29/1		

एक वचन		बहुवचन	
सा0	1/20/2, 6/8/1, 6/2/2,	सा0	15/32/2
	1/30/1, 4/15/1, 6/2/1,		
	16/35/1, 8/17/1, 8/13/2		
मेरि	18 आवृत्ति	हमारी	1 आवृत्ति
	35/7/14, 5/12/2,	सा0	16/34/2
	45/2, 49/2, 53/1,		
र—	1 बार		
	17/3		

एक वचन	बहुवचन
सा - । बार	
8/13/2	
मेरे - {13 आवृत्ति}	हमारे - {8 आवृत्ति}
सा0 4/3/2, 4/5/1, 29/28/1, 2/55/1	सा0 2/25/1, 5/13/2, 31/26/2
प0 23/1, 4/8, 26/1, 22/1 22/4	प0 1/1, 7/2, 131/3, 188/8, 2/1, 13/1
मेरौ {10 आवृत्ति}	हमारौं (1 आवृत्ति)
प0 9 बार	प0 53/8
141, 26/5, 31/6, 35/5	
सा0 1 बार	
6/1/1	
मरौ 1 बार	हमार -
प0 139/5	सा0
	र0 1 - {11/8}.
मौर {9 बार}	

प0 9/4, 43/3, 104/2, 136/1

140/4, 188/3

र0 136/1

सा0 2/2/2, 21/32/1

उत्तम पुरूष

एकवचन		बहुवचन	
मोरा {5 बार}		हमरा {2 बार}	
प0	11/1, 17/1, 47/2, 189/2, 190/4	प0	193/7, 23/9
मोरी {2 आवृत्ति} {स्त्री0}		हमारो 2 बार	
प0	46/1, 19/2	प0	193/7, 23/9
मोरा {5 आवृत्ति}			
प0	11/1, 17/1, 189/2, 47/2, 190/4	हमरा {2 बार}	
		प0	193/7, 23/9
मोरैं {2 आवृत्ति}			
प0	188/4, 5/4		

मध्यमपुरुष {क्रियोगात्मक रूप}

मूल रूप

एकवचन	बहुवचन
तु {1 आवृत्ति}	तुम

प0 131/12

तूं0 {-32 आवृत्ति}

प0 196/7, 188/3, 187/6, 182/4, 182/3,

161/7, 161/4, 139/4, 11/9, 47/7, 14/6, 9/5,

9/4, 9/3 ।

सा0 2/2522, 2/27/1, 11/6/1, 7/10/2 तुम्ह :-

8/8/1, 9/33/2 इत्यादि

तूं - 7 आवृत्ति आप

प0 39/9, 26/6, 10/6, सा0 15/16/1

सा0 11/6/1, 21/22/1,

38/26/1, 21/30/2

तैं - {9 आवृत्ति}

एकवचन	बहुवचन

प० 188/4, 178/1, 83/4

88/1, 86/2, 83/4, 75/4,

75/3, 63/3

तै (2 बार)

सा० 14/12/1

प० 195/6

(एकवचन, बहुवचन)

तुम (12 बार)

सा० 2/5/2, 26/7/2, 14/3/2, 18[illegible]/12/2,

प० 200/1, 191/1, 188/7, 15/8, 18/3, 19/3,

138/1, 154/1, 159/1, 42/6, 47/3, 54/3 ।

तुम्ह (एकवचन, बहुवचन) 6 आवृत्ति

प० 166/2, 172/6, 101/3, 47/4, 20/13, 49/3 ।

<u>विकृत रूप</u>

<u>मध्यम पुरुष</u>

एकवचन	बहुवचन

सा0 2/32/1, 6/8/1, 11/7/1

2/25/1, 2/32/1, 11/16/2

14/36/1, 21/15/2

र0 1/2

तुम्ह (5 आवृत्ति)

प0 13/2, 27/1, 39/10,

184/1, 184/2

एकवचन	बहुवचन
तुम (1 आवृत्ति)	तुम (आदरार्थ बहुवचन) 6 बार
प0 23/5	प0 154/4, 69/7, 45/6,
तुम (6 आवृत्ति)	45/4/45, 3 1
प0 26/5	
सा0 6/2/2, 11/12/2, 11/7/1	
8/121, 2/18/2	

संयोगात्मक रूप :—

तुहें (2 आवृत्ति)	तुमहिं (4 बार)
सा0 4/14/2, 15/13/2	प0 6/3, 19/3, 22/3,
तुमहिं (1 आवृत्ति)	47/3
प0 81/3	

तोहिं {12 बार}

सा० 32/1/2, 24/9/2, 2/47/2

र० 3/1

प० 169/7, 75/2, 26/8, 18/4, 18/2, 18/1, 17/1, 10/1

तुमहों {1 बार आवृत्ति}

प० 142/2

आप {1 बार}

सा० 1/19/1

रउरा

प० 172/1

मध्यम पुरुष सम्बन्ध कारकीय रूप

एकवचन	बहुवचन
तेरा {16 आवृत्ति}	तुम्हारा {1 बार} आदरार्थ
प० 119/1, 28/6, 32/1, 37/1, 52/5, 63/11, 79/2, 89/2, 92/6, 94/6, 119/1,	प० 177/12
सा० [illegible], 6/2/1, 6/2/2 6/8/1, 15/62/2, 29/5/1	तुम्हारे- {2 आवृत्ति}
	प० 121/1, 184/4

तेरी (12 आवृत्ति) (त्री0)

सा0 8/82, 16/28/2,

र0 11/1

प0 10/2, 14/6, 32/5, 42/8

63/11, 75/2, 85/4, 134/7,

139/4

तेरे - (2 आवृत्ति)

सा0 3/6/2, 32/11/1

तेरौ (3 आवृत्ति)

प0 204/55/3

सा0 16/7/1

तोर- (2 आवृत्ति)

प0 9/4, 104/2

तोरा (3 आवृत्ति)

प0 38/1, 47/1

189/1

तुम्हारो (7 आवृत्ति)

प0 13/3, 15/3, 15/8,

22/2, 29/2, 40/10,

176/6

तुम्हार (1 आवृत्ति)

प0 45/3

तुम्हारा 1 आवृत्ति

प0 23/1

तुम्हरे - (1 आवृत्ति)

प0 124/4

तुम्हरो (2 आवृत्ति) (स्त्री0)

प0 19/4

चौ0-र0 7/4

तौरों {3 आवृत्ति}

प0 19/3, 96/2, 150/5

तौरो {2 आवृत्ति}

प0 19/2, 96/1

तौहरि {1 आवृत्ति}

प0 139/4

थारी {तिहारी चौ0 32/2}

निश्चयवाचक निकटवर्ती

मूलरूप

एकवचन

यह {10 आवृत्ति}

प0 197/5, 178/7, 10/13

13/3, 135/5, 44/3

सा0 17/7/1

प0 6/5, 29/6, 63/11, 63/11,

65/7, 71/6, 87/10, 162/8

चौ0 22/1, 33/2, 35/1, 35/2

38/2, 132/5 इत्यादि

सा0 9/6/2

र0 4/5, 10/9, 11/1

बहुवचन

ए {17 आवृत्ति}

प0 13, 12/2, 40/7 इत्यादि

सा0 16/26/1, 31/23/2,

15/80/1

र0 3/9

एसम –

प0 66/7

चौ0र0 1/2

ए सकल प0 176/10, 176/12

प0 130/1, 113/6

इहै - {6 आवृत्ति} प0 180/4, 68/4, 58/5

सा0 31/1/1, 31/6/2, 32/9/2

इहिं - {2 आवृत्ति}प0 10/6, 51/7, 133/1, 167/6,

सा0 31/9/1

इहौं {2 आवृत्ति} सा0 21/24/1, 26/1/2

इहिं {6 आवृत्ति} सा0 21/24/1, 26/1/2

इहु {2 आवृत्ति} प0 39/8, 22/1

एहौं {2 आवृत्ति} प0 62/2, 129/2

एहु - x

एउ {1 आवृत्ति} प0 187/1

एहिं {5 आवृत्ति}

प0 199/5, 123/1, 99/4, 113/2,

र0 15/5

<u>निश्चयवाचक निकटवर्ती</u>

<u>विकृत रूप</u>

<u>एकवचन</u> <u>बहुवचन</u>

प0 12	प0 4/20/12
23/3, 31/3, 62/4, 68/4	36/4
108/1, 110/10, 111/1, 164/1,	142/9, 85/6
164/7, 175/2, 186/6, 157/3	सा0 2
	31/6 - 2, 2/11/3

सोई - (32 आवृत्ति)

प0 35/9 इत्यादि

सा0 14/34/2 इत्यादि

चौ0 3/2/5/2, 9/1, 38/1, 42/2

विकल्प

एकवचन	बहुवचन
वा (8 आवृत्ति)	उन (3 आवृत्ति)
प0 23/6, 34/10, 14/3,	प0 158/8, 34/12
108/4, 146/2, 168/5,	उनि —
र0 2/2, 8/1, 10/7	प0 86/7
उस (9 आवृत्ति)	उन्हें -

9/3/2, 10/14/1, 11/8/1 उनभो0 48/3/24,

14/28/1, 22/14/1

उसु (1 बार)

प0 x x x

सा0 21/2/2

उसहो (1 बार)

सा0 11/8/2

ता0 (40 आवृत्ति)

प0 42/6, 48/5, 48/1, 48/7

74/5, 122/8, 124/5,

142/6, 185/7

सा0 4/3/2, 4/32/2, 15/36/2, 24/7/2

31/15/1

र0 2/1

तास- सा0 5/13/2, 14/5/2,

7/6/1, 7/11/2 ।

तासु - प0 56/8, 112/8,

15/2/11, 31/5

तिन (27 आवृत्ति)

प0 84/2, 98/6, 114/1, 80/5

88/6, 30/3,

सा0 4/6/2, 4/43/2, 7/12/1,

15/17/2

र0 12/6/61

विनि—

प0 12/4, 13/4, 61/75

र0 9/9

तिन्ह -

प0 x x x

सा0 4/12/1

तिन्हं-

सा0 24/1, 3/1, 4/10/2

4/15/1, 17/31

ताहि -

प0 126/4, 130/14, 134/4

सा0 5/7/2

वाँ0 5/1/12/2, 15/2

ताही -

सा0 2/26/2

तेह --

सा0 22/9/2

तेहि -

प0 99/2

सा0 13/1/2

तेहि -

प0 99/2, 139/8

र0 16/8

सा0 22/1/2

तानि -

सा0 32/4/2

तिनिहिं -

प0 44/4

तिनहीं -

प0 32/6, 63/9, 76/2

सम्बन्धवाचक सर्वनाम

जु - (6 आवृत्ति)

प0 88/8, 128/7, 163/3, 193/2,

र0 6/3, 8/3

जे- (40 आवृत्ति) (ए0व0, ब0व0)

प0 23, 10/10, 27/1, 31/3, 50/5, 50/7, 67/8 इत्यादि ।

र0 17/7, 12/7

सा0 (15 आवृत्ति)

प0 1/7/2, 1/18/1, 2/4/2, 3/11/1

जौ - (95 आवृत्ति) (एक व0, बहु व0)

प0 43, 11/7, 30/2, 31/4, 32/6, 35/5, 35/2

सा0 49, 1/25/1, 2/8/2, 2/26/2

चौ0 1/16

र0 2/2/10, 6/3

विकृ तरूप

एकवचन	बहुवचन
जिस (3 आवृत्ति)	जिन -(30 आवृत्ति)
प0 172/4	प0 27/2, 40/2, 56/7

र0 4/6

सा0 8/8/1

सा0 1/9/2, 2/14/2, 2/30/1

र0 12/6

जिन्ह {3 आवृत्ति}

प0 86/9, 63/10

सा0 15/21/2

जिनि {23 आवृत्ति}

प0 63/10, 55/3 इत्यादि

सा0 3/19 इत्यादि

र0 6/1, 9/9, 10/9, 12/6

जिनहिं -

प0 44/4

जिनहुँ -

प0 x x x

सा0 4/12/2, 23/1/1

जिन्ह -

प0 86/10

सा0 15/21/2

जिन्हि -

प0 10/3/4

जिसु --

प0 187/3

सा0 14/2/1

जासु -

र0 7/6

सह सम्बन्ध वाचक या नित्य सम्बन्धी

मूलरूप

एकवचन		बहुवचन
जौ राम कहैला सौ रामहिं हैला	प0	166/6
सौ बुधा जौ कथै गियान	प0	192/[illegible]
इसी प्रकार जौ............सौ	सा0	6/2/1
जौ............सौ	प0	90/1
सौ............जौ	प0	108/1

तिस - प0 49/2, 183/9, 118/4, 117/8

तिन - प0 84/2, 98/6, 114/1, 80/5, 88/6

जिस -

सा0 8/8/1

तिसु -

प0 128/3, 128/5

जिसहिं - तिसहिं

प0 84/9

सा0 8/8/1

तिसाई -

सा0 12/7/2

तिंस -

प0 88/4

जौ -

ता 82/9

सा0 4/6/3, 4/43/9, 7/12/1

15/77/8

तिनहिं -

प0 44/4

र0 12/6

तिनहुं- सा0 23/1/8

तिनि 112/4, 134/61, 72/2

र0 9/9

तिन्ह -

सा0 4/12/1

<u>प्रश्न वाचक</u> {प्राणिवाचक}

मूलरूप {एकवचन, बहुवचन}

कवन {13 आवृत्ति}

प0   38/1, 40/3, 40/3, 46/1, 69/7,

126/1, 132/4, 178/1, 191/1, 192/1

कवना -

प0   21/2

कौन - {30 आवृत्ति}

प0   49/3, 49/4 इत्यादि

विकृत रूप

एकवचन	बहुवचन

सा0 3/24/2, 19/5/2, 1/3/2

26/5/2

र0   1/4, 5/4

कौन -

प0   158/5

सा0 2/9/2, 2/10/2

कौनों -

प0   17/9

को -- ⌊13 आवृत्ति⌋

प0 184/4, 180/4, 113/8, 110/9, 103/1,

78/4, 49/7, 45/2, 43/3, 8/3

र0 14/5, 16/2

सा0 1/2/2, 10/1/3, 31/14/1 113/10 इत्यादि

का - ⌊27 आवृत्ति⌋ सा0 1/18/1, 15/12/1, 32/1/1

प0 68/1, 72/2, 78/3, 93/3

<u>प्रश्नवाचक ⌊अप्राणिवाचक⌋</u>

मूलरूप ⌊एकवचन, बहुवचन⌋

क्या- ⌊40 आवृत्ति⌋

प0 74/7, 86/8, 99/1, 199/8

सा0 1/1/2 इत्यादि

र0 4/6

बी0 4/1

<u>प्रश्नवाचक</u>

<u>विकृतरूप</u>

<u>एकवचन</u> <u>बहुवचन</u>

सा0 10/5/2, 14/14/2,

17/5/2, 23/8/2

किसु -

प0 113/6

कौन - {एक व0, बहुवचन}

सा0 3/20/2

सा0 10/7/2

किसहो -

सा0 32/2/2

{किसका-किसको-किसको}

का -

प0 78/3

र0 10/8/4, 1/8/7

किन - {12 आवृत्ति}

प0 21/1, 68/3, 71/1, 124/3

सा0 3/1/1, 15/52/2, 156/6/1,

र0 5/3, 7/3

किनि -

प0 85/10, 178/8

निजवाचक

आप - {18 आवृत्ति}

प0 29/5, 107/8, 110/3, 123/8, 130/8, 149/8,

167/8, 167/6 ।

र० 10/3, 11/8, 13/8

चौ० 12/2

आपु - ‌{4 आवृत्ति}

प० 68/10, 118/9, 167/5

सा० 4/1/2

अपनो -

सा० 6/5/2, 15/3/1, 16/18/1, 30/11/1

अपना -

सा० 5/13/1, 20/11/1

आपन्मो - 23/7/1, 20/11/1

आपने -

प० 1/2

आप - आपकौ

सा० 15/60/2

आपनै -

सा० 8/15/2, 16/29/2,

र० 5/6

आपहिं -

प0 10/4, 119/2, 21/2

आपहिं -

प0 10/4, 21/2, 119/2

आपहि - आप

प0 10

आपस -

प0 191/6

आपुन -

सा0 24/2/1

अपनी -

प0 131/8

अपनै -

प0 18/1

[illegible]नै -

प0 27/1, 35/10, 91/3, 109/7

सा0 4/13/1, 15/80/1, 19/3/1

अपनी -

सा० 5/2/2, 18/12/2, 15/13/2

अपना --

प० 65/2, 96/8,

सा० 5/2/2, 15/13/2

अपन --

प० 6/4

अनिश्चयवाचक

मूलरूप

एकवचन | बहुवचन

कोई - (85 आवृत्ति)

प० 1/4, 14/2, 13/7, 19/3

सा० 17,-2/7/2, 5/1/1

र० 3- 2/2, 2/6

चौ०र० 1/6, 1/8

कोइ - (96 आवृत्ति)

प० 18, 3/1, 10/10, 13/3, 19/1

सा० 76(2/1/1, 2/39/2

कौऊ - (4 आवृत्ति)

प0 18, 3/1, 10/10, 13/3, 19/1

सा0 76, 2/1/1, 2/39/2

कौऊ - (4 आवृत्ति)

प0 198/1, 73/5, 45/3

सा0 76, 2/1/1, 2/39/2

र0 2, 14/9, 19/7

मूलरूप

कछु - (35 आवृत्ति)

प0 2/2, 34/4

सा0 1/1/1

चौ0र0 1/3, 1/4

कछु - (13 आवृत्ति)

प0 9/6/6, 78/4 इत्यादि

सा0 3, 4, 13/2

र0 1, 13/3

किछु--

प० 6, 39/7, 63/8

सा० 2, 6/2/1, 35/2/2

किछू --

प० 1 - 122/6

सा० 1 - 4/12/1

कुछ --

सा० 3, 8/1/2

9/9/2

9/20/2

अनिश्चयवाचक

विकृतरूप

एकवचन

किसो --

प० 1/19/3

बहुवचन

किनहुं --

प० 3, 66/4, 85/6, 177/9

सा० 3- 1/7/1, 9/10/1, 31/6/2

र० 1- 2/2

किसहो --	किनहूँ --
सा० 6/4/2	प० 1-85/4
	र० 12/1, 15/3

अन्य सर्वनाम

उर्पयुक्त सार्वनामिक पदग्रामों के अतिरिक्त कबीर ग्रन्थावली में निम्नलिखित पद भी सर्वनाम को भाँति प्रयुक्त होते हैं :--

अउर	(2 बार)	अउर पदुव सों नाहिं काम	प० 26/2
अवर	(1 बार)	र० 2/1	
अउरो	(1 बार)	उस रखवारा अउरो होवे	प० 162/3
अवरै	(1 बार)	अवरै अकिलि	प० 134/2
और	(28 बार)	हरै और की व्याधि	सा० 34/10/1
आन	(11 बार)	राम चरन चित आन उदासी	प० 28/3
औरन	(4 बार)	औरन हंसत	प० 167/6
औरनि	(1 बार)	औरनि मैं हूँ सब	प० 53/1
औरा	(1 बार)	बिगरै मति औरा	प० 190/2
औरें	(3 बार)	पाइ औरें	प० 1/3

सब (87 बार) सबका किया विवेका

सबहो	§1 बार§	सबहो करि	सा0 18/14/2
सबहों	§1 बार§	सबहों लेखा	र0 12/2
सबहिन	§2 बार§	सबहिन में	प0 54/6
सबहिं	§1 बार§	सबहिं पियारे राम के	सा0 5/11/2
सभ	§4 बार§	सभनि पयाँना कीन्ह	प0 102/4
सभै	§9 आवृत्ति§	सभै कीन्ह	रै0 10/2
सभनि	§4 बार§	सभनि पयाँना कीन्ह	प0 102/4
सरब	§2 बार§	सरब समान	प0 10/5
समूला	§1 बार§	समूला जाय	सा0 30/19/2

सार्वनामिक विशेषण

अनेक सार्वनामिक पदग्राम संज्ञा के पूर्व आकर विशेषण का कार्य करते हैं जिन्हें सार्वनामिक विशेषण की संज्ञा दी जाती है। सार्वनामिक विशेषण दो प्रकार के होते हैं :—

1— निश्चयवाचक अनिश्चयवाचक, सम्बन्धवाचक, प्रश्नवाचक आदि सर्वनामपद जब संज्ञा के पूर्व प्रयुक्त होते हैं, इन्हें संकेत वाचक विशेषण कहते हैं। इनका विश्लेषण विशेषण के प्रकरण में किया जाता है।

2- दूसरे प्रकार के सार्वनामिक विशेषण वे हैं जो मूल सार्वनामिक पदों में अन्य प्रत्यय लगाकर प्राप्त होते हैं। इनके दो वर्ग हैं:-

1- प्रणाली या गुणबोधक सर्वनामिक विशेषण।

2- परिणाम बोधक सार्वनामिक विशेषण।

गुण या प्रणाली बोधक विशेषण :-

जैसा - (6 बार)

प० 3 - 67/3, 79/9, 134/5

सा० 5- 3/19/1, 7/10/2, 15/46/1

जैसो - (6 बार)

र० 1 - 9/7

सा० 5 - 31/7/1, 33/9/1, 15/8/1, 18/6/1, 24/3/2

जैस - (11 बार)

प० 8 - 18/1, 18/3, 18/4, 18/5, 22/5, 24/7, 57/5, 57/7

सा० 4 - 3/21/1, 11/1/2, 21/27/1

अस - (3बार)

प० - 119/4

सा० - 16/21/1

ऐसा - (30 बार)

प0 12 - 13/7, 17/2, 17/6, 67/3, 71/1, 125/3, 134/7, 160/1, 169/3, 175/6, 181/1

सा0 10 - 2/3/1, 5/4/1, 5/3/1, 5/4/1, 5/5/1, 5/6/1, 5/7/2, 5/8/2, 5/12/2, 5/2/2

ऐसी (7 बार)

प0 4 - 95/1, 117/9, 189/4, 31/3

सा0 3 - 15/7/1, 14/1/1, 2/25/2,

ऐसै (5 बार)

प0 4 - 40/1, 16/6, 18/3, 57/6

सा0 1 - 7/1/2

ऐसौ (1 बार)

प0 1 - 154/6

कैसा (2 बार)

प0 54/2

सा0 9/2/2

कैसो §1 बार§ कैस + औ = कैसो

प0 13·4

कैसो —

प0 13/4

कैसे §16 बार§

प0 13 - 12/2, 18/1, 18/2, 29/2, 39/1, 46/5, 47/1,

49/2, 120/1, 128/8, 191/4, 195/5, 196/7

सा0 3 - 6/92/ 11/6/2, 29/18/2

परिणाम बोधक विशेषण

जेता §3 बार§

प0 × × ×

सा0 4/21/1, 9/14/1, 31/19/1

जेते §3 बार§

प0 2 - 37/2, 177/12

सा0 1 - 14/38/1

तेता §2 बार§

सा0 3/21/2, 32/13/1,

====:: अध्याय 5 'रूप' ::====

---::: ==== नानक - सर्वनाम ====:::---

सर्वनाम संज्ञा के प्रमुख प्रतिनिधि पद हैं। गुरु नानक देव में {ग्रन्थ साहब} संज्ञा की भाँति सर्वनामों में लिंगभेद रूपात्मक स्तर पर निश्चित करना सम्भव नहीं है। लिंग द्योतन वाक्यात्मक स्तर पर क्रिया के द्वारा ही होता है। वचन प्रयोग के आधार पर ही निश्चित किये जा सकते हैं। प्राय: बहुवचन रूप हम, तुम, ये, वे आदि एक वचन के अर्थ में भी प्रयुक्त हुए हैं। कारक रचना की दृष्टि से सर्वनामिक पदों में भी प्रमुखत: दो ही वचन और कारक {मूलरूप-विकृत रूप} मिलते हैं। रूपात्मक दृष्टि से यद्यपि संज्ञा की भाँति सर्वनामों में संयोगी कारक विभक्ति तथा वियोगी कारक विभक्ति दोनों का प्रयोग हुआ है परन्तु वियोगात्मक पद्धति को ही प्रधानता है। केवल पुरुष वाचक सर्वनाम के कर्म सम्प्रदान तथा सम्बन्ध कारकीय रूपों में ही संयोगात्मक रूप मिलते हैं अन्य सर्वनामों में तो केवल कर्मसम्प्रदान द्योतक रूप में यत्र-तत्र ही संयोगात्मक विभक्ति मिलती है। प्रधानता वियोगात्मक रूप की ही है।

रूप अर्थ और प्रयोग की दृष्टि से सार्वनामिक रूपों के निम्न-लिखित 8 भेद मिलते हैं :--

1:- पुरुषवाचक { + आदरवाचक }

2:- निश्चयवाचक या संकेत वाचक

3:- सम्बन्धवाचक { + नित्य सम्बन्धी }

4:- प्रश्नवाचक { 1. चेतन, 2. अचेतन }

5:- अनिश्चयवाचक { 1. चेतन; 2. अचेतन }

6:- निजवाचक

7:- सार्वनामिक विशेषण

8:- सार्वनामिक क्रिया विशेषण

गुरु नानक देव में {ग्रन्थ साहब} विभिन्न सर्वनामों के रूप तथा प्रयोग निम्नलिखित है :--

सर्वनाम : पुरुषवाचक

उत्तम पुरुष

मूलरूप

एकवचन	बहुवचन
हउ - ग्रं0सा0 14/1/2	हम - ग्रं0सा0 39/4/65
ग्रं0सा0 40/4/67	

मैं - ग्रं०सा० 14/1/1

हम - ग्रं०सा० 597/1/8

मैं ﴾ मै ﴿ 'हम' पदग्राम है । 'ग्रन्थ साहब' महला । में अनुस्वार का प्रयोग बहुत ही कम हुआ है अत: 'मैं' के स्थान में उसमें 'मै' ही मिलता है । हू, हौं, हूं सह पदग्राम के रूप में प्रयुक्त हुए हैं । हउ, हम का प्रयोग 'ग्रन्थ साहब' में महला । में एक वचन तथा बहुवचन दोनों के लिए हुआ है ।

विकृत रूप

एकवचन			बहुवचन		
मेरा	-	ग्रं०सा० 41/4/68			
मुझ	-	ग्रं०सा० 4/99/5/16	हम	-	164/4/40
मोहि	-	ग्रं०सा० 499/5/16			﴾एक वचन की भांति प्रयुक
हम	-	ग्रं०सा० 164/4/40			
मुझै	-	ग्रं०सा० 725/1/1			
मैं	-	ग्रं०सा० 40/4/65, 24/1/29			

अवधारणवाचक

'मुझ' पदग्राम को भांति तथा मो, मैं आदि सहपद ग्राम की

भाँति प्रयुक्त हुए हैं। 'ग्रन्थसाहब' महला । में विकृत रूप 'मुझ' के स्थान पर मूल रूप 'मै' का ही प्रयोग हुआ है। संयोगात्मक रूप 'मुझे' पदग्राम तथा मोहि, मोंहि, मोही, मूनै आदि सहपदग्राम की भाँति प्रयुक्त हुए हैं। मूलरूप बहुवचन हम, मै, विकृत रूप की भाँति भी प्रयुक्त हुए हैं।

संयोगी रूप

सम्बन्ध कारक

एकवचन			बहुवचन		
मेरा	-	ग्रं0सा0 41/4/68	मेरो आ	-	ग्रं0सा0 74/5/2
मेरे	-	ग्रं0सा0 15/1/4			
		ग्रं0सा0 39/4/65			
		ग्रं0सा0 42/5/71			
मेरो	-	ग्रं0सा0 14/1/2			
		ग्रं0सा0 16/1/7			
		ग्रं0सा0 40/4/66			
		ग्रं0सा0 42/5/72			

मेरे - ग्रं०सा० 95/4/4

मोरो - ग्रं०सा० 407/5/145

एक वचन मेरा, मेरे पदग्राम तथा मैं, मम, मोर, मोरा, मेरो, मोरो, मो आदि सहपद ग्राम की भाँति प्रयुक्त हुए हैं। बहुवचन हमारा, हमारे, हमारो पदग्राम तथा हमार, हमारे आदि सहपद-ग्राम की भाँति प्रयुक्त हुए हैं, किन्तु 'ग्रन्थसाहब' महला । में सम्बन्ध कारक एक वचन तथा बहुवचन पदग्राम पर्याप्त रूप में प्रयुक्त हुए हैं। 'मेरा' में 'इआ' प्रत्यय लगाकर बहुवचन, मेरीआ, बनाया गया है।

मध्यम पुरूष

मूलरूप

एकवचन			बहुवचन	
तू -	ग्रन्थ सा०	16/1/88	तुसी -	ग्रं०सा० 96/4/7
	ग्रन्थ सा०	42/5/71	तुम -	ग्रं०सा० 598/1/9

{आदरार्थ}

तू - ग्रं०सा० 15/1/3

ग्रं०सा० 96/4/7

ग्रं०सा० 42/5/71

तुसो - ग्रं०सा० 17/1/10

तुसि - ग्रं०सा० 52/5/98

तुम - ग्रं०सा० 167/4/49

{आदरार्थ}

तुम - ग्रं०सा० 567/1/5

ग्रं०सा० 264/5/2

तोहि - ग्रं०सा० 25/1/30

'तूं', 'तुम' पदग्राम तथा तु, तें, तुम्ह, तुसि, तुसी, तोहि आदि सहपद ग्राम को भाँति प्रयुक्त हैं।

विकृत रूप

एकवचन

तुम - ग्रं०सा० 39/4/65, 25/1/31, 266/5/4

तुधु - ग्रं०सा० 16/1/5, 43/5/73

तुध - ग्रं०सा० 40/4/65

तुझु - ग्रं०सा० 20/1/16, 264/5/2

तुझै - ग्रं०सा० 42/5/71, 25/1/31

तुमहि - ग्रं०सा० 166/4/46, 266/5/4

तुसा - ग्रं०सा० 41/4/69

'तुझ' पदग्राम तथा तैं, तुं, तो, तुध, तुध, तुम, तुसा, तुझें, तुम्हैं, तुमहि, तैहि, तोहो आदि सहपदग्राम की भाँति प्रयुक्त हुए हैं।

सम्बन्ध कारक

संयोगी रूप

एकवचन			बहुवचन
तेरा -	ग्रं०सा०	14/1/1	
तैरा -	ग्रं०सा०	167/4/50, 50/5/93	
तेरे -	ग्रं०सा०	21/1/111	
तेरे -	ग्रं०सा०	18/1/10	
	ग्रं०सा०	268/5/4	

तेरे - ग्रं०सा० 16/1/6

§अवधारण§ 17/1/10

ग्रं०सा० 46/5/82

तुम्हारा ग्रं०सा० 499/5/16

तुम्हारो ग्रं०सा० 164/4/39, 596/1/5,

264/5/2

तुमारा ग्रं०सा० 167/4/49

तुमरे - ग्रं०सा० 167/4/49

तावे - ग्रं०सा० 169/4/55

थारे - ग्रं०सा० 597/1/8

तुम्हरो ग्रं०सा० 268/5/4

तुमरे - ग्रं०सा० 268/5/4

तुमरा - ग्रं०सा० 268/5/4

तुम्हरा ग्रं०सा० 499/5/16

तेरा, तेरो, तेरै पदग्राम तथा तैं, तोर, तोरै, तोही, तैरौ, तोरो, तोरा, तोर, तेह, नौ, तेरड़े, तब, तेरै, थारै, आदि

सहपदग्राम को भाँति प्रयुक्त हुए हैं। 'ग्रन्थसाहब' महला १ में तुमारो, तुमारा, तुमरे, ताचे, तुम्हारो, तुमरो, तुमरे, तुमरे, तुमरा आदि बहुवचन मूलक पदग्राम एकवचन को भाँति प्रयुक्त हुए हैं। बहुवचन के लिए 'तेरोआ' का प्रयोग मिलता है।

निश्चयवाचक

निकटवर्ती : मूलरूप

एकवचन			बहुवचन		
एह	-	ग्रं०सा० 15/1/3	ए	-	ग्रं०सा० 15/1/4
		ग्रं०सा० 474/2/1	एव	-	ग्रं०सा० 463/2/3
एहा	-	ग्रं०सा० 466/2/2			
ए ई	-	ग्रं०सा० 466/2/2			
एह	-	ग्रं०सा० 466/2/2			
एहो	-	ग्रं०सा० 466/2/2			
इतु	-	ग्रं०सा० 466/2/2			
एहु	-	ग्रं०सा० 474/2/2 [22]			
एहु	-	ग्रं०सा० 410/5/162			

'यह्' 'ये' पदग्राम तथा या, येह, ए, येता सहपद ग्राम की भाँति प्रयुक्त हुए हैं। 'ग्रंथ साहब' महला । में 'य' श्रुति नहीं मिलती अतः आदिम 'य' के लिए 'ए' 'इ' स्वर का प्रयोग हुआ है। इसलिए निश्चय वाचक निकटवर्ती मूलरूप के लिए एहा, इंह, इसु, एहु आदि पदग्रामों का प्रयोग मिलता है।

विकृत रूप

एकवचन		बहुवचन	
एहु	- ग्रं०सा० 474/2/1	इन	- ग्रं०सा० 23/1/26

अवधारणवाचक

एक वचन इस {सहु - ग्रं०सा० } तथा बहुवचन इन पदग्रामों के रूप में तथा येहि, याही, सह पद ग्रामों के रूप में प्रयुक्त हुए हैं।

निश्चयवाचक

दूरवर्ती

मूलरूप

एकवचन बहुवचन

		ग्रं०सा० 39/4/65	से	-	ग्रं०सा० 40/4/66
		ग्रं०सा० 42/5/71			ग्रं०सा० 45/5/80
सु	-	ग्रं०सा० 20/1/16			ग्रं०सा० 22/1/22

{आदरार्थ}

सो	-	ग्रं०सा० 19/1/14	ओइ	-	ग्रं०सा० 40/4/66
		ग्रं०सा० 165/4/45	सो	-	ग्रं०सा० 42/5/71
सोई	-	ग्रं०सा० 44/5/76			ग्रं०सा० 44/5/78
सा	-	ग्रं०सा० 474/2/1[23]	उह	-	ग्रं०सा० 48/5/88
ओई	-	ग्रं०सा० 41/4/69	ओहि	-	ग्रं०सा० 25/1/30
ओहु	-	ग्रं०सा० 15/1/3			
सेई	-	ग्रं०सा० 43/5/73			
ओहो	-	ग्रं०सा० 51/5/94			
		ग्रं०सा० 64/1/17			
ओहि	-	ग्रं०सा० 25/1/30			

<u>अवधारणा</u> :—

एक वचन 'सोइ' तथा बहुवचन 'ते' पदग्राम तथा एक वचन सो, सु, वहु, सोई, सा, ओइ, ओहु, सेई, ओहो, ओहि बहुवचन

वे, से, ओइ, लो, उह, ओहि सह पदग्राम के रूप में प्रयुक्त हुए हैं।

विकृत रूप

एकवचन		बहुवचन	
		तिनाह	ग्रं०सा० 23/1/23
		औना	ग्रं०सा० 25/1/30
तिसु	ग्रं०सा० 15/1/3	तिन	ग्रं०सा० 15/1/3
	ग्रं०सा० 475/2/2	तिन	ग्रं०सा० 41/4/69
	ग्रं०सा० 166/4/46	तिन	ग्रं०सा० 45/5/80
	ग्रं०सा० 42/5/71	तिनि	ग्रं०सा० 45/5/76
तिस	ग्रं०सा० 474/2/4[22]		
	ग्रं०सा० 96/4/7		
	ग्रं०सा० 43/5/73		
तासु	ग्रं०सा० 40/4/66		
उन	ग्रं०सा० 40/4/66		
तिनि	ग्रं०सा० 41/4/68		
तिन	ग्रं०सा० 41/4/69		
	ग्रं०सा० 25/1/32		

ताहि ग्रं०सा० 20/1/15

ओते ग्रं०सा० 43/5/73

ओना ग्रं०सा० 17/1/8

तै ग्रं०सा० 53/1/1

तिसै ग्रं०सा० 61/1/12

उनि ग्रं०सा० 394/5/96

अवधारण :--

निश्चयवाचक (दूरवर्ती) विकृत रूप सर्वनाम में अत्यधिक विविधता है। अतः पदग्राम निश्चित करना थोड़ा कठिन है, फिर भी उपर्युक्त उदाहरण के अवलोकन से ज्ञात होता है कि एकवचन 'तिस' बहुवचन 'तिन' पदग्राम के रूप में तथा ता, ताहि, उस, ताइ, तासनि, वा, उर, तासु, तिसु तथा उन, उन्हों, तिनाह, ओना आदि सह-पदग्राम के रूप में प्रयुक्त हुए हैं।

निजवाचक

निज	ग्रं०सा०	14/1/2
आपणै	ग्रं०सा०	53/1/1
आपणा	ग्रं०सा०	72/1/1

आपन	ग्रं०सा०	266/5/3
आपै	ग्रं०सा०	18/1/10, 475/2/2, 40/4/68, 44/5/75
आपि	ग्रं०सा०	463/2/3, 39/4/65, 42/5/71
आपणा	ग्रं०सा०	14/1/1, 29/4/65, 71/5/26
आपणो	ग्रं०सा०	466/2/8, 53/1/2
आपु	ग्रं०सा०	474/2/1,[22] 72/1/1
अपुनो	ग्रं०सा०	43/5/75
आपस	ग्रं०सा०	474/2/1[23]
आपै आदि	ग्रं०सा०	475/2/2
अपणा आपु	ग्रं०सा०	45/5/78
आपणै	ग्रं०सा०	167/4/49, 72/1/1
आपहु	ग्रं०सा०	72/1/1
आपणो आपै	ग्रं०सा०	72/1/1
आपस	ग्रं०सा०	266/5/3
आपुने	ग्रं०सा०	266/5/3
अपनो	ग्रं०सा०	266/5/3
आपहि	ग्रं०सा०	269/5/5

आप पदग्राम तथा अपने, आपणो, आपणा, आपै, आपु निज आदि सहपदग्राम को भाँति प्रयुक्त हुए हैं।

सम्बन्ध वाचक : मूलरूप

एकवचन		बहुवचन	
जा	- ग्रं०सा० 463/2/3	जौ	- ग्रं०सा० 40/4/66
जौ	- ग्रं०सा० 474/2/1[23]		
	ग्रं०सा० 40/4/67		
जे	- ग्रं०सा० 53/1/1		

जौ पदग्राम तथा जु, जा, जे, सहपदग्राम तथा बहुवचन जे पदग्राम तथा जौ सहपद ग्राम को भाँति प्रयुक्त हुए हैं।

विकृत रूप

एकवचन			बहुवचन		
जितु	ग्रं०सा०	16/1/7	जिना	ग्रं०सा०	16/1/3
	ग्रं०सा०	475/2/2[23]		ग्रं०सा०	40/4/66
	ग्रं०सा०	15/1/5	जिन	ग्रं०सा०	19/1/13
	ग्रं०सा०	44/5/76		ग्रं०सा०	40/4/66

जिसु	ग्रं0सा0	16/1/5	जिनि	ग्रं0सा0	41/4/68
	ग्रं0सा0	165/4/45	जिनो	ग्रं0सा0	18/1/11
	ग्रं0सा0	44/5/76	जिनो	ग्रं0सा0	22/1/22
जिस	ग्रं0सा0	18/1/11			
	ग्रं0सा0	43/5/74			
जा	ग्रं0सा0	16/1/7			
	ग्रं0सा0	47/5/83			
जिना	ग्रं0सा0	45/5/80			
जिन	ग्रं0सा0	45/5/80			
जिन	ग्रं0सा0	43/5/73			

'जिस' 'जिन' पदग्राम तथा जिहि, जाके, जाहो, जितु, जा, जिन्हों, जिन्हों, जिना जिनि आदि सहपदग्रामों के रूप में प्रयुक्त हुए हैं।

<u>सहसम्बन्धवाचक</u> :—

<u>मूलरूप</u>

{जो}	सो	ग्रं0सा0	474/2/1[22]
{जो}	सोई	ग्रं0सा0	16/1/7
जो	सोइ	ग्रं0सा0	40/4/65
जो	से	ग्रं0सा0	15/1/4
जेहा	तेहो	ग्रं0सा0	474/2/3[22]

जो - सो पदग्राम तथा जिहिं :- सो, जे, सोई, जे, जे-सोइ-से जो-सु, जो-सोई आदि सहपदग्राम के रूप में प्रयुक्त हुए हैं ।

सह सम्बन्ध वाचक

विकृत रूप

एकवचन		बहुवचन
जिस-तिस	ग्रं0सा0 20/1/16	
	ग्रं0सा0 474/2/1[22]	
	ग्रं0सा0 269/5/5	
जे जेताहि	ग्रं0सा0 184/8/55	जिन-तिन
जे ते	ग्रं0सा0 227/12/49	{तिन-जिन}

(जै बचै तै देक्ता)

जिसु-तिसु	ग्रं0सा0	43/5/75	जिनो-तिन	ग्रं0सा0	42/4/68
जिसै-तिसै	" "	16/1/5		" "	43/5/75
(तिसै-जिसै)	" "				
जिसु-तिसै	" "	45/5/78	जिन्हीं-तिन	" "	20/1/16
(तिसै-धिसु)			जिनो-तिना	" "	42/4/70
जा - सौ	" "	16/1/5	आँइ - तिन	" "	165/4/4
(सौ-जा)					
जा-तिस	" "	267/5/4			
जिनि	" "	43/5/74			
जि	" "	475/2/2[23]			

जिस-तिस, जिन-तिन पदग्राम तथा जे-जे ताहि, जिहिं-तिहिं, जिसैं-उसै, जिन्हैं-तिन्है, जिनो-तिन, जिन्हों तिन, औइ-तिन आदि सहपदग्राम के रूप में प्रयुक्त हुए हैं ।

अनिश्चय वाचक (प्राणिवाचक)

एकवचन			बहुवचन
कौइ	ग्रं0सा0	15/1/3	

	ग्रं०सा०	42/5/71
कोई	" "	40/4/66
	" "	43/5/73
को {कोइ}	" "	74/3/116
को	" "	474/2/3[22]
	" "	40/4/65
	" "	43/5/73
	" "	24/1/28
को	" "	23/1/28

'कोइ' पदग्राम तथा कोई, को, केइ, कोऊ आदि सहपदग्राम को भाँति प्रयुक्त हुए हैं।

विकृत रूप

एकवचन			बहुवचन		
काहू	ग्रं०सा०	269/5/5	किनै	ग्रं०सा०	15/1/3
किस	" "	475/2/2		" "	39/4/65
किसही	" "	42/5/71		" "	287/5/18

किसो	ग्रं०सा०	168/4/51

'काहू' पदग्राम तथा कदे, काको, किसै, किस, किसो, किनहु, किनै, आदि सहपदग्राम के रूप में प्रयुक्तहुए हैं ।

अनिश्चय वाचक - {अप्राणिवाचक}

मूलरूप

कछु	ग्रं०सा०	265/5/3
कुछ	x x	
कछू	ग्रं०सा०	171/4/59, 267/5/4
किछु	" "	15/1/2
	" "	474/2/1[22]
	" "	167/4/50
	" "	71/5/26
काइ	" "	19/1/14

कछु, कुछ, को, आदि सहपदग्राम को भाँति प्रयुक्त हुए हैं । किन्तु 'ग्रन्थ साहब' महला । में 'किछु' पदग्राम तथा कछु, कछू, काइ सहपद ग्राम को भाँति प्रयुक्त हुए हैं ।

प्रश्नवाचक (प्राणिवाचक) 'कौन'

मूलरूप

कवन	ग्रं0सा0	266/5/4
कवनु	" "	61/1/12

'कौण' पदग्राम तथा कौ, कौन, कूण, कवन, कोण आदि सह-पदग्राम के रूप में प्रयुक्त हुए हैं ।

विकृत रूप

किस	ग्रं0सा0	48/5/86
किस	" "	53/1/1
किस	" "	269/5/5
	" "	75/1/1

'किस' पदग्राम तथा कासनि, कासौं, का, कवननि,, काहू किसे सहपदग्राम की भाँति प्रयुक्त हुए हैं ।

प्रश्नवाचक (अप्राणिवाचक) 'क्या'

मूलरूप

किआ	ग्रं0सा0	15/1/3, 163/4/39, 42/5/71

कहा	ग्रं0सा0	25/1/32
केहा	" "	17/1/8
कि	" "	15/1/3
कहिआ	" "	474/2/2[22]

विकृत रूप

क्या (किआ) पदग्राम तथा का, कोण, क्रोण, काइ, कहा, कहिआ, केहा आदि सहपद ग्राम के रूप में प्रयुक्त हुए हैं।

अन्य सर्वनाम

उपर्युक्त सार्वनामिक उदग्रामों के अतिरिक्त गुरू नानक देव (ग्रन्थसाहब) में निम्नलिखित पद भी सर्वनाम की भाँति प्रयुक्त हुए हैं :-

पर	ग्रं0सा0	15/1/4, 164/4/39, 268/5/5
अवर	" "	269/5/5
होरू	" "	16/1/7, 165/4/45
अवरु	" "	14/1/1, 94/4/2, 47/5/84
होरि	" "	15/1/4
सभ	" "	14/1/1, 95/4/5, 49/5/89

सभि	ग्रं0सा0	15/1/3 , 16/1/5
सभी	" "	70/5/26
सभु	" "	42/5/72, 62/1/14
सभे	" "	44/5/76, 54/1/2
सभना	" "	40/4/65, 45/5/80, 53/1/1
सभनु	" "	41/4/69
सबाई	" "	41/4/70
सबाईआ	" "	96/4/7
सगल	" "	97/5/83
सगलाणा	" "	51/5/96
सबे	" "	51/5/96
सगलोआ	" "	54/1/2
अवरे	" "	64/1/17

सार्वनामिक विशेषण

अनेक सार्वनामिक पद ग्राम संज्ञा के पूर्व आकर विशेषण का कार्य करते हैं जिन्हें सार्वनामिक विशेषण की संज्ञा दी जाती है । इनकी

रचना दो प्रकार से होती है - 1- मूल सर्वनाम पदग्राम हो संज्ञा के पूर्व आकर विशेषण का कार्य करते हैं। जैसे-निश्चय-वाचक, अनिश्चयवाचक, सम्बन्धवाचक, सहसम्बन्ध वाचक, प्रश्नवाचक, सार्वनामिक पदग्राम मूल सार्वनामिक विशेषण का निर्माण करते हैं :--

2:- यौगिक सार्वनामिक विशेषण - वे सार्वनामिक विशेषण जो मूल सार्वनामिक पदग्रामों में अन्य प्रत्यय लगाकर बनाये जाते हैं :--

(क) गुण या प्रणाली बोधक सार्वनामिक विशेषण

(ख) परिमाणबोधक सार्वनामिक विशेषण

गुरुनानक देव (ग्रन्थ साहब) में निम्नलिखित मूल तथा यौगिक सार्वनामिक पदग्राम प्रयुक्त होकर सार्वनामिक विशेषण निर्मित हुए हैं :--

<u>मूल सार्वनामिक विशेषण</u>

एहु (लेखा)	ग्रं0सा0	16/1/6
इहु (हरिसु)	" "	41/4/69, 463/2/3
एहा (आस)	" "	25/1/27
-	" "	24/1/29
एहो (आधारु)	" "	25/1/33
सोई (सिष)	"	26/1/28

सो (जन) ग्रं०सा० 25/1/30

सोइ (हरि) " " 42/5/71

तिनि (प्रभि) " " 42/5/71

तितु (घटि) " " 17/1/8

ओतु (मतो) " " 17/1/8

तिन (सृजणाप्रभु) " " 39/4/65

जितु (बोलिऐ) सो (बोलिआ) ग्रं०सा० 15/1/4

जितु (तनि) तितु (तनि) ग्रं०सा० 61/1/13

हौरि (जोआ) ग्रं०सा० 15/1/3

यौगिक

गुण या प्रणाली बोधक

ऐसा - इस (इ > ऐ) ऐसे + आ - ऐसा ग्रं०सा० 168/4/51, 264/5/2

ऐसे - इस (इ > ऐ) ऐसे + ए - ऐसे ग्रं०सा० 414/1/6, 267/5/4

ऐसी - (इ > ऐ) ऐस + ई - ऐसी ग्रं०सा० 60/1/11

ऐसा {असा} पदग्राम तथा असे, ऐसैं, अया, एह्वा आदि सहपद ग्राम के रूप में प्रकट हुए हैं।

जैसो - जिस {इ > ऐ} जैसे + ई जैसो ग्रं०सा० 60/1/11

कैसो - कैस {इ > ऐ} कैस + ई कैसो ग्रं०सा० 53/1/1

तिस, जिस, किस पदग्राम के रूप में ही प्रयुक्त हुए हैं।

परिणाम बोधक

एते ग्रं०सा० 463/2/2, 15/1/4

एता पदग्राम तथा एते सह पदग्राम है।

केते ग्रं०सा० 62/1/14, 15/1/3

केतो " " 54/1/2

केता " " 18/1/11

केतोआ " " 18/1/10

केतड़े " " 18/1/11

केतड़ा " " 53/1/1

केता पदग्राम तथा कितेई, के, केतड़ा आदि सहपद ग्राम की भाँति प्रयुक्त हुए हैं।

तेता ग्रं०सा० 25/1/31

तेते " " 42/5/72

तितनो " " 167/4/48

तितने " " 170/4/56

तितड़े " " 52/5/99

तेता पदग्राम तथा तितने, तितड़े आदि सहपदग्राम के रूप में प्रयुक्त हुए हैं ।

जेता ग्रं०सा० 16/1/5, 41/4/68

जेते " " 42/5/72, 24/1/30

जेतड़े " " 15/1/3

जितनो " " 167/4/48

जितने " " 169/4/59

जितड़े " " 52/5/99

जेता पदग्राम तथा जेतड़े जितनी आदि सहपदग्राम की भाँति प्रयुक्त हुए हैं ।

सार्वनामिक क्रिया विशेषण

सार्वनामिक पदग्रामों में प्रत्यय जोड़कर अनेक कालवाचक, स्थानवाचक, रीतिवाचक, क्रिया विशेषणात्मक पदग्रामों की रचना गुरु नानक देव {ग्रन्थसाहिब} में हुई है। ये क्रिया-विशेषण भी प्रतिनिधि पदग्राम है अतएव उन्हें मूलतः सर्वनाम ही कहना चाहिए, किन्तु अर्थ की दृष्टि से ये पद क्रिया की विशेषता बतलाते हैं। अतः इनका विस्तृत विवेचन क्रिया विशेषण खंड में किया जायेगा।

संयुक्त सर्वनाम

सम्बन्ध + अनिश्चय

जो किछु ग्रं०सा० 166/4/46, 25/2/31, 496/5/6

और + अनिश्चय

अवरु कोई ग्रं०सा० 45/5/77, 167/4/49

अवरु कोइ " " 20/1/16, 39/4/65, 49/5/90

अवर काइ " " 15/1/4

अनिश्चय + एक

को विरला ग्रं०सा० 94/4/1

सर्वनामक्त विशेषण + अनिश्चय

सभु कोइ	ग्रं०सा०	40/4/65
सभु को	" "	15/1/3
सभ को	" "	41/4/68
सभु किछु	" "	475/2/2, 44/5/75, 72/1/1
सभ किछु	" "	71/5/26
होरु सभ	" "	164/4/42

अनिश्चय + और

कुछ अवर - कछु अवर कमावत - ग्रं०सा० 269/5/5

—x—

==== अध्याय - छ: ====

---- कबीर - विशेषण ----

कबीर ग्रन्थावली में संज्ञा, सर्वनाम, अव्यय, क्रिया पदों की अपेक्षा विशेषणों का प्रयोग बहुत कम मिलता है। काव्य प्रतिभा के प्रकाशनार्थ विशेषणों की शृंखला प्रस्तुत कर देने वाले कवियों की कृतियों में ही विशेषणों की भरमार रहती है। कबीर-ग्रन्थावली में इस दृष्टिकोण का सर्वथा अभाव है। इसमें ऐसे ही विशेषणों का प्रयोग हुआ है जो कबीर के स्वानुभूति के क्षेत्र से सम्बन्धित थे। कबीर ग्रन्थावली में गुणवाचक विशेषणात्मक पदग्राम व संख्यावाचक विशेषणात्मक पद मिलते हैं।

गुणवाचक विशेषण

आकारान्त

व्यंजनात - संयुक्त व्यंजनान्त

ऊर्ध्व {घर}	प०	166/5
झीन {दीस}	सा०	29/3/1
टेढ़ {पगरी}	प०	44/2

स्वरान्त

आकारान्त -

अंधा	प०	186/6
खोटा	सा०	19/4/1
अगरा	सा०	22/3/2

इकारान्त

ऊँबि	सा०	33/7/1
भ्यावनि ‡रैनि‡	र०	13/6
सुंदरि ‡काया‡	प०	88/3

ईकारान्त

सांकरो	सा०	20/2/1
सांचो	र०	10/7
कड़ियाली	सा०	31/11/2
हजारो ‡सूत‡	प०	110/1.
	सा०	4/34/1

उकारान्त

अनुमु	प0	80/3, 80/7
खोंनु	प0	9/3
अथाहु	प0	43/7

ऊकारान्त -

कूरू ‖गड्ढाई‖	सा0	15/78/2
गुरू	र0	2/3
अनभेदू	प0	146/5
बटाऊ	प0	176/4

एकारान्त - ‖अभाव है ।‖

औकारान्त

पियारौ /	सा0	31/24/1
भलौ	सा0	19/13/1, 33/2/1
बड़ौं	प0	154/4, सा0 15/34/2

ऐकारान्त

अनमैं	चौ0	41/2
अवै ‖पद‖	चौ0	7/2

ओकारान्त

बेसनौं {पूत}	सा०	4/38/1
सगौ	प०	135/6
न्यारौ	प०	176/1

पूर्णसंख्यावाचक विशेषण

इक	सा०	9/12/1	{14 बार}
एक	सा०	4/5/1	{102 बार}
एकु	प०	126/3	
एकै	र०	10/8	{14 बार}
एकौ	प०	133/8	
एकौं	सा०	21/24/2	
एकहिं	प०	25/8,	र० 1/1
दुइ	सा०	9/26/2	
त्रि	प०	53/8	{अ० प० 32/2}
तिर	प०	152/4	{अष्ट प० 108/4}
द्वो	प०	130/7	
तीनि	प०	126/6	{सात, प० 111/4}

चारि	प0	45/6	(दस र0 1/3) (9 बार)
बारो	र0	11/2	ग्यारह प0 177/8
चार	र0	14	
पंच	प0	80/5	(दादस प0 130-10)
पाँच	सा0	3/15/1	(बारह प0 83/3)
छौ	प0	136/4	
छ	र0	14/5	
खट	र0	14/4	चतुरदस प0 51/5
खट्	प0	134/3	चौदह प0 105/6
सात	सा0	8/2/1	
		16/6/2	
आठ	सा0	2/4/2	
उनइस	प0	111/3	
बीस	प0	83/3	
पचीसन्ह	प0	126/3	(इससे बहुवचन की निश्चितता
		तथा संख्या की अनिश्चितता प्रकट होती	
तीस	प0	83/4	

तेतोस	प0	42/5
तैंतीस	प0	105/8
पचास	सा0	21/17/1
बावन	प0	155/11
छप्पन	प0	42/4
चौंसठि	सा0	1/3/1
अट्ठसठ	प0	171/4
सत्तरि	प0	42/3
बहत्तरि	प0	111/4
चौरासो	प0	42/5
अठासी	प0	5/7
छयानबे	प0	66/4
सौ	र0	16/7
सहस	प0	5/7
हजार {फारसी}	सा0	15/27/1
लख	सा0	21/21/2
लाख	प0	42/3
करोड़ी	प0	42/5

करोरो	सा०	15/8/2
कोटि	सा०	3/10/2
कोटिक	प०	102/4

क्रमवाचक विशेषण

पहिला	सा०	2/6/2
पहिले	प०	110/12
दूजी	सा०	11/1/1
दूजे	प०	8/6
दोसर	चौ०	8/1
चौथे	प०	30/10
चउथे	प०	32/6
चौथे	सा० प०	5/11/1
छठा	सा०	3/15/1
दसवां	सा०	26/11/2
दसर	सा०	29/1/1
दसवें	प०	80/8

विशेषण संख्या आवृत्ति

दोनउ	सा0	2/3/2
दोनों	सा0	1/17/2
दोन्यू	सा0	1/6/1
दुहु	सा0	20/9/2
दुहुं	सा0	9/20/1
दोउ	र0	6/2
तोनों	सा0	2/30/2
तोनिउ	सा0	30/2/1
तिहुं	सा0	3/13/1
चारिउ	सा0	21/4/2
चहुं	सा0	3/231
पांचउ	प0	5
पांचौ	प0	2
आठौ	सा0	24/102

विशेषण संख्या आवृत्ति

नउं	प0	69
दसहुं	सा0	3/32/2

दुहूं	र0चौ0	7
चौबोसौं	प0	177
पचोसौ	प0	5
तैतोसौ	सा0	8/12/2
कौटिक	4/2/1	

अपूर्णवाचक

पाव	प0	112/6	(पाव कोस पर गांव)
	सा0	10/6/2	
तिहाई	प0	111/7	
अरध	प0	35/7	
अधूरो	सा0	1/29/1	
आध	प0	32/7	
आधा	प0	61/6	
आधी	सा0	24/4/1	
धूरो	प0	69/8	
पौने	सा0	16/12/2	

अनिश्चित संख्या विशेषण

बहु	सा0	3/12/1
बहुत	सा0	2/18/1
बहुते		11/2/1, 21/9/1
बहुते	र0	17
बहुतक	सा0	14/34/1
अनेक	सा0	3/1/2
अनिक	प0	39
सकल	सा0	3/10/1

गुणबोधक विशेषण

दूनाँ	प0	90
दूनो	सा0	18/8/2
दुहेरा	प0	11

—x—

xxxxxxxxxxxx
===:: अध्याय 6 - ख ::===
xxxxxxxxxxxx

===::: नानक - विशेषण :::===

गुरु नानक देव (ग्रन्थ साहब) में प्रयुक्त समस्त गुणबोधक विशेषणपदों को प्रस्तुत करना अत्यन्त दुरूह है अतः इसके स्वरूप विश्लेषण के लिए कुछ उदाहरण प्रस्तुत किया जाता है जिससे गुणबोधक विशेषण की प्रकृति स्पष्ट हो जाती है :--

विशेषण : गुणवाचक

सचा	ग्रं0सा0	43/5/73
हरिआ	" "	41/4/69
वडा	" "	15/1/3
पिआरा	" "	41/4/68
सजणा	" "	39/4/65
कूड़िकपटि	" "	40/4/65
करमाति	" "	474/2/1[23]
चंगी	" "	474/2/5[22]

खाली	ग्रं0सा0	40/4/65
{वि0रूप} पूरे	" "	40/4/66
वडे	" "	42/4/70
पिआरे	" "	95/4/4
कौरे	" "	40/4/65
सवै	" "	43/5/73
अथाक	" "	42/5/71
दोरघ	" "	466/2/2
नोच	" "	15/1/3
वड	" "	42/5/72
सजण	" "	41/4/69
अथंक	" "	164/4/40
मुगध	" "	39/4/65
पिआरिआ	" "	23/1/24

उपर्युक्त विशेषण पदग्रामों पर विचार करने से ज्ञात हो जाता है कि गुरु नानक देव(ग्रन्थ साहब)में विशेषण पदों के रूप निर्माण की प्रकृति हिन्दी की भाँति ही है :—

1- विशेष्य के बहुवचन होने पर भी विशेषण एक वचन में ही रहता है ।

2- आकारान्त विशेषण का रूप परिवर्तन - आकारान्त संज्ञा की भाँति होता है । अर्थात आकारान्त मूल पुलिंग संज्ञा के साथ विशेषण का मूलरूप, बहुवचन संज्ञा के साथ विशेषण का बहुवचन, विकारी संज्ञा के साथ विशेषण का विकारी रूप तथा स्त्रीलिंग विशेषण के साथ विशेषण भी स्त्रीलिंग हो जाता है ।

3- क्षेत्रीय दृष्टिकोण से इन विशेषणों का विश्लेषण करने से प्रतीत होता है कि नानक देव {ग्रन्थ साहब} में बोली विभिन्नता की दृष्टि से इनमें खड़ी, ब्रज, अवधी तथा पंजाबी विशेषण विशेषत: 'ग्रन्थ साहब' में मिलते हैं ।

4- प्रयोग की दृष्टि से विशेषणों के विशेष्य कभी पहले, कभी बाद और कहीं-कहीं कुछ दूर पर प्रयुक्त हुए हैं । कहीं-कहीं तो विशेषण संज्ञा की भाँति प्रयुक्त हुआ है ।

{ए} <u>परिमाण - वाचक</u>

अति ग्रं०सा० 15/1/3, 39/4/65

थोर " " 463/2/2

घगा	ग्रं0सा0	42/5/72
घगेरीआ	ग्रं0सा0	474/2/1 [22]
घोड़ड़ो {स्त्री0}	ग्रं0सा0	50/5/92

संकेत वाचक विशेषण

निश्चयवाचक, सम्बन्धवाचक, प्रश्नवाचक तथा अनिश्चयवाचक सार्वनामिक पद जब किसी संज्ञा पद के पूर्व आते हैं तब विशेषण की भाँति उस संज्ञा पद की विशेषता बतलाते हैं। यही कारण है कि इन्हें संकेतवाचक विशेषण के नाम से अभिहित किया जाता है। नानक देव के गुरु ग्रन्थ साहब से कुछ उदाहरण प्रस्तुत है।

इसका विस्तृत परिचय मूल सार्वनामिक विशेषण प्रकरण में दिया जा चुका है।

विशेषण : संख्यावाचक

पूर्ण निश्चय संख्यावाचक :-

{अवधारणा वा0}

एक	ग्रं0सा0	18/1/11, 44/5/76
एका	" "	96/4/7, 24/1/30

एकु	ग्रं०सा०	15/1/3, 42/5/71
एकौ	" "	18/1/11, 96/4/7
एकै	" "	18/1/12
एकस	" "	44/5/76
इक	" "	19/1/13
इकि	" "	16/1/7
इका	" "	96/4/7, 43/5/75
इकु	" "	96/4/7, 44/5/76, 24/1/28
इकसै	" "	44/5/75
इकन्हा	" "	463/2/3
इकनै	" "	62/1/14

'एक' पदग्राम येक, इक, एकै, ऐकै, एकु, एका, इकु, इकि, इकस आदि सहपदग्राम की भाँति प्रयुक्त हुए हैं।

दुइ	ग्रं०सा०	24/1/29
त्रि	" "	18/1/12
त्रिहु	" "	21/1/18

तीनि	ग्रं०सा०	414/1/5
चारि	" "	15/1/5, 70/5/26
पंच	" "	19/1/15, 165/4/43
पंचै	" "	19/1/14
पंच	" "	24/1/27
सप्ताहरी	" "	23/1/26
आठ	" "	44/5/77
नउ	" "	19/1/13, 265/5/3
नव	" "	414/1/5
दह	" "	50/5/91
दह-दह	" "	171/4/59
दस	" "	23/1/26
अठार	" "	23/1/26
बीस	" "	23/1/26
इकोह	" "	166/4/46
तीह	" "	24/1/27
तीस-बतीस	" "	168/4/51

अठसठि	ग्रं0सा0	17/1/8
अठतरै	" "	723/1/5
सतान्वै	" "	723/1/5
सै	" "	14/1/2
सउ	" "	17/1/8, 463/2/2
सहस	" "	40/4/65
सद	" "	96/4/7
हजार	" "	463/2/2
लख	" "	15/1/2, 16/1/5, 44/5/76
कोटि	" "	49/5/88
कोटि-कोटी	" "	14/1/2
कोटि-तैतोस	" "	42/5/72
लख-कोटो	" "	40/4/67
	" "	62/1/14
लख करोड़ि	" "	50/5/92
कोट हजार	" "	63/1/16

(आ) क्रम - संख्या वाचक :--

पहिला	ग्रं०सा०	19/1/13, 43/5/74
पहिलै	" "	74/1/1
दूजी	" "	474/2/3[22], 19/1/14
दूजा	" "	20/1/16, 94/4/2, 43/5/73
दूजे	" "	12/1/13, 474/2/2, 43/5/73, 170/4/57
ताजे	" "	42/5/74, 75/1/1
चउथे	" "	43/5/74
दसवा	" "	54/1/2

(इ) आवृत्ति-मूलक :--

दुइ	ग्रं०सा०	14/1/2
दोवै	" "	474/2/1
दुहहू	" "	51/5/96
तिहू	" "	62/1/14
चारे	" "	43/5/73

अपूर्ण संख्या वाचक

इक अध	ग्रं०सा०	474/2/5[22]
इकेला	" "	723/1/5

संख्या गुना बोधक

दुगुणे	ग्रं०सा०	70/5/26
बहु	" "	42/5/71
बहुत	" "	47/5/85
अनेक	" "	47/5/85
सभ	" "	42/5/71
कई	" "	268/5/4

---

xxx

अध्याय -7 क

कबीर - क्रिया

सहायक क्रिया

आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं की काल रचना में सहायक क्रिया और कृदन्त से विशेष सहायता ली जाती है विशेष रूप से हिन्दी आदि में। कबीर-ग्रन्थावली में प्राचीन अह - ह - हो - अछ और रह रूप प्रधान क्रिया के रूप में तथा संयुक्तकाल रचना में सहायक क्रिया की भाँति प्रयुक्त हुए है। इन क्रियाओं के तिङन्त रूपों में लिंग परिवर्तन नहीं होता और कृदन्तीय रूपों में लिंग परिवर्तन होता है।

वर्तमान निश्चयार्थ

उत्तम पुरुष

एकवचन	-	हौं -	(पितवत हौं) सा0 11/6/1
	-	हू -	प0 16/3
बहुवचन	-	हैं -	प0 15/1

मध्यम पुरुष

एकवचन	-	होहि -	र0 20/2 तहं होहि पतंगा
बहुवचन	-	हौ -	मं0 54/3

अन्य पुरूष

एकवचन	-	अधि, अत्थि	र0 17/1, 17/11
		होवै -	प0 84/4
		रहाई -	प0 34/3
बहुवचन	-	हैं -	प0 42/2
		रहैं -	प0 37/3

वर्तमान संभावनार्थ

अन्य पुरूष वर्तमान संभावनार्थ सभी सहायक क्रियायें मुख्य क्रिया को भाँति प्रयुक्त हुए है ।

अन्य पुरूष

एकवचन	-	होई -	प0 72/4
		होवें -	पं0 84/5

भूतनिश्चयार्थ

उत्तम पुरूष -	एकवचन	-	था	-	सा0 9/1/1, 9/25/1
	बहुवचन	-	थे	-	सा0 21/9/2
अन्य पुरूष -	एकवचन	-	था	-	सा0 50/3
			थो	-	सा0 2/42/1
	बहुवचन	-	थे	-	प0 150/7

स्वतन्त्र क्रिया के समान प्रयुक्त -					आवृत्ति
	थो	-	सा० 2/41/1	-	1
	था	-	प० 9/1/1	-	6
	थे	-	प० 50/7	-	1
	थौ	-	प० 154/2		1
	हुआ	-	सा० 30/221		6
	हूआ	-	प० 60/5, सा० 15/68/1		2
	हुवा	-	सा० 21/17/1		4
	हूवा	-	पं० 107/7		1
बहुवचन	भए	-	प० 86/10		14
	भयौ	-	प० 19/4		6

भूत संभावनार्थ

अन्यपुरुष -	x	
एकवचन -	होता -	सा० 9/17/1
	हुता -	सा० 9/27/1
स्त्री० -	होती -	प० 107/3
बहुवचन -	होते -	प० 68/2

भविष्य निश्चयार्थ

अन्य पुरुष

एकवचन -		
	होइहै -	प0 82/3
	होइगा -	सा0 15/12/2
स्त्री0 -	होइगी -	प0 14/7, सा0 21/22/2
	हौसी -	सा0 4/19/2 - चंदन हौसीबाव

वर्तमान आज्ञार्थ =

एकवचन -	x	x	x
बहुवचन -	होहु -	प0 7/2	

भूतनिश्चयार्थ

एकवचन -	रही -	प0 1/2
	रहि -	सा0 1/4/2
बहुवचन -	रही -	प0 4/3 ‡ 16 बार ‡

क्रिया

कृदन्त

अन्य आधु0 भा0 आर्य भाषाओं की भांति कबीर ग्रन्थावली में भी कृदन्तों का प्रयोग होता है ।

कबीर ग्रन्थावली में निम्नलिखित कृदन्तीय रूप मिलते है -

वर्तमान कालिक कृदन्त -

धातु	प्रत्यय		सिद्धरूप	सन्दर्भ
सो §सु +	ता § त +आ §		सुरता	सा० 3/1/1
डरप +	ता §त+आ§		डरपता	सा० 2/43/2
बह +	ता §त+आ§		बहता	सा० 3/5/1
चल +	ता +ई	=	चलती	सा० 16/5/1
वार +	बल अन्त+ ई	=	बलन्ती	प० 161/2
हस् +	अन्त	=	हसन्त	सा० 30/2/1
कर +	अन्त+आ	=	करन्ता	प० 16.1/3
लुन् +	अंत	=	लुनत	सा० 92/6
बढ़ +	अंतौं	=	बढंतौं	सा० 16/15/1

भूत कालिक कृदन्त -

भबा +	आ	=	भरा	सा० 5/36/1
विलंब +	आ	=	विलंबा	सा० 2/37/1
बेधा +	आ	=	बेधा	प० 144/5
फूला +	आ	-	फूला	सा०18/10/2
लपेट +	ई	-	लपेटी	सा० 31/1/1
सौंच +	ई	-	सौंची	सा० 31/13/1

ठाढ़ +	ई	-	ठाढी	सा0 16/2/1
बिछुर +	ए	-	बिछुरैं	प0 17/3
गम् + आ गया -			गए	पं0 10/2

क्रियार्थक संज्ञा -

मिल +	अनु	-	मिलनु	सा0 21/7/2
सोव +-	अनु	-	जरनु	सा0 17/1/3
सूख +	अनु	-	सुखनु	सा0 16/33/1
जांच +	अनु	-	जांचन	सा0 8/15/1
मरन +	अनु	-	मरनु	सा0 19/5/1
भोग +	अनु	-	भोगन	र0 1/5
खेल +	ना	-	खेलना	सा0 3/5/2
मरि +	बा	-	मरिबा- मरिबै	14/26/2
खा +	ब	-	खाब-ए-खाबै	सा0 32/4/1
नाचि + बो		-	नाचिबो	प0 5/1

कर्तृवाचक कृदन्त -

दा +	ता	-	दाता	सा0 4/5/2
पानी +	हारि	-	पनिहारि	सा0 4/10/2
रोवन +	हारे	-	रोवन हारि	सा0 16/23/1
निकासन + हार		-	निकासनहार	24/7/3

	लाद	26/9/2
	मुरझा	सा0 8/9/1
	छाड़ा	र0 8
+ यो –त्याग+यो	त्याग्यो	प0 3
	थाको	प0 157/3
	झूल्यो	सा0 27/5/1
फल +यो	फल्यो	सा0 27/5/1
	कियो –	21/9/1
	अटक्यो –	21/9/1
	गवायो –	21/25/1
+ हाँ–ले+हाँ	लीन्हा	18/9/1
	कीन्हा	प0 175
+ वा	मुवा	प0 175
	धरावा	र0 104
	खिलावा	र0 3/3
+ एव भू0 + एव –	भएव	र0 1/4
कर × कि × एहु	–किंएहु	प0 89
हु + ऐला –	हवैला	प0 66
	मिलैला	प0 66
खद + ह	खद	सा0 1/7/1

अन्य पुरूष बहुवचन -

+ ए -	सधे	-	सा0 31/12/1	गए- 15/52/1
	मुए	-	31/12/1	भए -4/41/2
	भरे	-	2/3/1	चले-16/1/1

बहुवचन + इले

रहाइले -	प0 46
बेधोले -	1/11/5
भेटोले -	प0 115

अन्यपुरूष - स्त्रीलिंग एकवचन -

गई	सा0 2/35/2
लागी -	1/19/2
बांधो -	3/10/1
उतारो	31/22/1
बिगड़ो	30/14/1
उपजो	प0 55

भूत संभावनार्थ -

कबीर ग्रन्थावली में भूत संभावनार्थ के रूप अत्यन्त सीमित है ।

केवल उत्तम पुरूष और अन्य पुरूष के रूप मिलते हैं । रूप रचना की दृष्टि से ये वर्तमान कालिक कृदन्तों के ही रूप है जो वाक्य स्तर पर भूत-संभावनार्थ प्रतीत होते हैं ।

उत्तम पुरूष -

एकवचन		बहुवचन	
कहता -	सा09/4/2 -	पूजते	- सा0 26/9/1
	§जासौं रहता§		§ हमे भी पाहन पूजते

अन्य पुरूष

	एकवचन		बहुवचन	
§पु0§	करता	प0 178/4		
§स्त्री0§	करती	सा0 31/7/2	होते	सा0 26/9/1
§स्त्री0§	होती -	सा0 1/25/2		
§पु0§	पड़ता	सा0 1/25/2		

भविष्य निश्चयार्थ -

कबीर ग्रन्थावली के भविष्य निश्चयार्थ के रूपों की रचनाओं को हम दो वर्गों में विभाजित कर सकते है ।

1- पहले वर्ग में "स" और "ह" वाले रूप आते हैं । "स" वाले रूप आधुनिक हिन्दी खड़ी बोली में नही मिलते , इन्हें पंजाबी के प्रभाव से प्राप्त रूप समझ सकते हैं अथवा यह भी हो सकता है कि कबीरके समय में यह रूप व्यवहृत होता रहा हो । "ह" वाला रूप ब्रजभाषा में प्राप्त होता है ।

2- दूसरे वर्ग में "ब" और "ग" वाले रूप आते है जिनमें "ब" वाले रूप पूर्वी हिन्दी मे तथा "ग" वाले रूप पश्चिमी हिन्दी में आज भी प्रचलित हैं ।

<u>उत्तम पुरूष -</u>

	एकवचन			बहुवचन	
इहूँ					
	चढ़िहू	प0 135/1	+ इहैं -	महिहै	पं0 106/4
	खेलिहूँ	सा0 7/4/2	+ अहि-गें -	करहिगे -	सा0 8/1/1
+ इहौं	करिहौं	पं0 5/3		मिलहिगे	सा02/31/1
	लेइहौ	[illegible] 5/8		समझहिगे	पं0 57
+ अउं-गा	बदउंगा	प0 178/3		दिखलावहिगे	पृ0 57
+ औं - गा	मनौंगा	सा0 16/24/1			

एकवचन			बहुवचन
+ ओं –गो –	जारोगो	सा0 16/35/1	(स्त्री0)
+ उंगा –	आउगां	प0 193/1	+ ऐसें बैठेंगे सा0 17/5/2
			+ ऐं–गे– करेंगे – सा0 16/56/1
	जिउंगा	प0 193/1	पड़ेंगे – सा0 16/38/2

मध्यमपुरूष

एकवचन			बहुवचन
+ गा	सोवेगा	सा03/16/1	+गे लेहुगे सा0 2/32/2
	जावेगा	सा0 21/15/2	पहिताहुगे 10/13/2
			+ ब+ औ कहिबो पु0 78
			+ ब + औ पहिरबा पं0 186/3
			+ ब + ए करिबे प0 197/1

अन्य पुरूष

एकवचन		बहुवचन	
+ इहै परिहैं	सा015/38/2	लेहहे	सा021/12/2
बकतिहैं	30/13/2	+ गे –जाहिये	सा0 3/3/2

+ इहि	जैहहि	सा० 15/15/2	फिरहिंगे	15/57/2

+ सी	बहावसी	4/22/2

जासी	16/24/1-2

एकवचन		बहुवचन

+ गा	नसाइया	सा० 2/7/8

होइगा -	सा० 3/22/2

एकबचन		बहुवचन

+ गो -	जिनसेगो	पं० 79

स्त्रीलिंग

उघरेगी	सा० 15/85/1

परेगी	सा० 21/15/2

आवेगी	प० 92

संयुक्त काल -

संयुक्त काल की रचना सहायक क्रिया की सहायता से होती है । इनसे क्रिया की पूर्णता, अपूर्णता आदि के अर्थ प्रकट होते हैं । संयुक्त काल को आधुनिक आर्य भाषाओं की विशेषता कह सकते हैं । आधुनिक

आर्य भाषा के आदिम काल में ये प्रयोग नाम मात्र को ही मिलते हैं। कबीर ग्रंथावली में संयुक्तकाल के पर्याप्त प्रयोग मिलते है। संयुक्त काल को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है -

1- वर्तमान कालिक कृदन्त + सहायक क्रिया।

2- भूतकालिक कृदन्त - + सहायक क्रिया।

कृदन्त काल होने के कारण कारक के लिंग परिवर्तन से क्रिया रूपों में भी लिंग परिवर्तन हो जाता है।

1- अपूर्ण वर्तमान निश्चयार्थ (वर्तमानकालिक कृदन्त+ सहायक क्रिया)

अन्य पुरुष -

एकवचन		बहुवचन	
होत है -	सा० 6/12/2	जात है	सा० 30/12/2
करता जाता है	3/24/1	कहते है	21/5/2

अन्य पुरुष

एकवचन		बहुवचन
जानता है -	सा० 16/33/2	
बैठता रहे -	सा० 12/7/1	

स्त्री०

झलकती रहे 16/22/1

डरपती रहे 16/29/1

उत्तमपुरूष

सुमिरत हौं र० 29

कहता हूँ प० 190

चितवत हौं सा० 11/6/1

स्त्री०- होती हूँ प० 160

(2) अपूर्ण भूतनिश्चयार्थ

अन्य पुरूष- एकबचन

फिरता (था) 9/39/2

लागा जाइया 1/14/1

(स्त्री०) होती (थी) प० 107

पूर्ण वर्तमान निश्चयार्थ - भूतक्रियाद्योतक + सहायक क्रिया

एकबचन		बहुबचन	
अन्यपुरूष			
कहा है	सा० 15/1/1	मए है	सा० 4/8/2

मारा है	सा० 2/12/1	पड़े {है}	16/31/2
भया है	सा० 4/8/1		
कीया है	र० 66	दिए है	प० 39

<u>एकबचन</u> <u>बहुवचन</u>

स्त्री०- पाई है - रू० 19

<u>उत्तमपुरूष -</u>

डीठा है सा० 7/10/1 चले है - प० 5

<u>मध्यम पुरूष</u>

परा है सा० 19/5/2

पूर्णभूत निश्चयार्थ : उत्तम पुरूष

चाले थे सा० 21/9/1

मध्यमपुरूष × × ×

अन्य पुरूष आया था सा० 15/1

लिया फिरे था- 15/59/1

अत्यधिक साहित्यिक होने के कारण अपूर्ण वर्तमान संभावनार्थ तथा अपूर्ण भूत संभावनार्थ और पूर्ण वर्तमान संभावनार्थ तथा पूर्ण भूत संभावनार्थ के प्रयोग पर्याप्त नहीं है । वर्तमान खड़ी बोली क्षेत्र में भी ये

प्रेरणार्थक क्रिया-

कर्ता को क्रिया करने के लिए प्रेरित करना ही प्रेरणार्थक क्रिया कहलाता है । कबीर ग्रन्थावली में दो श्रेणियों के प्रेरणार्थक रूप मिलते हैं ।

1- धातु + आ - प्रथम प्रेरणार्थक

2- धातु + अव - द्वितीय प्रेरणार्थक

प्रथम प्रेरणार्थक विभक्ति -

चल + आ	चला + आ	चलाया	पं02
देख - आ	दिख - ला - इए	दिखलाइए	सा0 25/23/
चढ़ + आ	चढ़ा- इ	चढ़ाइ	सा0 15/30/1

द्वितीय प्रेरणार्थक + अव

देख + अव + हिं + गे - दिखलावहिंगे पं0 57

सिख+ ला + अव + ते - सिखलावते सा0 22/3/1

कर्मवाच्य -

कर्मवाच्य दो पद्धतियों में प्राप्त होता है ।

1- वियोगात्मक पद्धति

कृदंती रूपों में "जाना" क्रिया जोड़कर ।

वियोगात्मक कृति -

अब रहु कहा जाइ -	सा० 9/9/2
तो दरसन किया न जाइ -	प० 72/8
महिमा कही न जाई	प० 72/8

संयोगात्मक - विभिन्न प्रत्ययों को जोड़कर

कह + आव + आ -	कहावा	र० 1/5 -मग भोगन की पुरति कहावा ।
पा + इए -	पाइए	प० 3 बिन सतगुरु नहिं पाइए
भेद + इए -	भेंटिए	प० 10 इहिपद नरहरिभेंटिए
चोर+ इऔ -	चोरिऔ	सा०24/2/2 का चोरिऔ

कर्मणि -

कबीर ग्रन्थावली मे यद्यपि कर्तृवाच्य की अपेक्षा कर्म वाच्य का प्रयोग कम मिलता है फिर भी कर्मणि प्रयोग का उदाहरण अधिक मात्रा में मिलते है । पश्चिमी हिन्दी के "मैंने रोटी खाई है" में मैं कर्ता है अर्थात कर्तृवाचक हुआ, किन्तु प्रयोग कर्मणि हुआ । इसी प्रकार के कर्मणि प्रयोग कबीर ग्रन्थावली में अधिक मात्रा में देखे जा सकते हैं । किन्तु वाच्य और प्रयोग का निर्णय वाक्य के आधार पर ही संभव है शब्दरूप के आधार

पर सही निर्णय संभव नहीं थी ।

यथा- दीपक दीया तेल भरि बातीदई अघट् - सा0 1/15/1
भगति बिगाड़ी कांमियां सा0 30/14/1
जिनि तोड़ी कुल की कांनि सा0 31/17/2
जब गोविन्द किरपा करी सा0 1/16/2

संयुक्त क्रिया -

संयुक्त क्रिया की रचना आधुनिक आर्य भाषाओं की विशेषता कही जा सकती है । कबीर ग्रन्थावली मे संयुक्त क्रियाओं का प्रयोग अधिक मात्रा में हुआ है। इनमें अधिकतर दो क्रियाए एक साथ एक ही अर्थ के द्योतन के लिए अनेक संयुक्त क्रियाओं का प्रयोग हुआ, है किन्तु इन संयुक्त क्रिया को संज्ञा देना ही उचित है ।

शब्दद्वैत संयुक्त क्रिया-

उरझि - पुरझि सा0 21/4/2 , चौ0 14/1
जानि - बूझि सा0 4/17/1
पढ़ि - गुनि प0 181/6
सोचि-विचारि प0 101/9

पुनरावृत्ति : कृदंतीय पुनरावृत्ति -

चलते - चलते	सा० 10/6/2
जरत -जरत	र० 18/6
फूलौं- फूलो	सा० 16/34/1
बोलत -बोलत	प० 61/2, 63/3
हेरत - हेरत	सा० 8/6/1

पूर्वकालिक रूप की पुनरावृत्ति-

जोरि जोरि	सा० 24/18/2
काटि काटि	प० 51/4
कसि कसि	प० 165/3
पुकारि पुकारि	प० 63/12
निहारि -निहारि	सा० 2/36/1
लिखि -लिखि	प० 66/6

आज्ञार्थक पुनरावृत्ति -

रहि रहि -रहि - रहि मुगध गहेलड़ी - सा० 2/41/2

राखि राखि - राखि राखि मरैं बीठुला पं० 39/2

भूतकालिक क्रिया रूप की पुनरावृत्ति -

भिन्न - भिन्न क्रियाओं के संयोग से प्राप्त रूप

पूर्वकालिक क्रिया रूप + आना

जीति आया -	प0 143/7
उघरि आए -	सा0 15/9/1

कृदंतीय रूप + आवै

कहत आवै	प0 2/2
तेरी आवै	सा0 16/18/2

पूर्वकालिक क्रिया रूप + जाना

गरि जाइगा	74/3
छुटि गयौ	75/6
चलि जाइगा	96/4
चढ़ि गयौ	प0 131/1
बहि गया	25/2/1

पूर्वकालिक कृदन्त + पड़ना या मरना

उतरि परा	सा0 1/10/2
आइ परे	प0 146/2

पूर्वकालिक + चलना

छाँड़ि चल्यो -	प0 83/4

छांडि चला सा० 11/49/1

तजि चला सा० 10/11/1

पूर्वकालिक + देना

बताइदेइ - सा० 5/7/1

लिखि देहु - प० 26/2

पूर्वकालिक + डालना

काटि डारउं पं० 23/3

पूर्वकालिक + खाना

धरि खाया प० 23/3

+ रहो -

लपटि रहो प० 111/3

रमि रहा चौ० र० 1/14

लपटाइ रहे सा० 16/4/1

पूर्वकालिक + लेना

पिछांनि लेह सा० 5/5/1

जगाइ लिया सा० 2/43/1

वर्तमान कालिक कृदंत + सहायक क्रिया

लेखा करता जाइ सा० 20/19/2

पूर्वकालिक कृदन्त

प्रत्यय	उदाहरण	संदर्भ
धातुशून्य	फाटि	22/5/2
	अघाइ	15/41/1
	बाँधि	15/41/1
	लिखि-लिखि	2/20/2
	रोइ -रोइ	सा० 2/30/2
	जानि बूझि	मा० 4/7/1

धातु + प्रत्यय	उदाहरण	संदर्भ
- करि	संजोहकरि	र० 6/6
-य, इ	होय	र० 3/5
-हु +ऐ	ह्वै	र० 5
-कै	बेधिकै	सा० 3/20/2
-करि	जानिकरि	31/22/1
-करि	धरिकरि	सा० 1/31×1
कै	लरिकै पहिनिकै	5/1/2
य, इ	होँय	र० 3/5
हु + ऐ	ह्वै	र० 5

भूत क्रिया द्योतक -

प्रत्यय	उदाहरण	सन्दर्भ
भूतकालिक कृदन्त+		
ए - एं	बिछुड़े	सा० 16/25/2
	भेटे	सा० 19/16/1

प्रत्यय	उदाहरण	सन्दर्भ
ए-एं	मागे	4/15/9
	बिनते	25/15/2
	सोखें	पं० 11/3
	पठएं	प० 4/53
	लीन्हें	पं० 20
	मूएं	सा० 2/9/2

वर्तमान क्रियाद्योतक -

वर्तमानकालिक कृदन्त		
+ शून्य	देखत	सा० 2/8/2
	चलत-चलत	र० 1/3
	बोलत-बोलत	पं० 6/1
	पियावत	सा० 15/12/1

	पीवत	सा0 12/3/2
	अछत	सा0 1/12/2
	सोवत	सा0 2/43/1
+ ए बूड़त-ए	बूड़ते	सा0 5/3/2
	ठठोंरते	9/32/2
	परमोधते	21/1/1
	चलते- चलते	10/6/2

<u>तात्कालिक कृदन्त -</u>

अंत वाले रूपों के बाद अवधारण बोधक प्रत्यय संयुक्त होने से तात्कालिक कृदन्त रूप प्राप्त होता है ।

<u>अपूर्ण क्रियाद्योतक + ही</u>

+	छूटत ही	चौ0 19/1
	लागत ही	सा0 1/9/2
	हुअत ही	सा0 4/16/2

<u>+ ऐं -</u>

	जन्तें	पं0 182/2
	बोलतहो	सा0 15/17/1
	जोवतें	सा0 15/80/1

<u>काल रचना -</u>

कबीर ग्रन्थावली में मूल कालों की रचना दो प्रकार से होती है ।

1- काल , अर्थ, पुरुष, लिंग, वचन, वाच्य प्रयोग सम्बन्धी विकारों से युक्त मुख्य क्रियापदों के मूल अथवा साधारण काल में कबीर ग्रन्थावली में वर्तमान निश्चयार्थ, वर्तमान संभावनार्थ, वर्तमान आज्ञार्थ, भूतनिश्चयार्थ, भूत संभवनार्थ और भविष्य निश्चयार्थ कालों के रूप में प्राप्त होते हैं ।

2- प्राचीन तिङन्त रूप से विकसित तिङन्त तद्भव क्रिया रूप । इस वर्ग में निम्नलिखित कालों के रूप आते हैं, इसमें लिंग सम्बन्धी विकार नहीं होता है ।

वर्तमाननिश्चयार्थ , उत्तमपुरुष + औं, उत्तमपुरुष एकवचन + औं में अन्त होने वाले पर्याप्त रूप मिलते है ।

फिरौं	सा0 6/6/2
सकौं	सा0 2/32/1
सुमिरौं	र0 2/1
जोड़ौं	सा0 10/16/2

+ ऊं उत्तम पुरुष एक वचन "ऊं" में अन्त होने वाले रूप ऐतिहासिक दृष्टि से औं वाले रूपों के विकसित रूप हो सकतेहैं । इनकी संख्या कबीर ग्रन्थावली में पर्याप्त मिलती है -

+ ऊं -	फिरूं	-	सा0 5/10/1
	पाऊँ	-	सा0 2/42/2

	पिउं	-	सा० 2/42/2
+ उं -	लहाउं	-	सा० 8/12/1
	जाउं	-	सा० 6/1/1

वर्तमान निश्चयार्थ

मध्यपुरुष - एक वचन

धातु + असि

कथ + असि-कथसि	पं० 180/2
गरब + असि-गरबसि	पं० 73/1
चीन्ह + असि - चीन्हसि	र० 12/3

§ गर्बसी प० 97/3 में छन्द की सुविधा के कारण दीर्घ रूप गया है । §

धातु + अहि

सोच	+	अहि -	सोचहि	प० 72/2
ढूढ	+	अहि -	ढूढ़हि	चा० 19/1
चढ़	+	अहि -	चढ़हि	सा० 26/3/1

धातु + ऐ -

गरब + ऐ आव + ऐ - गरबावै	प० 62/1
बोल + ऐ बोलै =	सा० 21/30/1

नाम धातु प्रेरणार्थ -

सोव + ऐ = सोवै - 15/1/2

मिल + ऐ - मिलै - सा0 2/25/2

डोल + ऐ - डोलै - पं0 4/5

पखार + ऐ - पखारै - पं0 3

वर्तमान निश्चयार्थ -

अन्य पुरुष - एकवचन

+ अति - प्राचीन विभक्ति होने के कारण कबीर ग्रन्थावली में बहुत ही कम उदाहरण मिलते है ।

छोति - सा0 9/5/2

निरति - प0 10/8

+ यति - अति - का विकसित रूप ज्ञात होता है ।

सुनयति - पं0 4/5

+ आत "आत भी प्राचीन विभक्ति और अति का ही विकसित रूप प्रतीत होता है ।

मिलात - पं0 73

+ आह ‍{आइ }" अति" का ही विकसित रूप है ।

अति × अह × अई

	कुम्हलाइ	-	सा0 10/8/1
	देह	-	पं0 148/6
	बाजई	-	16/1/1
	घुघुवाइ		2/8/1
+ अहि	चढ़हि		सा0 26/3/1
	बसहिं		प0 188/1
+ अहो			
	मांहौं		सा0 29/15/2
	पलावतो		सा0 14/14/1
	खेलहो		पं0 34/8
+ ऐ (सर्वाधिक प्रयुक्त विभक्ति)			
	मागै		सा0 1/19/2
	बरसै		र0 13
	रोझै		सा0 2/29/2
	संवरै		सा0 2/11/2
+ वै	सेवै		21/14/2
+ ऐ	कहै		र0 1/2
	तुलै		र0 2/1
	पूजै		र0 2/2

	चैंतै	सा० 22/6/2
	तोलै	8/9/1
	जगमगै	सा० 9/5/1
+ वै -	बजावै	सा० 2/17/2
	पिलावै	4/4/1
	आथवै	16/14/2
+ इया	बोलिया	सा० 28/4/2 (बोलता है)
	जागिया	सा० 4/36/1 (जागता है)
+ इलि	रहाइलि	प० 156/3 (रहता है)
	जाइले	प० 156/4 (जाता है)
+ ला	हेरा	सा० 25/2/2 (हेरता है)

उपरोक्त प्रत्यय इया - ईल - ला भूतकालिक तथा पूर्वकालिक क्रिया के प्रत्ययों से वर्तमानकालिक अर्थ प्रकट होता है, जिसका अर्थ कोष्ठक में दिया हुआ है ।

वर्तमान निश्चयार्थ

अन्यपुरुष बहुवचन

+ अंत	पढन्त	1/26/1
	दीसंत	4/26/1

	परन्त	1/6/2
+ अहिं	पावहिं	11/2/2
	पहिरहिं	15/26/1
	गावहिं	प0 167/3
+ अ हीं	पावहीं	सा0 9/21/2
	भोरहीं	2/2/2
	देहीं	प0 167/4
+ अहं	लहरई	प0 3/6
+ ए	पढ़ै	प0 149/5
	चलै	सा0 4/18/2
+ वै	ह्वैचै	6/1/1
	आवै	सा0 4/32/1
+ ऐ	भोवै	सा0 20/11/1
	चीन्है	34/1/1
	बखानै	र0 1/4

वर्तमान संभावनार्थ -

रूप रचना की दृष्टि से वर्तमान निश्चयार्थ और संभावनार्थ में अन्तर नहीं पाया जाता । केवल अर्थ और प्रयोग की भिन्नता मिलती है। इस दृष्टि से वर्तमान संभावनार्थ के लिए कबीर ग्रन्थावली में प्राप्त

प्रत्ययों को प्रयोगात्मक वृत्तियों को नीचे उद्धृत किया जा रहा है ।

वर्तमान संभावनार्थ में उत्तम पुरूष के रूप प्राप्त नही होते ।

<u>मध्यम पुरूष</u>

एकवचन			आवृत्ति
	अहि -	प0 196/1	1
	ओ -	चो0 4/1	2
	ऐ -	सा0 196/7	5
+ ओ	बुनावो	प0 4/7	
	मिलो	15/38/1	
	करो	29/20/1-1	
+ उ -	मिलु	प0 9/4	
	आउ -	प0 1/3	
+ अहु	जाहु -	2/14/1	
	सुनहु	प0 12	
	परहु	प0 12	
+ अउ	जाउ	24/6/2	
	निंदउ	33/2/2	

वर्तमान आज्ञार्थ

	उत्तम पुरुष	एक वचन
+ अउं -	पढ़ाउं	सा0 2/21/2
	करउं	प0 3/9
	मारउं	प0 81
+ औ	सोचौं	13/2/1
	आवौ	1/15/1
	जानौ	31/16/1
+ ऊं	बोलूं	11/7/12
	रंगाऊं	11/7/12
	जागूं	सा0 17/47/1
+ उँ	छपउं	11/12/1
	मउरं	19/5/1

मध्यम पुरुष

	एकवचन		बहुवचन
+ ए	सके -	सा0 15/2/1	+ अहु - सुनहु 15/21/1-2
	नोरसे -	सा0 29/5/2	+ ऐ, हे, ए -सुनिए प0 61
	पावे -	29/5/2	कहिए सा0 4/2/1
			(आदरार्थ)

अन्य पुरुष

+ ओं –	दोड़ों	सा० 2/11/2
	लिखौं	2/21/2
	सोचौं	2/22/12
	करों	प० 3/5
+ ऊ	जाउँ	प० 4
	लगाऊँ	प० 4
	चढ़ाऊं	प० 4
+ हूँ	करहूँ	र० 12
+ अउं	दोरावउं	प० 81
	पहिरावउं	प० 81
+ इ –	देइ	1/8/1
	होइ	12/2/2
+ ऐ	उतरै	12/5/1
	संचरै	12/2/2
	उतारै	14/31/3

आदरार्थ –

	एकवचन		बहुवचन	
+ इये	पढ़िये	प० 72	संचारिये	सा० 30/3/2

कोजिये	सा0 1/8/1	धरिये	र0 4/7
सोइये-	3/4/1	कोजै	14/40/1
सराहिये -	14/12/1		
बिचारिये	प0 10		

भूत निश्चयार्थ -

कबीर ग्रन्थावली में भूतनिश्चयार्थ में अनेक भूत-कालिक कृदन्त के प्रत्यय क्रिया के रूप का द्योतन करने के लिए प्रयुक्त हुए हैं। भूतनिश्चयार्थ में (कृदंतीय काल होने के कारण) कारक के लिंग परिवर्तन के साथ क्रिया का लिंग भी परिवर्तन मिलता है। स्त्रीलिंग का द्योतन "ई" प्रत्यय करता है। अधिकांशतः अन्य पुरूष के लिए आ इया ई- ईन ईन्ह और बहुवचन का -ए प्रत्यय प्रयुक्त हुए है, किन्तु उत्तम और मध्यम पुरूषो केलिए भी इनका प्रयोग किया गयाहै। अन्य पुरूष की प्रयोगा-वृत्तियों का उल्लेख कर दिया गया है। अलग से उन-उन पुरूषों में उपर्युक्त प्रत्ययों का उल्लेख नहीं किया गया है उत्तम और मध्यम पुरूष में उन्हीं प्रत्ययों का उल्लेख किया जा रहा है जो केवल उन्ही उन्हीं पुरूषों के लिए प्रयुक्त हुए है।

उत्तम पुरुष -

एकवचन

+ एउं -	बरजेउं	प0 75/3
	किएउं -	प0 11/3
+ औ	बिगरयौ	प0 190/2 190/5
बव्+ अल+ ई -	रहलों	प0 16/3§जब हंय रहलों §
+ इयां	आंगिया	सा0 11/10/1

मध्यमपुरुष

§बहुवचन रूप का अभाव है । §

एकवचन

+ एहु -	किएहु	पं0 89/4

अन्यपुरुष

एकवचन

+ या	ग+ या	गया	सा0 15/22/2
रह + या		लिखाया	पं0 86
		मुड़ाया	प0 17/5
		कराया	प0 182

इया – अपर + इया –	फिरिया –	र० 3/6
	बनाइया –	र० 3/4
	चेतिया –	प० 55
प्रकास + इसा	उघारिया	सा० 1/13/1
	पलानिया	25/38/1
	बताइया	1/33/1
	बुझिया	4/12/2
बता + इया	मिलिया –	सा० 6:4/1
	दिया –	सा० 3/13/1
	बताइया –	सा० 7/5/2
+ आ जाग+ आ	फूटा	पं० 5/2
	जागा	प० 8/1
	रोआ	प० 60
फूल + आ –	फूला	6/16/2
	मिटा	9/28/1
	उतरा	8/9/2
	रचा	10/2/2
घाल + आ –	घाला	सा० 31/27/1
	मुआ	31/26/1

दिन दिन बढ़तोजाइ 31/13/1

संयुक्त क्रिया क्रियार्थक संज्ञा + सहायक क्रिया

संत संतोखु लै लरनै लागा - प० 137/2

—o—

अध्याय -7 ख

नानक - सहायक क्रिया -

हिन्दी आदि आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं की काल रचना में सहायक क्रिया और कृदन्त से विशेष सहायता ली जाती है। नानक (ग्रन्थ साहब) में प्राचीन अस् और भू धातु से विकसित - ह तथा भू और - रह - रूप प्रधान क्रिया के रूप में तथा संयुक्त काल रचना में सहायक क्रिया की भाँति प्रयुक्त हुए हैं। सहायक क्रिया का विवेचन यहाँ संक्षेप में किया जायेगा। इन क्रियाओं के तिङन्त रूपों में लिंग परिवर्तन नहीं होता और कृदन्तीय रूपों में लिंग परिवर्तन होता है।

सहायक क्रिया- "होना"

वर्तमान निश्चयार्थ

उत्तमपुरुष

एकवचन		बहुवचन	
(निरक्त) हूँ	ग्रं० सा 73/5/2	है	ग्रं० सा० 168/4/51
रहना		हाँ	" " 660/1/2

मध्यम पुरूष

अन्य पुरूष

एकवचन				बहुवचन		
है	ग्रं0 सा0	17/1/8		है -	ग्रं0 सा0	16/1/5
	" "	563/2/3			" "	40/4/67
	" "	40/4/66	{कहते {है		" "	30/5/27
	" "	42/5/71				
	" "	43/5/73				
अहि	" "	43/5/73				

रहना

प्रधान क्रिया के समान प्रयुक्त -

है - ग्रं0 सा0 171/4/60

है - ग्रं0 सा0 16/1/5 {बहुव0}

होवै- ग्रं0सा0 44/5/76, 16/1/5

हहि- " " 18/1/11

होए - " " 46/5/82

वर्तमान पुरूष -

उत्तम पुरूष

एकवचन बहुवचन

<u>मध्यम पुरूष</u>

× ×

<u>अन्य पुरूष</u>

होइ - ग्रं० सा० 40/4/67

" " 15/1/3

" " 43/5/75

<u>सकना</u>

<u>वर्तमान आज्ञार्थ</u>

<u>उत्तम पुरूष</u>

× × ×

<u>मध्यम पुरूष</u>

होहु - ग्रं० सा० 45/5/78

<u>अन्यपुरूष</u> -

× × ×

<u>स्वतन्त्र क्रिया की भाँति प्रयुक्त</u> -

होवा ग्रं० सा० 14/1/1

भए - ग्रं० सा० 19/1/15

हौआ " " 74/5/2

भूत संभावनार्थ

उत्तमपुरूष

एकवचन	बहुवचन
	होते -ग्र०सा०169/4/56

मध्यम पुरूष

x	x

अन्य पुरूष

x

भविष्य निश्चयार्थ

उत्तम पुरूष

मध्यम पुरूष

एकवचन	बहुवचन
x	x

अन्य पुरूष

x

भविष्य संभावनार्थ –

उत्तम पुरुष

×

मध्यम पुरुष

एकवचन	बहुवचन
×	×

अन्य पुरुष –

होवी – ग्रं० सा० 43/5/74	होहि ग्र०सा० 14/1/1
होआ – " " 43/5/74	होइआ " " 48/5/87

भविष्य आज्ञार्थ

उत्तम पुरुष

×

मध्यम पुरुष

×

अन्य पुरुष

×

कृदन्त

अन्य आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं की भाँति गुरु नानक देव (ग्रन्थ साहब) में भी कृदन्तों का प्रयोग महत्वपूर्ण है ।

वर्तमानकालिक कृदन्त -

धातु	प्रत्यय	सिद्धरूप	सन्दर्भ	
जप्	त	जपत	ग्रं०सा०	20/1/18
दि	ता	दिता	ग्रं०सा०	15/1/5
बोल्	त	बोलत	" "	165/4/43
धाव्	त	धावत	" "	165/4/43
डुब	दा	डुबदा	" "	43/5/73

भूतकालिक कृदन्त -

धातु	प्रत्यय	सिद्धरूप	सन्दर्भ	
गम्	इअ +आ	गन्इआ	ग्रं०सा०	16/1/6
लाग्	ई	लागी (स्त्री०)	" "	20/1/18
बाध्	आ	बाधा	" "	15/1/4
भूल्	आ	भूला	" "	14/1/1
भाह्	इ	भाहि	" "	19/1/14
घुघ्	आ	घुघा	" "	474/2/2

खाइ	ई	खई	ग्रा0सा0
लिख्	इअ+आ	लिखिआ	" "
भुल	आ	भुला	" "
पछुताइ	आ	पछुताइआ	" "

क्रियार्थक संज्ञा

मर+अण्§+उ§	मरणु	ग्रं0 सा0	15/1/5
पुछ् +अणु	पुछणु	" "	20/1/18
बोल्+ णा	बोलणा	" "	15/1/3
खा + णा	खाणा	" "	15/1/3
पी+ अण् §+उ§	पीअणु	" "	14/1/2
कह् +अण्§+इ§	कहणि	" "	15/1/3
पैन् +अण्§+उ§	पैनणु	" "	16/1/7
चड़ + णा	चड़णा	" "	16/1/7
राख्+ अण	राखण	" "	15/1/5
पहिन+अण§+उ§	पहिनणु	" "	16/1/5
खा +_ णु	खाणु	" "	16/1/5
मिल् +अण§+ऐ§	मिलणै	" "	41/4/60
चल्+अण §+उ§	चलणु	" "	42/4/70

बखा +अण §+ए§	बखाणे	ग्रा०स०	95/4/3
लै + अणें §+ई§	लैणि	" "	43/5/73
बरत+ णा	बरतणा	" "	44/5/75
खा + णा	खाणा	" "	44/5/75
पैन + णा	पैन्णा	" "	44/5/75
कह + अन्	कहन	" "	51/5/96

<u>कर्तृवाचक कृदन्त</u> –

कर + ता	करता	ग्रा०स०	17/1/10
कर + ते	करते	ग्रा० स०	53/5/75
कर + तार	करतार	" "	15/1/4
कर + तारू	करतारू	" "	45/5/79
दा + ता	दाता	" "	18X1X11, 39/4/65
सुख + दाता	सुखदाता	" "	42/5/71
दा + ते	दाते	" "	95/4/4
जा + ता	जाता	" "	96/4/6
राख + आ	राखा	" "	42/5/71
रख + वाला	रखवाला	" "	94/4/2
रोवण + वाले	रोवणवाले	" "	15/1/3
मंगण + वाले	मंगणवाले	" "	18/1/11

करण	+ हार	करणहार	गं०मा०	47/5/84
पिआवण	+ हार	पिआवणहारा	" "	165/4/44
देवण	+ हारि	देवणहारि	" "	15/1/5
सिरजण	+ हारि	सिरजणहारि	" "	42/5/71
भोगण	+ हारू	भोगणहारू	" "	21/1/20
सवारण	+ हारू	सवारणहारू	" "	43/5/74
परवद	+ गारू	परवदगारू	" "	49/5/89
मिहर	+ वानु	मिहरवानु	" "	44/5/77
अंतर	+ जायी	अंतरजायी	" "	96/4/7
अहंकार	+ इआ	अहंकारोआ	" "	42/5/71
बरव	+ सिंदु	बरवसिंद	" "	46/5/82

<u>पूर्वकालिक</u> -

लिख	+ इ	लिखि	गं० मा०	16/1/6
देख	+ इ	देखि	" "	14/1/1
दे	+ 0	दे	" "	18/1/12,
पुछ	+ इ	पुछि	" "	14/1/1
ले	+ 0	ले	" "	20/1/16
हो	+ इ	होइ	" "	14/1/1, 41/4/68,
बुझ	+ अहि	बुझहि	" "	20/1/16
पा	+ इआ	पाइआ	" "	20/1/18

सुण	+ इ	सुणि -सुणि	ग्रं0 सा0	14/1/2
बह्	+ इ	बहि	" "	15/1/3
उढ	+ इ	उठो	" "	16/1/6
रख	+ ईअहि	रखोअहि	ग्रं0 सा0	16/1/6
रो	+ इ	रोइ	" "	17/1/8
गवा	+ इ	गवाइ	" "	474/2/1[22]
निरजास	+ इ	निरजासि	" "	474/2/3[22]
आ	+ इ	आइ	" "	39/4/65
धिआ	+ इ	धिआइ	" "	40/4/66
काढ्	+ इ	कढि	" "	40/4/66
तुठ	+ आ	तुठा	" "	40/4/67
जोदइ	+ ई	जोदरी	" "	41/4/68
जा	+ उ	जाउ	" "	41/4/68
मल्	+ इ	मलि-मलि	" "	41/4/69
मार	+ इ	मारि	" "	41/4/69
जा	+ इ	जाइ	" "	43/5/73
लै	+ 0	लै लै	" "	43/5/74
भर	+ इ	भरि	" "	43/5/74

+ करि

धंसिकरि –	ग्र० सा०	16/1/6
ठहि किरि	" "	18/1/13
(किरि ठहि)		
किरपा करि	" "	39/4/65
दइआकरि	" "	41/4/68
बलगतिकरि	" "	42/5/72

+ के

+ कर

+ कै

होइ कै	ग्र० सा०	14/1/2
उपाइ कै	" "	475/2/2
देखि कै	" "	42/5/71
करि कै	" "	50/5/91

भूतक्रिया द्योतक –

भूतकालिक कृदन्त ः ए, ए, ऐ

भरे	ग्र०सा०	19/1/14
देखिऐ	" "	39/4/65

डुबदे	ग्रं० सा०	40/4/65
भेटे	" "	40/4/67
देखे	" "	94/4/1
गाए	" "	95 /4/3
बुझें	" "	43/5/73
बिछुड़े	" "	46/5/83
जादें	" "	50/5/91

मंनिऐ

सुणिऐ

कीए	" "	16/1/7
लागे	" "	19/1/14

कृदन्त

वर्तमान क्रिया द्योतक –

वर्तमानकालिक कृदन्त + ए [विकृत रूप]

+ ए

होदे	ग्रं० सा०	16/1/6
मंगते	" "	16/1/6
रूलते	" "	167/4/49

तात्कालिक -

पेखत - ग्रं० सा० 47/5/83

कालरचना - साधारण काल या मूलकाल -

गुरु नानक देव (ग्रन्थ साहब) में मूल कालों की रचना दो प्रकार से होती है -

1- प्राचीन तिङ्न्त रूपों से विकसित तिङ्त तद्भव क्रिया रूप,

2- प्राचीन कृदन्तों से विकसित कृदन्त तद्भव रूप ।

इन क्रिया रूपों मेंकाल, अर्थ, अवस्था, पुरुष, लिंग, वचन, वाच्य, प्रयोग सम्बन्धी विकास होते हैं। प्रथम वर्ग में निम्नलिखित कालों के रूप आते हैं -

वर्तमान निश्चयार्थ -

उत्तमपुरुष , एक वचन

× × ×

+ व

गुरु नानक देव (ग्रन्थ साहब) में + व से अन्त होने वाला एक रूप संम्भवतः ओ और उं के बीच की स्थिति है ।

+ ऐ

मगैं	ग्रं० सा०	43/5/75 बलिहारणी – ग्रं० सा० 44/5/75

+ उ, + उं जाउं – " " 14/1/2, 40/4/67 रहाउ– ग्रं० 46/5/82

आवंउ – " " 15/1/2

+ इआ ‡या‡

लगिआ –	ग्रं० सा०	40/4/66 बारिआ– ग्रं० सा० 41/4/68
पड़िआ	– " "	163/4/39

+ इआ ‡इया‡

वारोआ –	ग्रं०सा०	96/4/7, घुमाईआ ग्रं०सा० 96/4/7

+ ई

दसाई–	ग्रं०सा०	41/4/68 करी ग्रं०सा० 20/1/17

+ ई

करि	ग्रं० सा०	41/4/68
+ आ देवा	ग्रं० सा०	95/4/5

– उ, – उं ‡उ, उं‡ प्रत्यय को आवृत्तियाँ अत्यधिक प्राप्त होती है, अतः इसे पदग्राम माना जा सकता है। अन्य प्रत्यय– ओ,

– ए, – ऐ , – इआ ,--ईआ , – ई, – ई – आ – अहि आदि प्रत्यय भी प्राप्त होते है, ये सह पदग्राम के रूप में प्रयुक्त हुए है ।

उत्तम पुरूष, बहुवचन

+ ऐ	चउखनोऐ	ग्रं० रा०	40/4/66
+ आ	जोवा	" "	40/4/66
	जागा	" "	660/1/2
+ ए			
	परे	" "	167/4/49
	जाये	" "	169/4/55
+ अह			
	बोलह	ग्रं० रा०	167/4/50
	करह	" "	167/4/50

– ऐं, {–ऐ} प्रत्यय पदग्राम तथा – आ, – ए , – अह आदि प्रत्यय सहपदग्राम की भाँति प्रयुक्त हुए हैं ।

मध्यमपुरूष एकवचन

+ ऐ –

आवै	ग्रं० रा०	16/1/5	पपोलो ऐ– ग्र० रा० 43/5/73

+ अहु

जाबहुं   ग्रं0 सा0   167/4/49

+ अहि

भोगहि, करहि, मारहि -   ग्रं0 सा0 42/5/71

वसहि -   ग्रं0 सा0 20/1/10

+ अहो

प्रतिपालहो - ग्रं0 सा0 20/1/18 पावहो ग्रं0 सा0 24/5/71

संजिआहो - " " 24/1/27 भावसो- ग्रं0 सा0 17/1/7

+ इा

पतोआइदा ग्रं0 सा0 42/5/71

- ऐ प्रत्यय पदग्राम तथा - आइ, - ओ, - अहु, अहो, - इआ -अति आदि प्रत्यय सहपदग्राम की भांति प्रयुक्त हुए हैं।

<u>सर्वाधिक प्रयुक्त विभक्ति</u>

<u>अन्यपुरूष ए0 व0</u>

+ ऐ + ए

समझाइऐ-   ग्रं0 सा0   15/1/3

पाए   " "   16/1/5

विसारीऐ   " "   16/1/5

तोहै   " "   14/1/1[illegible]

लए	ग्रं० मा०	463/2/3
भाणै	" "	463/2/3
उपजै	" "	466/2/2
पाए	" "	474/2/1[22]
मिलै	" "	39/4/65
करै	" "	40/4/67
मंनै	" "	40/4/67
पाइऐ	" "	44/5/78
चलाए	" "	42/5/72
मिलै	" "	44/5/78
चूकै	" "	48/5/87
पाइऐ	" "	15/1/4
लए	" "	18/1/10
मंगोए	" "	16/1/6
करै	" "	14/1/1
करे	" "	463/2/3

जाणोऐं	ग्रं० मा०	463/2/3
पढ़ऐ	" "	463/2/2

बोजै	ग्रं० सा०	474/2/2[22]
त्रिपतोरे	" "	40/4/66
कढै	" "	41/4/69
कटोऐ	" "	44/5/77
करे	" "	44/5/75
दीतै	" "	50/5/91
वरतै	" "	42/5/72
करै	" "	43/5/73

+ ऐं

जाणोऐं	ग्रं० सा०	20/1/16

+ वै (व)

आवै	ग्रं० सा०	14/1/1
मिलावै	" "	39/4/65
अधै	" "	41/4/70
आवै	" "	42/5/71
आवै	" "	474/2/3[22]

+ आ

विगुचणा	ग्रं० सा०

पउदा	ग्रं० सा०	95/4/5	पालदा गं०सा०47/5/93
आखणा	" "	14/1/2	जोवण " " 15/1/3
मरणा	" "	15/1/3	कहा " "167/4/49

+ आइ

जाइ – ग्रं० सा० 466/2/2		जाइ–ग्रं०सा०	39/4/65
		खाइ– " "	41/4/69
		जाइ " "	50/5/91
भुलई – ग्रं०सा०	19/1/13	आवई " "	15/1/2
सुणी " "	18/1x10	जापई " "	463/2/3
लभई " "	40/4/67	लगाई " "	95/4/4
देई " "	165/4/45	आवई " "	42/5/71
विआपई " "	43/5/75	जाणई " "	47/5/84

ई इ

लगि	ग्रं० सा०	41/4/70
मारि	" "	48/5/85
रोइ	" "	15/1/4
रोइ	" "	42/5/71
करेइ	" "	16/1/7
होइ	" "	40/4/65

+ तो

पढ़णतो	ग्रं० सा०	18/1/11
विगति	ग्रं० सा०	474/2/3[22]
पईआति	" "	40/4/67
चलती	" "	50/5/93

+ इया (ईआ)

चलाईआ-	ग्रं० सा०	15/1/3	बुढिआ-	ग्रं०सा०	39/4/65
बैठोड़िआ -	" "	46/5/83	लवाईअहि	" "	15/1/3
कहीअहि-	" "	15/1/4	तुणहि	" "	16/1/5
भ्रावहि -	" "	15/1/4	कमाहि-	ग्रं०सा०	466/2/2
बखाणहि	" "	16/1/5	मंनोअहि-	" "	42/4/
नावहि	" "	48/4/88	आवहि	" "	45/5/78
मालीअहि	" "	43/5/73	जाहि	" "	456/2/2
फिरहि	" "	47/5/83			

+ अहिं ×

+ अहीं ×

+ आ.ही मिलावही - गं० सा० 20/1/16

मावाही- " " 168/4/52

+ उ

बिलासु -	ग्रं०सा०	42/5/72	छोडु -ग्रा०सा०15/1/3
बोलणु	" "	15/1/3	खाउ- " " 15/1/3
जाउ	" "	14/1/1	
चलाउ	" "	15/1/2	

+ व

करेव	ग्रं० सा०	44/5/75

+ यौं (इओ) - ओ

चलिओ -	गं० सा०	15/1/3 -आइओ-गं०सा० 43/5/73

<u>स्त्रीलिंग -</u>

झुरि	ग्रं०सा०	17/1/9
बोलनि	" "	41/4/69
राखि	" "	168/4/51
दै	" "	" "

- ऐ (ए) प्रत्यय पद्ग्राम तथा -ऐं, -वै, - आ, - आइ,
- आई, - आई, - इ, -सी - इआ, -अ॒हि - अहिं,
- अहीं - अही, - उ, - व , - या, - ओ आदि
प्रत्यय सहपद्ग्राम की भाँति प्रयुक्त हुए हैं । तिङ्-त रूपों के कारण
स्त्रीलिंग के प्रत्यय पुल्लिंग से भिन्न नहीं है ।

<u>अन्यपुरूष बहुवचन</u>

+ ऐ

राखै –	ग्रं० सा०	14/1/1
बोवै –	" "	40/4/65
खावै –	" "	40/4/65

+ ए

तुटे	ग्रं० सा०	16/1/6
मिले	" "	40/4/66

+ एं

गावैं	" "	95/4/59

+ सो

परगासि	ग्रं० सा०	20/1/16

+ अहि

बनहि – ग्रं०सा० 15/1/3 मवाईअहि ग्रं०सा० 40/4/66

जाभीअहि – " x 41/4/69 जाहि " " 164/4/41

उगवहि – " " 463/2/2 चड़हि " " 463/2/2

+ अनि

समालिअनि – ग्रं० सा० 15/1/3 रहनि–ग्रं०सा० 53/1/1

+ ईआ ‡इआ ‡ कुड़ोआ – ग्रं० सा० 16/1/5

+ इआं ‡ या ‡ हे दिआं– " " 463/2/2

+ ऐं ‡–ऐ‡ प्रत्यय पद्ग्राम तथा –ए–एं, –सी, – अहीं, –अहिं, – अहि, –औ, –अनि, –ईआ, – इआं, – इये प्रत्यय सहपद्ग्राम की भाँति प्रयुक्त हुए हैं ।

वर्तमान संभावनार्थ

अन्य पुरूष – एकवचन

+ ऐ – वोसरें – ग्र० सा० 14/1/1

मध्यम पुरूष – एक वचन

× × ×

अन्यपुरूष एकवचन

+ ऐ –	मिलें –	ग्रं० सा०	40/4/66
+ ए –	करै	ग्रं० सा०	17/1/9
	करे –	" "	474/2/1[22]
	करै–	" "	49/5/89
+ एइ			
	करेइ –	ग्रं० सा०	44/5/76

अ0 पु0 बहुवचन

[सिंधी]   चउदा - गुं0 सा0 95/4/5

वर्तमान संभावनार्थ के रूप भी प्राचीन तिङ्न्त रूपों के तद्भव रूप है अतः इनमें लिंग, सम्बन्धी परिवर्तन नहीं होता है। अर्थ और प्रयोग में भिन्नता होने पर भी रूपरचना की दृष्टि से वर्तमान निश्चयार्थ और संभावनार्थ में कोई विशेष अन्तर नहीं है । प्रयोगावृति की दृष्टि से वर्तमान संभावनार्थ की संख्या बहुत कम है ।

वर्तमान आज्ञार्थ

वर्तमान आज्ञार्थ के रूप प्राचीन तिङ्न्त रूपों से विकसित हुए है। अतएव लिंग सम्बन्धी परिवर्तन सम्भव नहीं है। मध्यम पुरूष बहुवचन में कुछ स्त्रीलिंग क्रिया का प्रयोग हुआ है किन्तु उसका रूप पुलिंग के ही समान है ।

+ उ   विसारेउ - गुं0सा0 20/1/16   फिराउ -गुं0सा0 42/4/68

+अहु- पुछहु - " " 41/4/69   मिलहु -" " 95/4/4

+ ऐ   पीचै " " " 96/4/6

+ वै   छडावै - " " 164/4/39

+ वा   मनोवा " " 96/4/6   धोवा -गुं0सा0 96/4/6

- उं §-उ § प्रत्यय पद्ग्राम तथा- ओ, - ओ, - ओं- अहु - ऐ,
-वै - वा आदि प्रत्यय सहपद्ग्राम की भांति प्रयुक्त हुए हैं ।

वर्तमान आज्ञार्थ

मध्यम पुरुष एकवचन

+ इ

सुण	+ इ -	सुणि -	ग्रं० सा०	15/1/4
मिलॅ	+ इ -	मिलाइ	" "	164/4/40
द्रिड़्	+ इ -	द्रिड़ाइ	" "	40/4/66
मिल	+ र -	मिलि	" "	41/4/69
पुर +	इ -	पुरि	" "	94/4/4
ला	+ इ -	लाइ	" "	43/5/73
माण	+ इ	माणि	" "	43/5/73
धिआ	+§ध्या§इ	धिआइ	" "	45/5/78
समे	+ उ	समेउ	" "	20/1/16
जाण	+ उ	जाणु	" "	15/1/5
लिख	+ उ	लिखु	" "	16/1/6
भज	+ उ	भजु	" "	163/4/39
आ	+ उ	आउ	" "	95/4/3
जाग	+ उ	जागु	" "	43/5/74

जा	+ उ	जाउ	ग्रं०सा०	43/5/75
पखाण+	ऊ	पखाणू	" "	45/5/79

+ अहु

जप	+ अहु –	जपहु –	ग्रं० सा०	19/1/14
सुण	+ अहु –	सुणहु–	ग्रं० सा०	466/2/2
रंग	+ अहु –	रंगहु	" "	40/4/67
कर	+ अहु	करहु	" "	94/4/1
मेल	+ अहु	मेलहु	" "	94/4/1
पा	+ अहु	पाहु	" "	44/5/77

+ औ

+ ए दसे ग्रं०सा० 95/4/3 दे–ग्रं०सा० 164/4/39

गाव्ो" " 46/5/81

+ ऐ

कोझे ग्रं०सा० 95/4/6 दोजै– ग्रं०सा० 95/4/3

मिलावै " " 49/5/89 वर्तै – " " 49/5/88

+ ओ ×

+ औं

×

+ अहि

वाहि– ग्रं० सा० 20/1/16 मावीअहि –ग्रं०सा० 48/5/86

सालाहि ग्रं० सा० 43/5/75

+ या (इआ) रतिआ-ग्रं०सा० 45/5/79

+ आ

करेहा -ग्रं० सा० 95/4/3 जाणा- ग्रं०सा० 48/5/87

+ असि

+ अह - गावह ग्रं० सा० 166/4/48

+ अहो-- जाही " " 598/1/9

- इ प्रत्यय पद्ग्राम तथा- उ,- अहु - औ, - ए, - ऐ,- ओ, औ, - अहि - या, - ना, आ, - असि, - अह - अहो तथा शून्य आदिप्रत्यय सहपद्ग्राम की भाँति पयुक्त हुए हैं। यो प्रत्यय ब्रजभाषा के प्रभाव के कारण प्रयुक्त हुआ है।

आदरार्थ -

मध्यमपुरुष - एक वचन

बोलो ऐ	ग्रं० सा०	15/1/4
पढ़ो ऐ	" "	95/4/3
गुणो ऐ	" "	95/4/3
मेलाइऐ	" "	95/4/5
कीए	" "	50/5/91

	धिआईऐ	ग्रं० सा०	44/5/77
	वारीऐ -	" "	47/5/83

आदर प्रदर्शन के लिए - इये प्रत्यय प्रयुक्त हुआ है ।

मध्यम पुरुष , बहुवचन

+ अहु -	आवहु	ग्र० सा०	96/4/7
	मिलहु	" "	" "

स्त्रीलिंग

बहुवचन

+	अहु	आवहु	ग्र०सा०	17/1/10
+	अह	मिलह	" "	17/1/10
		करह	" "	17/1/10

- अहु प्रत्यय पद्ग्राम की भाँति प्रयुक्त हुआहै, किन्तु - अह प्रत्यय भी मिल जाता है ।

अन्य पुरुष एकवचन

+	इ	गाइ	ग्रं० सा०	40/4/67
		मिमाइ	" "	41/4/68

+	ई – कोजई	ग्रं0 सा0	21/1/20
+	ए – मेले	ग्रं0 सा0	39/4/65
+ ऐ–	कोचै	" "	20/1/16
	भिटोऐ	" "	40/4/66
	मिलावै	" "	94/4/1
	किसरै	" "	45/5/79
+ उ			
	आउ –	ग्रं0सा0	14/1/1 कमाउ–ग्रं0सा0 40/4/67
+	अहु – देखहु	ग्रं0 सा0	474/2/3[22]
+ वा	गावा	" "	40/4/67

– ऐ प्रत्यय पदग्राम तथा –इ, –ई, –ओ, –ए, – उ, ओ, – अहु, – वा तथा – 0 शून्य प्रत्यय सहपदग्राम को भाँति प्रयुक्त हुए है ।

<u>अन्य पुरुष बहुवचन –</u>

× × ×

आज्ञा मध्यम पुरुष में ही सम्भव है अतः प्रत्ययों तथा उनके उदाहरणों की आवृत्तियाँ अत्यधिक है। किन्तु उत्तम पुरुष की क्रियाओं पर भी बल पड़ता है अतः कुछ उदाहरण उनके भी प्राप्त हुए हैं ।

भूत निश्चयार्थ -

भूत निश्चयार्थ प्राचीन संस्कृत कृदन्तीय रूपों से विकसित तद्भव रूप है अतएव प्राचीन संस्कृत कृदन्तों की भांति इनमें भी कारक के लिंग परिवर्तन से क्रिया का लिंग परिवर्तन हो जाता है। साधारण काल रचना में भूतनिश्चयार्थ के रूप भाषा के स्वरूप निर्धारण के लिए महत्वपूर्ण अंग है । सामान्यतया मानक हिन्दी (Standard Hindi) खड़ी - बोली का एक वचन भूतनिश्चयार्थ आकारान्त, ब्रज, राजस्थानी, बुन्देली, कन्नौजी, मालवी आदि का औ- ओकारान्त, अवधी का "वा" कारान्त " इस - एउ तथा भोजपुरी का इलु या लकारान्त होता है। गुरू नानकदेव (ग्रन्थ साहब) में प्राप्त संत साहित्य के - व्याकरणिक विवेचन से पता चलता है कि कुछ उदाहरणों को छोड़कर आकारान्त रूपों की ही अधिकता है ।

भूतकाल

निश्चयार्थ - उत्तमपुरूष , एकवचन

१ या (इआ)

देख + इआ देखिया ग्रं० सा० 14/1/11

बा + इआ बाइआ ग्रं० सा० 50/5/9

+ इया ‖ईआ ‖

पी + ईआ - पीआ ग्र0 स0 15/1/2

माल + ईआ - मालीआ- ग्र0 स0 49/5/89

+ आ

बैठा -	ग्रं0 सा0	14/1/1	पावा=	ग्रं0सा0	44/5/75
बैसा	" "	14/1/1	राखा	" "	14/1/1
बधा	" "	44/5/76	डिठा	" "	50/5/90
देखा	" "	39/4/65	पुछा	" "	39/4/65
धोवा	" "	41/4/69			
मवा	" "	14/1/2	जाना	" "	163/4/39

+ इ

मेलि-	ग्रं0सा0	14/1/1	निहालि -	ग्रं0सा0	20/1/17

+ ई

खोजी	" "	94/4/2	घिआई	" "	95/4/6
बसाई	" "	95/4/6	करी	" "	14/1/1

+ उ

बोजु- ग्रं0 सा0 94/4/2

- या ‖ -इआ ‖ प्रत्यय पदग्राम तथा - इया ‖-ईआ‖,

- आ, - इ - ई - उ प्रत्यय सहपदग्राम की भाँति प्रयुक्त हुए

उत्तमपुरुष एक वचन ,(स्त्री0)

+ हा ×

उबरो - ग्रं0 सा0 18/1/11

स्त्रीलिंग उत्तम पुरुष के लिए -ई - प्रत्यय प्राप्त होता है किन्तु - न्हा - ए, प्रत्यय भी प्राप्त होते हैं ।

उत्तम पुरुष बहुवचन

+ इया ×

+ या ×

+ ए

थापे - ग्रं0सा0 167/4/49

उबरे- " " 167/4/50

- ए प्रत्यय पद्ग्राम तथा - इया - या,न्हा प्रत्यय सहपद्ग्राम की भाँति प्रयुक्त हुए हैं ।

मध्यम पुरुष एक वचन

+ या (इआ)

नपटाइआ - ग्रं0 सा0 42/5/71

+ आ

लखा - ग्रं०सा०   43/5/73

(पंजाबी) लैदा- " "   42/5/71

+ (इयाँ) ईआँ-

लाईआँ - ग्रं० सा० 43/5/75

+ न्दां

- यआ प्रत्यय पद्ग्राम तथा-आ, - ई, -ए-, ईआं प्रत्यय सहपद्ग्राम की भाँति प्रयुक्त हुए हैं । ब्रज भी तथा पंजाबी प्रयोग भी कहीं-कहीं प्राप्त होते हैं ।

<u>मध्यम पुरुष बहुवचन -</u>

आए - ग्रं० सा० 598/1/9

मध्यमपुरुष, बहुवचन के लिए - द प्रत्यय पद्ग्राम की भाँति प्रयुक्त हुआ है ।

<u>अन्य पुरुष , एकवचन -</u>

+या (इआ)

विसार + इआ   विसारिआ- ग्रं०सा०   15/1/3

मिल् + इआ   मिलिआ " "   15/1/5, 41/4/69

पोआ	+ इआ	पोआइआ	ग्रं० सा०	95/4/5
पा	+ इआ	पाइआ	" "	40/4/66
बेध्	+ इआ	बेधिआ	" "	40/4/67
हो	+ इआ	होइआ	" "	41/4/69
मिला	+ इआ	मिलाइआ	" "	42/5/71
भू	+ इआ	भइआ	" "	45/5/79
धिआ	+ इआ	धिआइआ	" "	45/5/80
लिख्	+ इआ	लिखिआ	" "	45/5/80

+ इआ (ईआ)

जाल	+ ईआ	जालीआ	ग्रं०सा०	14/1/2
ले	+ ईआ	लीआ	" "	42/4/70
कर्	+ ईआ	कीआ	" "	166/4/64
स्था	+ ईआ	थीआ	" "	41/4/68
प्रगास्	+ ईआ	प्रगासीआ	" "	46/5/81
दे	+ ईआ	दीआ	" "	43/5/74
(राजस्थानी) दे	+ इयो (ईओ)	दीओ	" "	167/4/49

+न्हां, न्ह

कर् + न (अवयो)

कर् + नो (अव) कीनो – ग्रं०सा० 395/5/100

+ ए

उपा	+ ए	उपाए –	ग्रं०सा०	16/1/6
लैंदा	+ ए	लैंदि	" "	95/4/5
धार	+ ए	धारे	" "	95/4/4
ले	+ए	लए	" "	40/4/67
ले	+ ए	लए	" "	49/5/90

+ आ

लग	+ आ	लगा	ग्रं०सा०	474/2/1[22]
विथर्	+ आ	विथरा	" "	40/4/67
बुड़	+ आ	बुड़ा	" "	40/4/67
बैठ	+ आ	बैठा	" "	40/4/67
माण	+ आ	माणा	" "	41/4/68
लाग	+ आ	लागा	" "	394/5/95

+ इ

छिड़	+ इ	छिड़इ	ग्रं० सा०	40/4/67
कर्	+ इ	करि	" "	20/1/16
पा	+ इ	पाइ	" "	42/4/70

+ वा

पा+वा	पावा	ग्रं०सा०	40/4/67

ब्रजभाषा प्रयोग -

+ यो, यो

आ + इओ	आइओ	ग्रं०सा०	43/5/74

+ आ

+ ई

पा+ई	पाई	ग्रं० सा०	94/4/1
दसा+ई	दसाई	" "	94/4/2
भ + ई	भई	" "	164/4/41
प + इ	पई	" "	41/4/69
कोन+ ई	कोनो	" "	395/5/100

+ आ

(पंजाबी)

उतारिअनु	ग्रं०सा०	46/2/82
तिरिजिओनु	" "	48/5/86
लघु	" "	50/5/90

- या प्रत्यय पद्ग्राम तथा- इया, न्हां, - ए, आ, -इ,ई, - आनां, सहपद्ग्राम की भाँति प्रयुक्त हुए है । ब्रज, राजस्थानी - इयो-यो , - यो, - नो, अवधी - वा, - न , भोजपुरी - मा तथा पंजाबी प्रयत्यय भी प्राप्त होते हैं किन्तु इनकी आवृत्तियाँ बहुत कम है। मूलतः

स्त्रीलिंग

अन्यपुरूष, एक वचन

+ ई

मुई –	ग्रं०सा०	18/1/11	मुठी	ग्रं०सा०	18/1/13
बोली	" "	40/4/67	भाणी	" "	95/4/4
चली	" "	43/5/73	पई	" "	43/5/74
कोनी	" "	168/4/53			

बहुवचन

जड़ती	ग्रं० सा०	14/1/1
गई	" "	169/4/45

स्त्रीलिंग के लिए – ई प्रत्यय ही प्राप्त होता है।

अन्य पुरुष, बहुवचन –

डिठे –	ग्रं०सा०	16/1/6
लगे	" "	18/1/11
थके	" "	40/4/65
तिआगे	" "	165/4/43
निकले	" "	43/5/73

	बिन्से	ग्रं० सा० 45/5/78	
	भोगे	ग्रं० सा० 21/1/20	
+ या (इआ)	पाइआ	ग्रं०सा०	40/4/65
	रविआ	" "	41/4/68
	पहुतिआ	" "	43/5/74
+ आ			
	लोचदा	" "	41/4/68
	लभा	" "	44/5/76
+ इया			
	पाईआ	ग्रं०सा०	9/1/45
+ ई			
	लाई	" "	165/4/53
+ इ	समाणि	" "	43/5/73

राजस्थानी प्रभाव -

+ इआ	पाइओ	ग्रं०सा०	40/4/65
	भेटिओ	" "	40/4/66

- ए प्रत्यय पद्ग्राम तथा - या, - आ, - इया, ई, - इ, न्ह तथा 0 शून्य प्रत्यय सहपद्ग्राम की भाँति प्रयुक्त हुए हैं। राजस्थानी प्रभाव - इओ प्रत्यय भी प्राप्त होता है।

भूत संभावनार्थ -

भूत संभावनार्थ के रूप - रूपात्मक दृष्टि से वर्तमान-कालिक कृदन्त के ही रूप हैं।वाक्यात्मक स्तर पर यही रूप भूत संभावना का अर्थ प्रकट करते हैं।

अन्य पुरुष, एकवचन

× × ×

- त प्रत्यय पद्ग्राम तथा - न प्रत्यय सहपद्ग्राम की भाँति प्रयुक्त हुए हैं।

अन्य पुरुष, बहुवचन

जड़ाउ - ग्रं०सा० 14/1/1

- ए प्रत्यय पद्ग्राम तथा - उ प्रत्यय सहपद्ग्राम की भाँति प्रयुक्त हुए हैं।

भविष्य निश्चयार्थ

गुरुनानक देव [ग्रन्थ साहब] में भविष्य निश्चयार्थ बोधक रूपों की रचना दो प्रकार से हुई है।

- 1 भविष्यकाल सूचक प्राचीन संस्कृत चिह्-नत रूपों के तद्भव रूप-"ह"- "स" विभक्त्यंत रूप, 2- -[क] मूलधातु या प्रतिपादिक में - "ग" -[गतः

गृ - का अवशेषांश ‡ को भविष्य सूचक विभक्ति के समान जोड़कर - कृदन्तीय रूपों में ‡ख‡ अथवा धातु या प्रातिपदिक में + ब् ‡तव्यम्‡ का अवशेषांश ब् जोड़कर अन्य रूपों से । कुछ उदाहरण -"ड" - ऐ प्रत्ययांत के भी मिलते है ।

भविष्यकाल निश्चयार्थ -

30 पु0 एक वचन

x x x

- गा प्रत्यय पद्ग्राम तथा - बा, न्हूँ - हो प्रत्यय सह पद्ग्राम की भाँति प्रयुक्त हुएहै । अवधी - ब प्रत्यय भी प्राप्त होता है ।

30 पु0 बहुवचन

x x x

मूलतः - गे प्रत्यय ही प्राप्त होता है किन्तु एक उदाहरण- अहीं प्रत्यय का भी मिला है ।

म0पु0 एकवचन

x x x

– गा प्रत्यय पद्ग्राम तथा – बा, – सो, – रह प्रत्यय सहपद्ग्राम की भाँति प्रयुक्त हुए हैं । ब्रज –बौ प्रत्यय भी प्राप्त हुआ है ।

अन्य पुरुष एकवचन –

+ ऐ	देव+ऐ–	देवै–	ग्रं0सा0	40/4/66
+ अई	× ×	×		
+ बा	× ×	×		
+ सो	× ×	×		
	मैल + सो	मैलसो	ग्रं0सा0	41/4/68
	देव + सो	देवसो	ग्रं0 सा0	41/4/69

– गा प्रत्यय पद्ग्राम की भाँति तथा–है,–ऐ, –अइ, – बा, – सो प्रत्यय सहपद्ग्राम की भाँति प्रयुक्त हुए हैं । ग्रन्थ साहब महला । , में भविष्यत् – गा प्रयोग नही प्राप्त होता, इसके स्थान पर सो प्रत्यय ही मिलता है । सम्भवतः पंजाबी प्रभाव हो । साथ ही इसमें कही–कहीं – ऐ प्रत्यय का भी प्रयोग हुआ है ।

अन्य पुरुष बहुवचन

छुट् + सो	छुटसो	ग्रं0 सा0	18/1/12

– गे प्रत्यय पद्ग्राम तथा – सो, – हैं प्रत्यय सहपद्ग्राम की भाँति प्रयुक्त हुए है। ग्रन्थ साहिब में – सो प्रत्यय ही प्राप्त हुआ है।

अन्य पुरूष एकवचन {स्त्री0}

+ गी– छुटै + गी – छुटैगी – ग्रं0 सा0 43/5/73

एकवचन तथा बहुवचन दोनो के लिए – गी प्रत्यय ही प्राप्त होता है। ग्रन्थ साहब में भी – गी प्रत्यय प्राप्त हुआ है।

भविष्य संभावनार्थ –

× × ×

एक उदाहरण अन्य पुरूष, एकवचन– वे प्रत्यय का प्राप्त हुआ है।

संयुक्त काल –

संयुक्त काल में एक प्रधान कृदन्ती क्रियाऔर" होना" सहायक क्रिया के सयोग से काल– रचना होती है। संयुक्त काल आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं की आधुनिक व्यवस्था की प्रमुख विशेषता है। आ0 भा0 आ0 भा0 के आदि–काल में ये प्रयोग नाम मात्र को ही मिलते है। नानकदेव {गुरू ग्रन्थ साहब} में पर्याप्त प्रयोग होते हैं। संयुक्त काल दो वर्गों में विभाजितकिये जा सकते हैं –

1- वर्तमान कालिक कृदन्त + सहायक क्रिया

2- भूतकालिक कृदन्त + सहायक क्रिया

कृदन्तोकाल होने के कारण कारक के लिंग परिवर्तन से क्रिया रूपों में भी लिंग परिवर्तन हो जाता है।

संयुक्त काल

अपूर्ण वर्तमान निश्चयार्थ ॥ वर्तमान कालिक कृदन्त+ सहायक क्रिया॥ । अन्य पुरुष, एकवचन , पुलिंग ।

जात है -	ग्रं०सा०	171/4/59
झुकते॥है ॥	" "	43/5/73
लुभतु है	" "	167/4/50
राखता ॥है॥	" "	168/4/51

अन्य पुरुष बहुवचन, पु०

जातीं -	ग्रं० सा०	45/5/78
खाते ॥हैं॥	ग्रं० सा०	169/4/54
कहते हैं	" "	71/5/27

उ० पु० ए० व०

x x x

बहुवचन =

जाते ﴾हैं﴿ गं०सा० 169/4/54

मध्यम पुरूष एकवचन

× × ×

अपूर्ण भूत निश्चयार्थ

अन्य पुरूष, एकवचन

पूछता ﴾था﴿ गं०सा० 167/4/49

उ०पु० एकवचन बहुवचन

फिरते ﴾थे﴿ गं०सा० 167/4/49

पूर्ण वर्तमान निश्चयार्थ

अन्य पुरूष, एकवचन ﴾भूतक्रिया द्योतक ॰ सहायक क्रिया﴿

बहुवचन –

जड़ाउ होहि गं० सा० 14/1/1

﴾होहि जड़ाउ﴿

स्त्रीलिंग

अन्यपुरूष एकवचन बहुवचन

तिआगी है -	ग्रं० सा०	18/1/11
बणी है	ग्रं० सा०	165/4/43
दी है	" "	44/5/75

पूर्णभूत निश्चयार्थ

× × ×

अपूर्ण वर्तमान संभावनार्थ, अपूर्ण भूत संभावनार्थ, पूर्ण वर्तमान संभावनार्थ तथा पूर्ण भूत संभावनार्थ के प्रयोग प्राप्त नहीं है । संभवतः ये प्रयोग अत्यधिक साहित्यिक है, अतएव इन प्रयोगों का न मिलना असाधारण नहीं ।

प्रेरणार्थक क्रिया-

प्रेरणार्थक क्रिया वह क्रिया है जिससे यह ज्ञात होता है कि इसके कर्ता को क्रिया करने के लिए प्रेरित किया गया है । नानक देव के ग्रन्थ साहब में दो श्रेणियों के प्रेरणार्थक रूप मिलते हैं -

1- धातु + आ प्रथम प्रेरणार्थक - इस प्रत्यय के लगने से अकर्मक क्रिया सकर्मक हो जाती है ।

2- धातु + अव - द्वितीय प्रेरणार्थक

प्रेरणार्थक क्रिया -

प्रथम प्रेरणार्थक विभक्ति	कालसूचक विभक्ति		
+ आ			
	दिखाईऐ -	ग्रं० सा०	18/1×12
	मिलाइआ	" "	95/4/5
	दिखालिआ	" "	96/4/7
	मैलाइआ	" "	46/5/83

द्वितीय प्रेरणार्थक -

× × ×

कर्मवाच्य -

वाच्य क्रिया का वह रूप है जिससे यह जाना जाता है कि वाक्य में कर्ता प्रधान है अथवा कर्म या भाव । नानकदेव [गुरु ग्रन्थ साहब] में दो पद्धतियों से कर्म वाच्य निर्मित किया गया है ।

1- प्राचीन पद्धति या संयोगात्मक पद्धति + इए विभक्ति प्रत्यय जोड़ कर ।

2- नवीन पद्धति या वियोगात्मक अथवा संयुक्त पद्धति क्रिया के भूतकालिक कृदन्तीय रूप में + जाना क्रिया के रूप जोड़कर ।

प्राचीन पद्धति या संयोगात्मक पद्धति

+ इए प्रत्यय

पा + इऐ - पाईऐ - ग्रं० सा० 42/5/71

{गुरपरसादी पाईऐ करमि परापति होइ}

नवीन पद्धति या वियोगात्मक अथवा संयुक्त पद्धति तिसु बिनु रहणि न जाइ - ग्रं० सा० 49/5/89

कर्मणि प्रयोग -

जिस वाक्य में क्रिया का अन्वय {लिंग वचन-सहयोग} कर्म के अनुसारहोता है, ऐसे क्रिया प्रयोग को कर्मणि प्रयोग कहते हैं । कर्मणि प्रयोग पश्चिमी हिन्दी की विशेषता है। पूर्वी हिन्दी में कर्मणि प्रयोग आज नहीं मिलता है। नानकदेव {ग्रन्थ साहब } में कर्तरि प्रयोग की अपेक्षा कर्मणि प्रयोग के उदाहरण अधिक मिलते हैं । प्रयोग और वाच्य का निर्णय वाक्यात्मक स्तर पर ही हो सकता है, केवल पदात्मक स्तर पर इतना ठीक ठीक बोध नहीं होता है। उदाहरण द्रष्टव्य हैं -

कर्मणि प्रयोग

तिसु होवा सिधि बाझु-ग्रं०सा० 14/1/1 {सिधि
के कारण "लाई क्रिया
स्त्रीलिंग में }

संनिआसी बिभूत लाइ देहसनारी ग्रं0 सा0 164/4/39

हैवर गैवर बहुरंगे कीए रथअबाक ग्रं0 सा0 42/5/71 (ब0व0)

<u>संयुक्त क्रिया -</u>

धातुओं के कुछ विशेष कृदन्तों के आगे (विशेष अर्थ में) कोई - कोई क्रियाए जोड़ने से जो क्रियाएं बनतीहै उन्हें संयुक्त क्रियाए कहते हैं । .... संयुक्त क्रियाओं में मुख्य क्रिया का कोई कृदन्त रहता है और सहकारी क्रिया के काल के रूप रहते है आधुनिक भारतीय आर्य भाषा की आरम्भिक अवस्था से संयुक्त क्रिया मिलने लगती है । नानकदेव (ग्रन्थ साहब) में संयुक्त क्रिया पर्याप्त मात्रा में मिलने लगती है ।

<u>पूर्वकालिक कृदन्त -</u>

+ लेना

समाइ लए-	ग्रं0 सा0	463/2/3
कढ़ि लए	" "	463 /2/3
कढ़ि लै	ग्रं0 सा0	40/4/65
लाइ लए	ग्रं0 सा0	42/4/70
कढाइ लइआ (लइआ कढाइ)	" "	43/5/73

1- कामता प्रसादगुरु हिन्दी व्याकरण, पृ0 310

छडाइ लए　　गुं०सा० 45/5/78

{लए छडाइ}

करि लइओनु　　" " 42/5/72

पूर्वकालिक + रहना

समाइ रहिआ　　गुं०सा० 15/1/4

{रहिआ समाइ}

रवि रहे　　" " 21/1/18

समाइरहै　　" " 474/2/1

{रहै समाइ}

करि रहे　　" " 40/4/65

समाइ रहिआ　　" " 164/4/39

{रहिआ समाइ}

रचि रहिआ　　" " 47/5/84

+ सकना

मेटि सकै　　गुं०सा० 17/1/8

मारि सकै　　" " 43/5/75

कहि सकाउ　　" " 44/5/77

रखि सकई　　" " 43/5/73

पूर्वकालिक कृदन्त + जाना

रलि जाउ -	ग्रं०सा० 14/1/2
लहि जाइ -	ग्रं०सा० 165/4/43
मिटि गइआ	" " 42/5/72
छडि गवाइआ	" " 43/5/73

+ आना

लोपि आवै	ग्रं०सा० 14/1/1

पूर्वकालिक+ चलना

उठि चलिआ	ग्रं०सा० 43/5/74

+ मिलना

मेलिमिलाइ	" " 41/4/68
आइ मिले	" " 40/4/66

+ देखना

बूझिदेखिआ	ग्रं०सा० 14/1/1

+ लगना

जाइ लगी	ग्रं० सा० 474/2/1
(लगै जाइ)	

+ बैठना

आइ बैठा	गं०सा०	40/4/67

+ रोना

बहिरोइ	गं०सा०	41/4/68

+ पड़ना

कुहि पवा	गं०सा०	39/4/65
करि परिआ	" "	42/5/72
आइ पड़्आ	" "	43/5/73

क्रियार्थक संज्ञा + लगना, जाना

पुछण जाउ	गं०सा० 15/1/3

भूतकालिक कृदन्त + सहायक क्रिया-

पोसा पाइ-	गं०सा० 14/1/2
चड़िआ जाइ	गं०सा० 40/4/67
कही बणे	474/2/3[22]

भृतक्रिया द्योतक + सहायक क्रिया

पुनरूक्त संयुक्त क्रिया

वर्तमान कालिक कृदन्त+ सहायक क्रिया-

होदे - डिठे - गं० सा० 16/1/6

क्रिया वाक्यांश

राखि लीए छडाइ -   ग्रं० सा०   167/4/49

—o—

अध्याय - 8 (क)

— अव्यय —

कबीर (क्रिया - विशेषण)

कबीर-ग्रन्थावली के सभी क्रियाविशेषण वस्तुतः संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया में थोड़े परिवर्तन के साथ अथवा कभी-कभी उसी रूपमें अपनी स्थिति अथवा वितरण के कारण क्रिया-विशेषण बन गए हैं। अर्थ की दृष्टि से इन क्रिया विशेषणों का वर्गीकरण किया गया है।

(1) कालवाचक

जब	सा०	6/6/1
जब लग		9/26/2
जब लागि		3/16/1
जबहिं		31/23/2
जबहीं		29/16/2
अब (तो)		9/39/2
अब (के)		16/36/2

तब पद 10/5, 12/2, सा0 1/10/2, 1/16/2

र0 4/1, (90 आवृत्ति)

तबहीं सा0 15/11/2

तबहिं प0 60/6

तबै प0 54/5

अव्यय : क्रियाविशेषण : कालवाचक

(संज्ञा, क्रिया, क्रिया विशेषण मूलक)

आज प0 7/5, 74/2

आजि सा0 15/67/1, 16/27/1

आजु सा0 2/12/2, 15/22/2, 16/24/1, 16/39/2

आजुहिं 16/24/2

अजहुँ 25/19/2

अजहूँ प0 23/7, 59/1, 23/8, 150/3, 41/1

159/1, 213/3, 160/1, 150/3,

और र0 9/1

कालि सा0 15/10/2

परौं 15/23/2

अंत 1/13/2

अंकालि 15/41/2

नित 2/17/1

निभ्रुति 4/32/1

नोत 12/2/2, 16/12/2

सदा 2/16/2, 8/16/1

सदासबदा प0 3/4

निरंतर सा0 20/8/1

बारम्बार 12/6/2

निदान सा0 14/3/2

बहुरि सा0 1/15/2, 15/5/2

बगि 2/45/1

बगै 3/23/2

तुरत प0 2/6

पहिले सा0 3/10/1

आदि प0 18/2 - रहाँ अंत अरु आदि

कमन सा0 15/10/2 कमन रस न कुराइ

निम्नलिखित काल वाचक क्रिया विशेषण § एक दूसरे के साथ आकर§ दो वाक्यों अथवा वाक्यांशों जोड़ते हैं ।

कब .... कब - कब मरिहौं कब बैठहौं -सा0 14/2/2

कब .... जब - तन ना होकब जब मननाहीं- प0 123/2

तब............ जब - कहै कबीर तब पाइए जब भैदी लीजे साथि- सा0 15/87/2

जब .... तौ - जाइपरै जब गंग में तौ सब गंगोदिक होइ। सा0 4/29/2

जब .... सौ - जब दस मास...सौ दिन काहे भूले सा0 68/2

<u>र - स्थान वाचक क्रिया विशेषण</u>

अंतरि	प0	112/2
अन्त	सा0	9/34/2
आंगा	चौ0	19/1. दद्दा दिग ढूंढहिं कैं आगा
आगे		20/2/1
आगैं		8/15/1

इत		10/3/2
उत		10/3/1
इहई	प0	177/12
उपरि	प0	116/6
उहवाँ	प0	125/4
दूर	सा0	20/2/2
दूरि		23/5/1

जहँ जहँ ·········· तहीं	प0	31/5	जहँ जहँ जाइ तहीं अकुलावै
जहँ ·········· तहाँ	पौ0	3/1	जहँ अबोल तहाँ मन न रहावा
जित ··········तित	सा0	3/6/2	जित देखौं तित तूं
तिहिं ·········· जहँ		17/4/2	चलि कबीर तिहिं देस कौं जहँ ·········· ।

रीतिवाचक क्रिया विशेषण :—

सामान्य रीतिवाचक क्रिया-विशेषणों के अतिरिक्त निषेधात्मक कारण वाचक आदि इसके अन्य उपभेद भी प्राप्त होते हैं।

सामान्य रीतिवाचक क्रिया विशेषण :—

	जैसे	सा0	11/1/2
	जस		14/19/1
	तैते	प0	[illegible]/5
	तस	प0	34/8, चौ0र0 16/1/5
	यौं	सा0	31/26/1, प0 2 बार,
			र0 1 बार,
			सा0 18 बार } 21 बार }
या	यौंही	सा0	2/32/2, 21/8/2, 33/8/2
	यूं	प0	143/3, 20/3/2
	ज्यों	प0	7/2, 13/6, प0 49 बार,
		सा0	42 बार } 91 बार }
	क्यूं	प0	68/6 प0 8 बार
		सा0	3/1/1 सा0 4 बार
			12 बार
	कांकरि	सा0	29/1/2

(संज्ञा, क्रिया, क्रिया, विशेषण मूलक)

काहे कैं	र0	1/5
जदि-तदि	सा0	2/18/1
मानौं	सा0	4/39/2 (4 बार)
सहजहिं	प0	4/9
सहजैं	सा0	25/5/2

दो वाक्यों या वाक्यांशों जोड़ने वाले रूप :--

कैसे;.......... जैसे - लागी कैसे छूटे जैसे हीरा फोरैं न फूटे

प0 18/1

जैसा.......... त्यौं - जैसा रंग कुसुंभ त्यौं पसुयोपासारू

प0 97/9

बाहिरा	सा0	4/4/2
बिहूना		9/8/2
बिहूणा		5/4/2
बिहून	र0	4/7
बरोबरि		15/17/1

भीतर	प०	1/5
लौं	र०	8/16/1
सवां		13/1/2

कबीर ग्रन्थावली में समुच्चय बोधक अव्यय-संयोजग में दो वाक्यों, वाक्यांशों, शब्दों तथा शब्द समूहों को किसी न किसी प्रकार जोड़ने का कार्य समुच्चय बोधक अव्यय करता है । अर्थ की दृष्टि से उसे संयोजक, विभाजग, विरोधावाक परिणाम वाचक, उद्देश्यवाचक संकेतवाचक और स्वरूप वाचक वर्गों में विभाजित किया जा सकता है ।

संयोजक :—

औरै	सा०	23/8/1
		25/10/1
औ	सा०	16/6/1
पुनि		3/9/1
आदि	र०	1/1

विभाजक :—

कि [या]	सा०	15/67/1
भावै	प०	25/12

<u>विरोधक :--</u>

परि - जनम गयौ परि हरि रहैंगी पद 83/1,

पर - टूटे पर छूटे नहीं साO 31/10/2,

पO 124/7

<u>परिणामवाचक :--</u>

याहीं तैं - याही तैं मोहिं प्यारो लागी । पO 153/3

<u>उद्देश्यवाचक :--</u>

ज्यौं - एक राम मनहुं ज्यौं सहज होइ सुरसेरा । पO 89/8

जिनु - देखु, देव करहु दाया जिनु बन्धन छूटे - पO 132/1

जानैं - जैसे बिलोइ जामैं तत न जाई - पO 127/2

<u>संकेत वाचक :--</u>

ज्यौं-त्यौं पO 7

जौं - त पO 18/1

तौं 2/7/36/1

नाहिंत साO 31/7/2

जैसे-जैसे पO 5/7

जबलगि-तबलगि पO 12

स्वरूपवाचक :--

जो - भली भई जो गुरु मिले सा० 1/25/1

विस्मयादि बोधक अव्यय :--

धनि-धनि	प०	5/5		
धन्नि	प०	5/11		
हा हा	सा०	16/23/1, 19/3/2		
रे	प०	24/5,	प०	128 बार
			सा०	14 बार
			र०	3 बार
				145 बार

नहीं .... नाहीं - जाके मुंह माथा नहीं नाहीं रूप कुरूप

सा० 7/7/2

नहिं .... नहिं - नहिं तन नहिं मन नहिं हंकार

प० 180/3

<u>कारण वाचक</u> :—

दो वाक्यों को जोड़ने वाले रूप —

क्यों........क्यों	– क्यों त्रियनारो निंदए क्यों पनिहारो को भांन	सा० 4/11/1
क्यूं	प०	68/6 {12 बार}
क्यों	प०	25/1, 3/1, {17 बार}
	सा०	2/41/1
कत	प०	38/3 {10 बार}
कहा	प०	3/1 {21 बार}

—०—

===== अध्याय -8 =====

:=== अव्यय ===:

क्रिया विशेषण —— नानक

अर्थ की दृष्टि से क्रियाविशेषण 4 प्रकार के होते हैं :-

1:— स्थान वाचक

2:— काल वाचक

3:— रीतिवाचक

4:— संख्या वाचक

रूप रचना की दृष्टि से इनके दो मुख्य वर्ग बनते हैं :—

1— सर्वनाममूलक - जो सर्वनाम के मूल + प्रत्यय लगाकर बनते हैं।

2— क्रियामूलक + संज्ञा मूलक + क्रिया विशेषण मूलक/नानक देव [ग्रन्थ साहब] में ये सभी प्रकार के पर्याप्त मात्रा में क्रिया विशेषण पाए जाते हैं।

स्थान वाचक [सर्वनाम - मूलक]

एथै ग्रं०सा० 15/1/3

ऐथे	ग्रं०सा०	49/5/90
ऐथे	" "	47/5/85
जिथे	" "	15/1/3
जिथे	" "	43/5/73
जा	" "	48/5/88
जह-जह	" "	96/4/7, 25/1/31
तह - तह	" "	96/4/7, 15/1/31
तहाँ	" "	44/5/76
तिथे	" "	15/1/3
ओथै	" "	49/5/90
कांई	" "	474/2/2
कत	" "	598/1/9
कित	" "	25/1/30
कहा	" "	25/1/3

स्थान वाचक - [संज्ञा, क्रिया, क्रि०वि० मूलक]

* * *

आग्रे	ग्रं०सा०	20/1/16
पाछै	" "	20/1/16
विचि	" "	463/2/3
पासि दुआसि	" "	40/4/67
निकटि	" "	40/4/67
पासि	" "	40/4/67
विचि	" "	11
दूरि	" "	11
पोछै	" "	165/4/43
नैड़ि	" "	165/4/45
अगै	" "	16/1/6
दूरि	" "	17/1/9
आरि	" "	18/1/12
नैड़ै	" "	25/1/31
मधि	" "	25/1/31

<u>कालवाचक [सर्वनाम मूलक]</u>

ता	ग्रं०सा०	24/1/28

कदै	ग्रं0सा0	474/2/3
कद ही	" "	43/5/74
तब	" "	25/1/33

उ - कालवाचक - [संज्ञा, क्रिया, क्रि0वि0 मूलक]

फिरि	ग्रं0सा0	19/1/15
बहुड़ि	" "	19/1/15
दिनुराति	" "	18/1/10
खिन	" "	18/1/11
सद	" "	16/1/6
सद	" "	474/2/1
सदा-सदा	" "	43/5/73
अजहु सदा	" "	17/1/8
अगला	" "	39/4/65
फिरि - फिरि	" "	40/4/66
दिस	" "	14/4/70
नित	" "	44/5/77

अति बेली	ग्रं0सा0	41/4/70
धुरि	" "	164/4/40
अनदिनु	" "	165/4/43
खड़ीमुहूत	" "	43/5/74
पुरवि	" "	43/5/74
अगला	" "	16/1/6
अंजु	" "	60/1/11
कलि	" "	60/1/11

रीतिवाचक (सर्वनाम मूलक)

काहे	ग्रं0सा0	25/1/30
कैसे	" "	25/1/31. 267/5/4
किउ	" "	17/1/9
किउ	" "	16/1/5
किउ	" "	39/4/65

किउकरि	ग्रंसा0	41/4/69
किआ	" "	18/1/13
कितु	" "	43/5/73
कवनै	" "	45/5/78
किते	" "	47/5/85
किनैही	" "	474/2/1
किआं	" "	42/5/71
तिउ	" "	166/4/46
तेहा	" "	25/1/32
ऐसा	" "	165/4/44
जिउ	" "	18/1/13, 164/4/41, 50/5/91
कैसा	" "	25/1/30
जे	" "	463/2/2, 43/5/75
जा	" "	164/4/41
जैसे	" "	474/2/2, 50/5/92
वैही	" "	25/1/32
जिउजिउ	" "	53/1/9

रीतिवाचक (संज्ञा, क्रिया, क्रि० वि० मूलक) —

वार वार	ग्रं०सा०		14/1/2
फिरि फिरि	"	"	466/2/2
कितु विधि	"	"	39/4/65
सहसै	"	"	42/5/72
सहसा	"	"	42/5/72
फिरि फिरि	"	"	50/5/91
इतु विधि	"	"	24/1/27

रीति	कारण	(सर्वनाम मूलक)
कै	ग्रं०सा०	15/1/4
काहे	ग्रं०सा०	23/1/26

गुण:परिणाम वाचक :—

बहुतु-बहुतु (आवै)	ग्रं०सा०		15/1/3
बहुतु (करहि)	"	"	42/5/71
घटि (आवै)	"	"	15/1/3

निषेधवाचक —

नह	गु०सा०	17/1/9
नह	" "	43/5/74
नही	" "	20/1/18, 40/4/65, 46/5/85
नाही	" "	21/1/20, 14/1/1, 165/8/44
		43/5/73
नाहि	" "	43/5/73
न	" "	14/1/1
न	" "	463/2/3
न	" "	38/4/65
न	" "	42/5/71
ना	" "	14/1/2
ना	" "	40/4/66
ना	" "	42/5/71
नाइ	" "	40/4/67
नाइ	" "	52/5/100
मधु	" "	14/1/1

अवधारण वाचक :—

ही	ग्रं०सा०	16/1/5, 474/2/1, 44/5/77
हि	" "	45/5/78
हू	" "	15/1/3
भी	" "	466/2/2

सम्बन्धबोधक

सम्बन्ध सूचक :—

बिनु	ग्रं०सा०	16/1/5, 42/5271
बिनु	" "	14/1/1, 463/2/2, 39/4/65, 42/5/72
विहूणिया	" "	47/5/84
हीण	" "	40/4/66
हीन	" "	95/4/5
विचि	" "	16/1/5, 475/2/2, 40/4/66, 42/5/72
अंदरि	" "	15/1/3, 474/2/3[22]

अंतरि	ग्रं0सा0	42/4/70
बाहरे	" "	15/1/4
बाहरा	" "	15/1/5
पासि	" "	40/4/67
पाछै	" "	41/4/68
संगि	" "	42/5/72
पटण	" "	95/4/5

समुच्चय बोधक

संयोजक :—

फुनि	ग्रं0सा0	18/1/12
अरू	" "	47/5/85
फिरि	" "	41/4/70
अरुन	" "	53/1/1

विभाजक

भी (फिर भी) ग्रं0 सा0 -		14/1/2
भी	" "	474/2/5[22]

कितु	ग्रं0सा0	43/5/73
भि	" "	475/2/2
जि	" "	463/2/3

'और' तथा इसके सह पद ग्राम नानक देव [ग्रन्थ साहब] में सर्वनाम की भाँति अव्यय की अपेक्षा अत्यधिक प्रयुक्त होते थे। सम्भवत: उस समय तक सर्वनाम के रूप में ही इसका प्रयोग अधिक प्रचलित था। कालान्तर में यही अव्यय के रूप में प्रयुक्त होने लगा

विरोधक

x x x x x x

दशावाचक :--

[जे] त	ग्रं0सा0	19/1/13
जा ता	" "	17/1/10, 16/1/5
[ता, जा]		
ता	" "	16/1/5, 44/5/75
तां	" "	44/5/75
जै	" "	17/1/8

	जै	ग्रं०सा०	40/4/66
	जा	" "	17/1/8
	जौ	" "	95/4/5
	जा - ता	" "	43/5/74
	जै - ता	" "	466/4/46
	ता	" "	474/2/1[22]
	जै - ता	" "	43/5/74
	तह	" "	21/1/18
	जिउ-तिउ	" "	20/1/16, 165/4/46
	जिउ-जिउ	" "	20/1/16
	जब लगु तब लगु	" "	20/1/17
	जब लगु	" "	19/1/13
	जब तब	" "	164/4/43
	जैसी तैसी	" "	165/4/45, 22/1/23
	जै है-तै है	" "	165/4/45
[पंजाबी]	जिक	" "	49/5/89
	जिक - तिक	" "	50/5/93
[तिक-जिक]	जद तद	" "	25/1/30

अध्याय -9

कबीर और नानक के भाषा वैज्ञानिक दृष्टिकोण को प्रभावित करने वाला सांस्कृतिक स्रोत -

हिन्दी साहित्य में निर्गुण संत सम्प्रदाय के संस्थापक कबीर का आविर्भाव 15वीं शताब्दी में और सिक्ख सम्प्रदाय के संस्थापक गुरु नानक देव का आविर्भाव 16वीं शताब्दी में हुआ था, कबीर का रचनाकाल 15वीं शताब्दी और गुरु नानक देव का रचनाकाल 16वीं शताब्दी है। दोनो का जन्म स्थान शिक्षा-दीक्षा पारिवारिक परिस्थिति, सामाजिक और राजनीतिक स्थिति थोड़ी भिन्न थी दोनो महान थे, दोनो में पूर्वापर सम्बन्ध है और इसलिए मध्यकाल की निर्गुण संत नामावली आने पर दोनो की भाषा को प्रभावित करने वाले स्रोत कुछ समान है और कुछ भिन्न है इसलिए दोनो की भाषा में बहुत कुछ समानता है और बहुत कुछ भिन्नता है।

कबीर का जन्म भारत के या मध्यदेश के पूर्व प्रदेश में अर्थात् काशी के आस-पास हुआ था इनकी मातृ भाषा निश्चयतः पूरबी थी, जिसे कबीर ने स्वयं स्वीकार किया है। "भाषा मेरी पूरबी" जिसे हम प्राचीन अवधी या प्राचीन भोजपुरी कह सकते है यदि कबीर ने अपनी मातृ भाषा में लिखा होता तो कबीर की काव्य भाषा निश्चयतः प्राचीन भोजपुरी या अवधी होती किन्तु कबीर हिन्दू मुसलमान, राम- रहीम

हिन्दू संस्कृति और इस्लामी संस्कृति के एकता के बहुत बड़े समर्थक थे, राम रहीम की एकता के गीत गाने वाले कबीर समान रूप से हिन्दू - मुसलमान सभी को सम्बोधित करना चाहते थे इसीलिए इन्होंने ऐसी भाषा चुनी जिससे सारे देश को सम्बोधित कर सके । इसलिए कबीर ने काव्य भाषा के रूप में उसी भाषा को चुना जिसे मध्यकालीन राष्ट्रभाषा कहा जाता है और जो खड़ीबोली पर आधारित है इसीलिए कबीर की भाषा का मूल आधार खड़ी बोली है जिसमें समयानुसार देश काल परिस्थिति के अनुसार पंजाबी, राजस्थानी, ब्रजी और अवधी का मेल है । कबीर ने निर्गुण सम्प्रदाय की एक निश्चित भाषा का निर्माण कर दिया और आगे आने वाले निर्गुण कवियों के लिए मार्ग प्रशस्त किया ।

कबीर के माता पिता का निश्चत पता नहीं है । कबीर का लालन-पालन जिस जुलाहा दम्पन्ती नीरू और नीमा ने किया है आर्थिक दृष्टिकोण से सामाजिक दृष्टिकोण और सांस्कृतिक दृष्टि से सर्वहारा वर्ग के कहे जा सकते है । इस प्रकार के पारिवारिक, सामाजिक और सांस्कृतिक वातावरण में पालित पोषित होने वाला व्यक्ति का व्यक्तित्व एक दबा हुआ व्यक्तित्व होना चाहिए किन्तु कबीर के व्यक्तित्व में स्वतः क्रान्तिकारिता थी जो परिवार, समाज, राजनीति और धर्म की रूढ़िवादिता को चैलेन्ज करके ही आगे बढ़ना चाहती थी

इसीलिए इन सारी परिस्थितियों का प्रभाव कबीर की भाषा पर पड़ा । कबीर की भाषा में क्रान्तिकारी की अखण्डता है जिसके बल पर वो सभी रूढ़ियों को समाप्त करना चाहते है किन्तु साथ ही साथ एक नये समाज नयी धार्मिक व्यवस्था और नयी भाषिक व्यवस्था को भी स्थापित करना चाहते थे इसलिए कबीर ने भाषिक क्षेत्र में जो रूढ़िवादिता थी उसे बड़े आत्म विश्वास के साथ वो कहते है -

"संस्कीरत है कूप जल भाखा बहता नीर"

कबीर पहले संत कालीन मध्य कवि है जो लोक भाषा में कविता करने में गर्व का अनुभवकरते है जबकि तुलसीदास जैसे महाकवि भाखा में राम चरित को लिखने के लिए अन्ततः संकोच से लिखते है -

भाखा निबन्धम् आतनोती "

जिसका तात्पर्य यह है कि ये मतिमन्द तुलसी रामचरित को भाखा में लिख रहा है। कबीर भी यही क्रान्तिकारी व्यक्तित्व तथा व्यक्तिगत पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक तथा साहित्यिक एवं भाषिक परिस्थितियों ने कबीर की भाषा नीति का मार्ग प्रशस्त किया ।

गुरु नानक देव का जन्म पश्चिमी पंजाब के तलवन्डी नामक स्थान में एक सम्भ्रान्त क्षत्रीपरिवार में हुआ था उनकी शिक्षा-दीक्षा

भी ठीक मिल रही थी कहा जाता है कबीर और नानक की मुलाकात भी हुई थी । नानकदेव कबीर से धार्मिक सिद्धान्त सामाजिक सिद्धान्त, साहित्यिक और भाषिक सिद्धान्त से प्रभावित दिखाई पड़ते हैं । कबीर ने निर्गुण संतों के लिए धार्मिक सामाजिक और साहित्यिक जो नीति निर्धारित की थी जिसे मार्ग का निर्माण किया था वो बना बनाया मार्ग नानक देव को प्राप्त हुआ था इसलिए कबीर भाषा और नानक देव की भाषा में बहुत कुछ समानता है फिर भी आर्विभाव क्षेत्र (पश्चिमी पंजाब) पारिवारिक परिस्थिति तथा शिक्षा-दीक्षा की परिस्थिति की अधिक भिन्नता के कारण उनकी भाषा में भी अत्याधिक भिन्नता आ गयी है। गुरू नानकदेव की मातृ-भाषा निश्चत: पश्चिमी पंजाबी यालेहंदा या प्राचीन लाहौरी थी, यद्यपि नानक ने काव्य भाषा के क्षेत्र में कबीर को ही अपना आदर्श माना और खड़ी बोली पर आधारित राष्ट्र भाषा में ही प्रमुखतः अपना काव्य लिखा फिर भी जैसे कबीर में जन्मस्थान के आर्विभाव के कारण अवधी और भोजपुरी की ध्वनियाँ व्याकरण और शब्दकोश दिखायी पड़ते है उसी प्रकार नानक की भाषा में प्राचीन खड़ी बोली या प्राचीन मानक हिन्दी के साथ-साथ पश्चिमी पंजाब की लेहदी या लाहौरी की ध्वनियाँ, व्याकरण और शब्दकोष दिखायी पड़ते है ।

नानक देव ने लेहंदी या लाहौरी में सम्पूर्ण किताब

लिखो हैं "जपुजो" उसको भाषा मुख्यतः पश्चिमो पंजाबो लहंदो है शेष समस्त रचनायें नानक के मूलतः उसो भाषा में लिखा ।

—o—
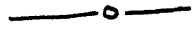
अध्याय - 16

नानक और कबीर का भाषा वैज्ञानिक तुलनात्मक अध्ययन

अध्याय - 18

कबीर और नानक ध्वनिग्रामिक अन्तर

कबीर और नानक दोनों मेंमध्यकालीन मानक हिन्दी के सभी मूल ध्वनिग्राम और सह-ध्वनियां प्रयुक्त हुई है । इसमें मूलस्वर और व्यंजन लगभग 51 हैं । कबीर में दो सहध्वनिग्राम जपित स्वर के रूप में प्रयुक्त हुए हैं यथा इ, उ "जातिइ, कोउ ‖ जो अवधी के जपित स्वर के रूप है । नानक में ये जपित स्वर नही मिलते हैं ।

दोनों में ध्वनिग्रामिक वितरण, ध्वनिक्रम ध्वनिसंयोग लगभग समान हैं ।

ध्वनिपरिवर्तन भी लगभग समान है । अन्तर इतना है कि कबीर में ध्वनि परिवर्तन पूरबी हिन्दी ‖अवधी‖ से प्रभावित है और नानक में पंजाबी, राजस्थानी का प्रभाव है ।

कबीर में जहाँ न ध्वनि अधिकांशतः "न" ही बनी रह गई वहाँ नानक में यह ध्वनि पंजाबी प्रभाव से अधिकाशतः 'ण' के रूप में परिवर्तित हुई है ।

अपभ्रंश संस्कृत के संयुक्त व्यंजन व्यंजन द्वित्व के रूप में परिवर्तित हुई है। हिन्दी में व्यंजन द्वित्व, क्षतिपूर्ति दीर्घ करण के नियम

दीर्घ हो गयी है किन्तु पंजाबी यह व्यंजन द्वित्व की प्रवृत्ति सुरक्षित है । कबीर और नानक में दीर्घ हो गई है किन्तु नानक में पंजाबी के प्रभाव से यदाकदा यह व्यंजन द्वित्व सुरक्षित है । इसी प्रकार कबीर में संस्कृत प्राकृत अपभ्रंश की 'र' ध्वनि कहीं कहीं 'लृ' के रूप में परिवर्तित हो गई जबकि नानकमें यह ध्वनि "ऋ" के रूप में ही सुरक्षित है ।

संस्कृत की "क्ष" ध्वनि कबीर और नानक दोनों में "ख" के रूप में "ज्ञ" संयुक्त ध्वनि "ग्य" के रूप में तथा संयुक्त "ऋह" के रूप में विकसित हुई है । "ड" की ध्वनि "ड" के रूप में तथा ढ ध्वनि कहीं कही द के रूप में विकसित हुई है । संस्कृत की 'ऋ' ध्वनि कबीर और नानक दोनों में 'ऋ', रि अ, इ, उ, के रूप में विकसित हुई है ।

तालव्य "श" एवं मूर्धन्य 'ष' ध्वनि सर्वत्र वर्त्स्य "स" के रूप में विकसित हुई है ।

इस, प्रकार ध्वनि परिवर्तन में कबीर में पूरबी तथा नानक में पंजाबी का प्रभाव है ।

नानक और कबीर- संज्ञा -

जैसा कि इस अध्याय के पूर्व पृष्ठों में स्पष्ट किया गया है कि दोनों संत कवियों का आविर्भाव मध्यकाल के 16वीं और 15वीं शताब्दी में हुआ है। दोनों निर्गुण संतकवि है दोनों मध्यकालीन मानक

हिन्दी के कवि है फिर भी क्षेत्रीय भिन्नता और सांस्कृतिक परिस्थितियों के कारण बहुत अधिक भाषा वैज्ञानिक समानता होते हुए भी दोनो में कुछ न कुछ अन्तर मिलता है क्षेत्रीय दृष्टिकोण से कबीर का सम्बन्ध मध्यकालीन मध्यदेश या सुबाहिन्दुस्तान (आधुनिक उत्तर प्रदेश) के पूरे प्रदेश से पूर्वी भाग से और नानक का सम्बन्ध सुबाहिन्दुस्तान के पश्चिमी भाग पंजाब से इसलिए कबीर को तत्कालीन खड़ी बोली पर आधारित मध्यकालीन आधुनिक मानक हिन्दी में पूर्वी बोलियाँ अर्थात् भोजपुरी प्राचीन अवधी का प्रभाव दिखायी पड़ता है । दूसरी ओर नानक का सम्बन्ध पंजाब से होने के कारण खड़ी बोली पर आधारित मानक हिन्दी में पूर्वी पंजाबी, पश्चिमी पंजाबी और राजस्थानी का प्रभाव दिखायी पड़ता है, ब्रज का प्रभाव दोनो में उतना है जितना मध्यकालीन मानक हिन्दी के समस्त कवियों में मिलता है ये प्रभाव ध्वनिग्रामिक रचना और संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया में परिलक्षित होता है ।

संज्ञा -

प्रातिपदिकों के दृष्टिकोण से दोनो कवियों में पुलिंग प्रातिपदिक आकारान्त ही मिलते हैं जो मध्यकालीन मानक हिन्दी की सबसे बड़ी विशेषता है । जैसे-

दुखिया	क0	प0	197
निहकान्ता	क0	सा0	4/24/1
रमइया	"	प0	82/1
लोहा	"	प0	3/5
चोला	"	प0	4/7
जोलहा	"	र0	4/6
बाबा	ना0		16/1/5
पड़दा	"		40/4/66
पाहुना	"		45/5/70

कबीर और नानक दोनो में अपभ्रंश के प्रभाव स्वरूप उकारान्त प्रातिपदिक भी मिलते है ।

जैसे-

चितु	(आधु0हिन्दी चीत)	क0		21/1
रंकु	(" " रंक)	"	प0	78/2
रामु	(" " राम)	"	"	20/10
लोभु	(" " लोभ)	"	"	77/4
आजु	(" " आज)	"	सा0	2/12/2
गगनु	(" " गगन)	"	प0	156/2

मरबु	(आधु०हिन्दी मरब)	क०	सा०	15/22/1
जगु	(" " जग)	"	प०	89/3
दासु	(" " दास)	"		73/7
क्रोधु	(" " क्रोध)	"		177/3

इसी प्रकार नानक में भी उकारान्त पुलिंग प्रातिपदिक मिलते है जिसे अपभ्रंश का प्रभाव कहा जा सकता है -

यथा-	जगु	ना०	462/2/3
	अहंकारू	"	42/5/71
	नाऊ	"	14/1/1

आकारान्त पुलिंग प्रातिपदिक संज्ञा के अतिरिक्त सर्वनाम, विशेषण, क्रिया में भी दृष्टिगत होते है ।

जैसे- कबीर - मेरा, हमारा, तेरा, तुम्हारा अपना, जैसा, ऐसा, कैसा जेता आदि ।

इसी प्रकार नानक में मेरा, तेरा, तुम्हारा, तुमरा, तुमारा, रेहा, आपणा, ऐसा केता, तेता, जेता आदि ।

नानक और कबीर में प्रातिपदिकों को दृष्टि से समानता होने पर भी एक विशेष प्रकार का अन्तर दिखाई पड़ता है कबीर में पुलिंग , प्रातिपदिक अवधी के प्रभाव कहीं कहीं "वा" कारान्त है।

यथा- जीवा क0 40/4/66

गवा आदि

कबीर और नानक

सर्वनाम -

कबीर और नानक में सार्वनामिक रचना लगभग समान है। किन्तु अनेक स्थलों में कबीर में जहाँ पूरबी हिन्दी का प्रभाव है वहीं नानक में पंजाबी -राजस्थानी प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। यथा- कबीर-

मोरा §पुरुषवाचक ए0व0 विकृत रूप §

मोर § पु0 वाचक, विकृत रूप एक व0§

तोर § मध्यम " " " §

तोरा

हमार §पुरुष वाचक , ब0 व0 विकृत रूप §

हमरा § " " " §

अपन § निजवाचक सर्वनाम §

नानक में तुसी, तुसि, तुधु, तुसा, ताचे, थारे, तेरडे, तेह, पंजाबी और राजस्थानी प्रभाव की ओर संकेत करते हैं। इसी प्रकार आपणो, आपणा, आपणी, आपणी आपे, कोण, कुण, किआ, कि, कहिआ, होरु, होरि, सभ, सभो, सभना, सभनु, सबाई, सभाइयाँ, सगलाणी, ओतु, होरि पंजाबी और राजस्थानी प्रभाव को प्रकट करते हैं।

केतोआ, केतेड, केतड़ा, तितड़े, जेतड़े, जितड़े आदि सार्वनामिक विशेषण के रूप कबीर में नहीं मिलते । ये प्रयोग पंजाबी और राजस्थानी प्रभाव को प्रकट करते हैं ।

इसी प्रकार दोनों में सबकोई, सबको, सबुकिछु, सबकिछु, होरसभु, कुछ और सार्वनामिक क्रिया विशेषण के रूप भी कबीर में नहीं मिलते बल्कि नानक में बहुल प्रयोग मिलते हैं । यह पंजाबी और राजस्थानी प्रभाव की ओर संकेत करते हैं ।

विशेषण

कबीर और नानक दोनो में मध्यकालीन मानक हिन्दी की विशेषतायें मिलती है । दोनो में हिन्दी की प्रकृति के अनुसार विशेषण में विशेष्य की भाँति लिंग-वचन-कारक संबंधी परिवर्तन नही होता । केवल आकारान्त विशेषण में विशेष्य के अनुसार लिंग परिवर्तन होता है। अन्य रूपों में कोई परिवर्तन नहीं होता ।

विशेषण के रूप प्रयोग की दृष्टि से दोनों में बहुत कुछ समानता है। विशेषण प्रयोग में कबीर में मानक हिन्दी के प्रयोगों के साथ-साथ स्थानीय रूपों का आधिक्य है । अर्थात् कबीर में जहाँ पूरबी -भोजपुरी के विरल प्रयोग मिलते हैं । वहाँ नानक में मध्यकालीन मध्यदेश में प्रचलित विशेषणों के साथ पूर्वी पंजाबी, लहंदा और राजस्थानी के विशेषण रूपों का प्रयोग मिलता है ।

कबीर में गुण वाचीक शब्द संख्या की दृष्टि से अपेक्षाकृत नानक की तुलना में कम मिलते हैं । पूर्णसंख्यावाची प्रयोगों के अन्तर्गत कबीर में मानक हिन्दी के पूर्ण संख्या वाची विशेषण रूपो के अतिरिक्त बहुविध प्रयोग मिलते हैं जो बोलियों से लिए गये है । यथा इकु, दुइ, त्रि, तिर -त्री, छहै, उनहस (उन्नीस), पचीसर, स्थानीय (पूरबी) प्रभाव के साथ-साथ अपभ्रंश के रूप भी अवशेष हैं ।

नानक में गुणवाची विशेषण रूपों की कबीर की अपेक्षा बहुलता है । साथ ही पंजाबी और राजस्थानी और ब्रज रूपों के बहुत प्रयोग मिलते हैं । हरिआ, सजणा, कुड़िकपति, करमाति, घणा, घणोरिया, थोड, चंगी । अथाक, मुगध, आदि पंजाबी विशेषणों की बहुलता है ।

नानक में संख्यावाची रूप मध्यकालीन मानक हिन्दी की भाँति हैं । साथ में पंजाबी और राजस्थानी रूप भी घुले मिले हैं ।

इकि, इका, इकने , त्रिहु, पंच, सपताहरी, अठार, इकीह, तीह, छत्तीह, अहसठि, लखकोटी लख-करोड़ि आदि रूप पंजाबी की व्यक्त करते हैं ।

शेष विशेषण रूप अत्यधिक रूप से समान है। कोई विशेष अंतर नहीं है ।

<u>लिंग विधान</u>

कबीर और नानक दोनों में मध्यकालीन मानक हिन्दी की

लिंग प्रक्रिया ही मिलती है । दोनो पुलिंग प्रातिपादिक प्रमुखतः आकारान्त है ।

यथा-

लोहा -	कबीर	प०	3/5
चोला	कबीर	प०	4/7
अंधा	कबीर	प०	186/6
जोल्हा	कबीर	र०	4/6

वैसे अन्य स्वरों एवं व्यंजनों मे ही अंत होने वाले प्रातिपदिक मिलते हैं । नानक में पुलिंग प्रातिपादिक प्रमुख आकारान्त है । यथा-

पइदा	नानक	40/4/67
पाहुड़ा	नानक	43/5/74
बाबा	नानक	16/1/5

पुलिंग प्रातिपदिकों में कुछ विशिष्ट प्रत्यय लगाकर स्त्रीलिंग के रूप निर्मित किये जाते हैं । जो मध्यकालीन मानक हिन्दी की स्त्रीलिंग प्रत्ययों की ही भाँति है। कबीर में प्रमुख स्त्रीलिंग प्रत्यय निम्नलिखित हैं ।

ई, इ, इया, नी, इनी, आइन, आनी आदि ।

नानक में प्रमुखतः स्त्रीलिंग प्रत्यय मिलते हैं । इस प्रकार लिंग विधान की दृष्टि से कबीर और नानक में कोई अन्तर नहीं मिलता है ।

वचन विधान

कबीर और नानक दोनों में वचन विधान प्रक्रिया मध्यकालीन मानक हिन्दी की ही भाँति है। द्विवचन किसी में नहीं मिलता । एक वचन से बहुवचन बनाने के निम्नलिखित प्रत्यय कबीर में मिलते हैं ।

शून्य प्रत्यय	0 –	चौसठिदीवा	सा0 1/3/1
	ए –	काबा + ए =	काबे
		तारा + ए =	तारे
	ऐ –	बनजारा+ ऐ –	बनजारै
	ऐं –	बात + ऐं =	बातें 15/180/0
	इयां–	कली+ इयां =	कलियाँ सार 16/34/2
विकृत व. ब0–	अनि	– दास + अनि =	दासनि
	आं –	चरन + आं =	चरनां सा0 17/8/2
	ओं –	कुरानों – सा0	7/8/2
	–	चरनों – सा0	25/1/2

नानक में भी अत्यधिक रूप से एकवचन से बहुवचन बनाने के यही प्रत्यय मिलते हैं । इया प्रत्यय नानक में वचन विधान कुछ विशिष्ट हैं ।

यथा– कुडो + इया – कुडोइया ग्रं0 सा0 474/22

बडभागी+ इया– बडभागीया– 40/4/66

खुसी + इया -	खुसिया	42/5/69
गुणकारी+ इया -	गुणकारीआ	40/4/67

कबीर और नानक दोनो में एकवचन में कुछ शब्द जोड़कर ब0 व0 बनाने की प्रक्रिया प्रचलित है।

जन, ननहु, = संतजना अंतजनहु आदि।

इस प्रकार कबीर और नानक दोनो ने मध्यकालीनमानक हिन्दी के ब0 व0 प्रत्यय अपनायें हैं। कबीर की अपेक्षा नानक में "आं" प्रत्यय का प्रयोग अधिक मिलता है। नानक में यह पंजाबी का प्रभाव है।

कारक रचना -

मध्यकालीन मानक हिन्दी की प्रकृति के अनुरूपकबीर तथा नानक दोनो में संस्कृत के 24 रूप वाली प्राकृत 13 अपभ्रंश के 6 रूपों के स्थान में कबीर और नानक दोनो में केवल 2 कारक शेष रहे। {1} मूल रूप ए0 व0 ब 0 ब0 -{2} विकृत रूप ए0ब0 ब0 व0। इन्हीं 2 कारक रूपों में संयोगी विकृत रूप ए0ब0 ब0 व0। इन्हीं 2 कारक रूपों में संयोगी विभक्ति और वियोगी विभक्ति कारक रचना की जाती है। कबीर और नानक दोनो में कारक रचना लगभग समान है।

नानक और कबीर दोनो में वियोगी कारक रूप की रचना करने के लिए ए, ऐ, प्रत्यय जोड़े जाते हैं ।

जैसे-

घोड़ा + ए = घोड़े ना० ग्रन्थ ना० 15/1/64

भुखा+ ए = भुखे ना० 264/4/42

सच्चा+ ऐ - सच्चै ना० 463/2/3

कबीर और नानक दोनो में जब कभी क्रिया सकर्मक और भूतकाल में होती है तो दोनो कवियों यही विकृत रूप का, प्रयोग मिलता है । जिसे आधुनिक मानक हिन्दी में कर्मणि प्रयोग कहते हैं और जिसमें आज आधुनिक मानक हिन्दी में कर्ता के विकारी रूप में साथ"ने" प्रत्यय जोड़ा जाता है । दोनो कवियों में संयोगी कारक प्रत्यय लगभग समान हैं ।

वियोगी कारक प्रत्यय -

दूसरा कारक परिसर्ग वियोगी कारक प्रत्यय भी दोनो में लगभग समानहै । दोनो में आधुनिक मानक हिन्दी का "ने" प्रत्यय नहीं मिलता है । वियोगी कारक प्रत्यय मध्यकालीन मानक हिन्दी के प्रत्यय मिलते है किन्तु कबीर पूरबी (अवधी) तथा नानक में पंजाबी राजस्थानी के परसर्ग मिलते है । दोनो में ब्रज भाषा के परसर्ग समान रूप से मिलते हैं ।

कर्म - सम्प्रदान -

के परसर्ग कबीर और नानक में लगभग समान है। दोनो में को कूं, कौ कंउ समान प्रत्यय मिलते हैं। नानक में एक विशेष प्रत्यय नो प्रत्यय मिलता है। जो निश्चयतः पंजाबी का प्रभाव है।

करण - अपादान

दोनो में मध्यकालीन मानक हिन्दी के परसर्ग लगभग समान है। दोनो में से सै सूं, स्यूं सिउ मिलते हैं (सेती ते, तैं हैं नानक में "दे" (गुण सार रटे - नां० 36/4/8) और सणु प्रत्यय (सोसणुतुयअनिय) विशेष मिलते हैं जो पंजाबी प्रत्यय हैं।

संबंध कारक -

दोनो में मध्यकालीन मानक हिन्दी के संबंध कारक परसर्ग समान रूप से मिलते है। का के, की, केरा, केरे, केरी, परसर्ग समान रूप से मिलते हैं। नानक मे को आह, कुरि दा, दे दो, कौती परसर्ग विशेष हैं जो पंजाबी के प्रभाव स्वरूप प्रयुक्त हुए है।

अधिकरण -

दोनो मध्यकालीन मानक. हिन्दी के परसर्ग लगभग समान रूप से मिलते हैं में, मैं, पहि, पति पै मांहि, माँ, मंझि दोनो कवियों

में लगभग समान रूप से प्रयुक्त हुए हैं ।

संबोधन -

दोनो में रे, हो , हे, समान रूप से प्रयुक्त हुए है ।

कारक परसर्ग समान अन्य शब्द

कबीर और नानक दोनो में सभी कारकों में कारक परसर्ग समान अनेक शब्द जोड़े जाते है यथा- कै, ताईं , कारैं -{कर्म सम्प्रदान } दोनों कवियों में समान रूप से मिलते हैं । किन्तु नाति नाते नानक में पंजाबी प्रभाव की ओर संकेत करते हैं ।

इसी प्रकार अधिकरण, पहि पासि, नाथ, साथि समान रूप से मिलते हैं । इस प्रकार कारक परसर्ग संबंधी दोनों में रूप समान हैं केवल कबीर में कहीं कहीं अवधी के और नानक में कहीं-कहीं पंजाबी के परसर्ग मिलते हैं ।

कबीर और नानक - क्रिया रचना
तुलनात्मक अध्ययन

मध्यकालीन मानक हिन्दी की क्रिया रचना सम्बन्धी सारी विशेषतायें कबीर नानक दोनो में मिलते है समान अत्याधिक रूप से दोनो में साधारण काल तथा संयुक्त काल की प्रवृत्ति दिखायी पड़ती है साधारण काल

भूत काल में होती है वहाँ कहीं भी कर्मण प्रयोग नही मिलता अर्थात् क्रिया का लिंग वचन कर्म के अनुसार नही मिलता जबकि नानक में ये सर्वत्र मिलता है । संयुक्त क्रिया की रचना दो प्रधान क्रियाओं के मेल से कबीर और नानक दोनो में मिलती है ये प्रवृत्ति मध्यकालीन मानक हिन्दी की अपनी प्रकृति है। जो संस्कृत पाली, प्राकृतिक, अपभ्रंश में नही मिलती है । इस प्रकार क्रिया रचना में कबीर और नानक दोनो में कोई मौलिक अन्तर नही है केवल अन्तर इतना ही है कबीर में जहाँ अवधी और भोजपुरी का प्रभाव है वही नानक में पंजाबी, राजस्थानी का प्रभाव है। दोनों में केवल अन्तर इतना है पंजाबी प्रभाव के कारण नानक की रचना मे जैसे भूत निश्चयार्थ में भूत-कालिन प्रत्यय इया, या इआ अधिक लगता है जैसे- चलिआ, पढ़िया, लिखिआ । में प्रत्यय कबीर में मिलता है लेकिन अपेक्षाकृत नानक की अपेक्षा कम । इसी प्रकार कबीर में "य" और "आ" प्रत्यय अपेक्षाकृत अधिक मिलते है जैसे लिखिया , लिखया या लिखा, पढ़ा । इसी प्रकार साधारण काल रचना में भविष्य निश्चयार्थ में रचना में "गा" प्रत्यय लगाकर भविष्य अधिक बनता है जैसे पढ़ेगा, चलेगा लिखिसी पढ़सी के प्रयोग विरल है । किन्तु नानक में पंजाबी के प्रभाव से "स" भविष्यत के प्रयोग बहुतायत से मिलते है जैसे पढ़सी, चलसी, आदि । इस प्रकार क्रिया रचना की दृष्टि से कबीर और नानक में मध्यकालीन मानक हिन्दी की प्रवृत्ति दोनो में मिलती है । केवल

क्रो रचनाकि्में लिंग प्रत्यय और कृदंतीय प्रत्यय दोनो प्रकार के प्रत्यय को लगाकर साधारण काल की रचना होती है दोनो में वर्तमान निश्चयार्थ मिलता है तिगं प्रत्यय लगाकर जबकि आधु० मानक हिन्दी में वर्तमान निश्चयार्थ साधारण काल में नही मिलता । संयुक्त काल की रचना, सहायक क्रियाऔर प्रधान क्रिया के संयोग से दोनो में पाँच-पाँच संयुक्त काल मिलते है जैसा कि गत पृष्ठो में स्पष्ट किया गया है । दोनो में सहायक क्रिया अथवा कृदन्तीय प्रत्यय समान है केवल वर्तमान निश्चयार्थ में जहाँ कबीर में "ता" मिलता है जैसे- चलता वही मानक में "दा" मिलता है जैसे - चलदा " ।

फिर भी इतनी समानता होने पर भी कबीर की क्रिया रचना में अवधी और भोजपुरी का प्रभाव है और नानक में पंजाबी और राजस्थानी का प्रभाव है । कर्मवाच्य बनाने की विधि दोनो में समान रूप से मिलती है । कर्म वाच्य बनाने संयोगी पद्धति ऐ या जै लगा कर संयोगी विधि कर्म वाच्य माना जाता है ये संयोगी विधि कबीर की उपेक्षा नानक में अधिक मिलते है "जाना" धातु लगा कर वियोगी पद्धति अपनायी जाती है इसकी पद्धति कबीर में अधिक मिलती है नानक की उपेक्षा । इसी प्रकार कर्मणी प्रयोग की पद्धति मध्यकालीन मानक हिन्दी की भाँति कबीर और नानक दोनों में

अन्तर इतना है कबीर में अवधी और भोजपुरी का अभाव है । जबकि नानक में पश्चिमी राजस्थानी का प्रभाव है ब्रज भाषा के रूप समान रूप से दोनो मे मिलते है क्योंकि ब्रज भाषा मध्यकालीन की काव्य भाषा थी इसलिए उसका प्रभाव दोनो मे मिलता है फिर भी मौलिक रूप से दोनो में समानता है ।

अव्यय -

अव्यय रचना में कबीर और नानक दोनो में मध्यकालीन मानक हिन्दी में अव्यय रूप सुरक्षित है। अव्यय के अन्तर्गत चार प्रकार के क्रिया, विशेषण आते है । काल वाचक, स्थान वाचक, रीतिवाचक, परिमाण वाचक, इस प्रकार सम्बन्ध बोधक अव्यय, संयोजक अव्यय, विभाजक अव्यय, तथा विस्मयादि बोधक अव्यय । इन सब के रूप लगभग दोनो में समान है । केवल अन्तर ये है कि नानक में पंजाबी प्रभाव से पंजाबी के अव्यय के रूप भी मिलते है । जैसे- संयोजक अव्यय "और" मिलता है जबकि कहीं कहीं नानक में "ह" लग जाता है जैसे "हौर" ।

इस प्रकार कबीर और नानक के भाषा वैज्ञानिक तुलनात्मक अध्ययन करने से हम निश्चयतः कह सकते है , ध्वनि , सर्वनाम, विशेषण

क्रिया, अव्यय सभी में मध्यकालीन मानक हिन्दी की प्रवृत्ति प्रमुख रूप से विद्यमान है। मध्यकाल में कबीर और नानक में जो भाषा स्वरूप है उसे मध्यकालीन राष्ट्र भाषा कहा जाता है। दोनो मध्यकालीन राष्ट्र भाषा के प्रमुख कवि है।

—x—

विषय - सूची

सहायक - ग्रन्थ सूची

1- कबीर ग्रन्थावली, डॉ० पारसनाथ तिवारी, प्रथम संस्करण, 1961 ई ।

2- संत कबीर, डॉ० रामकुमार वर्मा साहित्य भवन इलाहाबाद, सन् 1957

3- कबीर वानी संग्रह पारसनाथ तिवारी, द्वितीय संस्करण 1962

4- कबीर साहित्य की परख - परशुराम चतुर्वेदी, संवत् 1011

5- कबीर की विचारधारा- गोविन्द त्रिगुणायत प्रथम संस्करण, संवत् 1014

6- कबीर काव्य भाषा शास्त्रीय अध्ययन शोध प्रबन्ध, डॉ० भागवत प्रसाद दुबे, प्रथम संस्करण 1969

7- कबीर की भाषा श्री मातावदल जायसवाल, संस्करण 1969

8- हिन्दी व्याकरण कामताप्रसाद गुप्ता, सम्वत्, 2026

9- सम्मेलन पत्रिका- भाग 55, अंक 1-2 कबीर का जन्म भूमि मिथिला एक समाधान नामक निबन्ध, पृ० 17, 18, 19

10- हिन्दी काव्य में निर्गुण सम्प्रदाय, डॉ० पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल

11- विचार-विमर्श - चन्द्रबली पाण्डेय हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग ।

12- मानक हिन्दी का ऐतिहासिक व्याकरण -श्रीमाता बदल जायसवाल ।

13- हिन्दवी साहित्य- श्री माताबदल जायसवाल, हिन्दी साहित्य-द्वितीय खंड, भारतीय हिन्दी प ˊ द, प्रयाग ।

14- श्री गोरखबानी प्रथम खंड -डॉ० पीताम्बरदत्त बड़थवाल ।

15- उक्ति व्यक्ति प्रकरण [सम्पादक] मुनिजिन विजय सिंघी, जैन ग्रंथमाला ।

16- गुरू ग्रन्थ साहब जी, महला - ।

17- नानकवाणी -डॉ० जयराम मिश्र, मित्र प्रकाश प्रयाग ।

18- भाषा शास्त्र की रूपरेखा -डॉ० उदय नारायण तिवारी ।

19- भाषा विज्ञान -डॉ० भोला नाथ तिवारी ।

20- हिन्दी भाषा का इति० डॉ० धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दी साहित्य प्रेस प्रयाग ।

21- हिन्दी भाषा -डॉ० भोला नाथ तिवारी ।

22- हिन्दी व्याकरण - कामता प्रसाद गुरू, नागरी प्रचारिणी सभा , काशी ।

23- मैथलीशरण गुप्त की काव्य भाषा का भाषा वैज्ञानिक अध्यय राधा रानी श्रीवास्तव । (अप्रकाशित शोध प्रबन्ध)